नर
पि
शा
च
प्रियांशी जैन

नमस्कार पाठको,

"में आपकी प्रियांशी जैन ! मेंरी पहली किताबे " **कुंवारी हवेली** " और "**सफेद लाश** " को इतना प्यार देने के लिए आपका शुक्रिया.मेरी उम्मीद से ज्यादा आप लोगो ने मेरी इन किताबो को सराहा और प्यार दिया ! इसी प्यार से प्रेरित होकर में आपके सामने अपनी एक और किताब लेकर आयी हूं , उम्मीद है कि यह किताब भी आपको पसंद आएगी और इस किताब को भी आपका ढेर सारा प्यार मिलेगा."

आपकी

प्रियांशी जैन

भाग - 1

पूर्णिमा की रात है, चाद ँकी चाद ँनी चारो ओर फैली हुई है. दमयंती अपनी बरामदे में खड़ी हुई चाद ँनी में लहलहाते खेतो को देख रही है. पर उसका दिल बहुत बेचैन है.

“उफ्फ ये चाद ँनी रात क्या आज ही होनी थी, अब मैं कैसे बाहर जाऊंगी, किसी ने देख लिया तो मुसीबत हो जाएगी. अंधेरा होता तो आराम से निकल जाती. अब क्या करूँ ? ……. केशव मेरा इंतेज़ार कर रहा होगा, कैसे जाऊ मैं अब………… वैसे मुझे यकीन है कि वो मेरी मज़बूरी समझ जाएगा”दमयंती मन ही मन ये सब सोच रही है .

इधर केशव भी चाद ँनी रात में लहलहाते खेतो को देख रहा है. ऐसा लग रहा है जैसे की हवायें चाद ँनी रात में खेतो में गीत गा रही हैं. बहुत ही सुन्दर नज़ारा है. पर केशव ज़्यादा देर तक इस नज़ारे में खो नही पाता क्योंकि वो बड़ी बेचैनी से दमयंती का इंतेज़ार कर रहा है

वो सोच रहा है कि अगर दमयंती किसी तरह से आ गयी तो वो दोनो पहली बार ऐसी तन्हाई में मिलेंगे.

आज सुबह दमयंती ने मंदिर के बाहर केशव से कहा था, “केशव पिता जी मेरे लिए लड़का ढूंड रहे हैं, मुझे बहुत डर लग रहा है”

“तुम चिंता मत करो…ऐसा करो आज रात अपने घर के पीछे के खेत में मिलो ……हम आराम से बात करेंगे”

“मैं वहां कैसे आऊंगी केशव, मुझे डर लगता है”

“मुझे इतना प्यार करती हो, फिर मुझ से अकेले में मिलने से क्यो डरती हो”

“वो बात नही है केशव, मैं तो ये कह रही थी कि रात को उस सुनसान खेत में कैसे आऊंगी में, किसी ने देख लिया तो”

“उस खेत की ज़िम्मेदारी मुझ पर है, मैं ही रात भर उसकी रखवाली करता हू,ँ वहां डरने की कोई बात नही है, तुम आओ तो सही हम ढेर सारी बाते करेंगे”

“वो तो ठीक है ………… अच्छा मैं कोशिश करूँगी, मेरे लिए घर से निकलना बहुत मुश्किल होगा, पर मैं पूरी कोशिश करूँगी”

ये बातें हुई थी सुबह मंदिर के बाहर दोनो के बीच

इधर दमयंती अभी भी कसंमकश में है कि क्या करे,क्या ना करे. वो हिम्मत करके चलने का फ़ैसला करती है.

वो चुपचाप सीढ़ियों से दबे पाँव नीचे उतरती है और घर के पीछे की दीवार पर चढ़ कर खेत में उतर जाती है. मगर हर पल उसका दिल डर के मारे धक धक कर रहा है

“कहा ँहै ये केशव, उसे क्या यहा नही खड़े रहना चाहिए था, मैं अकेली कैसे उसे ढूनडूँगी” --- दमयंती मन ही मन बड़बड़ा रही है.

इधर केशव को भी अहसास होता है कि उसे दमयंती के घर की तरफ चलना चाहिए

“अगर दमयंती आ रही होगी तो अकेली डर जाएगी”

वो सोचता है और दमयंती के घर की तरफ चल देता है.

दमयंती डरी डरी आगे बढ़ रही है, वो सामने से आते एक साए को देख कर डर जाती है और वापिस मूड कर भागने लगती है.

“अरे रूको दमयंती, ये मैं हू ँतुम्हारा केशव” --- केशव पीछे से आवाज़ लगाता है

दमयंती रुक जाती है और पीछे मूड कर देखती है कि केशव उसकी तरफ दौड़ा चला आ रहा है

“तुम्हे मेरी बिलकुल परवाह नही है, क्या तुम्हे घर के पास नही होना चाहिए था”

“दमयंती पिता जी साथ थे, वो आज मुझे घर भेज कर खुद खेत में रुकना चाहते थे, बड़ी मुश्किल से उन्हे यहा ँसे भेजा है”

“पता है कितना डर लग रहा था मुझे, मैं कभी भी रात को ऐसे बाहर नही निकली हूँ, ऐसा लग रहा था कि कोई मेरा पीछा कर रहा है” --- दमयंती ने गुस्से में कहा

“मैं समझ सकता हूँ दमयंती, मेरे बस में होता तो में खुद तुम्हे अपनी गोदी में उठा कर लाता” ---- केशव ने कहा

“बस-बस रहने दो”

“मैं सच कह रहा हूँ दमयंती मेरा यकीन करो”

ये कह कर केशव दमयंती को अपनी बाहों में जकड़ लेता है

दमयंती के तन बदन में बीजली दौड़ जाती है, वो पहली बार केशव की बाहों में थी, वो भी रात की तन्हाई में.

“छोड़ो मुझे केशव ये क्या कर रहे हो”

“दमयंती मैं बहुत खुश हूँ …… मुझे बिलकुल यकीन नही था कि तुम आओगी….. मुझे थोड़ी देर अपने करीब रहने दो”

“मुझे शरम आ रही है केशव, छोड़ो ना”

केशव दमयंती को छोड़ देता है, और अपनी आँखो में आए आसुँओ को पोंछने लगता है.

“क्या हुवा केशव ?…. मुझसे कोई ग़लती हुई क्या ? ….. ठीक है भर लो मुझे बाहों में, मैं तो बस ये कह रहे थी कि मुझे शरम आ रही है. पहले कभी तुम्हारे इतने करीब नही आई ना…..” ---- दमयंती केशव के कंधे पर हाथ रख कर कहती है

“दमयंती जब से तुमसे प्यार हुवा है कभी सपने में भी नही सोचा था कि तुम्हारे इतने करीब आ पाऊंगा.आँखे भर आई हैं तुम्हारे इतने करीब आ कर, कहाँ तुम कहाँ मैं” – केशव ने भावुक होकर कहा.

“कहा ँतुम कहा ँमैं का क्या मतलब ???, अब प्यार में भी क्या ये सब सोचा जाता है”

“वो तो ठीक है दमयंती पर तुम नही जानती तुम्हारा प्यार मेरे लिए एक ख्वाब सा लगता है. हम दौनो अक्सर आँखो आँखो में बात करते आए हैं, बहुत कम हम दौनो ने मूह से बात की है, वैसे भी यहा मिलने का मौका ही कहा है जो कुछ बात करें. बड़े दीनो बाद आज मंदिर के बाहर बात हुई थी और आज ही पहली बार हम तन्हाई में मिल रहे हैं.... क्या ये सब सपना सा नही लगता?”

“हा ँकेशव मुझे भी ये सपना सा लगता है, पता नही मैं क्यों तुमसे प्यार कर बैठी हू,ँ मुझे अच्छे से पता है कि इस प्यार का अंजाम बहुत भयानक होगा पर फिर भी जाने क्यों.... मेरा दिल बस तुम्हारे लिए धड़कता है”

“दमयंती चलो कहीं भाग चलते हैं, यहा से बहुत दूर जहा ये उन्च-नीच, जात-पात की दीवार ना हो”

“केशव मैं तुम्हारे साथ कहीं भी चलने को तैयार हू ँपर पिता जी हमें ढूंड निकालेंगे और हमें वो ऐसी खौफनाक सज़ा देंगे जिसकी तुम कल्पना भी नही कर सकते”

“मौत से ज़्यादा खौफनाक क्या हो सकता है दमयंती”

”तुम अभी मेरे पिता जी को नही जानते, वो तुम्हारे पूरे परिवार को तबाह कर देंगे, मैं ऐसा हरगिज़ नही होने दूँगी”

“तो इसका क्या ये मतलब है कि इस प्यार को हम भूल जायें और इस दुनिया के आगे इस प्यार का बलिदान कर दें”

“मैने ऐसा तो नही कहा केशव”

“फिर तुम कहना क्या चाहती हो”

“हम साथ जी नही सकते पर साथ मर् तो सकते हैं”

ये कहते हुवे दमयंती की आँखो में आसूँ उतर आए

“ये क्या पागलपन है दमयंती… ऐसे दिल छोटा करने से क्या होगा, अगर भगवान ने इस प्यार में हमारी मौत ही लीखी है तो क्यों ना हम एक कोशिश करके मरें, क्या पता हमारे सचे प्यार के आगे भगवान का दिल पीघल जाए और वो हमें एक खुशाल ज़ींदगी दे दें”

“कैसी कोशिश केशव, मैं समझी नही” दमयंती ने अपने आसूँ पोंछते हुवे कहा

“हम यहा से बहुत दूर चले जाएगेँ, बहुत दूर…. जहा किसी को हमारी जात पात का पता ना हो”

“हम कहा जाएंगे केशव,कहा रहेंगे ?हमारे पास कुछ भी तो नही है”

“जिस भगवान ने ये प्यार बनाया है वही इस प्यार को मंज़िल तक भी ले जाएगेँ, चलो सच्चे मन से अपने प्यार के लिए एक कोशिश करते हैं, बाकी सब भगवान पर छोड़ देते हैं. कोशिश करने से कुछ भी मिल सकता है दमयंती, बिना कोशिश किए हार मान-ना इस प्यार का अपमान होगा”

“मैं तुम्हारी हूँ केशव, मुझे जहाँ चाहे वहां ले चलो, मुझे अपनी चिंता नही है. अपनी चिंता होती तो ये प्यार ही ना करती. मुझे बस तुम्हारी और तुम्हारे घर वालो की चिंता है”

“तुम किसी की चिंता मत करो, जिसने ये जीवन दिया है वही इसकी रक्षा भी करेंगे, मुझे भी अपने घर वालो की चिंता है, पर मैं अपने दिल के हाथो मजबूर हूँ, मुझे यकीन है कि सब कुछ ठीक होगा” ---- केशव ने कहा

“ठीक है केशव जैसा तुम ठीक समझो”

चादँ की चादँनी चारो तरफ फैली हुई है और दो प्यार में डूबे दिल दुनिया की हर दीवार को तोड़ कर आगे बढ़ना चाहते हैं.

हरे हरे खेत के एक कोने में आम के वृक्ष के नीचे दो दिल अपने प्यार को मंज़िल तक ले जाने की बाते कर रहे हैं

“दमयंती एक बात बताओ”

“हाँ पूछो”

“क्या तुम्हे डर नही लगा मेरे पास तन्हाई में आते हुवे”

“केशव एक तुम ही हो जिसको में कभी भी कहीं भी मिल सकती हूँ, तुमसे इतना प्यार जो करती हूँ, वरना मुझे हर आदमी से डर लगता है”

“ऐसा क्या है मुझ में दमयंती ?”

“तुम्हे याद है आज से करीब चार साल पहले जब में खेतो में रास्ता भटक गयी थी तब तुम मुझे घर तक छोड़ कर आए थे. अंधेरा होने को था और तुम मुझे बड़े प्यार से समझा रहे थे कि ‘डरो मत मैं तुम्हारे साथ हूँ ना’. उस दिन पिता जी से खूब डाटँ पड़ी थी इस बात को ले कर कि मैं क्यों अपनी सहेलियों के साथ खेतो में घूमने गयी थी. पर सब कुछ भुला कर रात भर मैं बस तुम्हे ही सोच रही थी. उस दिन तुम जाने अंजाने मेरे दिल के एक कोने में अपना घर बना गये थे”

“वो दिन मुझे भी याद है, उस दिन तुम्हे पहली बार देखा था मैने, पता नही था कि तुम कौन हो कहा से हो. तुम खेत के एक कोने में परेशान सी खड़ी थी. मैं तुम्हे देखते ही समझ गया था कि तुम रास्ता भटक गयी हो. जब मैने पूछा था कि क्या बात है ? तुमने रोनी सूरत बना कर कहा था, “मुझे घर जाना है” और मैने कहा था चलो मैं तुम्हे घर छोड़ देता हूँ”

“उस वक्त मैं बहुत डर गयी थी केशव, मेरी सहेलियाँ जाने कहाँ थी और अंधेरा घिर आया था, और वो पहली बार था कि मैं घर से ऐसे बाहर थी”

“हाँ तुम तो मुझ से भी डर रही थी”

“मैं तुम्हे तब जानती नही थी, डरना लाज़मी था, अकेली लड़की के साथ कुछ भी हो सकता है, पर मुझे अच्छा लगा था कि तुम मुझे बड़े प्यार से समझा रहे थे”

“हां पर बड़ी मुश्किल से तुम मेरे साथ चली थी”

“तुम्हारे साथ तब मज़बूरी में चली थी लेकिन आज तुम्हारे साथ अपनी खुशी से कहीं भी चलने को तैयार हूँ”

“इतना प्यार क्यों करती हो तुम मुझे दमयंती ?”

“पता नही केशव, मुझे सच में नही पता”

“याद है जब मैने तुम्हारे घर के बारे में पूछा था तो तुम बड़े गरूर से बोली थी कि मैं भवानी प्रताप सिंग की बेटी हूँ”

“मैं तुम्हे डराना चाहती थी ताकि तुम कुछ ऐसा वैसा ना सोचो, और तुम मेरे पिता जी का नाम सुन कर डर भी तो गये थे”

“उनके नाम से यहा कौन नही डरता दमयंती, उनके एक इशारे पर किसी की भी जान जा सकती है”

“पर चार दिन बाद ही तुम में बहुत हिम्मत आ गयी थी, मुझे लाल गुलाब का फूल दे कर गये थे वो भी बड़े अजीब तरीके से. मैं मंदिर से निकल रही थी और तुम मेरे रास्ते में गुलाब का फूल फेंक कर भाग गये थे, मैं तुम्हे देखती रही पर तुमने पीछे मूड कर भी नही देखा. आज तक संभाल कर रखा है मैने वो फूल”

“पता नही क्या हो गया था मुझे, डरते डरते तुम्हारे रास्ते में फूल फेंका था, वो तो शुक्र था कि किसी ने देखा नही वरना मुसीबत हो जाती”

“मैने भी डरते डरते वो फूल उठाया था, वो पल आज तक मेरी आँखो में घूमता है, तुम तो फूल फेंक कर भाग गये थे, उठाते वक्त मुझ पर जो बीती थी वो मैं ही जानती हूँ”

“और अगले दिन तुमने क्या किया था, खुद भी तो एक गुलाब वहीं उसी जगह गिरा दिया था जहा मैने अपना गुलाब फेंका था. अगले दिन तुम में कहा से हिम्मत आ गयी थी?”

“पता नही, तुम्हारे प्यार का जवाब प्यार से देना चाहती थी”

“दमयंती मैने भी तुम्हारा गुलाब आज तक संभाल कर रखा है”

दौनो हंस पड़ते हैं

“केशव पहली बार हम ये सब बाते कर रहे है, जींदगी ने हमे अब तक मिलने का मोका क्यों नही दिया”

“हो सकता है कि हमने अब तक कोशिश ही ना की हो, आज तुम मंदिर के बाहर ना मिलती तो शायद आज भी ना मिल पाते”

“केशव चाहे कुछ हो जाए मेरा साथ मत छोड़ना, मैं तुम्हे बहुत प्यार करती हूँ”

“अरे पगली कहीं की…. ये प्यार क्या साथ छोड़ने के लिए किया है मैने. मैं तो हर हाल में इस प्यार को मंज़िल तक ले जाना चाहता हूँ”

“एक बात पुछू केशव”

“हाँ पूछो ना”

“प्यार कितना अजीब होता हैं ना, हम इन चार सालो में बहुत कम मिले हैं फिर भी दिल में प्यार हर पल बढ़ता ही गया है, ऐसा क्यों है ?”

“वही तो मैं भी कह रहा था, देखो एक तरह से आज हमारी पहली मुलाकात है लेकिन ऐसा लगता है कि हम हर पल साथ रहते हैं, पता है ऐसा क्यों है ?”

“नही तो, तुम बताओ ना”

“हर पल हम एक दूसरे को जो सोचते रहते हैं”

“तुम्हे कैसे पता कि मैं तुम्हे सोचती रहती हूँ?”

“बस अंदाज़ा लगाया क्योंकि में तो हर पल तुम्हारे ख़यालो में डूबा रहता हूँ”

“बिना एक दूसरे से मिले भी हम एक दूसरे में खोए रहते हैं कितना प्यारा अहसास है ना ये केशव”

“बिलकुल दमयंती जींदगी में इस से प्यारा अहसास हमें नहीं मिल सकता”

“केशव एक बात बताओ क्या तुम्हे मेरे अलावा कोई और लड़की पसंद आ सकती है”

“सवाल ही पैदा नही होता दमयंती, तुम्हारे अलावा में किसी को नज़र उठा कर देखता भी नही हूँ”

“ऐसा है क्या ?”

“बिलकुल दमयंती, जो प्यार तुमने मुझे दिया है वो प्यार मुझे कहीं नही मिल सकता. तुम्हारा दिल कितना बड़ा है. इतने बड़े घर की बेटी होते हुवे भी तुमने मुझ ग़रीब से प्यार किया, वो भी सब जात पात भुला कर”

“जात पात का मतलब मुझे नही पता केशव मुझे बस इतना पता है कि मुझे बस तुमसे प्यार है”

केशव भावुक हो कर दमयंती को अपनी बाहों में भर लेता है और मदहोश हो कर दमयंती की कमर पर हाथ फिराने लगता है. कब मद-होशी में उसके हाथ फिसलते हुवे दमयंती के नितंबो तक पहुँच जाते हैं उसे पता ही नही चलता

जैसे ही दमयंती को अपने नितंबो पर केशव के हाथ महसूस होते हैं वो केशव को दूर झटक देती है और केशव की बाहों से आज़ाद हो कर केशव से मूह फेर कर खड़ी हो जाती है

“क्या हुवा दमयंती, मुझ से कोई भूल हुई क्या ?”

“तुम्हारे प्यार में वासना उतर आई है केशव, मुझे वहां क्यों छुवा तुमने ? …..मुझे डर लग रहा है”

केशव दमयंती के सामने आ कर उसके कदमो में बैठ जाता है और दमयंती के कदमो को चूम कर कहता है, " ये वासना नही मेरा प्यार है दमयंती. मैं तो बस तुम्हे अपने करीब महसूस करने की कोशिश कर रहा था, अगर तुम्हे बुरा लगा है तो मुझे माफ़ कर दो"

दमयंती केशव को कोई जवाब नही देती और फूट फूट कर रोने लगती है

"क्या हुवा दमयंती क्या मुझसे इतना बड़ा गुनाह हो गया कि तुम इस तरह से रो रही हो, क्या मेरा तुम पर इतना भी हक़ नही कि तुम्हे अपने करीब महसूस कर सकूँ ?"

"मैं सब कुछ भूल चुकी थी लेकिन तुमने फिर से सब कुछ याद दिला दिया"

"क्या याद दिला दिया दमयंती ?, मैं समझा नही"

"केशव मैं आज तुम्हे अपनी जींदगी का वो दर्द बताना चाहती हूँ जो मैने आज तक किसी को नही बताया, क्या तुम सुन पाओगे?"

"मेरा दिल बैठा जा रहा है दमयंती, जल्दी बताओ की बात क्या है वरना मैं अभी यही मर जाऊंगा"

"ऐसा मत कहो, मैं बता तो रहीं हूँ" ---- दमयंती ने अपनी आँखो के आंसू पोंछते हुवे कहा

"अच्छा चलो बैठ जाओ, बैठ कर आराम से बताओ, यहा हरी-हरी मखमली घास है, इस पर हम आराम से बैठ सकते हैं"

दौनो आमने सामने बैठ जाते हैं

"जब तुमने मुझे वहा छुवा तो मेरे ज़ख़्म हरे हो गये" ---- दमयंती ने दबी हुई आवाज़ में कहा

"कैसे ज़ख़्म दमयंती, मैं समझा नही"

दमयंती किन्ही गहरे ख़यालो में खो जाती है

“क्या हुवा दमयंती बताओ ना क्या बात है, मैं तुम्हे बहुत प्यार करता हूँ, तुम मुझे सब कुछ बता सकती हो”

“जीवन चाचा ने कई बार मुझे वहाँ छुवा है केशव” --- दमयंती ने कहा और कह कर घुटनो में सर छुपा कर रोने लगी

एक पल को केशव हैरान रह जाता है, फिर खुद को संभाल कर कहता है, “मैं समझ गया दमयंती बस चुप हो जाओ”

“केशव करीब दो साल तक मैने अपने ही घर में ये सब सहा है” --- दमयंती रोते हुवे कहती है

“कब की बात है ये दमयंती ?”

“कोई छह साल पहले की बात है”

“अब तो ऐसा कुछ नही है ना”

“नही अब उसकी इतनी हिम्मत नही है कि मेरी तरफ नज़र उठा कर भी देख सके, लेकिन जींदगी के वो दो साल मैने कैसे बिताए हैं ये मैं ही जानती हूँ”

“मैं समझ सकता हूँ दमयंती”

चाचा अक्सर मुझे अजीब सी नज़रो से घूरता था पर मैने कभी इस बात पर ध्यान नही दिया था. अपने सगे चाचा पर कोई कैसे शक कर सकता है

लेकिन धीरे धीरे बात घूरने से आगे बढ़ने लगी. एक दिन मैं अपनी बरामदे में खड़ी खेतो को देख रही थी. अचानक पीछे से आकर चाचा ने मेरे कंधे पर कुछ इस तरह से हाथ रखा की मैं काँप गयी. लेकिन जब मैने चाचा की तरफ देखा तो वो बोला, “बेटी क्या बात है ? यहा अकेली क्या कर रही हो ?”

इस तरह वो किसी ना किसी बहाने मुझे छूता रहा

लेकिन एक दिन उसने हद कर दी. मैं अपने घर के पीछे के बगीचे में घूम रही थी, चाचा भी वहां आ गया और मेरे साथ टहलने लगा. चलते चलते वो इधर उधर की बाते कर रहा था. अचानक मुझे अपने वहां पीछे कुछ महसूस हुवा. मैने तुरंत पीछे मूड कर देखा तो कुछ नही दिखा. मैने चाचा की तरफ देखा तो वो मुस्कुरा दिया.

मुझे कुछ समझ नही आ रहा था कि वो ऐसा क्यों कर रहा है, और सच पूछो तो उस वक्त इतनी समझ भी नही थी, इसलिए मैने चाचा की हरकत को अन-देखा कर दिया

कुछ दिन शांति से बीत गये

फिर एक दिन की बात है, शाम का वक्त था, मैं अपने घर की छत पर खड़ी थी.

मैं किन्ही ख़यालो में खोई थी, अचानक मुझे अपने पीछे वहां कुछ महसूस हुवा

मैं चोंक कर मूड गयी

"क्या हुवा दमयंती बेटी" चाचा ने गंदी सी हसँी हंसते हुवे पूछा

"कुछ नही चाचा जी बस यू ही आपको देख कर चोंक गयी" --- मैने कहा

मैं और क्या कहती, पर मुझे तब पूरा यकीन हो गया था कि चाचा जान बुझ कर मेरे साथ छेड़कानी कर रहा है

होली वाले दिन तो चाचा ने हद ही कर दी

मैं होली की मस्ती में डूबी हुई थी. कुछ ना कुछ तरकीब लगा कर सभी को रंग रही थी

मैने अपने कमरे में ख़ास हरे रंग का गुलाल रखा था, वो लेने के लिए में अपने कमरे में घुसी ही थी कि पीछे पीछे चाचा भी आ गया

उसने मेरे वहां हाथ रख कर कहा, "अब जवान हो गयी हो दमयंती बेटी, थोड़ी मौज मस्ती किया करो, ये क्या बच्चो के खेल खेलती हो…. आओ असली होली मनाते हैं"

चाचा ने पी रखी थी तभी उसकी इतनी हिम्मत हो गयी थी.

मुझे उस वक्त इतना गुस्सा आया कि मैने एक थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिया

मैं भूल गयी थी कि वो मेरा चाचा है

"अच्छा किया दमयंती, जब वो भूल गया कि तुम उसकी भतीजी हो तो तुम क्यों भला उसे चाचा समझोगी"

लेकिन फिर भी उसकी बेसरमी नही रुकी केशव, वो बाद में भी मोका देख कर मुझे छेड़ने से बाज़ नही आया.

"क्या तुमने घर में किसी को ये बात नही बताई"

"किसे बताती केशव, पिता जी जीवन चाचा पर आँख मीच कर विश्वास करते हैं और तुम्हे तो पता ही है, मेरी मा को गुज़रे आंठ साल हो चुके हैं"

"फिर बाद में ये सब कैसे रुका दमयंती"

एक दिन मैं शाम के वक्त छत पर खड़ी थी, चाचा वहां आ गया और मेरे बाजू में खड़ा हो गया

मैं जाने लगी तो वो बोला, "दमयंती बेटी तुम मुझ से दूर क्यों भागती हो, मैं तो तुम्हे तुम्हारी जवानी का मज़ा देना चाहता हूँ, आओ तुम्हे कुछ सीखा दूं वरना ये जवानी बीत जाएगी और तुम हाथ मालती रह जाओगी"

"ठीक है चाचा जी मैं तैयार हूँ"

"अरे वाह !! क्या सच !!" --- चाचा ने कहा

"हाँ चाचा जी चलिए पिता जी से ये नयी शिक्षा शुरू करने से पहले आशीर्वाद ले आती हूँ"

ये सुन कर चाचा थर थर काँपने लगा

उस दिन मैने ठान लिया था कि चाहे पिता जी कुछ भी समझे में उन्हे चाचा की करतूतो के बारे में बता दूँगी

जैसे ही मैं वहां से चली चाचा मेरे कदमो में गिर गया और बोला, ‘‘बेटी माफ़ कर दो आगे से मैं तुम्हे परेशान नही करूँगा पर भवानीको कुछ मत बताओ, वो मुझे जान से मार देगा’’

मुझे यकीन नही था कि वो इतने आराम से सीधे रास्ते पर आ जाएगा. उस दिन के बाद उसने मुझे कभी परेशान नही किया

‘‘दमयंती मैने सपने में भी नही सोचा था कि तुमने इतना कुछ सहा होगा’’ --- केशव ने दर्द भरी आवाज़ में कहा

‘‘केशव औरत बाहर घूमते भेड़ियों से तो फिर भी निपट ले लेकिन घर के भेड़ियों का क्या ?… जो अपने होकर भी पराए बन जाते हैं और सब रिश्ते नाते भुला कर अपनी बहन बेटियों को बस एक शरीर समझ कर उन पर टूट पड़ते हैं’’ -----दमयंती ने रोते हुवे भावुक हो कर कहा

‘‘बस दमयंती चुप हो जाओ, मुझे लग रहा है कि मैं भी एक भेड़िया हूँ…. ना मैं तुम्हे वहां छूता ना तुम्हे ये सब याद आता, पर मेरा यकीन करो दमयंती मैं बस तुम्हे प्यार कर रहा था और कुछ नही’’

‘‘पता नही क्यों केशव मुझे अच्छा नही लगा, मुझे यकीन है कि अब तुम समझ सकते हो’’

‘‘मैं समझ रहा हूँ दमयंती, छोड़ो ये बाते देखो कितनी प्यारी चादँनी रात है’’

‘‘पर इस चादँनी रात ने आज घर से निकलना मुश्किल कर दिया था केशव, बड़ी मुश्किल से डरते डरते आई हूँ मैं’’

‘‘मैं तुम्हे बहुत प्यार करता हूँ दमयंती तुम्हारी ये दर्दनाक कहानी सुन कर दुख हुवा पर तुम पर और ज़्यादा प्यार आ रहा है क्योंकि तुमने इतना कड़वा सच मुझे बताया है जो शायद ही

कोई लड़की अपने ब्रजभूषणी या पति को बताएगी”

केशव दमयंती को बाहों में भरना चाहता है लेकिन डर रहा है कि कहीं दमयंती को फिर से कुछ बुरा ना लग जाए

“तुम मेरे सब कुछ हो, मेरा तुम्हारे सीवा कोई और नही है, मुझे कहीं ले चलो केशव, यहा से बहुत दूर जहा हम शांति से रह सकें”

“तो तुम अब मेरे साथ चलने को तैयार हो”

“मैने मना कब किया केशव, मैं तो….”

तभी केशव हाथ का इशारा करके दमयंती को टोक देता है

“रूको”

“क्या हुवा केशव”

“श्श्ह…… थोड़ी देर चुप रहो”

दमयंती बिलकुल चुप हो जाती है और केशव को हैरानी भरी नज़रो से देखती है

“तुम्हे कुछ सुनाई दे रहा है” ---- केशव ने धीरे से पूछा

“ह्म्म…. हा ँकिसी के चीखने की आवाज़ आ रही है”

“मुझे लगा मुझे आभास हो रहा है”

“मुझे डर लग रहा है केशव ये आधी रात को कौन चिंख रहा है, ऐसा लग रहा है जैसे कोई रोते हुवे चिंख रहा है”

“कुछ समझ नही आ रहा ?”

“तुमने क्या पहले भी यहा ऐसी आवाज़ सुनी है”

“नही दमयंती, वैसे भी मैं पीछले तीन दिन से ही रात को खेत में रुक रहा हूँ पहले पिता जी ही रुकते थे, क्या मैं देख कर आउ ?”

“केशव मुझे बहुत डर लग रहा है, मुझे घर जाना है”

“अरे डरने की क्या बात है, मैं तो तुम्हारे साथ हूँ ना”

तभी उन्हे इतनी ज़ोर की चिंख सुनाई देती है कि केशव भी घबरा जाता है. दमयंती बैठे बैठे केशव को जकड़ लेती है

“ये क्या हो रहा है यहा केशव ? मुझे बहुत डर लग रहा है”

“प…प…पता नही दमयंती, मैं खुद हैरान हूँ तीन दिन से तो मैने कुछ नही सुना आज ना जाने क्या हो रहा है, चलो मैं तुम्हे घर तक छोड़ आता हूँ बाद में आकर देखूँगा कि क्या चक्कर है”

“कोई ज़रूरत नही है केशव कुछ देखने की ऐसा करो तुम भी घर जाओ, सुबह आकर देखना जो देखना हो”

“अरे नही दमयंती खेतो को छोड़ कर मैं कहीं नही जा सकता मेरे अलावा यहा कोई नही है”

भाग - 2

(इधर खेत के दूसरे कोने में तीन घंटे पहले का दृश्य............)

“भुवन ये सब क्या है ?”

“क्या हुवा अब”

“मुझे ये सब अच्छा नही लगता, तुम कब पिता जी से मिल कर हमारी शादी की बात करोगे”

“अरे शादी भी कर लेंगे उमा, इतनी जल्दी क्या है, अभी इन स्तनों को थोड़ा दबा लेने दो ?”

“मेरी शादी जब कहीं और हो जाएगी ना तब तुम्हे पता चलेगा, जल्दी क्या है..... हा, दूर रखो अपने हाथ” ---- उमा ने भुवन के हाथो को दूर झटक कर कहा

“अरे छोड़ो ना उमा... हम क्या आज लड़ाई करने के लिए मिले हैं ?, देखो कितनी प्यारी चाहँनी रात है, चलो कुछ करते हैं”

“क्या करते हैं, शादी से पहले मैं अब कुछ और नहीं करूँगी समझे”

“कैसी बाते करती हो उमा जब हमें शादी करनी ही है तो क्या शादी से पहले, क्या शादी के बाद. वैसे भी तुम्हारे स्तनों को दबाने के अलावा मैने अब तक किया ही क्या है और मुश्किल से तीन-चार बार तुम्हारे होंटो का चुंबन लिया है, अब तुम ही बताओ कितना कुछ हुवा है हमारे बीच जो ऐसी बाते कर रही हो”

“मुझे कुछ नही पता, तुम जल्दी पिता जी से मिल कर शादी की बात करो वरना”

“वरना क्या उमा ?”

“वरना मैं तुमसे मिलना बंद कर दूँगी”

“उफ्फ कैसी बाते करती हो तुम, छोड़ो ना ये सब, मैं क्या शादी से मना कर रहा हूँ, देखो आज मुश्किल से तन्हाई मिली है वो भी इसलिए की आज वो बेवकूफ़ केशव खेत में है, उसका बापू होता तो आज ये पल हमें नसीब नही हो पता, वो तो रात भर खेत में घूमता रहता है”

“तुम्हे ये सब कैसे पता, क्या तुम पहले भी यहा आए हो”

“अरे नही आज पहली बार ही आया हूँ, लोगो से सुना है कि केशव का बापू खेतो की बड़े अच्छेसे रखवाली करता है”

“पर भुवन पता नही क्यों मुझे यहा कुछ अजीब सा लग रहा है”

“पहली बार रात को खेत में आई हो ना इसलिए, और कुछ नही है…..अच्छा छोड़ो ये सब आज इन स्तनों का रस पीला दो ना”

“चुप रहो मैने कहा ना अब शादी से पहले कुछ और नही”

“छोड़ो ये मज़ाक उमा, आओ ना ऐसे ज़िद मत करो”

ये कह कर भुवन उमा के स्तनों को थाम लेता है और उन्हे मसलने लगता है

“तुम बहुत बदमाश हो”

“जैसा भी हूँ तुम्हारा हूँ उमा, अच्छा एक बात बताओ आज मेरा वो देखोगी”

“धत्त…. मैं पागल नही हूँ”

“क्या वो बस पागल ही देखते हैं”

“मुझे नही पता, तुम मुझ से ऐसी बाते मत करो”

“अरे तुम तो शर्मा रही हो, शादी के बाद भी तो देखोगी”

“तब की तब देखेंगे, छोड़ो मुझे”

“अभी तो दबाना शूरू किया है, बाहर निकाल लो ना, एक बार इनका रस तो पी लेने दो, मुझे कब तक प्यासा रखोगी ?”

“जिस दिन पिता जी से शादी की बात करोगे उस दिन तक”

“अरे तब ये तन्हाई ना मिली तो, रोज रोज ऐसा मोका कहा मिलता है”

“मुझे कुछ नही पता”

“अच्छा चलो मैं अपना लिंग बाहर निकाल रहा हूँ, मैं तुम्हारी तरह डरता नही हूँ”

“नहीं ऐसा मत करो वरना मैं चली जाऊंगी”

“पागल हो क्या ? ऐसा कब तक चलेगा”

“तभी तो कहती हूँ कि शादी कर लो”

“शादी भी कर लेंगे उमा समझती क्यों नही.... अच्छा ठीक है मैं कल ही तुम्हारे पिता जी से मिलता हूँ”

“सच कह रहे हो”

“और नही तो क्या, आज तक क्या मैने कभी झूठ बोला है ?”

“वो तो है पर...”

“पर क्या ?....चलो ना कुछ करते हैं कब तक यू ही तड़पेंगे”

“भुवन नहीं यहा मुझे डर लग रहा है… फिर कभी देखेंगे”

“अरे डरने की क्या बात है, पूर्णिमा की रात है चारो तरफ रोशनी है, अंधेरा हो तो डरे भी, ऐसी रोशनी में कैसा डर, लो पकड़ो इसे”

भुवन उमा का हाथ खींच कर अपने लिंग पर रख देता है और उमा उसे डरते डरते हाथ में थाम लेती है

“इसे पहली बार छू रही हो, कुछ कहो तो सही कैसा है”

“ये ऐसा ही होता है क्या”

“हा ँउमा ऐसा ही होता है, अच्छे से उपर से नीचे तक छुओ ना, शरमाती क्यों हो ?. शादी से पहले इसे अच्छे से जान लो ताकि शादी के बाद आराम से मज़े कर सको”

“धत्त… बेसरम कहीं के”

“चलो उमा कुछ करते हैं”

“क्या करते हैं ?”

भुवन उमा को बाहों में भर लेता है और उसके कान में कहता है, चलो आज मिलन करते हैं

“पागल हो गये हो क्या, मुझे यहा इतना डर लग रहा है और तुम्हे ये सब सूझ रहा है, मुझे लगता है हूमें यहा ज़्यादा देर नही रुकना चाहिए, चलो यहा से”

“अरे पगली ऐसा मोका रोज रोज कहा ँमिलता है आओ ना”

ये कह कर भुवन उमा को बाहों में लिए लिए ज़मीन पर लेटा देता है और झट से उसका नाडा खोल कर उसकी सलवार नीचे सरका देता है

“भुवन नही”

“चुप रहो अब, वरना में कल तुम्हारे पिता जी से नही मिलूँगा, करनी है ना शादी तुमने मुझ से या फिर…”

“करनी है भुवन पर..”

“तो पर क्या ? .. चलो अच्छी पत्नी बन कर दीखाओ”

“नहीं भुवन रूको ना, मुझे डर लग रहा हैं यहा, फिर कभी करेंगे, आज ही करना क्या ज़रूरी है”

पर भुवन उमा की एक नही सुनता और अपने लिंग को उसकी योनि पर रख कर ज़ोर लगा कर लिंग को उसके अंदर धकैल देता है

“आआईयईईईईईई” --- उमा चील्ला उठती है

“रुक जाओ भुवन दर्द हो रहा है”

“एक मिनट, मैं तोड़ा थूक लगाता हूँ, फिर आराम से होगा”

“भुवन मुझे यहा बहुत डर लग रहा है, तुम किसी और दिन कर लेना, मैं तुम्हे नही रोकूंगी, अभी चलो यहा से”

“इतनी प्यारी चाद‌ँनी रात में कोई डरता है क्या, देखो अब चिकना हो गया है, अब आराम से अंदर जाएगा”

ये कह कर भुवन खुद को फिर से उमा के अंदर धकैल देता है

“आअहह” --- उमा फिर दर्द से कराह उठती है

“इतनी ज़ोर से चील्लाने की क्या ज़रूरत है, कोई सुन लेगा”

“मैं कब चील्लाइ भुवन अब दर्द में क्या कोई कराह भी नही सकता ?”

तभी उन्हे बहुत ज़ोर की चिंख सुनाई देती है जिसे सुन कर दोनो घबरा जाते हैं

भुवन ये कोई और चील्ला रहा है, वो मैं नही थी

“स्श्श्ह्ह चुप रहो”

वो चिंख़ उन्हे अपने करीब आती महसूस होती है और दोनो थर थर काँपने लगते हैं

“भुवन ये क्या है, मुझे बहुत डर लग रहा है, मैं कह रही थी ना कि यहा मुझे कुछ अजीब लग रहा है, चलो जल्दी यहा से”

तभी उन्हे किसी के भागने की आहट सुनाई देती है

“भुवन…” --- उमा कुछ कहना चाहती है लेकिन भुवन उसके मूह पर हाथ रख देता है

“पागल हो क्या ? थोड़ी देर चुप नही रह सकती, बिलकुल चुप रहो” --- भुवन उमा के मूह पर हाथ रखे हुवे उसके कान में धीरे से कहता है

लेकिन तभी उन्हे फिर से बहुत ज़ोर की चिंख सुनाई देती है

“उमा अपने कपड़े ठीक करो, पर आराम से, शांति से, कोई आवाज़ मत करना”

“ठीक है” --- उमा अपनी गर्दन हिला कर इशारा करती है

भुवन भी अपने कपड़े ठीक करने लगता है

तभी उन्हे अपने बहुत करीब किसी के कदमो की आहट सुनाई देती है. उन्हे ऐसा लगता है जैसे कोई उनकी तरफ आ रहा है

“उमा मेरी बात ध्यान से सुनो, चाहे कुछ हो जाए पीछे मूड कर मत देखना और जितना हो सके उतनी ज़ोर से भागना, ठीक है, और हा मेरा हाथ मत छोड़ना” --- भुवन उमा के कान में कहता है

और ये कह कर वो उमा का हाथ पकड़ कर उसे वहां से भगा ले चलता है, दोनो बिना पीछे देखे भागते चले जाते हैं

भागते भागते भुवन एक पत्थर से टकरा जाता है और लड़खड़ा कर गिर जाता है, उमा गिरते गिरते बचती है

उमा तुम भागो में आ रहा हूँ मेरा अंगूठा चिल गया है, ये रास्ता सीधा खेतो से बाहर जा रहा है, तुम जल्दी यहा से निकलो

"मैं तुम्हे छोड़ कर कहीं नही जाऊंगी भुवन, तुम्हारे साथ ही जाऊंगी जहा जाना है"

चीखने की आवाज़ बढ़ती ही जा रही है

भुवन मुश्किल से खड़ा होता है और उमा का हाथ थाम कर फिर से भागने लगता है

इधर दमयंती, केशव को समझा रही है कि वो आज रात घर चला जाए, पर वो नही मान रहा

"ऐसे डर कर भागना अच्छा नही लगता दमयंती, क्या पता ये किसी का मज़ाक हो"

"ये बहुत भयानक आवाज़ है केशव, ये मज़ाक नही हो सकता"

"जो भी हो पर मैं यहीं रहूँगा, चलो तुम्हे घर छोड़ आता हूँ"

तभी दमयंती को कुछ ऐसा दीखता है जिसे देख कर वो सहम जाती है

"केशव पीछे मूड कर देखो" --- दमयंती डरी हुई आवाज़ में कहती है

केशव पीछे मूड कर देखता है

"उसे बहुत दूर दो साए दीखाई देते हैं"

“दमयंती तुम इस पेड़ के पीछे चुप जाओ मैं देखता हूँ कि बात क्या है”,

“नही केशव मुझे अकेला मत छोड़ो मुझे बहुत डर लग रहा है”

“ठीक है फिर, चलो हम दोनो पेड़ के पीछे चलते हैं”

दौनो पेड़ के पीछे छुप जाते हैं

दो साए जब करीब आते हैं तो केशव मन ही मन कहता है

“अरे ये तो भुवन और उमा हैं, ये इस वक्त यहा क्या कर रहे हैं ? क्या इन्होने ही यहा ये तूफान मचा रखा है”

जब वो बहुत करीब आ जाते हैं तो केशव दमयंती को वहीं पेड़ के पीछे रुकने का इशारा कर के उन दोनो के सामने आ जाता है

“भुवन ये क्या कर रहे हो तुम यहा, और उमा तुमसे ये उम्मीद नही थी कि तुम इस तरह रात को खेत में हंगामा करती फ़िरोगी” --- केशव ने गुस्से में कहा

“केशव मेरी बात सुनो हमने कोई हंगामा नही किया, पता नही कौन है वहां, हम तो डर के मारे यहा भाग कर आए हैं” --- भुवन ने कांपति आवाज़ में कहा

भुवन केशव को पूरी बात सुनाता है, तभी उन्हे फिर से ज़ोर की चिंख सुनाई देती है

“देखा केशव ये कोई ओर है हम नही, हम भला क्यों इतनी बुरी तरह चीखेंगे” – भुवन ने केशव से कहा

“पर तुम इतनी रात को यहा क्या कर रहे हो, ये तो अच्छा है की मैं यहा हूँ, पिता जी होते तो तुरंत तुम्हे घसीट कर उमा के बापू के पास ले जाते, और उमा तुम, तुम्हे क्या यही मिला था, एक नंबर का बदमाश और लफंगा है ये”

“मैं भुवन से प्यार करती हूँ केशव, हम शादी करने वाले हैं, भुवन जल्दी ही बापू से मिल कर शादी की बात करेगा” – उमा ने कहा

“पर तुम्हारे बापू को भुवन एक आँख नही भाता वो इस शादी के लिए कभी राज़ी नहीं होंगे” ---- केशव ने कहा

“बस केशव… बहुत हो गया.. तुम अपने काम से काम रखो… ठीक है, हमारे साथ जो होगा देखा जाएगा, चलो उमा…” --- भुवन ने कहा

“हा-ँहा ँजाओ यहा से, मैने तुम्हे यहा नही बुलाया था, आगे से यहा नज़र भी मत आना वरना..” --- केशव ने कहा

“वरना क्या बे, क्या कर लेगा तू मेरा”

“केशव………………” --- पेड़ के पीछे से दमयंती चिल्लाती है

“ये कौन है” --- भुवन ने हैरानी मैं पूछा

केशव तुरंत भाग कर पेड़ के पीछे जाता है. वो देखता है कि दमयंती डरी सहमी खड़ी है और थर थर काँप रही है

“क्या हुवा दमयंती, डरो मत मैं यहीं तो हूँ”

“वो वो अभी अभी सामने के खेत में कोई घुस्सा है”

“क्या कह रही हो, मुझे तो कुछ नही दीखा”

“मेरा यकीन करो मैने अपनी आँखो से देखा है केशव”

तभी भुवन भी पेड़ के पीछे आ जाता है, उसके पीछे-पीछे उमा भी आ जाती है.

“ओह हो.. हमसे तो बड़ी बड़ी बाते कर रहे थे और खुद यहा ठाकुर की चिड़िया को फँसा रखा है, लगता है तुम्हे अपनी जान प्यारी नही है”

“मूह संभाल कर बात करो भुवन हम एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं”

“अच्छा तुम्हारा प्यार तो है प्यार और मेरा प्यार बेकार” --- भुवन ने हंसते हुवे कहा

“भुवन रहने दो क्यों उनके प्यार का अपमान कर रहे हो” --- उमा ने भुवन से कहा

“क्या तुम भूल गयी अभी ये हमें क्या कह रहा था ?”

“हम उसके खेत में हैं भुवन, हम भी तो ग़लत हैं” – उमा ने कहा

तभी उन्हे अपने सामने की फसलों में तेज हलचल सुनाई देती है जिसके बाद एक भयानक चीख फ़िज़ा में गूऩ्ज़ उठती है

“केशव ये सब क्या है, मुझे घर छोड़ दो, मुझे बहुत डर लग रहा है” – दमयंती ने कहा

“डरने की कोई बात नही है, जब तक मैं जींदा हू ँतुम्हे कुछ नही होगा” --- केशव ने दमयंती को गले लगा कर कहा

“और अगर तुम नही रहे तो हहहे” --- भुवन ने हंसते हुवे कहा

“भुवन पागल हो गये हो क्या” ---- उमा ने भुवन को डाटँ कर कहा

“भुवन उमा को लेकर यहा से जल्दी निकल जाओ, मुझे लगता है आज यहा कुछ गड़बड़ है, ये सब बाते हम बाद में करेंगे” --- केशव ने कहा

“प..प…पर लगता है…. अब यहा से निकलना मुश्किल है” ---- भुवन ने कांपति आवाज़ में कहा

“क्या बकवास कर रहे हो… हद होती है किसी बात की”

“अपने पीछे देखो केशव मैं बकवास नही कर रहा”

“केशव पीछे मूड कर देखता है, उसे कुछ ऐसा दीखाई देता है जिसे देख कर उसकी रूह काँप उठती है”

‘‘दमयंती पीछे मत देखना’’

‘‘क..क..क क्या है केशव’’

‘‘हे भगवान ये क्या बला है’’ --- उमा भुवन से लिपट कर कहती है

‘‘ये सब सोचने का वक्त नही है उमा भागो यहा से जितनी तेज हो सके भागो.... केशव सोच क्या रहे हो आओ निकलो यहा से’’

ये कह कर भुवन और उमा वहां से भाग लेते हैं

‘‘दमयंती मेरा हाथ पकड़ो और भागो यहा से’’ ----- केशव ने दमयंती से कहा और उसे खींच कर भुवन और उमा के पीछे-पीछे भगा ले चला.

भाग - 3

“ओह.. हो… ये कौन बदतमीज़ है”

“ये मैं हूँ”

“तू… रुक तुझे अभी मज़ा चखाता हूँ….”

“कब से आवाज़ लगा रही हूँ, उठ ही नही रहे थे, इसलिए मैने पानी डाल दिया”

“भागती कहा है, रुक….. इस खेत के कोने-कोने से वाकिफ़ हूँ मैं देखता हूँ कहा छुपोगी जाकर”

“अच्छा…देखते हैं”

वो जाकर घनी फसलों में चुप जाती है

केशव चुपचाप दबे पाँव पीछे से आकर उसे दबोच लेता है

“अब पता चलेगा तुझे…. आज तुझे तालाब में ना डुबोया तो मेरा नाम भी केशव नही”

“अरे, सविता !! बेटी तुम कहा हो ?”

“मैं यहा हूँ पिता जी, देखो ना भैया मुझे तालाब में डुबोने जा रहे हैं”

“तुम दोनो हर दम बस लड़ाई झगड़ा किया करो, यहा खेत में काम कौन करेगा ?”

“पिता जी आज फिर इसने मेरे उपर पानी डाल दिया, ये कब सुधरेगी” --- केशव ने सविता का कान पकड़ कर उसे फसलों से बाहर लाते हुवे कहा .

“छोड़ दो उसे केशव और चलो आज बहुत काम करना है, धूप तेज हो जाएगी तो काम करना मुश्किल होगा”

“जी पिता जी पर इसे समझाओ वरना मैं इसे जान से मार दूँगा” --- केशव ने थोडा गुस्से में कहा

“मेरे प्यारे भैया ऐसा मत कहो वरना तुम्हे राखी कौन बाधँेगा ?”

“अच्छा ठीक है, मैं खुद मर जाता हूँ”

“नही भैया ऐसा क्यों कहते हो, मैं आगे से ऐसा नही करूँगी” --- सविता ने केशव के गले लग कर कहा

“अजीब प्यार है तुम दोनो का, सारा दिन लड़ते झगड़ते रहते हो पर एक दूसरे के बिना तुम्हारा मन भी नही लगता”

“पिता जी मैं इसे इतना प्यार करता हूँ तभी तो ये मुझे इतना परेशान करती है”

ये सब बीते कल की घटना है.

सविता कोई गीत गुन-गुनाति हुई हसँती मुस्कुराती हुई अपनी दीदी के साथ आगे बढ़ रही है, और ये सब सोच रही है.

“अरे क्या सोच रही है सविता”

“कुछ नही दीदी बस यू ही कल की बात याद आ गयी थी”

“तूने आज कोई शरारत की ना तो केशव बहुत मारेगा तुझे” --- कविता ने कहा

सविता ने कविता की बात सुन कर मूह लटका लिया.

चिड़ियो की आवाज़ चारो तरफ गूँज रही है. सूरज की पहली किरण खेतो पर पड़ रही है, ऐसा लग रहा है जैसे प्रकृति ने चारो तरफ सोना बिखेर दिया हो. सविता और कविता बाते

करते हुवे खेत की तरफ बढ़ रहे हैं. उनके पीछे पीछे उनके पिता जी, बंसीलाल भी आ रहे हैं

“ये चिड़ियो की आवाज़ सुबह सुबह कितनी प्यारी लगती है हैं ना दीदी”

“हाँ बहुत प्यारी लगती है, रोज यही बात कहती हो तुम, कुछ और नही है क्या कहने को सुबह सुबह”

“पर देखो ना ये चिड़ियो की आवाज़ ही है जिसके कारण हम रोज वक्त से उठ जाते हैं वरना हमें पता ही ना चले वक्त का” --- सविता ने कहा

“भगवान को तुझे चिड़िया ही बना-ना चाहिए था, चिड़ियों को दाना डालती है, पानी देती है, हर रोज उनकी तारीफ़ करती है, पता नही क्या है इन चिड़ियों में, हम से ज़्यादा तू इन चिड़ियों से प्यार करती है” ---- कविता ने कहा

सविता, कविता की बात सुन कर बहुत उदास हो जाती है

“अरे क्या हुवा ये चेहरा क्यों लटका लिया, मैने ब्रजभूषण को तो कुछ नही कहा ?”

सविता की आँखो में आसूँ उतर आते हैं.

“दीदी चिड़ियों को प्यार दे के मैं खुद को ब्रजभूषण के नज़दीक महसूस कर पाती हूँ, वरना अब बचा ही क्या है”

“हाँ हाँ जानती हूँ, यहा खेत में भी तुम ब्रजभूषण के लिए ही आती हो, आखरी बार यहीं देखा था ना तुमने उसे” --- कविता ने कहा

“सब कुछ जान कर भी ऐसी बाते करती हो दीदी, मुझे दुख दे कर तुम्हे क्या मिल जाता है”

कविता सविता को रोक कर गले लगा लेती है और कहती है, “ अरे पगली, मैं क्या तेरी दुश्मन हूँ, जाने वाले लौट कर नही आते, कब तक ब्रजभूषण की यादों को अपने सर पर धोती रहोगी, भूल जाओ उसे अब”

“दीदी कुछ भी कहो पर मुझे मेरे ब्रजभूषण की यादों से जुदा मत करो, मैं जी नही पाऊंगी, यहा खेतो में भी मैं अक्सर इसलिए आती हूँ क्योंकि आखरी बार ब्रजभूषण को यहीं देखा था, लगता है अभी वो कहीं से आएगा और.....”

ये कह कर सविता फूट-फूट कर रोने लगती है

“बस-बस सविता चुप हो जाओ, मेरा मकसद तुम्हे दुख देना नही है पगली, मैं तो बस ये कह रही थी कि जींदगी किसी के लिए नही रुकती. कब तक ब्रजभूषण की यादों में डूबी रहोगी, कल को शादी होगी तो भी तो तुम्हे उसे भुलाना ही पड़ेगा” --- कविता ने सविता को समझाते हुवे कहा

“मैं शादी नही करूँगी दीदी, मैं ब्रजभूषण के सीवा किसी से शादी नही कर सकती”

“कहा है ब्रजभूषण ?, कब आएगा ब्रजभूषण ?, पता नही वो जींदा है भी या नही, क्यों उसके लिए इतनी पागल बन रही हो, अब मैं ये पागल-पन और बर्दास्त नही कर सकती”

“फिर मुझे जहर दे दो दीदी, पर मैं ये पागल-पन नही छोड़ सकती. और हां ब्रजभूषण इस दुनिया मैं हो या ना हो पर वो मेरे दिल में हमेशा जींदा रहेगा” --- सविता ने भावुक हो कर कहा

“तू बस केशव की बात सुनती है, हम तो तेरे कोई हैं ही नहीं, अब वो ही तुझे समझाएगा”

“भैया मेरे प्यार को समझते हैं, वो मुझे कभी किसी बात के लिए मज़बूर नहीं करेंगे”

“देख सविता, मैं तो कल चली जाऊंगी, कल तेरे जीजा जी मुझे लेने आ रहे हैं, कल से मैं तुम्हे मज़बूर नही करूँगी, हाँ पर इतना ज़रूर कहूँगी की जींदगी आगे बढ़ने का नाम है ना की पीछे चलने का, बाकी अब तुम जवान हो गयी हो, अपना भला बुरा समझ सकती हो” ---- कविता ने कहा

बाते करते करते वो कब केशव की खटिया के पास पहुँच गये उन्हे पता ही नही चला

“अरे भैया आज कैसे उठ गये, बड़ी अजीब बात है ?” ---- सविता ने हैरानी में कहा

“तुमने क्या केशव को कुंभकरण समझ रखा है”

“वो तो ठीक है पर भैया है कहा”

“अरे होगा यहीं कहीं”

“क्या हुवा कविता” ---- बंसीलाल ने पूछा

“कुछ नही पिता जी, केशव को ढूंड रहे हैं, आज वो बड़ी जल्दी उठ गया” --- कविता ने जवाब दिया

“बड़ी अजीब बात है, उसे तो रोज सविता बड़ी मुश्किल से उठाती है, आज अपने आप कैसे उठ गया वो, चलो अच्छा ही है, जल्दी उठना सेहत के लिए अच्छा होता है” --- बंसीलाल ने कहा

“पर पिता जी भैया है कहाँ ?” – सविता ने पूछा

“अरे होगा यहीं कहीं, चलो ढूंड-ते हैं” --- कविता ने जवाब दिया

तीनो बाप बेटी केशव को ढूंड-ने निकल पड़ते हैं

“दीदी एक बात अजीब नही है ?” – सविता ने पूछा

“क्या हुवा अब ?”

“भैया के बिस्तर को देख कर तो ऐसा लग रहा था कि उस पर कोई सोया ही ना हो”

“अरे केशव ने उठ कर बिस्तर ठीक कर दिया होगा, तू भी बस बेकार की बाते सोचती रहती है” --- कविता ने जवाब दिया

पर कविता ये बात नही जानती थी कि सविता बेकार की नही बड़ी काम की बात कर रही थी, जिस पर ध्यान देने की बहुत ज़रूरत थी.

“दीदी ये देखो !!”

“अरे ये तो खून जैसा लग रहा है, इतना लहू यहा किसका बह गया” ---- कविता ने हैरानी में कहा

“दीदी मुझे तो कुछ अजीब लग रहा है”

“अरे डर मत केशव ने ज़रूर किसी जानवर को लाठी मार कर यहा से भगाया होगा, ये किसी जानवर का खून लगता है”

तभी उन्हे सामने से उनके पिता जी आते हुवे दीखाई देते हैं

“क्या हुवा, दीखाई दिया कहीं केशव ?” बंसीलाल ने पूछा

“नही पिता जी, हमने यहा चारो तरफ देख लिया है, पर भैया यहा कहीं नही हैं, और ये देखिए, यहा इतना सारा खून बीखरा पड़ा है, मुझे तो डर लग रहा है” ---- सविता ने हड़बड़ा कर कहा

डरने वाली बात ही थी, बंसीलाल भी पूरा खेत छान आया था, पर केशव का कहीं आता पता नही था, उसे भी इतना खून देख कर घबराहट हो रही थी.

(इधर पिछली रात को दमयंती के घर का दृश्य)

“हमें दर्द होता है.......आप धीरे से नही कर सकते क्या”

“चुप कर साली दर्द होता है...... अभी नोच कर कच्चा चबा जाऊंगा” --- भैरव ने शकुंतला के स्तनों को बुरी तरह मसलते हुवे कहा

“आप हमसे कौन से जनम का बदला ले रहे हैं” --- शकुंतला ने पूछा

“लगता है आज फिर तुम्हारा दीमाग खराब हो गया है, कुत्ते की दूम कभी सीधी नही होती”

“हमसे इतनी नफ़रत है तो आप हमें मार क्यों नही देते”

“चुप कर साली, वरना सच में मार देंगे”

ये कह कर भैरव ने शकुंतला के स्तनों पर अपने दाँत गढ़ा दिए

“आहह” --- शकुंतला कराह कर रह गयी

“चल उल्टी हो जा... आज तेरे पीचवाड़े की बारी है”

“नही ऐसे ही कर लीजिए ना”

“घूमती है कि नही या फिर मारु एक थप्पड़”

शकुंतला सुबक्ते हुवे लेटे-लेटे घूम जाती है

“साली हमेशा बात-बात पर नखरे करती है, तेरे मा-बाप ने क्या तुझे कुछ तमीज़ नही सीखाई”

“मेरे मा-बाप ने आपका क्या बिगाड़ा है जो बात बात पर उन्हे बीच में ले आते हैं, जो कहना है मुझे कहिए”

“साली फिर ज़ुबान लड़ाती है” --- भैरव ने शकुंतला के बाल खींचते हुवे कहा

“आहह………. आप क्यों मेरे मा-बाप के पीछे पड़े हैं फिर” --- शकुंतला ने कराहते हुवे कहा

“तेरे बाप के कारण, यहा की ज़मींदारी हाथ से चली गयी कुतिया…वरना आज मैं जाने कहा होता”

“इसमें उनकी कोई ग़लती नही थी”

“अभी बता-ता हूँ तुझे, ये जाएगे ना अंदर तो पता चलेगा तुझे”

भैरव अपने लिंग पर हल्का सा थूक लगा कर शकुंतला के गुदा द्वार में समा जाता है

“आअहह……..नही…. धीरे से कीजिए ना, हमें बहुत दर्द हो रहा है”

“आ गयी अकल ठीकाने, मुझसे ज़बान लड़ाती है… हा…. आगे से मेरे साथ बकवास की ना तो तेरी फाड़ कर रख दूँगा ?”

शकुंतला सर को तकिये पर रख कर सूबक-सूबक कर रोने लगती है, पर भैरव उसकी परवाह किए बिना उसके साथ सहवास जारी रखता है

ये है भैरव प्रताप सिंग, दमयंती का बड़ा भाई और भवानी प्रताप सिंग का बड़ा बेटा. शकुंतला से भैरव की शादी कोई एक साल पहले ही हुई है, पर उनकी शादी शुदा जींदगी में इस सब के अलावा और कुछ नही है.

भैरव अपनी हवस की प्यास भुजा कर सो चुका है पर शकुंतला अभी भी करवट लिए सूबक रही है.

अचानक उसे बाहर से कोई चिंख सुनाई देती है, जिसे सुन कर वो घबरा जाती है और भैरव से लिपट जाती है

भैरव हड़बड़ा कर उठ जाता है

“क्या बात है” --- भैरव शकुंतला को डाटँ कर पूछता है

“आप को कुछ सुनाई नहीं दे रहा है क्या ?”

“क्या है…….. सो जाओ आराम से”

“अरे आपको कुछ सुनाई नही दे रहा क्या ?”

“शकुंतला चुपचाप सोती हो या नही, या फिर दूं एक थप्पड़ गाल पे” --- भैरव प्रताप ने शकुंतला को डाटँ कर कहा

शकुंतला बिना कुछ कहे करवट ले कर लेट जाती है और अपनी किस्मत को रोने लगती है. वो सोच रही है कि उसकी जींदगी में शायद पति का प्यार है ही नही

शकुंतला को कब नींद आ जाती है उसे पता ही नही चलता

पर वो रोजाना की तरह सुबह जल्दी उठ जाती है.

जैसे ही वो अपने कमरे से बाहर निकलती है उसे जीवन प्रताप सिंग मिल जाता हैं

“चाचा जी सुप्रभात” --- शकुंतला पावँ छूते हुवे कहती है

“अरे शकुंतला बेटी पावँ मत छुवा करो”

“क्या हुवा चाचा जी”

“कुछ नही-कुछ नही, अच्छा ये बता भैरव ने फिर तो कुछ नही कहा”

“जी….. नही” --- शकुंतला ने सोचते हुवे कहा. वो और कहती भी क्या

पीछले दिन जीवन ने भैरव को रसोई में शकुंतला के मूह पर थप्पड़ मारते हुवे देख लिया था. उस वक्त जीवन ने आकर भैरव को समझाया था कि बहू पर इस तरह हाथ उठाना अच्छा नही होता.

"क्या मंदिर जा रही हो बेटी" --- जीवन प्रताप ने पूछा

"जी चाचा जी, दमयंती के साथ मंदिर जाऊंगी, अभी देखती हूँ कि वो उठी है या नही"

"हाँ-हाँ जाओ बेटा...जाओ "

शकुंतला सीढ़ियाँ चढ़ कर दमयंती के कमरे के बाहर पहुँच जाती है, और उसे आवाज़ लगाती है --- "दमयंती उठ गयी क्या, चलो मंदिर चलते हैं"

पर अंदर से कोई जवाब नही आता

वो अंदर जा कर देखती है तो पाती है कि दमयंती कमरे में नही है

शकुंतला मन ही मन सोचती है "अरे दमयंती क्या आज फिर अकेली मंदिर चली गयी, ये मेरा इंतेज़ार क्यों नही करती. इस घर में एक चाचा जी ही हैं जो मुझ से ठीक से बात करते हैं, वरना हर कोई अपनी दुनिया में गुम है"

वो इस बात से अंजान है कि आख़िर क्यों जीवन चाचा उसके साथ इतने प्यार से बात करता है.

शकुंतला अकेली ही मंदिर जाती है. पर मंदिर पहुँच कर वो देखती है कि दमयंती मंदिर में भी नही है

"अरे ये दमयंती कहा है, मंदिर का रास्ता तो एक ही है, वो मंदिर आई थी तो कहा गयी.... हो सकता है वो घर पर ही हो" ---- शकुंतला सोचती है और मंदिर में हाथ जोड़ कर वापस घर की तरफ चल देती है.

शकुंतला जब घर पहुँचती है तो पूरे घर में, हर तरफ दमयंती को ढूंडती है, पर वो उसे कहीं नही मिलती

तभी उसे सामने से भवानी प्रताप सिंग आता हुवा दीखाई देता है

"सुप्रभात पिता जी" ---- शकुंतला अपने ससुर के पावँ छू कर कहती है

"जीती रहो बहू, दमयंती कहा है ?"

"पिता जी मैं भी उसे ही ढूंड रही हूँ, पर वो जाने कहा है"

"क्या बकवास कर रही हो ?"

शकुंतला काँप उठती है

"जाओ बुला कर लाओ उसे, आज उसे देखने लड़के वाले आ रहे हैं"

"जी पिता जी मैं फिर से देखती हूँ, वो यहीं कहीं होगी"

पर शकुंतला को दमयंती घर में कहीं नही मिलती

"भैया... सुप्रभात"

"सुप्रभात जीवन... आओ,.... तुमने दमयंती को देखा है क्या" – भवानी प्रताप ने पूछा

"नही भैया ? क्यों क्या हुवा ?"

"कुछ नही बहू कह रही थी कि वो कहीं नही दीख रही"

"होगी यहीं कहीं भैया, कहा जाएगी"

तभी शकुंतला वहां आती है और अपने ससुर को कहती है, "पिता जी मैने फिर से देख लिया दमयंती घर में नही है"

"अरे तुम तो मंदिर गयी थी ना उसके साथ" – जीवन ने शकुंतला से पूछा

“जी चाचा जी, जाना तो दमयंती के साथ ही था पर मैं जब दमयंती के कमरे में गयी थी तो वो वहां थी ही नही, इसलिए मैं अकेली ही मंदिर चली गयी”

“क्या मतलब….. तुम कहना क्या चाहती हो ?” भवानी प्रताप ने गुस्से में कहा

“कुछ नही पिता जी….. मैं तो बस ये कह रही थी कि दमयंती ना जाने सुबह-सुबह कहा चली गयी” --- शकुंतला ने दबी आवाज़ में कहा

“मंदिर के अलावा वो कहा जा सकती है, वो वहीं होगी” --- भवानी प्रताप ने कहा

“जी… पर मुझे वो मंदिर में भी नही मिली” --- शकुंतला ने कहा

“ठीक है-ठीक है जाओ अपना काम करो” --- भवानी प्रताप ने कहा

“जी पिता जी” --- शकुंतला ने कहा और चुपचाप वहां से चली गयी.

“बहुत ज़ुबान लड़ाती है ये लड़की” --- भवानी गुस्से में बोला

“अभी नादान है भैया धीरे धीरे समझ जाएगी” --- जीवन ने कहा

इधर खेत में सविता, कविता और बंसीलाल ज़मीन पर बीखरे खून को देख कर डरे, सहमे खड़े हैं

अचानक सविता को सामने मक्की के खेतो में कुछ दीखता है

“वो..वो कौन है वहां” --- सविता हड़बड़ा कर कहती है

“कहा पर सविता” --- कविता ने पूछा

“अभी-अभी वहां सामने की फसलों से कोई झाँक रहा था”

बंसीलाल फॉरन उस तरफ दौड़ कर जाता है और पूरा खेत फिर से छान मारता है

“वहां तो कोई भी नही था” --- बंसीलाल ने हान्फ्ते हुवे कहा

“तुझे कुछ वेहम हुवा होगा, सविता” – कविता ने कहा

“नही दीदी मैने बहुत अच्छे से किसी को झाँकते देखा है, पर ये इतनी जल्दी हुवा कि मैं देख नही पाई कि वो कौन था”

“अरे बंसीलाल भुवन को कहीं देखा है क्या”

बंसीलाल ने पीछे मूड कर देखा तो पाया कि भुवन का बापू सोहन लाल उसे दूर से आवाज़ लगा कर पूछ रहा था

जब सोहन लाल नज़दीक आ गया तो बंसीलाल ने पूछा

“क्या हुवा सोहन”

“भुवन कल रात से गायब है, हर तरफ ढूंड लिया, पर उसका कोई आता पता नही है, अभी अभी उमा का भाई घर आया था, उमा के बारे में पूछ रहा था. पता नही क्या चक्कर है. उमा भी गायब है और भुवन भी, उमा का भाई मरने मारने की धमकी दे कर गया है, अब तुम ही बताओ क्या करूँ……. इस नलायक ने तो हमें परेसान कर रखा है”

“चिंता मत करो सोहन, भुवन मिल जाएगा, कहाँ जाएगा, होगा यहीं कहीं” – बंसीलाल ने कहा

“वो तो ठीक है…. चिंता की बात ये है कि उमा भी गायब है, अब तुम्हे तो पता ही है, उमा का भाई ठाकुर का ख़ास आदमी है, उमा ना मिली तो वो हमें बर्बाद कर देगा”

“डरो मत सोहन, मैं खुद यहा परेसान हूँ, केशव ना जाने कहा चला गया ?”

“क्या मतलब ? क्या केशव भी गायब है, कहीं उमा उसके साथ तो….”

“ज़ुबान संभाल कर बात करो सोहन, भला केशव का उमा से क्या लेना देना”

“माफ़ करो भाई, मैं बहुत परेसान हूँ बस यू ही मूह से निकल गया. मैं तो यहा भुवन को ढूँडने आया था. हर तरफ देख लिया, सोचा तुम्हारे खेतो में भी देख लूँ…..अच्छा मैं चलता हूँ”

सविता और कविता चुपचाप खड़े-खड़े उन दौनो की बाते सुन रहे थे.

“सविता क्या उमा अभी भी घर आती जाती थी” – कविता ने पूछा

“नही दीदी, जब से भैया ने उसे बुरी तरह डांटा था तब से उसने घर आना बंद कर दिया था”

ये कह कर सविता अचानक फसलों की तरफ भागती है

“अरे क्या हुवा, कहा जा रही है ?”

“यहा कोई है दीदी मैने फिर से किसी को देखा है”

“ये कह कर सविता मक्की की फसलों में घुस्स जाती है”

“अरे रूको मैं भी आ रहा हूँ” --- बंसीलाल ने सविता के पीछे-पीछे भागते हुवे कहा

“पिता जी मैं भी आउ क्या” – कविता ने पूछा

“नही तुम यहीं रूको हम देखते है क्या बात है”

“हे कौन हो तुम यहा क्या कर रहे हो, सामने क्यों नही आते, ये छुप-छुप कर क्या देखते हो, हिम्मत है तो सामने आओ, मैं तुम्हारा वो हाल करूँगी कि नानी याद आ जाएगी. तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमारे खेतो में घुसने की” ----- सविता ने खेत के बीच में चील्ला कर कहा

सविता और बंसीलाल बार-बार हर तरफ देखते है, पर उन्हे फिर से कोई नही मिलता.

सविता हाफँती हुई फसलों से बाहर आती है

“क्या हुवा सविता, कौन था वो”

“पता नही दीदी हमने हर तरफ देख लिया पर दीखा कोई नही”

“ऐसा कैसे हो सकता है, तुझे ज़रूर कुछ वेहम हो रहा है”

“हो सकता है ये वेहम हो…. पर ये दूसरी बार मैने किसी को देखा है, …. मेरी आँखे दो बार धोका कैसे खा सकती हैं, यहा कुछ तो अजीब हो रहा है आज ?”

ये कह कर सविता रोने लगती है

“अरे क्या हुवा पगली…. रो क्यों रही है, कुछ नही है अभी केशव आ जाएगा तो सब ठीक हो जाएगा”

“बिलकुल इसी तरह एक दिन मैने और भैया ने मिल कर ब्रजभूषण को यहा खेतो में ढूंढा था, पता नहीं क्यों बार बार वो दिन याद आ रहा है”

“अरे पागल हो क्या…. चल थोड़ी देर बैठते हैं, केशव ज़रूर कहीं गया होगा, आ जाएगा थोड़ी देर में”

“पर ये कौन है खेत में दीदी जो दीखाई भी देता है…. पर अगले ही पल गायब हो जाता है”

“चल छोड़ ये बाते, चिंता मत कर. पिता जी कहा हैं ?”

“वो अभी भी फसलों में ही हैं”

तभी बंसीलाल मक्की की फसलों से निकल कर सविता और कविता के पास आता है और कहता है,

“पता नहीं क्या हो रहा है यहा ?, सविता बेटी क्या तुमने सच में किसी को देखा है या फिर ये नज़रो का धोका है”

“पता नही पिता जी ठीक से मैं भी कुछ नही कह सकती.... पर मुझे एक साया सा फसलों से झाँकता हुवा दीखा था.... हो सकता है ये मेरा वेहम हो... पर पता नही क्यों ऐसा लगता है कि यहा खेत में आज कुछ गड़बड़ है....”

केशव, भुवन और उमा के गायब होने की खबर गाँव में आग की तरह फैल जाती है. पर किसी को ये नही पता कि ठाकुर भवानी प्रताप की लड़की दमयंती भी गायब है. दमयंती के गायब होने की खबर सिर्फ़ ठाकुर की हवेली तक सीमित है. हवेली में सभी परेशान हैं, और परेशान हो भी क्यों ना ?, दमयंती को देखने लड़के वाले आने वाले हैं और दमयंती का कुछ आता पता नही है.

भाग - 4

“अरे आप उठ गये” --- शकुंतला ने भैरव के पावँ छूते हुवे कहा

“हा ँउठ गया क्यों ? और ये रोज-रोज नाटक मत किया कर पावँ छूने का”

“ये नाटक नही है”

“चुप कर मैं तुझ से सुबह-सुबह बहस नही करना चाहता”

“पिता जी दमयंती को लेकर परेशान हैं”

“क्यों क्या हुवा ?”

“दमयंती को देखने लड़के वाले आने वाले हैं पर….”

“पर क्या” – भैरव ने गुस्से में पूछा

“पर वो घर में नही है”

“क्या बकवास कर रही हो, होगी यहीं कहीं, चल तू अपना काम कर” --- भैरव ने कहा और कह कर अपने पिता जी के कमरे की तरफ चल दिया

भवानी प्रताप अपने कमरे में कुर्सी पर बैठा है, उसके सामने सर झुकाए उसका ख़ास नौकर भिका खड़ा है. जैसे ही भैरव कमरे में घुसता है वो देखता है कि उसके पिता जी भिका से कुछ बात कर रहे हैं

“भिका जाओ मंदिर के चारो तरफ देखो, दमयंती वहीं आस पास होगी”

“जी मालिक” --- भिका ने सर झुका कर कहा

“क्या हुवा पिता जी” --- भैरव ने पूछा

“पता नही ये दमयंती सुबह-सुबह कहा चली गयी” --- भवानी प्रताप ने कहा

“अच्छा….तो ये शकुंतला ठीक ही कह रही थी” --- भैरव ने कहा

“क्या ठीक कह रही थी, उसे डाटँ कर रखा करो, बहुत ज़ुबान लड़ाती है वो”

“मालिक मैं चलूं ?” --- भिका ने पूछा

“हाँ-हाँ जाओ, मेरा मूह क्या देख रहे हो, जल्दी वहां देख कर आओ, और हाँ पुजारी से भी पूछ लेना की उसने दमयंती को देखा है कि नही”

“जी मालिक”

पूरा दिन बीत जाता है. मंदिर के साथ-साथ दमयंती को ढूँडने के लिए ठाकुर के आदमी पूरा गाँव छान मारते हैं, पर उन्हे दमयंती का कुछ पता नही चलता. लड़के वाले आ कर चले जाते हैं. चिन्ताओ के बादल घने होने लगते हैं.

“ऐसा कैसे हो गया, कहा जा सकती है दमयंती बिना बताए ?” ---- भैरव ने कहा

भवानी प्रताप चेहरे पर चिन्ताओ के भाव लिए चुपचाप बैठा है

तभी वहां उमा का बड़ा भाई बलवंत आता है, वो सर झुका कर कहता है, “ठाकुर साहिब अगर बुरा ना माने तो एक बात कहूँ”

“हाँ-हाँ कहो क्या बात है ?”

“मुझे पता चला है कि बंसीलाल का लड़का केशव भी गायब है”

“कहना क्या चाहते हो तुम ?” – भवानी प्रताप ने गुस्से में कहा

“गुस्ताख़ी माफ़ मालिक….. पर कहीं इस सब में केशव का तो हाथ नहीं”

“क्या मतलब साफ़-साफ कहो क्या कहना है?”

“कल मंदिर के बाहर मेरे चाचा ने केशव को दमयंती मेम-साब से बात करते हुवे देखा था”

“दमयंती उसे जानती है, एक बार वो जब खेत में रास्ता भटक गयी थी तो केशव उसे घर तक छोड़ कर गया था” – भवानी प्रताप ने कहा

“मालिक एक बात और है जो मैं आपको बताना चाहता हूँ”

“हाँ-हाँ बताओ”

“चाचा ने पेड़ के पीछे से उनकी बाते सुनी थी, उनके अनुशार वो रात में खेत में मिलने की बात कर रहे थे”

“क्या बकवास कर रहे हो तुम, हम तुम्हारी ज़ुबान खींच लेंगे”

“गुस्ताख़ी माफ़ मालिक.....पर जो मुझे पता चला था वो आपको बता दिया, आप चाहे तो मेरी जान ले लीजिए लेकिन इस बात पर गौर ज़रूर करें”

भवानी प्रताप और भैरव दौनो के चेहरे गुस्से से लाल हो जाते हैं. दोनो बलवंत की बात सुन कर तिलमिला उठे हैं.

“पिता जी देख लिया सराफ़ात का नतीज़ा आपने, इन गावँ वालो को हमेशा ज़ूते के नीचे रखने की ज़रूरत है. आप सब कुछ मुझ पर छोड़ दीजिए, मैं अभी उस हराम खोर केशव की बहन को नंगी करके यहा घसीट कर लाता हूँ” – भैरव प्रताप ने कहा

“भैरव शांत रहो, अगर वाकाई में इसमे उस केशव का हाथ है तो हम किसी को नही बक्सेंगे”

भैरव दाँत भीच कर रह जाता है

“अपने चाचा को यहा बुला कर लाओ, हम खुद उस से बात करेंगे” --- भवानी ने बलवंत से कहा

बलवंत अपने चाचा को बुला कर लाता है.

उसका चाचा डरते -डरते ठाकुर के सामने आता है और सर झुका कर चुपचाप खड़ा हो जाता है

"क्या देखा था तुमने कल मंदिर के बाहर, सब सच-सच बताओ" --- भवानी ने पूछा

"जी मालिक……. मैने दमयंती मेम-साब को केशव से बाते करते देखा था. मैने पेड़ के पीछे खड़े हो कर उनकी बाते भी सुनी थी. केशव, दमयंती मेम-साब को रात में खेत में आने को कह रहा था. बस इतना ही सुना था मैने मालिक… और मुझे कुछ नही पाता"

"अगर ये झूठ हुवा तो हम तुम्हारा वो हाल करेंगे कि तुम सोच भी नही सकते"

"मालिक…. आपसे झूठ बोल कर हम कहा जाएगेँ, हम तो आपके गुलाम हैं"

"ठीक है-ठीक है…दफ़ा हो जाओ यहा से"

"जी मालिक"

ये कह कर बलवंत का चाचा वहां से चला जाता है.

"पिता जी अब सब कुछ मुझ पर छोड़ दीजिए" ---- भैरव ने कहा और कह कर कमरे से बाहर चला गया

भवानी प्रताप उसे जाते हुवे देखता रहा, शायद उसकी भी यही इच्छा थी कि केशव के घर को बर्बाद कर दिया जाए, इसलिए उसने भैरव को जाते हुवे नही टोका

"बलवंत, भैरव के साथ जाओ और हाँ अपने कुछ ख़ास आदमी साथ ले लो" --- भवानी प्रताप ने कहा

"जी मालिक"

“क्या तुम्हारी बहन का कुछ पता चला ?”

“वो तो पक्का कहीं भुवन के साथ ही होगी मालिक, वो मिल गया तो मैं उसे जिंदा नही छोड़ूँगा”

“ठीक है…. अब जाओ और भैरव का ध्यान रखना”

“आप चिंता मत करो मालिक”

ये कह कर बलवंत वहां से चला जाता है.

इधर खेत में सविता और उसके पिता जी बंसीलाल मूह लटकाए बैठे हैं, सुबह से शाम हो चुकी है पर केशव का कहीं आता पता नही. कविता अपनी मा के पास घर जा चुकी है. वो दोनो इस बात से अंजान हैं कि एक बहुत बड़ा तूफान उनके घर की तरफ बढ़ रहा है, जो कि अगर ना रुका तो उनका सब कुछ निगल जाएगा.

“पिता जी भैया कहा जा सकते हैं ?”

“क्या पता बेटी, अब तो जब वो लोटेगा तो वही बताएगा कि कहा गया था, चल हम घर चलते हैं. मैं खाना खा कर वापस आ जाऊंगा..लगता है आज रात मुझे ही खेत में रुकना पड़ेगा ?”

“तभी वहां उनके पड़ोसी का लड़का मुन्ना भाग कर आता है”

“दीदी-दीदी तुम्हारे घर पर ठाकुर के लोग हन्गामा कर रहे हैं”

“कैसा हंगमा मुन्ना… ये क्या कह रहे हो ?”

“दीदी… तुम घर मत जाना”

“ये सब क्या कह रहे हो तुम ?” सविता ने पूछा

“बेटी मैं जा कर देखता हूँ, तुम यहीं रूको”

“वो….वो ठाकुर का बड़ा बेटा कविता दीदी के कपड़े उतार कर उन्हे घसीट कर ले जा रहा है, आप घर मत जाना”

“ये सुन कर बंसीलाल घर की तरफ भागता है”

“पिता जी मैं भी आ रहीं हूँ”

“नही बेटी तुम्हे मेरी कसम… तुम यहीं रूको, मैं देखता हूँ कि क्या बात है” बंसीलाल रुक कर कहता है और फिर से अपने घर की तरफ दौड़ पड़ता है

“मुन्ना तुम भी जाओ, दोपहर होने को है”

“दीदी आप को यहा डर नही लगेगा”

“नही लगेगा.. मुन्ना तुम जाओ”

“अगर डर लगे भी ना दीदी… तो भी घर मत आना”

“ये कह कर मुन्ना रोने लगता है, सविता उसकी उसकी बात समझ कर उसे गले लगा लेती है और उसकी आँखो में भी आसूँ उतर आते हैं”

“जाओ मुन्ना इस से पहले की धूप हो जाए तुम यहा से निकल जाओ”

मुन्ना के जाने के बाद सविता अकेली खेत में बैठी हुई सोचती है कि ‘हे भगवान !! आज ये हमारे साथ क्या हो रहा है ?, दीदी का ख्याल रखना वरना हम जीजा जी को क्या मूह दीखाएगँ

इधर जब बंसीलाल घर पहुँचता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है. उसकी बीवी घर के दरवाजे पर पड़ी मिलती है. कोई भी उसके पास नही है. ठाकुर के डर के कारण कोई भी उसे देखने तक नही आता

जब बंसीलाल अपनी बीवी बिमलादेवी को उठाने की कोशिश करता है तो वो मर चुकी होती है.

“हे भगवान ये कौन से पापो की सज़ा दे रहे हो हमे आज” --- बंसीलाल रोते हुवे बोलता है और लड़खड़ा कर ज़मीन पर गिर जाता है.

पर कविता का ख्याल आते ही वो जल्दी ही हड़बड़ाहट में खड़ा होता है और ठाकुर की हवेली की तरफ दौड़ता है.

वो अभी बीच रास्ते में ही पहुचँता है कि उसकी रूह काँपँ उठती है.

वो देखता है कि उसकी बेटी कविता के शरीर पर एक भी कपड़ा नही है और भैरव प्रताप उसकी पीठ पर चाबुक मार-मार कर उसे आगे बढ़ने पर मजबूर कर रहा है. बंसीलाल ये सब देख नही पता और लड़खड़ा कर वहीं सड़क पर गिर जाता है.

“चल साली कुतिया, रुकी तो… यहीं तेरी योनि में डंडा डाल दूँगा” --- भैरव प्रताप ने चील्ला कर कहा

“मुझे छोड़ दो मैने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है”

“इस गावँ की लड़कियों की तो मैं बिना कुछ बिगाड़े भी ऐसी तैसी कर देता हू,ँ तेरे भाई ने तो फिर भी बहुत बड़ी गुस्ताख़ी की है”

कविता भी ये बात अच्छे से जानती थी कि छोटे ठाकुर से ज़ुबान लड़ाना ठीक नही है लेकिन उसके पास कोई चारा भी तो नही था. उसकी इज़्ज़त सरे आम उतार ली गयी थी. उसे सरे आम नंगा घुमाया जा रहा था.

बंसीलाल मुश्किल से खड़ा होता है और भाग कर भैरव के पैरो में गिर जाता है

“छोटे ठाकुर क्या भूल हो गयी हम से जो हमारे साथ ये सब किया जा रहा है”

“ये अपने बेटे केशव से जा कर पूछ, जिश्ने हमारी छोटी बहन को अगवा कर लिया है” – भैरव ने बंसीलाल को लात मारते हुवे कहा

ये सुन कर बंसीलाल हैरान रह जाता है, लेकिन फिर से होश संभाल कर ठाकुर के कदमो में गिर जाता है

“मेरी बिटिया को छोड़ दो छोटे ठाकुर, इसने तो आपका कुछ नही बिगाड़ा, जैसे ही केशव मिलेगा मैं खुद उसे आपके पास ले आऊंगा”

“तू क्या उसे मेरे पास लाएगा नीच, चल भाग यहा से वरना तेरी बीवी की तरह तू ही मारा जाएगा”

इस बार भैरव इतनी ज़ोर से बंसीलाल के मूह पर लात मारता है कि वो वहीं बेहोश हो कर गिर जाता है.

“पिता जी आप यहा से चले जाओ ?” – कविता रोते हुवे कहती है

“चल साली आगे बढ़… वरना तेरी चाँदी उधेड़ दूँगा” --- भैरव कविता की पीठ पर चाबुक मारते हुवे कहता है.

वो लड़खड़ा कर दर्द से कराहते हुवे गिर जाती है

“लगता है इसका यहीं काम करना पड़ेगा”

भैरव कविता के बाल पकड़ कर उसे अपने आगे झुकाता है और पीछे से उस में बेरहमी से समा जाता है.

वहां चारो तरफ कविता की चिंख गूँज उठती है. गाँव के सभी लोग घरो में हैं. भैरव के चारो तरफ बस ठाकुर के ही आदमी हैं.

कविता पीछे मूड कर देखती है, उसके पिता जी अभी भी बेहोश ज़मीन पर पड़े हैं.

“हे भगवान मेरे साथ यही सब करना था तो मुझे ये जींदगी ही क्यों दी थी. मुझे वैसे ही मार देते. ये मौत से बद-तर सज़ा क्यों मिल रही है मुझे”

भैरव अपनी हवश शांत करके हट जाता है और कहता है, “जल्दी से इसकी छोटी बहन का भी पता लगाओ, सुना है कि वो बहुत सुन्दर है, उसका भी यही हाल करना है”

“जी मालिक आप चिंता मत करो वो भी मिल जाएगी” --- बलवंत ने हंसते हुवे कहा

कविता ज़मीन पर गिर जाती है

“चल उठ साली………… तुझे हवेली तक चलना है”

थोड़ी देर चलने के बाद सब ठाकुर की हवेली पर आ जाते है!

“चल अंदर” भैरव कविता को हवेली के एक कमरे में धकेल है.

कविता ने रोते हुवे मूड कर उसकी और देखा.

“देख क्या रही है, शुक्र मना तू अभी तक ज़िंदा है” --- भैरव प्रताप ने कहा

शकुंतला दूर खड़ी हुई सब कुछ देख रही है. उसने ऐसा आज तक अपनी जींदगी में नही देखा, इसलिए बहुत हैरान और परेशान है. वो दौड़ कर भवानी प्रताप के कमरे में जाती है

“पिता जी-पिता जी….. देखिए ये किशे यहा उठा लाए हैं…आप इन्हे रोकते क्यों नही ?”

“चुप रहो बहू, एक साल हो गया तुम्हे इस घर में आए… पर तुमने अब तक ये नही सीखा कि इस घर की औरते ज़ुबान नही चलाती”

“माफ़ करना….पिता जी… पर जो कुछ ये कर रहे हैं… ग़लत कर रहे हैं. एक औरत को यहा ऐसी हालत में घसीट कर लाए हैं कि मैं कह नही सकती”

“भैरव !!!” --- भवानी प्रताप ने चील्ला कर आवाज़ लगाई

भैरव भाग कर वहां आता है

“जी पिता जी क्या हुवा ?”

“बहू से कहो यहा से चली जाए वरना हम अपना आपा खो बैठेंगे….. अब ये हमे बताएगी कि हम क्या करें क्या नही”

भैरव ने तुरंत शकुंतला की ओर बढ़ कर उसके बाल पकड़ लिए और चील्ला कर बोला, “क्या तकलीफ़ है तुम्हारी”

“आहह क..क..कुछ नही मैं तो बस पिता जी से ये कह रही थी कि ये जो हो रहा है ग़लत हो रहा है” --- शकुंतला ने कराहते हुवे कहा

“और जो हमारी दमयंती के साथ हुवा वो क्या सही था ?” भैरव ने पूछा

भैरव शकुंतला के बाल खींचते हुवे उसे अपने कमरे तक ले आया और उसे बिस्तर पर पटक दिया और बोला, “खबरदार जो आज के बाद यहा किशी से कुछ बोला तो, मुझ से बुरा कोई नही होगा”

“आप से बुरा… कोई है भी नही दुनिया में”

“बिलकुल सही, बहुत जल्दी समझ में आ गया तुझे”

तभी भैरव को बाहर से आवाज़ आती है

“छोटे मालिक”

भैरव बाहर आ कर पूछता है

“क्या बात है बलवंत ?”

“मालिक मैं कुछ आदमियों को लेकर पीछे के खेतो में जा रहा हूँ, मुझे यकीन है कि केशव की छोटी बहन वहीं छुपी होगी”

“रूको मैं भी साथ चलूँगा ?”

“ठीक है मालिक चलिए”

“भिका !!” भैरव भिका को आवाज़ लगाता है

भिका भाग कर आता है और सिर झुका कर कहता है , “जी मालिक ?”

“वो बाहर के कमरे का ताला लगा दो, हम अभी आते हैं”

“जो हूकम मालिक”

भैरव बलवंत और उसके साथियों के साथ हवेली के पीछे के खेतो की तरफ चल पड़ता है

खेत में सविता बड़ी असमंजस की हालत में है. वो मन ही मन सोच रही है कि वो घर जाए या फिर यहीं खेत में बैठी रहे. एक पल वो केशव के लिए परेशान होती है.... और दूसरे ही पल कविता के लिए. वो इस बात से अभी अंजान है कि उसकी मा मर चुकी है, उसके पिता जी सड़क पर बेहोश पड़े हैं और उसकी बहन कविता ठाकुर की हवेली में क़ैद है. वो इस बात से भी बेख़बर है कि भैरव प्रताप कुछ लोगो के साथ उसकी तरफ बढ़ रहा है

अचानक सविता को किसी के आने की हुलचल सुनाई देती है. सविता भाग कर मक्की की फसलों में छुप जाती है.

"पूरा खेत छान मारो वो यही कही होगी ?" भैरव ने कहा

"छोटे ठाकुर आप चिंता मत करो वो यहा से बच कर नही जा पाएगी" – बलवंत ने कहा

ठाकुर के आदमी पूरे खेत में फैल जाते हैं.

सविता, भैरव और बलवंत की बाते सुन लेती है और समझ जाती है कि वो लोग उसे ढूंड रहे हैं.

"मालिक मैं यहा सामने की फसलों में देखता हूँ" --- बलवंत ने कहा

"हां-हां देखो, जल्दी ढूंड कर लाओ उसे"

सविता के दिल की धड़कन बढ़ जाती है क्योंकि बलवंत उशी की तरफ बढ़ रहा है.

पर तभी भैरव के पास कल्लू चीखता हुवा आता है

“मालिक-मालिक लगता है वो लड़की जंगल में घुस्स गयी”

ये सुन कर बलवंत वापिस मूड जाता है और कल्लू से पूछता है

“क्या बकवास कर रहे हो… उस जुंगल में लोग दिन में जाने से डरते हैं, अब रात होने को है, वो लड़की भला वहां कैसे जाएगी” --- बलवंत ने कहा

“मैं सच कह रहा हूँ बलवंत, मैने खुद किसी को अभी अभी खेत के उस पार जो जंगल है उसमे जाते हुवे देखा है, मुझे पूरा यकीन है कि वो केशव की बहन ही होगी, दूर से वो कोई लड़की जैसी ही लग रही थी”

“बलवंत जल्दी से सभी को बुलाओ हमें उसे हर हाल में पकड़ना है” --- भैरव ने कहा

“मालिक इस वक्त उस जंगल में जाना ख़तरे से खाली नही है, मेरी बात मानिए हम उसे सुबह ढूंड लेंगे, वो अकेली लड़की भाग कर जाएगी भी कहा”

“पर मुझे डर है कि सुबह तक उसकी लाश ही मिलेगी” --- भैरव ने कहा

“वो तो है मालिक पर इसके अलावा हम कर भी क्या सकते हैं, आप तो जानते ही हैं भवानीवन के इन जंगलों को”

भैरव किसी सोच में डूब जाता है और कहता है, “ठीक है चलो… कल सुबह देखेंगे”

भैरव सभी को लेकर वहां से चल देता है.

सविता साँस रोके चुपचाप बैठी है. वो शुक्र मना रही है की वो लोग जा रहे हैं. पर एक बात मन ही मन उसे परेशान कर रही है कि ठाकुर के आदमियों ने जंगल में जाते हुवे किसको देखा है ?

इधर हवेली में शकुंतला अपने कमरे से निकल कर उस कमरे की तरफ देखती है जिसमे कविता बंद है. वो मन ही मन सोचती है कि जा कर कमरे का दरवाजा खोल कर उसे वहां से भगा दे.

शकुंतला ये सब सोच ही रही है कि अचानक उसे उस कमरे से चिंख सुनाई देती है. वो वहां जाना चाहती है पर चाह कर भी जा नही पाती.

थोड़ी देर बाद उसे उस कमरे से भवानी निकलता हुवा दीखाई देता है

वो मन ही मन कहती है छी !!…जब बाप ही ऐसा हो तो बेटा क्यों नही बुरे काम करेगा.

तभी अचानक शकुंतला को घर के पीछे कुछ हलचल सुनाई देती है.

वो भाग कर वहां जाती है तो पाती है कि भिका वहां अपने हाथ को एक चाकू से चीर रहा है.

भिका ठाकुर का वफादार नौकर था.आजतक उसने ठाकुर के हर एक आदेश का पालन किया था.कोई भी काम हो ठाकुर उसपर आँख मूंद कर विश्वास करते थे. हर जरूरी काम उसपर सौंप देते थे, उन्हें पता था कि दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं जिसे भिका नहीं कर सकता था. मध्यम आयु का भीका किसी पहलवान से कम नहीं था. नीचे सफेद धोती, ऊपर बदन पर कंबल और हाथ में काठी ऐसा ही कुछ भीका का पहराव था.

भीका के हाथ में एक पीतल का कड़ा था. वहीं उसका एकमात्र आभूषण था.वो उस कड़े को हमेशा ऊपर नीचे करता रहता था.मानो उससे बात कर रहा हो.भिका के सावले हाथ में पीला कड़ा खुलकर दिखता था.उसके गठीले बदन को देखकर न जाने शकुंतला को कुछ

अजीब सा महसूस होता था.लेकिन इन विचारों को शकुंतला कभी अपने मन में जगह नहीं देती थी.उसे मालूम था कि उसका पति कितना भी दरिंदा और वहशी हो, उसके चरणों में ही उसकी जिंदगी थी. कम से कम तबतक जबतक वो जिंदा है.

भिका अविचलित रहता था मानो उसे ना किसी बात का गम होता है और नहीं किसी बात की खुशी. इतने सालो में शकुंतला ने भिका को कभी हस्ते या नजर ऊपर किए नहीं देखा, लेकिन आज भिका को खुदके हाथो पर चाकु से वार करता देख शकुंतला भौचक्की रह गई.उसे समझ नहीं आ रहा था कि भीका खुद को जख्मी क्यों कर रहा है.

शकुंतला के आने से बेखर भीका अपने हाथ पर चाकू से वार करना जारी रखता है. चाकू का वार भिंका के हाथ के साथ साथ उसके हाथ में पहने पीतल के कड़े पर भी होता है. जिससे पीतल कि खनखनाट कि आवाजे आनी लगती है. भिका का यह अवतार देख शकुंतला को रहा नहीं जाता...

" ये क्या कर रहे हो तुम भिका ?"

"म ..म ..में-मेमसाब कुछ नही"

"कुछ नही मतलब !! ये खून क्यों बहा रहे हो तुम"

"मेम-साब किसी से कहना मत" भिका डरकर हल्की आवाज में कहता है.

"हाँ-हाँ बोलो क्या बात है ?" शकुंतला उत्सुकता से पूछती है

"ये जो लड़की बाहर के कमरे में बंद है, उसका नाम कविता है, मैं कभी उसे चाहता था. उसकी आँखो में भी मेरे लिए प्यार था, पर हम कभी कह नही पाए. और अचानक उसकी शादी हो गयी. आज सालो बाद उसे इस हालत में देख रहा हूँ. पर मैं चाह कर भी कुछ नही कर सकता… इसलिए खुद को सज़ा दे रहा हूँ"

"तो जाकर चुलु भर पानी में डूब मरो" ---- शकुंतला ने गुस्से में कहा और कह कर वहां से मूड कर अपने कमरे की तरफ चल दी.

जाते-जाते उसने मूड कर देखा तो पाया कि जीवन चाचा उस कमरे में घुस रहा था जिसमे कविता बंद थी

शकुंतला ने मन ही मन में कहा, ‘इस घर में सभी आदमी एक जैसे हैं…बस नाम, शकल और उमर अलग-अलग हैं’

शकुंतला से ये सब देखा नही गया और वो वापिस मूड कर भिका के पास आ गयी और बोली, “तुम उसे कैसा प्यार करते थे !! तुम्हे शरम नही आती, यहा खड़े-खड़े तमाशा देख रहे हो, तुम्हे कुछ करना चाहिए”

“मैं इस घर का नौकर हूँ मेम-साब, आप ही बताओ मैं क्या कर सकता हूँ”

“नौकर होने का ये मतलब तो नही की तुम इंसानियत भूल जाओ ?”

“मेम-साब में कुछ नही कर सकता, मैं मजबूर हूँ”

“ठीक है फिर मुझे ही कुछ करना पड़ेगा”

ये कह कर शकुंतला भाग कर हवेली की रसोई में जाती है और एक लंबा सा चाकू लेकर उस कमरे की तरफ भागती है जिसमे कविता बंद है. भिका एक तक उसे देखता रह जाता है.

शकुंतला उस कमरे के बाहर आकर देखती है कि दरवाजा अंदर से बंद है और अंदर से कविता के सिसकने की आवाज़ आ रही है. वो हिम्मत करके दरवाजा खड़काती है.

“कौन है ?”

पर शकुंतला जीवन के सवाल का कोई जवाब नही देती और एक बार फिर से दरवाजा खड़काती है. वो चाकू एक हाथ से पीठ के पीछे छुपा लेती है

जीवन दरवाजा खोलता है.

“अरे शकुंतला बेटी तुम यहा क्या कर रही हो ?”

“ये सवाल मुझे आपसे करना चाहिए चाचा जी”

“चुप कर, अपना काम कर जा कर ?”

“अपना काम ही कर रही हूँ चाचा जी चुपचाप पीछे हट जाओ वरना ये खंजर शीने में उतार दूँगी” --- शकुंतला चाकू जीवन को दीखाते हुवे कहती है.

पर जीवन एक झटके में उसके हाथ से चाकू छीन लेता है.

शकुंतला एक नज़र कविता पर डालती है. कविता की हालत देख कर उसकी आँखे नम हो जाती हैं. कविता भी ना-उम्मिदि लिए उसकी ओर देखती है और अपनी आँखे बंद कर लेती है.

जीवन शकुंतला के मूह पर एक थप्पड़ जड़ देता है जिसके कारण शकुंतला लड़खड़ा कर वहीं गिर जाती है

भिका भाग कर वहां आता है पर जीवन को देख कर ठिठक जाता है.

“भिका तुम जाओ अपना काम करो यहा सब ठीक है” --- जीवन ने कहा

“मालिक पर”

“पर क्या.... मेरा दीमाग खराब मत करो और जाओ यहा से”

भिका चुपचाप वापिस मूड कर चल देता है.

शकुंतला कमरे के बाहर पड़ी रह जाती है और जीवन दरवाजा वापिस बंद कर लेता है.

अचानक भिका कुछ अजीब करता है. वो भवानी प्रताप के कमरे की तरफ जाता है और उसके कमरे को बंद करके बाहर से कुण्डी लगा देता है.

फिर वो भाग कर शकुंतला के पास आता है और कहता है, ‘‘मेम-साब उठो’’

‘‘उस लड़की को बचा लो भिका… वरना मैं भगवान को क्या मूह दिखाऊंगी’’

‘‘मैं कुछ करता हूँ मेम-साब आप उठो यहा से’’

शकुंतला वहां से खड़ी होती है.

भिका दरवाजे को ज़ोर से धकैल कर खोल देता है.

‘‘भिका ये क्या कर रहे हो’’

‘‘वही जो बहुत पहले करना चाहिए था’’

भिका ने जीवन की टाँग पकड़ कर उसे कविता के उपर से खींच लिया और उसे एक तरफ पटक दिया

‘‘लगता है तुझे अपनी जान प्यारी नही’’

भिका जीवन को कुछ नही कहता और कमरे के बाहर आ कर शकुंतला से कहता है ‘‘मेम-साब….कपड़े’’

‘‘रूको मैं अभी अपने कुछ कपड़े लाती हूँ’’

इतने में भिका जीवन को रस्सी से बाँध कर एक तरफ बैठा देता है

शकुंतला भाग कर अपने कमरे से कविता के लिए कपड़े लाती है और कमरे में आकर कविता को कपड़े देते हुवे कहती है, “लो जल्दी से कपड़े पहन लो और यहा से निकल जाओ”

कविता मुश्किल से उठती है और धीरे-धीरे कपड़े पहनती है

मेम-साब मुझे भी इसके साथ ही जाना होगा, आपने मेरी आँखे खोल दी वरना मैं जींदगी भर खुद से नज़रे नही मिला पाता

“इन बातो का वक्त नही है अभी जल्दी यहा से निकलो…कविता को इसके ससुराल पहुँचा देना”

“जी मेम-साब मैं कविता को लेकर अभी इसके ससुराल चल पड़ूँगा आप अपना ख्याल रखना”

“अब जल्दी जाओ यहा से”

“जी मेम-साब”

कविता हाथ जोड़ कर शकुंतला का धन्यवाद करती है

शकुंतला भावुक हो कर उसे गले लगा लेती है और कहती है , “जो भी तुम्हारे साथ हुवा उसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हू.ँ जाओ अपना ख्याल रखना”

भिका कविता को लेकर हवेली से निकल पड़ता है.

शकुंतला उन्हे जाते हुवे देखती रहती है. वो मन ही मन सोचती है की उसे भी यहा से कहीं चले जाना चाहिए. ऐसे नरक में रहने से क्या फायदा. फिर वो मूड कर अपने कमरे की तरफ चल देती है.

अचानक उसे अपने पीछे हलचल सुनाई देती है. वो मूड कर देखती है कि भैरव, अपने आदमियों के साथ चला आ रहा है

भैरव जैसे ही उस कमरे के सामने पहुँचता है तो समझ जाता है कि शकुंतला ने केशव की बहन को भगा दिया है.

वो भाग कर शकुंतला के बाल पकड़ लेता है और कहता है, "तो तूने अपनी औकात दीखा ही दी. अब मैं तेरा वो हाल करूँगा कि तू सोच भी नही सकती"

बलवंत कमरे में जाकर देखता है कि जीवन वहां बधा पड़ा है, वो झट से उसकी रस्सिया खोलता है और मूह में से कपड़ा निकालता है.

जीवन भाग कर भैरव के पास आता है और कहता है, "भैरव उस लड़की को भिका ले गया है, और बहू ने उसकी मदद की है"

"क्या भिका ? भिका ने ऐसा क्यों किया ?"

"पता नही भैरव… उसी ने मुझे रस्सी से बाधा था और मेरे मूह में कपड़ा ठूंस दिया था"

“आप चिंता मत करो चाचा जी वो लोग बच कर कही नही जा सकते. भिका को मैं जींदा नही छोड़ूँगा”

भैरव, भवानी के कमरे की तरफ बढ़ता है तो देखता है कि बाहर से कुण्डी लगी है. वो खोल कर देखता है तो पता है कि उसके पिता जी सो रहे हैं.

भैरव, बलवंत को बुला कर पूछता है, “ये भिका किस रास्ते से गया होगा ?”

मालिक वो ज़रूर हवेली के पीछले रास्ते से गया होगा, हम सामने से आ रहे थे, वो हमे तो दीखा नही. हवेली के पीछे खेत हैं और खेतो के पार जंगल, वो ज़रूर पीछले रास्ते से गया होगा

“हां-हां वो पीछले रास्ते से ही गया है मैने कमरे से उन्हे जाते देखा था” – जीवन ने भैरव से कहा

इधर खेत में सविता अभी भी चुपचाप मक्की की फसलों में बैठी है. अंधेरा घिर आया है और चाद़ँ की चाद़ँनी चारो और फैलने लगी है.

सविता चुपचाप बाहर निकलती है. लेकिन बाहर निकलते ही वो काँप उठती है. उसे दूर से अपनी और आता एक साया दीखाई देता है. वो डर कर वापिस मक्की की फसलों में घुस्स जाती है.

वो साया भी उसके पीछे पीछे मक्क्की की फसलों में घुस्स जाता है.

सविता एक जगह रुक जाती है ताकि उसके कदमो की आहट ना हो.

लेकिन तभी उसे कदमो की तेज आहट सुनाई देती है.

वो पीछे मूड कर देखती है तो पाती है की वो साया बिलकुल उसके पीछे चार कदम की दूरी पर है.

वो तेज़ी से मूड कर भागती है लेकिन वो साया उसे दबोच लेता है.

“ क..क..कौन हो तुम..छोड़ो मुझे” सविता चील्ला कर कहती है

वो साया सविता के मूह पर हाथ रख देता है.

“चुप रहो सविता….ये मैं हूँ”

वो साया उसके मूह से हाथ हटा देता है

सविता अंधेरे में उस साए की शकल तो ठीक से नही देख पाती लेकिन फिर भी उसकी आवाज़ सुन कर रोने लगती है

“ब्रजभूषण……..क्या ये तुम हो ?”

“तुम्हे क्या लगता है ?”

सविता उस साए के गले लग जाती है और कहती है, “तुम कहा चले गये थे ब्रजभूषण !!….. मैं आज इतनी परेशान हूँ कि अपने ब्रजभूषण के कदमो की आहट भी पहचान नही पाई..मुझे माफ़ कर दो”

“चुप रहो ये वक्त बाते करने का नही है ठाकुर के आदमी इसी तरफ आ रहे हैं”

“तुम्हे ये सब कैसे पता…..वो तो अभी यहा से गये हैं”

“बताऊंगा सब कुछ बताऊंगा अभी तुम थोड़ी देर चुप रहो”

ब्रजभूषण का उस वक्त अचानक आना सविता के लिए किसी सपने से कम नही था. सविता मन ही मन सोच रही थी कि आख़िर आज ब्रजभूषण अचानक यहा कैसे आ गया. तीन साल से वो गाँव से गायब था, वो कहा था ? क्या कर रहा था ?.. ये कुछ ऐसे सवाल थे.. जो सविता के मन में घूम रहे थे. सविता ब्रजभूषण से बहुत कुछ पूछना चाहती है पर हालात ऐसे नही हैं. ब्रजभूषण भी सविता को बहुत कुछ बताना चाहता है पर उस वक्त वो चुप्पी साधे हुवे है.

लेकिन फिर भी सविता धीरे से कहती है, “ब्रजभूषण…. ठाकुर के आदमी दीदी को उठा कर ले गये हैं”

“घबराओ मत… कविता अब वहां नही है, मैं हवेली से ही आ रहा हूँ. कविता को वहां से भिका अपने साथ ले गया है” – ब्रजभूषण ने धीरे से कहा

“तुम्हे ये कैसे पता”

“मैं कोई दो घंटे पहले गाँव पहुँचा था, रास्ते में तुम्हारे पिता जी सड़क पर बेहोश मिले”

“क्या!! हे भगवान ” --- सविता ने भावुक हो कर पूछा

“धीरे बोलो” –ब्रजभूषण ने धीरे से कहा

“पर पिता जी को क्या हुवा था ?”

“सविता, छोटे ठाकुर ने उन्हे बहुत बुरी तरह मारा था… जिसके कारण वो बेहोश हो कर सड़क पर गिर गये. पर तुम चिंता मत करो वो अब ठीक हैं और सुरक्षित हैं. उन्होने ही मुझे सब कुछ बताया. मैं उनकी बात सुन कर कविता के लिए तुरंत हवेली गया. पर मेरे वहां पहुँचने से पहले ही भिका, कविता को वहां से ले गया. भिका को तो तुम भी जानती हो ना ? ….वो एक अच्छा इंसान है. फिर मैने हवेली की दीवार से अंदर की बाते सुनी..यही पता चला कि ठाकुर के आदमी भिका और कविता को ढूँडने इधर ही आ रहे हैं. तभी मैं भाग कर यहा आया ….क्योंकि तुम्हारे पिता जी ने बताया था कि तुम खेत में ही हो”

“मेरी मा तो ठीक है ना ब्रजभूषण ?”

ब्रजभूषण ये सुन कर चुप हो जाता है

सविता फिर से पूछती है, “मा तो ठीक है ना ब्रजभूषण ?”

“वो…… अब इस दुनिया में नही हैं सविता, मुझे दुख है… काश !! में थोडा और पहले पहुँच जाता तो ये सब नही होने देता”

सविता आसुँओ में डूब जाती है और अपने चेहरे को घुटनो में छिपा कर चुपचाप आसूँ बहाने लगती है

ब्रजभूषण उसके कंधे पर हाथ रख कर उसे दिलासा देता है. पर वो लगातार आसूँ बहाती चली जाती है

“ये क्या हो रहा है हमारे साथ आज, ब्रजभूषण. सुबह से भैया गायब हैं…. दीदी को ठाकुर के आदमी उठा कर ले गये… और अब मेरी मा चल बसी… एक दिन में इतना कुछ हो गया… और आज ही तुम वापिस आ गये…मुझे सब कुछ बहुत अजीब लग रहा है”

“अजीब तो मुझे भी लग रहा है”

ब्रजभूषण और सविता चुपचाप बाते कर ही रहे थे कि उन्हे किसी के कदमो की तेज आहट सुनाई देती है.

“बलवंत अगर भिका उस छोकरी को ले कर जंगल में घुस्स गया होगा तो ?”

“तो हम वापिस चले जाएगेँ कल्लू”

“पर छोटे ठाकुर हमें खूब दांटेंगे बलवंत”

“तू चिंता मत कर उनकी डाटँ के डर से हम रात को उस भयानक जंगल में नही जाएगेँ… वैसे मुझे यकीन है कि भिका उस छोकरी के साथ यही कही छुपा होगा”

ब्रजभूषण और सविता, बलवंत और कल्लू की बाते सुन रहे थे.

तभी अचानक एक खौफनाक चिंख पूरे खेत में गूँज उठती है. जो कि हवेली तक सुनाई देती है

“य..य..ये क्या.. था.. बा.ल.वन्त ?”

“पता नही कल्लू…बाकी के आदमी कहा गये ?”

“तुम्ही ने तो सबको दो-दो की टोली में बाटाँ था”

“हा ँपर कोई दीख नही रहा” – बलवंत ने चारो ओर देखते हुवे कहा

इधर मक्की के खेत के बीचो बीच सविता, वो चिंख सुन कर काँप उठती है और ब्रजभूषण के गले लग जाती है. इस से पहले कि वो कुछ बोल पाए ब्रजभूषण उसके मूह पर हाथ रख देता है और कान में धीरे से कहता है…"डरो मत मैं हूँना तुम्हारे साथ..बिलकुल चुप रहो"

"बलवंत वो देखो सामने कोई खड़ा है"

"कहा ?"

"उधर सामने..पर ये अपना आदमी तो नही लगता…ये तो कोई और ही लगता है"

"अबे ये तो मुझे आदमी ही नही लग रहा.. चल भाग… यहा से"

ये कह कर बलवंत वहां से हवेली की तरफ भाग लेता है

कल्लू भी उसके पीछे-पीछे भागने लगता है

रास्ते में उन्हे दो और साथी मिल जाते हैं जो कि दूसरी तरफ से भाग कर आ रहे थे.

"क्या हुवा बलवंत तुम क्यों भाग रहे हो"

"हम..ने वहां कुछ अजीब देखा बीर्बल" – बलवंत ने हांपते हुवे कहा

"हमने भी….. पता नही क्या बला है भाई… जल्दी चलो यहा से" बीर्बल ने कहा

ठाकुर के सभी आदमी भाग कर हवेली में पहुचँ जाते हैं और भैरव को सारी बात बताते हैं.

"तुम सब के सब निकम्मे हो… कभी तुम्हे जंगल से डर लगता है.. कभी किसी साए से. किसी काम के नही हो तुम लोग. ऐसा क्या था खेत में जो तुम डर कर भाग आए. हो सकता है ये भिका की कोई चाल हो… और क्या पता वो खुद भिका ही हो" – भैरव ने गुस्से में कहा

नही मालिक वो भिका हरगिज़ नही था. भिका को मैं अच्छे से जानता हूँ. उसे मैं किसी भी हालत में पहचान सकता हूँ. खेत में जो कोई भी था ..इंसान नही था.."

इधर खेत में सविता ब्रजभूषण से बुरी तरह लीपटि हुई है.

"ब्रजभूषण ये लोग किस से डर कर भाग गये ?"

ब्रजभूषण तुरंत उसके मूह पर हाथ रख देता है और कहता है, "चुप रहो और यही रूको… मैं देख कर आता हूँ कि चक्कर क्या है"

पर तभी फिर से एक भयानक चिंख खेत में गूँज उठती है जो इस बार हवेली को भी हिला देती है

"नही ब्रजभूषण रूको… कहीं मत जाओ… मुझे डर लग रहा है, आज खेत में ज़रूर कुछ गड़बड़ है"

"वही तो देखने जा रहा हूँ की क्या गड़बड़ है सविता, डरो मत"

"नही ब्रजभूषण रुक जाओ… यहा अकेले मुझे डर लगेगा"

भाग - 5

[इधर उसी वक्त हवेली में :--]

"सुनी ये आवाज़ मालिक… ये ज़रूर उसी भयानक साए की है…इतनी ज़ोर से कोई इंसान नही चिंख सकता" --- बलवंत ने कहा

भैरव भाग कर अपने कमरे में जाता है और शकुंतला से पूछता है, "क्या कल रात तुमने ऐसी ही चिंख सुनी थी ?"

शकुंतला उसकी और देखती है पर कोई जवाब नही देती

"मैं तुमसे कुछ पूछ रहा हूँ… क्या तुम बहरी हो गयी हो"

"हां ऐसी ही छींख सुनी थी…कल रात तो मेरी बात सुनी नही.. अब क्यों पूछ रहे हो"

भैरव भाग कर भवानी प्रताप के कमरे में जाता है

भवानी प्रताप भी वो भयानक चिंख सुन कर उठ जाता है

"पिता जी मुझे लगता है दमयंती किसी मुसीबत में है"

"क्या कह रहे हो तुम… पहले ये तो पता चले कि दमयंती है कहा"

पिता जी बलवंत के चाचा के अनुसार दमयंती कल रात केशव से खेत में मिलने वाली थी.. पर कल रात भी शकुंतला ने खेतो से ऐसी ही भयानक चिंख सुनी थी"

हवेली में सभी घबराए हुवे हैं. दमयंती का अभी तक कुछ पता नही चला और उपर से हवेली के पीछे के खेतो से ये भयानक चिंखे …हर किशी के दिल को दहला रही हैं.

इधर खेत में ब्रजभूषण सविता को कहता है, "सविता चुपचाप मेरे पीछे आओ हमे यहा से निकलना है"

"पर ब्रजभूषण ये खेत में कौन है ?"

"श्ह... चुप रहो ज़्यादा बाते मत करो पहले यहा से निकलते हैं फिर बाते करेंगे"

"पर वो हमारे पीछे आया तो?"

"काफ़ी देर से कोई हलचल या आवाज़ नही हुई है, मुझे लगता है जो कोई भी वो था अब यहा नही है, और अगर हुवा भी तो देखा जाएगा..चलो अब"

ब्रजभूषण सविता का हाथ पकड़ कर उसे घनी फसलों से बाहर लाता है और गावँ की तरफ चल पड़ता है

"ब्रजभूषण तुम्हे डर नही लग रहा"

"मुझे बस तुम्हारी चिंता है, और मैं किसी चीज़ से नही डरता, बाते कम करो और तेज-तेज चलो"

लेकिन अभी वो चार कदम ही चलते हैं कि उन्हे किसी के अपने पीछे भागने की आहट सुनाई देती है. ब्रजभूषण मूड कर देखता है. दूर से उसे साफ साफ तो कुछ नही दीखता पर वो अंदाज़ा लगाता है, "अरे कहीं ये भिका और कविता तो नही ?"

"हो सकता है.......हमे रुकना चाहिए ब्रजभूषण"

“हां रुकने में कोई परेशानी नही है…देखते हैं वो कौन हैं”

जब वो दो साए नज़दीक पहुँचते हैं तो ब्रजभूषण उन्हे पहचान जाता है और पूछता है, “तुम दोनो यहा क्या कर रहे हो ?”

“स्वामी जी आप ठीक तो हैं ?”

“हाँ-हाँ मैं ठीक हूँ…… पर तुम दोनो यहा क्यों आए ? ….मैने तुम्हे गावँ में रुकने को कहा था ना….. और गोविंद कहा है ?”

“जी वो गावँ में ही हैं, हम तो इसलिए आए थे कि यहा आपको हमारी कोई ज़रूरत हो तो हम काम आ सकें”

सविता ये सब सुन कर हैरान रह जाती है. वो धीरे से ब्रजभूषण से पूछती है, “ये तुम्हे स्वामी जी क्यों कह रहे हैं ?”

“चलो पहले यहा से चलते हैं…आराम से सब कुछ बताऊंगा” ---- ब्रजभूषण ने सविता से कहा

“स्वामी जी वो आवाज़े कैसी थी ?”

“क्या तुम दोनो ने भी वो सुनी”

“जी स्वामी जी तभी तो हम यहा भाग कर आए हैं. पूरे गावँ में वो चिंखे गूँज रही थी”

“अभी कुछ नही कह सकते ….बाद में बात करेंगे”

“जी स्वामी जी” --- उन दोनो ने कहा

“सविता ये है गोपालदास और ये है नीरज दोनो मेरे ख़ास शिष्य हैं” ---- ब्रजभूषण ने उन दोनो का परिचय देते हुवे कहा

सविता की समझ से सब कुछ बाहर था. उसके मन में बहुत सारे सवाल उभर आए थे… जिनका जवाब वो जानना चाहती थी. पर उस वक्त उसने कुछ नही पूछा और चुपचाप ब्रजभूषण के साथ गाँव की तरफ चल दी.

अचानक फिर से वही चिंख ज़ोर से गूँजती है और वो सभी रुक जाते हैं.

“सविता तुम इन दोनो के साथ घर जाओ, तुम्हारे पिता जी वही हैं. मेरा एक मित्र गोविंद भी वही होगा. मैं यहा देखता हू ँकि क्या चक्कर है” --- ब्रजभूषण ने कहा

“नही ब्रजभूषण तुम यहा अकेले…….. ?”

ये सुन कर गोपालदास और नीरज हसँने लगते हैं

गोपालदास कहता है, “स्वामी जी किसी से नही डरते, बल्कि इनको देख कर तो अच्छे-अच्छे भूत-पिशाच भी भाग जाते हैं”

“चुप रहो गोपालदास” – ब्रजभूषण ने कहा

“जी स्वामी जी… माफ़ कीजिए” गोपालदास ने कहा

“सविता, मुझे जाकर देखना ही होगा कि आख़िर यहा खेत में हो क्या रहा है”--- ब्रजभूषण ने कहा

“फिर मैं भी यही रहूंगी तुम्हारे साथ ब्रजभूषण..तुम्हारे बिना मैं यहा से नही जा पाऊंगी” – सविता ने कहा

ब्रजभूषण किसी सोच में डूब जाता है

कुछ सोचने के बाद वो कहता है, “चलो पहले तुम्हारे घर चलते हैं….फिर देखेंगे की आगे क्या करना है ?”

सविता ये सुन कर मन ही मन थोडा खुश होती है…… पर अगले ही पल पूरे दिन को सोच कर गहरे गम में डूब जाती है

गोपालदास और नीरज ब्रजभूषण को ऐसे रूप में देख कर बहुत हैरान हैं… पर वो ब्रजभूषण से कुछ पूछने की हिम्मत नही करते.

नीरज, धीरे से गोपालदास से पूछता है, “स्वामी जी लड़की के साथ…कुछ अजीब नही है ?”

“चुप कर स्वामी जी सुन लेंगे तो बहुत डाटँ पड़ेगी” – गोपालदास ने नीरज को धीरे से कहा

“क्या बात है गोपालदास ?” --- ब्रजभूषण ने पूछा

“कुछ नही स्वामी जी…. बस यू ही” --- गोपालदास ने जवाब दिया

कोई तीस मिनट में वो सभी खेतो से निकल कर गावँ में सविता के घर पहुचँ जाते हैं

सविता दौड़ कर अपनी मा के मृत शरीर से लिपट कर फूट-फूट कर रोने लगती है. सभी बहुत भावुक अवस्था में चुपचाप देखते रहते हैं. गावँ के दूसरे लोग भी धीरे-धीरे उनके घर की तरफ आने लगते हैं.

बंसीलाल भाग कर ब्रजभूषण के पास आता है और पूछता है, "बेटा... कविता कहा है ?"

"जी अभी वो तो नही पता..... लेकिन हाँ वो ठाकुर की हवेली की क़ैद से आज़ाद हो चुकी है...आप फिकर ना करें सब कुछ ठीक हो जाएगा"

"क्या ठीक हो जाएगा बेटा... केशव सुबह से गायब है...बिमलादेवी चल बसी और कविता का कुछ पता नही... अब और क्या ठीक होगा ?" – बंसीलाल इतना कह कर अपना सर पकड़ कर बैठ जाता है

"जी मैं समझ सकता हूँ....भिका कविता को हवेली से छुड़ा कर अपने साथ ले गया है. और मुझे यकीन है कि वो सुरक्षित होगी" ---- ब्रजभूषण ने बंसीलाल से कहा

सविता तभी अपनी मा के शरीर को छोड़ कर ब्रजभूषण के पास आती है और अपने आसूँ पोंछते हुवे कहती है, "भिका दीदी को लेकर हमारे खेत की तरफ ही आ रहा था ना.. मुझे डर लग रहा है ब्रजभूषण."

"चिंता मत करो सविता मैं वापिस खेतो में ही जा रहा हूँ...मैं बस तुम्हे यहा तक छोड़ने आया था" --- ब्रजभूषण ने कहा

“ब्रजभूषण मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा” ---- गोविंद ने ब्रजभूषण से कहा

सविता गोविंद की तरफ देखती है.

ब्रजभूषण उसका परिचय देता है, “सविता ये गोविंद है.... मेरा ख़ास मित्र”

वो ये बाते कर ही रहे थे कि सविता एक दम से बोलती है, “अरे !! दीदी तो वो आ रही है”

ब्रजभूषण मूड कर देखता है

कविता लड़खड़ाती हुई भिका के साथ घर की तरफ आ रही थी.

सविता भाग कर कविता से लिपट जाती है और कहती है, “दीदी तुम ठीक तो हो”

“बस जींदा हूँ...ठीक तो क्या होना था” ---कविता ने कहा

सविता, कविता को अपनी मा के बारे में कुछ नही बता पाती. कविता खुद अंदर आ कर अपनी मा के मृत श्रीर को देखती है और सविता से रोते हुवे पूछती है, “क्या हुवा मा को ?”

सविता फिर से रोने लगती है और अपनी दीदी को गले लगा लेती है. कविता रोते, बीलखते हुवे अपनी मा के मृत शरीर पर गिर जाती है.

सभी लोग फिर से भावुक हो जाते हैं.

“तुम यही रूको मैं मंदिर हो कर आता हूँ” ब्रजभूषण ने गोविंद से कहा और वहां से चल दिया

सविता ब्रजभूषण को जाते हुवे देखती है और दौड़ कर उसके पास आती है, “तुम अकेले कहा जा रहे हो ब्रजभूषण ?”

“मंदिर जा रहा हूँ सविता…. पिता जी से मिल आउ, वरना वो कहेंगे की इतने दीनो बाद वापिस आया और आ कर देखा भी नही” --- ब्रजभूषण ने कहा

“ठीक है… पर अब खेत में मत जाना”

“एक बात बताओ सविता ?”

“क्या खेत में पहले भी कभी ऐसा हुवा है ?”

“नही ब्रजभूषण.. पहले तो कभी ऐसा नही हुवा ?”

“क्या केशव पहले भी कभी यू बिना बताए कही गया है ?”

“नही ब्रजभूषण.. भैया कभी ऐसे बिना बताए कही नही गये… मुझे बहुत डर लग रहा है… कही भैया किसी मुसीबत में ना हो ?”

“तुम चिंता मत करो… में देखता हूँ कि क्या चक्कर है ?”

“हां पर तुम अब रात को खेत में मत जाना”

“नही अभी मैं मंदिर जा रहा हू.ँ. फिर घर जाऊंगा… सभी से एक बार मिल लू.ँ सुबह देखेंगे कि क्या चक्कर है इस खेत का”

“ब्रजभूषण वो ठाकुर के आदमी दुबारा आए तो ?”

“गोविंद यही है सविता और गोपालदास और नीरज भी यही हैं. वैसे गोविंद के होते किसी बात की चिंता नही है. मैं भी जल्दी ही आ जाऊंगा”

“ठीक है ब्रजभूषण अपना ख्याल रखना”

ब्रजभूषण मंदिर की तरफ चल पड़ता है.

भाग - 6

भवानीवन के जंगल में रात के वक्त किसी इंसान का होना अजीब सी बात है. पर जब महोबत से भरे दिल जंगल में फँस जायें तो क्या कर सकते हैं

"ये हम किस मुसीबत में फँस गये केशव ?"

"घबराओ मत दमयंती.. भगवान जो करते हैं अच्छे के लिए करते हैं"

"क्या अच्छा है इसमे… सुबह से हम भूके प्यासे भटक रहे हैं… पता नही हम कहा हैं और कहा जा रहे हैं"

"ऐसे दिल छोटा करने से कुछ हाँसिल नही होगा दमयंती.. वैसे भी हमे घर से तो भागना ही था"

"पर अचानक तो नही… और वो भी इस जंगल के रास्ते तो हरगिज़ नही, पता है ना तुम्हे ये जंगल कितना भयानक है"

"रूको" – केशव ने कहा

"क्या हुवा अब ?"

"ये पेड़ ठीक रहेगा.. चलो रात इस पेड़ पर बीताते हैं… सुबह देखेंगे क्या करना है ?"

"क्या ? रात हम इस पेड़ पर बीताएगैं" – दमयंती हैरानी में पूछती है.

हवेली में रहने वाली दमयंती के लिए सब कुछ बहुत अजीब है. वो बहुत परेशान और डरी हुई है. पर प्यार की खातिर सब कुछ किए जा रही है.

"हमे गावँ की तरफ भागना चाहिए था.. हम क्यों इस जंगल की तरफ आए कल ?" दमयंती ने कहा

"अब आ गये तो आ गये… ये बाते छोड़ो और जल्दी इस पेड़ पर चढ़ो… कोई जंगली जानवर आ गया तो हम दोनो की चटनी बना कर खा जाएगा"

“मुझे डराव मत केशव… मैं पहले से ही बहुत डरी हुई हूँ”

“अच्छा ठीक है.. अब जल्दी से चढ़ो”

दमयंती जैसे-तैसे पेड़ पर चढ़ जाती है. उसके चढ़ने के बाद केशव भी पेड़ पर चढ़ जाता है.

दोनो पेड़ के उपर एक मोटे से तने पर बैठ जाते हैं और चैन की साँस लेते हैं

“वो दोनो कहा होंगे केशव ?”

“पता नही…. थे तो वो हमारे आगे लेकिन जंगल में घुसते ही वो जाने किधर चले गये”

“ये तो मुझे भी पता है… मैं पूछ रही हूँ कि वो अब कहा हो सकते हैं”

“क्या पता शायद वो दोनो भी हमारी तरह जंगल में भटक रहे होंगे. इस जंगल से निकलना इतना आसान नही है”

“तो हम कैसे निकलेंगे यहा से ?”

“निकलेंगे, ज़रूर निकलेंगे… मैने कहा आसान नही है…. पर नामुमकिन भी तो नही है… मैं हूँ ना तुम्हारे साथ”

“मुझे भूक लगी है केशव?”

“अभी रात में कुछ मिलना मुश्किल है… मैं नीचे उतर कर देखता हूँ.. हो सकता है कोई फल का पेड़ मिल जाए”

“नही नही तुम अब नीचे मत जाओ… मुझे इतनी भी भूक नही लगी”

“झूट बोल रही हो हैं ना… सुबह से कुछ नही खाया और कहती हो इतनी भी भूक नही लगी. मैने रास्ते भर चारो तरफ देखा पर कोई फल का पेड़ नही मिला… एक बार यहा भी

देख लेता हूँ?"

"दमयंती केशव की और देख कर रोने लगती है... नही कही मत जाओ मुझे सच में भूक नही है"

केशव आगे बढ़ कर दमयंती के चेहरे को हाथो में लेकर उसके माथे को चूम लेता है और कहता है, "तुम चिंता मत करो... सब ठीक हो जाएगा... कल सुबह सबसे पहले तुम्हारे खाने का इंतज़ाम करूँगा"

"पर केशव वो खेत में क्या था ?"

"क्या पता... मैने खुद ऐसा पहली बार देखा है"

"वो दोनो ठीक तो होंगे ना ?"

"हाँ-हाँ ठीक होंगे... वो भी तो हमारे साथ जंगल में घुसे थे"

"इस जंगल के बारे में बहुत बुरी-बुरी अफवाह है केशव"

"ये सब छोड़ो दमयंती और हमारी-तुम्हारी बात करो"

"तुम्हे ऐसे में भी प्यार सूझ रहा है ?"

"दिल में प्यार जींदा रखो दमयंती... हमारे पास यही तो सबसे अनमोल ताक़त है"

केशव जब दमयंती से कहता है 'दिल में प्यार जींदा रखो दमयंती... हमारे पास यही तो सबसे अनमोल ताक़त है' तो दमयंती मायूसी भरे शब्दो में केशव से कहती है, "क्या ये प्यार की ताक़त हमे इस भयानक जंगल से निकाल पाएगी ?"

दमयंती जीवन की वास्तविकता को देख कर थोड़ा घबरा रही है. अभी तक उसने बस हवेली की जींदगी देखती थी. उस जींदगी में आराम ही आराम था. एक आम आदमी की

जींदगी का उसे पता ही नही था. अपने आप को जंगल के बीच ऐसे हालात में पा कर वो दुखी और मायूस है. शायद ये स्वाभाविक भी है

केशव शायद उसके दिल की बात समझ जाता है और कहता है, "तुम्हारे लिए तो ये सब बहुत अजीब है.. मैं समझ सकता हूँ पर कल जंगल में घुसने के अलावा हमारे पास और कोई चारा नही था. मैं सिर्फ़ तुम्हारे लिए खेत से भागा, वरना मैं अपने खेत को छोड़ कर हरगिज़ कहीं नही जाता"

"मैं क्या करूँ केशव… मैं पहले कभी घर से ऐसे बाहर नही रही. आज इस तरह जंगल में रात बितानी पड़ेगी मैने सोचा भी नही था" --- दमयंती ने कहा

"मुझे दुख है दमयंती कि तुम्हे मेरे कारण इतना कुछ सहना पड़ रहा है. दिन होने दो, मुझे यकीन है यहा से निकलने का कोई ना कोई रास्ता मिल ही जाएगा"

"रास्ता मिल भी गया तो भी हम कहा जाएगेँ केशव ?"

"मेरे चाचा के गावँ चलेंगे… बस यहा से निकलने की देर है.. आगे मैं सब कुछ संभाल लूँगा" केशव ने कहा

"ठीक है… मैं तुम्हारे साथ हूँ.. अब घर वापिस नही जा सकती. अब तक तो घर में तूफान आ गया होगा"

"हाँ… वो तो है… मेरे घर पर भी सभी परेशान होंगे"

[जंगल में ही एक दूसरी जगह एक गुफा के बाहर का दृश्य]

“भुवन क्या इसमे जाना ठीक होगा ?”

“हां-हा ँये गुफा खाली लगती है.. देखो मैने अंदर पत्थर फेंका था.. कोई जानवर होता तो कोई हलचल ज़रूर होती… वैसे भी हम रात में ज़्यादा देर ऐसे भटकते नही रह सकते.. बहुत खूंखार जानवर हैं यहा.. हमे यहीं रुकना होगा” --- भुवन ने कहा

“ठीक है.. चलो” उमा ने कहा

“रूको पहले गुफा के द्वार को बंद करने का इंतज़ाम कर दूं.. ताकि कोई ख़तरा ना रहे”

“ये पत्थर कैसा है भुवन” --- उमा जीश पत्थर पर हाथ रख कर खड़ी थी उसके बारे में कहती है

“अरे शायद ये इसी गुफा का है.. इसे ही यहा लगा देता हूँ”

भुवन उस पत्थर को लुड़का कर गुफा के द्वार तक लाता है और उमा से कहता है, “चलो अंदर, मैं अंदर से इसे यहा द्वार पर सटा दूँगा. फिर किसी जानवर का डर नही रहेगा”

उमा अंदर चली जाती है और भुवन द्वार पर पत्थर लगा कर पूछता है, “अब ठीक है ना”

“क्या ठीक है.. इतना अंधेरा है यहा.. बाहर कम से कम चादँ की चादँनी तो थी”

“अब जंगल में इस से बढ़िया बसेरा मिलना मुश्किल है… लगता है यहा ज़रूर कोई आदमी रहता होगा, वरना ये पत्थर वहां बाहर कैसे आता. बिलकुल गुफा के द्वार के लिए बना लगता है ये पत्थर”

“भुवन घर में सब परेशान होंगे”

“वो तो है.. तुम चिंता मत करो.. कल हम हर हालत में गावँ वापिस पहुचँ जाएगँे”

“मुझे नही पता था कि.. ये इतना बड़ा जंगल है” – उमा ने कहा

“मुझे भी कहा पता था… ना केशव के खेत में जाते .. ना यहा फँसते”

“पर भुवन… वो खेत में क्या था ?”

“क्या पता.. मैने बस एक ही नज़र देखा था… मेरे तो रोंगटे खड़े हो गये थे… चल छोड़ इन बातो को.. आ अपना अधूरा काम पूरा करते हैं”

“कौन सा अधूरा काम ?”

“अरे भूल गयी… मैं बस तुम में समाया ही था कि उस मनहूस चिंख ने सब काम खराब कर दिया”

“पागल हो गये हो क्या.. मुझे यहा डर लग रहा है और तुम्हे अपने काम की पड़ी है”

“उमा रोज-रोज हम जंगल में थोडा ऐसे आएगँे. आओ ना इस वक्त को यादगार बना देते हैं”

“तुम सच में पागल हो गये हो ?”

“हां… शायद ये उस बेल का असर है जो हमने खाई थी… आओ ना वो काम पूरा करते हैं”

ये कह कर भुवन.. उमा को बाहों में भर लेता है.

“आहह… भुवन ऐसी जगह भी क्या कोई ये सब कर सकता है ?”

“हम कर तो रहे हैं.. हहे”

भुवन उमा के स्तनों को थाम कर उन्हे मसलने लगता है.. और उमा चुपचाप बैठी रहती है.

“इन फूलों को बाहर निकालो ना… अब हमारे पास पूरी रात है, और तन्हाई है… यहा किस बात का डर है” --- भुवन उमा के स्तनों को मसलते हुवे कहता है

“भुवन… आअहह तुम नही समझोगे… ये वक्त इन सब बातो का नही है”

“उमा प्यार किसी वक्त का मोहताज़ नही होता. अगर सामने मौत भी हो तो भी हमे प्यार का दामन नही छोड़ना चाहिए. क्या हम भूल जायें की इस वक्त हम साथ हैं. मैं ये नही भूल सकता. जब तुम मेरे साथ होती हो तो मेरा मन बस तुम्हे प्यार करने का होता है. इस से कोई फराक नही पड़ता की वक्त और हालात कैसे हैं”

“तुम मुझे बातो में फँसा ही लेते हो” – उमा ने थोडा मुस्कुराते हुवे कहा

“तो फिर निकालो ना इन फूलों को बाहर… इस जंगल में अपनी उमा के स्वादिष्ट फल तो चंख लूँ”

“धात… पागल कहीं के” --- उमा शर्मा कर कहती है

उमा हिचकिचाते हुवे अपनी कमीज़ को उपर करती है और भुवन झट से उसके स्तनों को थाम लेता है

“ये हुई ना बात.. तुम सच में बहुत प्यारी हो”

“तुम्हारे लिए मैं कुछ भी कर सकती हूँ भुवन.. बस मुझे धोका मत देना”

“पागल हो क्या.. मैं तुम्हे धोका क्यों दूँगा… क्या तुम्हे मुझ पर कोई शक है”

“तुम पूरे गाँव में बदनाम हो… केशव भी तुम्हारी बुराई कर रहा था.. एक मैं हूँ जो तुम पर यकीन करती हूँ.. मेरा भरोसा मत तोड़ना”

“अरे तुम्हारा भरोसा मेरे लिए बहुत अनमोल है उमा.. मैं इस भरोसा को नही खोने दूँगा”

“मुझे तुम पर यकीन है भुवन… ये दुनिया चाहे तुम्हे कुछ समझे, पर तुम मेरे लिए सब कुछ हो”

“मुझे पता है उमा… लाओ अब इन स्तनों को चूसने दो… वरना पूरी रात बातो में बीत जाएगी”

भुवन उमा के स्तनों को थाम कर उन्हे अपने प्यार में भिगो देता है.

“एक बात कहूँ उमा ?”

“हाँ कहो” – उमा ने कहा

“तुम्हारे यह फल बहुत मीठे हैं. इतने मीठे फल इस पूरे जंगल में नही मिलेंगे”

“चुप करो तुम,…. और अपना काम करो”

“कौन सा काम… उमा ?”

“वही जो कर रहे हो”

“तुम्हे अच्छा लग रहा है ना उमा”

“हाँ अच्छा लग रहा है… बस खुश… आहह”

“क्या हुवा ?”

“दाँत क्यों मार रहे हो ?”

“ओह… माफ़ करना… ग़लती हो गयी…आगे से ध्यान रखूँगा”

“कोई बात नही.. तुम करते रहो”

“मतलब.. तुम इस मज़े के लिए दर्द भी सह लॉगी…. हहे”

उमा ये सुन कर शर्मा जाती है और कहती है, “चुप करो….मैने ऐसा कुछ नही कहा”

“ठीक है-ठीक है, मैं बस मज़ाक कर रहा था” --- भुवन ने कहा और कह कर फिर से उमा के स्तनों को चूसने लगा

“आअहह….. तुम बहुत चालाक हो”

“चालाक ना होता तो तुम मेरे प्यार में फँसती. अच्छा ये बताओ…क्या तुम भी मुझे प्यार करोगी ?”

“क्या मतलब ?”

“मतलब तुम भी मेरे उसको सहला लो..”

“नही.. नही मुझ से ये नही होगा”

“होगा क्यों नही… प्यार में कोई झीज़ाक नही करते.. मेरे तुम्हारे बीच अब कैसा परदा.. खेत में भी तो तुमने छुवा था ?”

“खेत का नाम मत लो मुझे डर लगता है”

अच्छा-अच्छा ठीक है मैं तो यू ही कह रहा था … लो पकड़ो ना.. मुझे अच्छा लगेगा अगर तुम इसे थोड़ा दुलार दोगि तो”

भुवन अपने लिंग को उमा के हाथ में थमा देता है और उमा प्यार से उसे सहलाने लगती है.
"तुम मुझे हर बात के लिए मना लेते हो" – उमा ने कहा

"यही तो प्यार है उमा.. और प्यार क्या होता है ?"

"वैसे तुम्हारा ये बहुत प्यारा लग रहा है"

"ऐसा है क्या ?"

"हाँ.." --- उमा शर्मा कर कहती है.

"तो फिर चलो इसको इसकी मंज़िल पर पहुँचा दो"
"क्या मतलब..?" उमा ने पूछा

"मतलब की इसको अपने अंदर छुपा लो.. वही तो इसकी मंज़िल है.. हहे"

"हटो मुझ से वो नही होगा.. बहुत दर्द हुवा था मुझे खेत में"

"अब खुद खेत की बात कर रही हो.. मैं करता हूँ तो तुम्हे बुरा लगता है"

"पर सच कह रही हूँ भुवन, मुझे दर्द हुवा था"

"तुम वहां डर रही थी ना इसलिए दर्द हुवा होगा.. यहा तो हम इस गुफा में हैं.. अब किसी बात की चिंता नही है.. चलो आराम से करूँगा"

भुवन उमा को अपनी बाहों में लेकर अपने नीचे लेता लेता है और उसका नाडा खोल कर उसके कपड़े नीचे सरका देता है
उमा, भुवन के लिंग को थामे रहती है.

“अब छोड़ दो इस बेचारे को… इसको अब लंबे सफ़र पे जाना है” --- भुवन हंसते हुवे कहता है

“पहले खुद हाथ में देते हो फिर ऐसा कहते हो… हटो मुझे कुछ नही करना”

“अरे प्यार में ऐसे मज़ाक तो चलते रहते हैं… बुरा क्यों मानती हो.. अच्छा चलो थोड़ी देर और पकड़ लो”

“मुझे नही पकड़ना अब कुछ…. तुम अपना काम करो”

“मतलब की तुमसे इंतेज़ार नही हो रहा.. हहे”

“हे भगवान तुम सच में बहुत बदमाश हो”

“क्या बात है… अपने बारे में कुछ नही कहती जिसने मुझे अपने रूप के जाल में फँसा रखा है. कैसा इतेफ़ाक है ना… मैं उमा के रूप के जाल में फँसा हूँ”

“और अब सारी उमर फँसे रहोगे हहहे” --- उमा हंसते हुवे कहती है

“उमा अंधेरे में मुझे रास्ता नही मिल रहा.. पकड़ कर सही जगह लगा दो ना”

“मैं खूब समझती हूँ तुम्हारी चालाकी… कल तो बड़ी जल्दी मिल गया था तुम्हे रास्ता !! क्या कल खेत में अंधेरा नही था ?”

“अरे वहां चादँ की चादँनी थी.. यहा गुफा में बिलकुल अंधेरा है”

“तुम मज़ाक कर रहे हो ना ?”

“नही उमा मैं भला मज़ाक क्यों करूँगा.. मैं तो खुद बहुत जल्दी में हूँ”

उमा भुवन का लिंग पकड़ कर अपने योनि द्वार पर रख देती है और कहती है, “लो अब ठीक है”

“उमा मैं मज़ाक कर रहा था हहे”

“बदमाश छोड़ो मुझे” --- उमा ने गुस्से में कहा

उमा छटपटा कर वहां से उठने लगती है

“अरे-अरे रूको ना…. तुम तो मज़ाक का बुरा मान जाती हो”

“बात-बात पर मज़ाक अच्छा नही होता”

“पर एक बात है.. तुमने बड़े प्यार से लगाया था वहां”

“अच्छा… अब आगे से कभी ऐसा नही करूँगी”

“देखेंगे… अब में तुम्हारे अंदर आ रहा हूँ”

“धीरे से…. भुवन मुझे सच में कल बहुत दर्द हुवा था”

“तुम चिंता मत करो… मैं धीरे-धीरे तुम्हारे अंदर आऊंगा.. तुम बस अपना दरवाजा प्यार से खुला रखना”

“ऊओ…….. भुवन बस रुक जाओ”

“अभी तो बहुत थोड़ा ही गया है ” – भुवन ने कहा

“रूको ना.. अभी दर्द है”

“ठीक है थोड़ी देर रुकता हूँ”

“शुक्र है” --- उमा ने गहरी साँस ले कर कहा

“ऐसा क्यों कह रही हो”

“खेत में तुम बड़ी बेरहमी से डाटँ रहे थे मुझे..याद है ना”

“हाँ तब मुझे लगा था कि तुम बहुत ज़ोर से चिंख रही हो… उसके लिए मुझे माफ़ कर दो”

“ठीक है… अच्छा चलो अब थोडा और आ जाओ”

“ऐसे प्यार से बुलाओगी तो मैं पूरा एक बार में आ जाऊंगा”

“नही बाबा… धीरे-धीरे आओ” – उमा ने कहा

“अरे मज़ाक कर रहा हूँ… लो थोड़ा और..”

“आअहह…… बस”

उसके बाद दोनो उशी अवस्था में रुक जाते हैं और एक दूसरे में खो जाते हैं

थोड़ी देर बाद भुवन उमा से पूछता है, “अब कैसा है….क्या अभी भी दर्द है”

“हां है तो…. पर थोड़ा कम… थोड़ा और आ जाओ”

“क्या बात है… लगता है सरूर में आ गयी हो”

ये सुन कर उमा शर्मा जाती है. भुवन आगे बढ़ कर उसके होंटो को चूम लेता है और दोनो एक गहरे चुंबन में डूब जाते हैं

थोड़ी देर बाद भुवन पूछता है, “अब ठीक है ना ?”

“हाँ…. क्या अभी भी कुछ बाकी है ?”

“हां थोडा सा…. ये लो इसे भी जाने दो… ऊओह मिल गयी मंज़िल इसको अब”

“गुऊर्र्……गुऊर्र्र्र्र्रर…..गुऊर्र्र”

“भुवन ये आवाज़ कैसी है ?

“होगा कोई जानवर”

“वो यहा तो नही आ जाएगा ?” उमा ने डरते हुवे पूछा

“अरे नही… गुफा के द्वार पर पत्थर है, डरने की कोई बात नही है.. तुम बस इस पल में खो जाओ”

ये कह कर भुवन उमा के साथ मिलन सुरू कर देता है और कहता है, “अब कोई चीज़ हमारे बीच नही आएगी”

उमा भी सहवास में खोने लगती है पर रह-रह कर उसका ध्यान गुफा के बाहर की आवाज़ो पर चला जाता है. आवाज़े तेज होने लगती हैं तो उमा कहती है, “भुवन मुझे डर लग रहा है”

“अरे छोड़ो भी.. ये जंगल है… जानवर भटक रहे हैं बाहर… हम यहा सुरक्षित हैं, चलो इस मिलन का आनंद लो”

भुवन बहुत तेज झटको के साथ उमा को उस पल में खोने पर मजबूर कर देता है और वो सहवास के आनंद में डूबती चली जाती है

गुफा में जैसे एक तूफान सा आ जाता है. दो दिल हर चीज़, हर दर को भुला कर एक हो जाते हैं और वो गुफा उनके मिलन की गवाह बन जाती है

जब प्यार का तूफान रुकता है तो उन्हे होश आता है की उनकी गुफा का पत्थर हिल रहा है.

“भुवन भाग कर उस पत्थर को थाम लेता है और उमा से कहता है, “तुम चिंता मत करो… शायद जंगली कुत्ते हैं… वो ये पत्थर कभी नही हटा पाएगेँ”

उमा भी भुवन के पास आ कर उस पत्थर को थाम लेती है.

“गुऊर्र्रर….. गुउ‍ुउर्न्र्ररर … गुऊर्र्रर” –गुफा के बाहर गुर्राने की आवाज़ आती रहती है

भुवन और उमा दिल में एक डर लिए गुफा पर सटे पत्थर को थाम कर बैठ जाते हैं, लेकिन उनके दिल में मिलन का मीठा सा अहसाश बरकरार रहता है. वो कब एक दूसरे का हाथ थाम लेते हैं उन्हे पता ही नही चलता

“ये क्या हो रहा है हमारे साथ भुवन, अब ये क्या नयी मुसीबत है ?” उमा ने दर भरी आवाज़ में कहा

“कुछ नही घबराव मत, ये जंगल है, यहा ख़तरनाक जंगंली जानवर हैं, ये ज़रूर जंगली कुत्ते या भेड़िए हो सकते हैं” – भुवन ने कहा

“क..क..क्या भेड़िए ?”

“अरे शुक्र मनाओ कि शेर नही है”

“क्या यहा शेर भी हैं, मुझे डराव मत ?”

“अरे गाँव के बचे-बचे को पता है कि यहा जंगल में शेर हैं”

“पता होगा… मुझे बस इतना पता था कि ये ख़तरनाक जंगल है, ये नही पता था कि यहा शेर हैं”

“देखो हम जंगल में हैं, यहा के ख़तरो को स्वीकार करना होगा, तभी हम यहा से निकल पाएँगें”

“वो दोनो कहा होंगे अब भुवन ?”

“पता नही, हो सकता है वो अब किसी जानवर के पेट में हो.. हहे” --- भुवन ने हंसते हुवे कहा

“छी…. कैसी बाते करते हो तुम”

“मज़ाक कर रहा हूँ भाई, पर ये सच है कि इस जंगल में कुछ भी हो सकता है, वो तो शुक्र है कि हमे ये गुफा मिल गयी वरना ना जाने बाहर इस खौफनाक जंगल में हमारा क्या होता”

“वो तो है. वैसे तुम ठीक कह रहे थे, ये गुफा ज़रूर किसी इंसान की ही लगती है, ये पत्थर बिलकुल इस गुफा के आकार का है, इसे ज़रूर किसी इंसान ने ही यहा रखा होगा”

“ह्म्म.. ठीक कह रही हो”

“वैसे एक बात बताओ, केशव और तुम में क्या दुश्मनी है ?”

“छोड़ो तुम्हे बुरा लगेगा”

“नही बताओ ना, मैं जान-ना चाहती हूँ”

“अरे तुम से पहले मैं सविता के पीछे पड़ा था, एक बार उसे देख कर मैने सीटी मार दी थी, केशव ने देख लिया और लड़ने आ गया, तभी से वो मेरी बुराई करता फिरता है”

“तो और क्या करता वो, तुम्हारी हरकत की क्या… तारीफ़ करता”

“वो तो है पर मैने उस से माफी माँग ली थी, फिर भी वो अब तक मुझ से खफा है”

“मैं जानती हूँ उसे, वो ऐसा ही है, दिल पर कोई बात लग जाए तो फिर भूलता नही”

“तुम ये कैसे जानती हो ?”

“तुमसे पहले मैं केशव को चाहती थी, पर वो मुझ से कभी सीधे मूह बात नही करता था. उसकी खातिर अक्सर उसके घर जाती थी. वैसे भी कविता से मेरी अच्छी बोल चाल थी.

घर आना जाना हो जाता था. एक बार केशव ने इतनी बुरी तरह डांटा कि मैं दुबारा उसके घर नही गयी. कल पता चला कि वो ठाकुर की बेटी को चाहता है'' --- उमा ने कहा

''अरे अजीब बात है मैं केशव की बहन के पीछे था और तुम केशव के पीछे थी.. क्या इतेफ़ाक है''

''पर आज मैं तुम्हे चाहती हूँ भुवन.. तुम मेरे सब कुछ हो''

''मुझे पता है पगली, पर ये ठाकुर की लड़की देखना केशव को बर्बाद कर देगी''

''गुउुउउर्र्रर----गुउुउर्र्र्रर-----गुउुउर्र्रर''

गुफा के बाहर से गुर्राने की आवाज़े आती रहती हैं और भुवन और उमा पत्थर को थामे धीरे-धीरे बाते करते रहते हैं

''केशव मुझे नींद आ रही है, ठंड भी लग रही है..क्या करूँ ?''

''नींद तो मुझे भी आ रही है, ऐसा करो तुम मेरे नज़दीक आ जाओ और मेरे कंधे पर सर रख कर सो जाओ'' --- केशव ने कहा

''तुम्हारे नज़दीक ?''

''हां.. आओ ना तुम्हारी ठंड भी कम हो जाएगी, और मैं तुम्हे संभाल कर भी रखूँगा, वरना नींद में गिरने का ख़तरा रहेगा, और नीचे गिरे तो खेल ख्तम''

''चुप रहो तुम, ये मज़ाक का वक्त नही है ?''

''तुम्हे ये मज़ाक लग रहा है, पर मैं सच कह रहा हूँ जितनी जल्दी यहा के ख़तरो को समझ लो अच्छा है, ताकि तुम होशियार रहो''

''मुझे सब पता है यहा के बारे में''

“ये अच्छी बात है, यहा के ख़तरो का पता रहना चाहिए….. आओ सो जाओ”

“तुम कोई शरारत तो नही करोगे ?”

“कैसी शरारत दमयंती?”

“जैसी खेत में की थी ?”

“क्या किया था खेत में दमयंती ?”

“भूल गये, कैसे छू रहे थे तुम मुझे वहां, जब मैं तुम्हारे गले लगी थी”

“याद है- याद है…मैं वो कैसे भूल सकता हूँ..हहे” – केशव ने हंसते हुवे कहा

“तो तुम नाटक कर रहे थे ?”

“हाँ तुम्हारे मूह से सुन-ना चाहता था सब कुछ”

“अब सुन लिया ना ?”

“हाँ सुन लिया. पर एक बात है… तुम्हारे जैसी सुन्दर ब्रजभूषणिका के गले लग के मैं बहक ना जाऊ तो क्या करूँ”

“फिर मैं तुम्हारे पास नही आऊंगी, तुम फिर से बहक गये तो ?”

“नही बाबा आओ ना, सो जाओ, मेरे पास बहकने का वक्त नही है अभी.. मुझे चारो तरफ नज़र रखनी होगी”

“मुझे तुम पे विश्वास नही है” – दमयंती ने धीरे से मुस्कुराते हुवे कहा

“आओ ना और सो जाओ, तुम्हारी थकान दूर हो जाएगी” --- केशव ने दमयंती का हाथ पकड़ कर कहा

दमयंती केशव के नज़दीक जाती है और उसके कंधे पर सर रख कर बैठ जाती है

[पेड़ पर बैठे दमयंती और केशव]

“कभी सोचा भी नही था कि पेड़ पर रात बीतानी पड़ेगी” – दमयंती ने कहा

“जींदगी में हर चीज़ के लिए तैयार रहना चाहिए दमयंती, जींदगी कदम-कदम पर इम्त-हान लेती है” – केशव ने कहा

“अरे ऐसी बात तो हमेशा ब्रजभूषण कहता था” --- दमयंती ने कहा

“हाँ ये उस की कही बात है, पता नही कहा होगा वो अब, तीन साल से उसका कुछ नही पता”

“वो हर दिन सुबह मंदिर के बाहर चिड़ियों को दाना डालता था, मैं रोज उसे देखती थी, पर कभी ज़्यादा बात नही हुई” --- दमयंती ने कहा

“सविता तो उसकी दीवानी है, उसकी देखा, देखी वो भी चिड़ियों को दाना पानी डालने लगी थी. आज तक उसकी ये दिनचर्या जारी है” – केशव ने कहा

“वैसे वो कहा …”

दमयंती ने कहा ही था कि केशव ने उसके मूह पर हाथ रख दिया

दमयंती समझ गयी की उसे चुप रहना है, इसलिए उसने अपनी साँस रोक ली और कोई हरकत नही की

दमयंती को पेड़ के नीचे कुछ हलचल महसूस होती है. वो धीरे से गर्दने घुमा कर देखती है, उसकी साँस अटक जाती है.

पेड़ के नीचे लकड़बघा घूम रहा था. शायद उसे पेड़ पर किसी के होने की भनक लग गयी थी.

दमयंती, केशव को कस के पकड़ लेती है

केशव दमयंती के कान में धीरे से कहता है, “डरो मत, कुछ नही होगा, हम यहा पेड़ पर सुरक्षित हैं”

दमयंती, केशव की और देखती है और केशव आगे बढ़ कर दमयंती के माथे को चूम लेता है और धीरे से कहता है, “तुम सो जाओ, ये सब यहा चलता रहेगा, ये जंगल है यहा ये सब आम बात है”

[उधर गाँव में :---]

कोई अचानक आपकी जींदगी से चला जाए तो बहुत अफ़सोश होता है. सविता अपनी मा की जलती चिता को देख कर आसूँ बहाए जा रही है. कविता अभी भी अपने उपर हुवे ज़ुल्म के सदमे में है. बंसीलाल सर पकड़े ज़मीन पर बैठा है और अपनी बीवी की जलती चिता को देख रहा है. हर तरफ गम का माहॉल है.

वहां गावँ के सभी लोग मौजूद हैं. ब्रजभूषण मन ही मन कुछ सोच रहा है. अचानक वो ज़ोर से सभी लोगो को कहता है, "अब वक्त आ गया है कि हम हर ज़ुल्म और अन्याय के खिलाफ एक जुट हो जायें, कल अगर गावँ के थोड़े से लोग भी हिम्मत करते तो ये अन्याय नही होता. आप सब लोगो के सामने एक औरत को जलील किया गया और आप सब तमाशा देखते रहे"

"बस-बस तुम ज़्यादा बात मत करो, तुम्हारा बाप खुद उस ठाकुर के साथ रहता है और तुम हमे बाते सुना रहे हो" – रामू लोहार ने कहा

"पहले स्वामी जी की बात तो सुन लो" – गोपालदास ने कहा

"स्वामी जी !! कौन स्वामी जी ?" – रामू लोहार ने पूछा

"आप जिन्हे ब्रजभूषण के नाम से जानते हैं वही हमारे स्वामी जी हैं, पीछले एक साल से अपना ध्यान-व्यान छोड़ कर देश-ब्रजभूषण की खातिर समाज सुधार कर रहे हैं, ताकि हम सब उछँ-नीच, जात-पात, धर्म-भरम भुला कर अंग्रेज़ो का मुकाबला कर सकें" – गोपालदास ने कहा

"ये तो अनोखी बात हुई, हम तो सोचते थे कि ये पंडित का लड़का यहा कोई मज़ाक कर रहा है, बोलो बेटा… हम सुन रहे हैं"—रामू लोहार ने कहा

“हाँ तो मैं ये कह रहा था कि हमे एक जुट होना होगा. बात सिर्फ़ इस गाँव के ठाकुर की नही है. ठाकुर की अकल तो हम सब आज ठीकाने लगा सकते हैं. हमारी असली लड़ाई अंग्रेज़ो के खीलाफ है, जिन्होने हमे गुलाम बना रखा है, लेकिन उस से पहले हमे अपने सभी भेद-भाव भुला कर एक होना होगा.... उँछ-नीच, जात-पात की जंजीरो को तोड़ देना होगा, तभी हम एक होकर विदेशी ताकदो का मुकाबला कर पाएगें. हम 1857 का संग्राम हार गये क्योंकि हम में एकता नही थी वरना आज अंग्रेज इस धरती पे ना होते. हमने छोटे-छोटे टुकड़ो में यहा वहां लड़ाई लड़ी और नतीज़ा ये हुवा कि हम बुरी तरह हार गये”

ऐसी बाते हर किसी को समझ नही आती. ज़्यादा-तर लोग बहुत आश्चर्या से ब्रजभूषण की बात सुन रहे थे. ऐसा उन्होने पहली बार सुना था. 1857 तक का किसी को पता नही था. पता हो भी कैसे, देश का आम आदमी अपनी रोटी-टुकड़े की दौड़ में इतना डूब जाता है की उसे कुछ और ध्यान ही नही रहता. लेकिन कुछ नवयुवक ऐसे थे जो ब्रजभूषण की बात बड़े गौर से सुन रहे थे.

ब्रजभूषण, को कुल मिला कर गाँव वालो से कोई अच्छा प्रतिसाद नही मिला. ये सब देख कर गोविंद ने कहा, “ब्रजभूषण लगता है इनको इन सब बातो से कोई मतलब नही है”

“ऐसा नही है गोविंद, तुम सोते हुवे इंसान को अचानक उठा कर भागने के लिए नही कह सकते. इन सब बातो में वक्त लगता है. बरसो की गुलामी ने इन लोगो को जकड़ दिया है. मुझे ही इस गुलामी का कहा पता था. मैं खुद अध्यतम में डूब चुक्का था. ये तो स्वामी परमदेवजी जी की मेहरबानी है कि मेरी आँखे खुल गयी. उनसे एक मुलाकात ने मेरे जीवन का उदेश्य बदल दिया और मैं भी देश सेवा के लिए निकल पड़ा. मैने समाज सुधार का रास्ता चुना है, बिलकुल स्वामी परमदेवजी की तरह. पूरे देश में समाज सुधार की लहर चल रही है, हमे भी उसमे अपनी और से योगदान देना है. काम लंबा है..इसे धीरे धीरे आगे बढ़ाना होगा”

भाग - 7

[ठाकुर की हवेली का दृश्य :]

“ठाकुर साहिब- ठाकुर साहिब”

“क्या हुवा बलवंत ?” –भवानी प्रताप ने पूछा

“गाँव में आपके खीलाफ बग़ावत के सुर उठ रहे हैं” --- बलवंत ने भवानी प्रताप से कहा

भैरव भी उस वक्त वही था, वो ये सुन कर बोखला उठा और बोला, “किसमे इतनी हिम्मत आ गयी आज ?”

“मालिक वो अपने मंदिर के पुजारी का लौंडा ब्रजभूषण वापिस आ गया है.. वही सब को आपके खीलाफ भड़का रहा है. बोलता है ठाकुर को तो हम आज देख ले, हमारी असली लड़ाई तो अंग्रेज़ो के साथ है”

“क्या गिरधारी पंडित का लड़का !! वो तो तीन साल से गायब था ?” ---- भवानी प्रताप ने कहा

“हा ँमालिक वही.. वो कोई स्वामी बन कर लौटा है ?”

“पिता जी ये सब मुझ पर छोड़ दीजिए… मैं अभी जा कर उसकी अकल ठीकाने लगता हूँ” --- भैरव ने कहा

“ठीक है भैरव जाओ, इस से पहले की बग़ावत के सुर ज़्यादा ज़ोर पकड़े उन्हे कुचल दो”

“मालिक एक बात और पता चली है”

“हां बोलो क्या बात है” – भवानी प्रताप ने पूछा

“खबर है कि भिका ने पीचली रात केशव की बहन को उसके घर छोड़ दिया था”

“क्या ? अब कहा है वो नमक-हराम”” --- भवानी प्रताप ने पूछा

“वो ब्रजभूषण के साथ ही था मालिक, समशान में वो उसी के साथ खड़ा था ?”

“पिता जी आप चिंता मत करो में भिका की भी अकल ठीकने लगा दूँगा”

“पर भैरव, ये हवेली के पीछे के खेतो से जो कल रात चिंखे आ रही थी उसके बारे में क्या करोगे तुम ?” ---- भवानी ने गंभीरता से पूछा

“पिता जी वो भी देख लूँगा आज” --- भैरव ने कहा

“ये सब काम करके सारे आदमी दमयंती को ढूँडने में लगा दो, मुझे जल्द से जल्द अपनी बेटी वापिस यहा चाहिए”

“जी पिता जी” ---- भैरव ने कहा

भैरव भवानी प्रताप के कमरे से बाहर आता है और बलवंत से कहता है, “सभी आदमियों को तैयार करो, आज गाँव के एक-एक आदमी की खाल खींचनी है”

“जो हुकुम मालिक” – बलवंत ने कहा

“बेटा उस भिका को पकड़ कर यहा लाना, मैं खुद उसे अपने हाथो से मारूँगा” – जीवन प्रताप ने कहा

“आप चिंता मत करो चाचा जी, भिका के साथ-साथ मैं केशव की दोनो बहनो को भी लेकर आऊंगा” --- भैरव ने कहा

ये सुन कर जीवन की आँखो में अजीब सी चमक आ गयी.... उनमे हवस साफ़ दीखाई दे रही थी.

भैरव, गावँ में तूफान मचाने की तैयारी कर रहा है और शकुंतला रसोई में व्यस्त है. हवेली का बावरची माधव भी उसके साथ है.

“मालकिन, आप रहने दीजिए, हम कर लेंगे” – माधव ने कहा

“कोई बात नही काका, काम करके मेरा मन बहल जाता है” --- शकुंतला ने कहा

“जैसी आपकी इच्छा मालकिन”

तभी उन्हे कुछ सुनाई देता है ----- "आज तुम्हे नही छोड़ूँगा मैं"

“ये कैसी आवाज़ है मालकिन ?”

“पता नही ?”

शकुंतला रसोई से बाहर आ कर देखती है, पर उसे कुछ नही दीखता.

“हटो ना” – ये आवाज़ आती है.

शकुंतला हैरानी में फिर से चारो तरफ देखती है.

“देखो हट जाओ, कोई सुन लेंगे”

शकुंतला हैरान, परेशान फिर से हर तरफ देखती है.

वो वापिस रसोई में आती है और माधव से पूछती है, “काका, क्या तुमने फिर से कुछ सुना?”

“हां मालकिन, सुना तो… पर बहुत हल्का सा”

“मुझे लगा मेरे कान बज रहे हैं” – शकुंतला ने कहा

उस घर में उस वक्त शकुंतला के अलावा और कोई औरत नही थी. इसलिए शकुंतला काफ़ी हैरत में थी

उस ने मन ही मन में सोचा, कहीं ये लोग फिर से तो किसी ग़रीब को यहा नही ले आए

वो फॉरन अपने ससुर के कमरे की तरफ चल दी. कमरे के बाहर भैरव बलवंत से बाते कर रहा था. वो भैरव को देख कर रुक गयी.

भैरव ने पूछा, “क्या बात है ?”

“कुछ नही” – शकुंतला ने कहा और वापिस मूड गयी.

“कल इसने बहुत बुरा किया हमारे साथ बेटा” --- जीवन ने शकुंतला के लिए भैरव से कहा

“सब काम निपटा कर इसकी भी खबर लूँगा चाचा जी, पहले बाहर वालो को देख लूँ” --- भैरव ने कहा

शकुंतला वापिस रसोई की तरफ बढ़ती है. पर वो जैसे ही रसोई के दरवाजे पर कदम रखती है उसे आवाज़ आती है.

“उउऊययथी मानते हो की नही”

शकुंतला पूरी हवेली को देखने का फ़ैसला करती है. बारी बारी से वो सभी कमरे देख लेती है. इतनी बड़ी हवेली में ज़्यादातर कमरे खाली पड़े थे. शकुंतला को थोडा डर भी लग रहा था पर फिर भी वो एक-एक करके सभी कमरो के अंदर झाँक कर देखती है.

पर उसे किसी कमरे में कुछ नही मिलता.

"बस चाचा जी और पिता जी का कमरा रह गया. पर वहां से तो मैं आ ही रही हूँ. पिता जी और चाचा जी का कमरा आमने सामने है. वहां तो ऐसा कुछ नही था. वैसे भी आवाज़ तो रसोई के पास से ही आ रही थी और वो कमरे तो रसोई से दूर हैं" --- शकुंतला मन ही मन खुद से बाते कर रही है

ये सब सोचते-सोचते वो रसोई के बाहर पहुँच जाती है.

तभी अचानक उसे ध्यान आया, "अरे दमयंती का कमरा तो मैं भूल ही गयी"

ये सोच कर उसका दिल धक-धक करने लगता है. वो सोचती है, "तो क्या ये आवाज़ दमयंती के कमरे से आ रही है !! पर दमयंती तो यहा नही है"

शकुंतला, रसोई के बाहर खड़ी-खड़ी पहली मंज़िल पर दमयंती के कमरे को घुरती है.

"दमयंती का कमरा, रसोई के नज़दीक है, वहां से आवाज़ रसोई तक पहुँच सकती है" --- शकुंतला सोचती है

कुछ देर सोचने के बाद, शकुंतला सीढ़ियों की तरफ बढ़ती है.

उस कमरे की तरफ बढ़ते हुवे उसके कदम किसी अंजाने भय से थर-थर काँप रहे हैं.

जब शकुंतला कमरे के बाहर पहुँचती है तो रुक जाती है.

"शुक्र है, इस कमरे में भी कोई नही है, पर ये आवाज़ आ कहा से रही थी" – शकुंतला कमरे की बाहर की कुण्डी लगी देख कर अपने मन में कहती है.

शकुंतला बहुत हैरान और परेशान है. वो वापिस मूड कर सीढ़ियों से नीचे उतरने लगती है

“अफ….. तुम ये क्या कर रहे हो ?”

शकुंतला ये सुन कर सीढ़ियों के बीच में ही रुक जाती है. इस बार उसे आवाज़ बहुत नज़दीक सुनाई देती है.

वो वापिस उपर की तरफ आती है

“वही जो मुझे करना चाहिए”

“हे भगवान ये आवाज़ तो दमयंती के कमरे से ही आ रही है, कौन है अंदर ?” – शकुंतला ने मन ही मन कहा

शकुंतला काँपते हाथो से दमयंती के कमरे के बाहर लगी कुण्डी को खोलती है और दरवाजे को खोलने के लिए अंदर की ओर धक्का देती है पर …दरवाजा नही खुलता !!!

“मेरा शक सही निकला….. अंदर कोई है” – शकुंतला धीरे से कहती है

“दमयंती !! क्या तुम अंदर हो ?” ----- शकुंतला ने आवाज़ लगाई

अंदर से कोई जवाब नही आता

शकुंतला फिर से आवाज़ लगाती है, “दमयंती क्या तुम अंदर हो….. पर ये तुम्हारे साथ कौन है”

फिर भी अंदर से कोई आवाज़ नही आती.

तभी शकुंतला को दमयंती के कमरे की खिड़की का धयान आता है.

शकुंतला खिड़की पर जा कर उसे खोलने की कोशिश करती है, पर वो नही खुलती.

“आआययईीई….. थोडा रूको”

शकुंतला को फिर से अंदर से आवाज़ सुनाई देती है

शकुंतला ज़ोर से धक्का दे कर खिड़की खोल देती है. वो जो देखती है, उसे देख कर उसकी आखेँ खुली की खुली रह जाती हैं.

वो देखती है की दमयंती घुटनो के बल ज़मीन पर है और उसके पीछे एक लड़का उसकी योनि में लिंग डाले हुवे है.

“हट जाओ… भाभी देख रही है”

“देखने दो….. इस खेल का कोई दर्शक भी तो होना चाहिए”

“दमयंती ये सब क्या है…. और तुम कहा थी” --- शकुंतला हैरानी भरे शब्दो में पूछती है

“आअहह……… धीरे-धीरे करो ना”

“धीरे-धीरे ही तो मार रहा हूँ…. ज़ोर-ज़ोर से मारूँगा…. तो जाने क्या होगा”

“हे !! कौन हो तुम ?, छोड़ो दमयंती को वरना ………” शकुंतला ने कहा

“ये लिंग इस योनि में बहुत गहराई में उतर चुका है, अब ये अपना काम किए बिना नही निकलेगा”

“बदतमीज़…. कौन हो तुम ?” – शकुंतला ने गुस्से में कहा

“एक बार आप भी मेरे आगे झुक कर देख लो, पता चल जाएगा की मैं कौन हूँ, ऐसा लिंग नही देखा होगा आपने” वो अपना लिंग बाहर निकाल कर शकुंतला की तरफ हिलाता है और हिला कर वापिस वही डाल देता है जहा से निकाला था.

शकुंतला ये सब सुन और देख कर भोंचक्की रह जाती है. उसकी आँखो में गुस्से के कारण खून उतर आता है.

“आअहह…. जल्दी ख़तम करो, भाभी को गुस्सा आ रहा है”

“आने दो गुस्सा, वैसे ये गुस्सा इस कारण है कि तुम्हारी जगह मेरे आगे वो क्यों नही हैं”

“ऐसी बाते मत करो भाभी को ऐसी बाते अच्छी नही लगती”

“एक बार मेरे आगे आ जाएगी तो इन्हे सब अच्छा लगने लगेगा”

“भाभी… क्या आप यहा आना चाहती हो ?”

“चुप करो दमयंती…. मुझे इस पूरे घर में तुम थोड़ी अच्छी लगती थी. आज तुम पर से भी भरोसा उठ गया… छी….” शकुंतला ने गुस्से में कहा

“भाभी छोड़ो ना, अंदर आ जाओ और मज़े करो”

ये सब देख कर शकुंतला की आँखो में आँसू आ जाते हैं. वो सोचती है, “ये किस नरक में झोंक दिया पिता जी ने मुझे. इस से अच्छा तो मुझे मार देते”

“क्या सोच रही हो भाभी…. कहो तो मैं कुण्डी खोलूं ?”

“भाढ़ में जाओ तुम दोनो” – शकुंतला कहती है और वहां से चल देती है

“जल्दी-जल्दी करो कहीं भाभी पिता जी को बुला कर ना ले आए”

“अभी तो सुरू किया है, थोडा मज़ा तो लेने दो”

शकुंतला जाते-जाते अपने कान पर हाथ रख लेती है.

शकुंतला भारी कदमो से सीढ़ियों से नीचे उतरती है. वो जो कुछ देख कर आ रही थी, उसने उसे अंदर तक झकज़ोर दिया था.

वो खोई-खोई रसोई की तरफ जाती है. रसोई में घुसने से पहले वो मूड कर देखती है कि भैरव अपनी पल्टन के साथ बाहर जाने की तैयारी कर रहा है.

वो असमंजस में है कि, भैरव को दमयंती के बारे में बताए या ना बताए. पर कुछ सोच कर वो भैरव की तरफ बढ़ती है.

भैरव उसे आते देख चिड जाता है और झल्ला कर पूछता है, “क्या बात है”

“जी.. आप से कुछ ज़रूरी बात करनी थी”

“हां बोलो, क्या बकवास करनी है”

“जी… थोडा इधर आओ ना, बात गंभीर है”

“तेरे साथ और हो भी क्या सकता है, मनहूस कही की” – भैरव ने गुस्से में कहा

“मनहूस मैं नही ये घर है, ये परिवार है, पता नही किस जनम की सज़ा मिल रही है मुझे यहा”

“साली ज़बान लड़ाती है, लगता है सबसे पहले तेरी अकल ठीकाने लगानी पड़ेगी… चल तू अंदर बिना थूक लगाए तेरे योनि को रोन्दता हूँ” --- भैरव ने शकुंतला के बाल खींचते हुवे कहा और उसे खींच कर अपने कमरे की तरफ ले चला.

“ऊऊहह और तेज…. मज़ा आ रहा है”

भैरव ये आवाज़ सुन कर रुक जाता है

“चिंता मत कर अभी तूफान आने वाला है” – फिर से आवाज़ आती है

“ये आवाज़े कहा से आ रही हैं !! ?” --- भैरव ने शकुंतला से पूछा

“वही तो मैं आपको बताने आ रही थी, पर मेरी सुनता कौन है” – शकुंतला ने कहा

“बकवास बंद कर और ये बता कि ये आवाज़ कहा से आ रही है” – भैरव ने गुस्से में पूछा

“दमयंती के कमरे से आ रही हैं, दमयंती कमरे में ही है”

“क्या !!!” --- भैरव ने हैरानी में कहा

भैरव शकुंतला को छोड़ कर तेज़ी से सीढ़ियों की तरफ बढ़ता है

“आप वहां मत जाओ… आपको दुख होगा” --- शकुंतला ने कहा

पर भैरव ने शकुंतला की बात पर कोई ध्यान नही दिया

भैरव दमयंती के कमरे के बाहर पहुँच कर दरवाजे को खोलने लगता है. पर दरवाजा पहले की तरह अंदर से बंद था.

भैरव भी शकुंतला की तरह दमयंती के कमरे की खिड़की की तरफ बढ़ता है

खिड़की से उसने जो देखा वो उसके लिए भरोसा करने लायक नही था

“आअहह….रुक जाओ भैया देख रहे हैं”

“इस कमीने को भी देख लेने दो, इसे पता तो चले की मर्द क्या होता है………. नामार्द कहीं का !!”

“कमीने !! कौन हो तुम ??… दमयंती ये सब क्या है ?? --- भैरव ने गुस्से में चील्ला कर कहा

“चुप कर छक्के….. आवाज़ नीचे रख.. और यहा से दफ़ा हो जा. हमे मज़े करने दे” – वो ये कह कर आगे बढ़ कर खिड़की बंद कर देता है.

भैरव आग बाबूला होकर दरवाजे की तरफ दौड़ता है और उस पर ज़ोर से धक्का मारता है. पर दरवाजा नही खुलता.

“इस से पहले भैया अंदर आए… काम ख़तम करो”

“चिंता मत करो उस नामार्द के बस का नही है ये दरवाजा खोलना”

शकुंतला भी भाग कर आती है. साथ ही भवानी प्रताप और जीवन प्रताप भी आवाज़े सुन कर रसोई की तरफ आते हैं. वो देखते हैं कि भैरव दमयंती के कमरे के दरवाजे को तोड़ने की कोशिश कर रहा है. वो भी भाग कर सीढ़िया ँचड़ते हैं

इतने में दरवाजा टूट जाता है और भैरव लड़खड़ा कर कमरे के अंदर गिर जाता है

शकुंतला भी कमरे में आ जाती है

दोनो हैरानी से कमरे को देखते हैं. उनकी सिट्टी-पिटी गुम हो जाती है

“कहा गये वो दोनो” – शकुंतला ने पूछा

भैरव ने हैरानी भारी आँखो से शकुंतला की ओर देखा

इतने में भवानी प्रताप भी जीवन के साथ कमरे में आ जाता है.

“क्या हुवा भैरव ? ये दरवाजा क्यों तोड़ दिया तुमने ? ” – भवानी ने हैरानी में पूछा

“वो..वो.. दमयंती थी कमरे में पिता जी” – शकुंतला ने कांपति आवाज़ में कहा

भैरव कुछ भी कहने की हालत में नही था. वो खड़ा होता है और कमरे के उस दरवाजे की तरफ बढ़ता है जो कमरे की बरामदे में खुलता है. वो अंदर से बंद है. वो शकुंतला की तरफ

देखता है.

शकुंतला भी दरवाजे की कुण्डी देख कर हैरान रह जाती है. शकुंतला और भैरव आँखो ही आँखो में कुछ कहते है. सिर्फ़ वो दोनो जानते हैं कि इस बंद दरवाजे का क्या मतलब है. शकुंतला थर-थर काँपने लगती है और कमरे से बाहर आ जाती है.

"कोई हमे बताएगा की यहा क्या हो रहा है" --- भवानी ने गुस्से में कहा

भैरव बिना कुछ कहे कमरे से बाहर आ गया. वो गहरे सदमे में है....बहुत गहरे सदमे में. भैरव को इतना बड़ा सदमा लगा था कि वो कुछ भी नही बोल पा रहा था.

उसके पीछे-पीछे भवानी प्रताप और जीवन प्रताप भी कमरे से बाहर आ जाते हैं. वो दोनो बहुत हैरान और परेशान हैं. उन्हे कुछ समझ नही आ रहा कि आख़िर बात क्या है ?.

"भैरव, क्या बात है... तुम कुछ बोलते क्यों नही" – भवानी प्रताप ने भैरव के कंधे पर हाथ रख कर पूछा

पर भैरव ने कुछ जवाब नही दिया

"हां बेटा बोलो ना क्या बात है, ये दरवाजा क्यों तोड़ा तुमने" ---- जीवन प्रताप ने पूछा

तभी बलवंत नीचे से आवाज़ लगाता है और पूछता है, "मालिक सब लोग तैयार हैं, चलें क्या ?"

भैरव गहरे विचारो में खो जाता है... फिर कुछ सोच कर कहता है, "आज रहने दो, वो सब बाद में देखेंगे"

"क्या कह रहे हो बेटा !! ऐसे तो ये गाँव वाले सिर पे चढ़ जाएगेँ" --- जीवन प्रताप ने कहा

"एक-दो दिन में कोई तूफान नही आ जाएगा चाचा जी" --- भैरव ने कहा

“पर बात क्या है कुछ बताते क्यों नही ?? बहू कह रही थी कि दमयंती थी कमरे में ??. वो थी तो कहा गयी ?” --- भवानी ने पूछा

“ऐसा कुछ नही है, उसे भ्रम हुवा होगा” --- भैरव ने कहा

“तो फिर तुमने दरवाजा क्यों तोड़ा.... वो बाहर से बंद था ना” --- भवानी ने हैरानी भरे शब्दो में पूछा

“पिता जी दरवाजा अटक गया था. उसे खोलने की कोशिश कर रहा था… बस इतनी सी बात है”

“तो फिर बहू क्यों कह रही थी कि दमयंती कमरे में थी ?”

“उसका दिमाग़ खराब है पिता जी. दरवाजा अटका हुवा था.. इसलिए उसने सोचा कि दमयंती अंदर है”

शकुंतला वही खड़ी हुई सब सुन रही थी.

“दिमाग़ तो इसका खराब है ही... हा” --- भवानी ने कहा और कह कर वहां से चल दिया.

जीवन भी वहां से चुपचाप चला गया.

भैरव ने गहरी साँस ली और भारी-भारी कदमो से अपने कमरे की तरफ चल पड़ा

शकुंतला भी उसके पीछे-पीछे कमरे में आ गयी

“क्या कहा आपने…. मेरा दिमाग़ खराब है !!!! क्या आपने दमयंती को कमरे में नही देखा ?” --- शकुंतला ने पूछा

“चुप कर.... मैं अभी बहस के मूड में नही हूँ” – भैरव ने कहा

“पर ये सब था क्या....?” --- शकुंतला ने पूछा

“मैने कहा ना… चुप रहो, अपना काम देखो जा कर… मुझे अकेला छोड़ दो”

शकुंतला कमरे से बाहर निकल कर रसोई में आ जाती है.

“क्या हुवा मालकिन “ – माधव ने पूछा

“कुछ नही काका... चलिए खाना तैयार करते हैं” --- शकुंतला ने कहा

[जंगल में गुफा के अंदर का दृश्य]

“भुवन कब तक बैठे रहेंगे हम इस गुफा में” – उमा ने झुंजलाहट में कहा

“लगता है रास्ता साफ है… काफ़ी देर से कोई आवाज़ तो नही आई. ऐसा करता हूँ थोडा सा पत्थर हटा कर देखता हूँ” --- भुवन ने कहा

“हां देखो, पर ज़रा ध्यान से”

“तुम चिंता मत करो और पत्थर छोड़ कर पीछे हट जाओ, मैं बाहर झाँक कर देखता हूँ”

भुवन बाहर झाँक कर देखता है

“दीख तो कुछ नही रहा, लगता है रास्ता साफ है, आओ चलते हैं”

“ठीक है चलो जल्दी… हमे हर हाल में आज वापिस गाँव पहुँचना है”

“ठीक है आओ”

दोनो गुफा से बाहर आ कर सुबह की खुली हवा में साँस लेते हैं और चारो तरफ देखते हैं कि कहीं कोई ख़तरा तो नही.

“रूको मैं ये मोटी सी लकड़ी उठा लेता हूँ. रास्ते में काम आएगी” --- भुवन ने कहा

“ठीक कह रहे हो… जिस तरह का ये जंगल है, हमारे पास कुछ तो होना ही चाहिए”

“ये लो एक डंडा तुम भी पकड़ लो” – भुवन लकड़ी का एक मोटा सा डंडा उमा की तरफ बढ़ाता है.

“केशव और दमयंती पता नही कहा होंगे ? क्या वो गाँव पहुँच गये होंगे ?” --- उमा ने भुवन से पूछा

“पता नही… क्या पता वो भी हमारी तरह कहीं भटक रहे हो ?”

“हम्म्म….. बिलकुल हो सकता है” --- उमा ने कहा

[केशव और दमयंती का दृश्य]

"हो गया क्या ?"

"तुम इधर मत देखना"

"अरे भाई… ये जंगल है चारो तरफ ध्यान रखना पड़ता है, जल्दी करो… हमें आज इस जंगल से निकलना ही होगा"

"बस अभी आ रही हूँ"

"ठीक है… पर जल्दी करो"

दमयंती अपनी सुबह की दिनचर्या पूरी करके आती है.

"चलो …. तुमने तो परेशान कर दिया" ---- दमयंती ने कहा

"अरे तुम समझती नही… मैं जानबूझ कर बाते कर रहा था… ताकि पता चलता रहे कि झाड़ियों के पीछे तुम ठीक हो… पर देखो खाने का इंत-जाम हो गया"

"वो कैसे ?" – दमयंती ने हैरानी में पूछा

"देखो वो सामने उस पेड़ पर बेल लटक रही है, खाई है कभी क्या ?"

"हां-हां खूब खाई है… चलो जल्दी से तोड़ते हैं"

"रूको…. जंगल में कोई भी काम भाग-दौड़ में नही करते. यहा कदम-कदम पर ख़तरे हैं. आराम से, चुपचाप चारो तरफ देखते हुवे चलते हैं"

"ठीक है… मुझे भूख लगी है ना, इसलिए जल्दी मचा रही थी"

"भूख तो मुझे भी लगी है… चलो चलते हैं"

दोनो दबे पाँव चारो तरफ देखते हुवे उस पेड़ के पास जाते हैं

“ऐसा करते हैं पेड़ पर ही चढ़ जाते हैं…क्या कहते हो ? --- दमयंती ने कहा

“ह्म्म ख्याल तो अच्छा है… तुम्हारा दीमाग अब ठीक चल रहा है”

“क्या मतलब… क्या पहले ठीक नही था ?”

“ठीक होता तो क्या तुम मुझ ग़रीब से प्यार करती ?”

“कैसी बाते करते हो तुम.. शरम नही आती तुम्हे ऐसा कहते हुवे …ग़रीब वो होता है जिसकी सोच छोटी होती है”

“अरे ये तुमने कहा से सुना”

“उसी ब्रजभूषण से सुना था… एक बार जब मैं मंदिर से निकल रही थी तो उसको किसी को कहते हुवे सुना था”

“ऐसा ही है ब्रजभूषण… उसके मूह से कुछ ना कुछ अच्छा निकलता रहता है… काश उस से दुबारा मिल पाता !! पता नही कहा होगा वो ?” --- केशव ने कहा

“केशव जी… वैसे हम शायद यहा कुछ खाने आए थे”

“ओह्ह….. हा,ँ चलो पहले तुम चढ़ो… आराम से पेड़ पर बैठे-बैठे खाते रहेंगे” – केशव ने कहा

दमयंती पेड़ पर चढ़ जाती है और केशव भी उसके चढ़ने के बाद पेड़ पर चढ़ जाता है.

दमयंती एक बेल तोड़ कर केशव को देती है

“अरे नही पहले तुम खाओ… मैं तोड़ लूँगा” --- केशव ने कहा

“अरे लो ना… मेरे हाथ के नज़दीक एक और है… मैं वो खा लूँगी”

“ठीक है, जब तुम इतने प्यार से दे रही हो तो मैं मना कैसे कर सकता हूँ?”

“ये हुई ना बात… प्यार वाली” --- दमयंती ने मुस्कुराते हुवे कहा

“अच्छा लग रहा है तुम्हे हंसते देख कर… कल तो मैं तुम्हे परेशान देख कर बहुत दुखी हो रहा था… सोच रहा था कि ये प्यार तुम्हे दुख दे रहा है”

“मैं पहली बार घर से बाहर थी केशव.. इसलिए बहुत परेशान थी. अब एक पूरा दिन और एक पूरी रात जंगल में बिता चुकी हूँ… अब मुझे लगता है कि यहा भी जिया जा सकता है”

“अरे वाह क्या बात है … तुम ऐसा कहोगी मैं सोच भी नही सकता था” --- केशव ने मुस्कुराते हुवे कहा

“मुझे कल बहुत बुरा लग रहा था. कयी बार ये भी सोचा कि इस प्यार के झंझट में क्यों पड़ गयी …पर अगले ही पल ये ख्याल आया कि ये झंझट जब खूबसूरत है तो हर्ज़ ही क्या है” --- दमयंती ने प्यार भरी नज़रो से केशव की ओर देखते हुवे कहा

“क्या खूबसूरती है इस झंझट में दमयंती ?”

“कल सारी रात तुम मुझे थामे पेड़ पर बैठे रहे… मैं सो गयी पर तुम नही सोए… पूछ सकती हूँ क्यों ?”

“इसलिए कि तुम चैन से सो पाओ. नींद में तुम यहा वहां लुडक रही थी. मैं ना थामे रहता तो तुम नीचे गिर जाती”

“यही तो वो खूबसूरती है केशव… एक दूसरे के लिए कुछ भी कर-गुजरने की चाहत, खूबसूरत नही तो और क्या है ? इस प्यार से सुन्दर चीज़ हमें और क्या मिल सकती है”

“ये तो है दमयंती. मैं तो खुद इस प्यार की खूबसूरती में सब कुछ भुला चुका हूँ… हर पल दिल में प्यार का मीठा-मीठा सरूर रहता है”

“वैसे अब मुझे ये जंगल बहुत प्यारा लग रहा है… कितनी शांति और सकूँ है यहा… ये सब और कहा मिलेगा” ---- दमयंती ने कहा

“ठीक है फिर हम यही घर बसा लेते हैं” --- केशव ने कहा

“घर क्यों… हम पेड़ पर रह लेंगे ….. कल रात भी तो पेड़ पर थे” ---- दमयंती ने हंसते हुवे कहा

“फिर हमें भी उन कबूतरों की तरह प्यार करना होगा… जैसा हमने उस पेड़ पर देखा था. कितना प्यारा तरीका था ना प्यार का वो ?” ---- केशव ने शरारती अंदाज़ में कहा

“हटो केशव…. ऐसी बाते मत करो… मुझे शरम आती है”

“तुम ही तो कह रही थी कि पेड़ पर रहेंगे… जब पेड़ पर रहेंगे, तो पेड़ के तोर-तरीके तो अपना-ने पड़ेंगे ना”

“वो…. पेड़ के बारे मैं तो यू ही मज़ाक में कह रही थी.. पर हां, यहा घर बना कर रहने में मुझे कोई ऐतराज नही है”

“वाह-वाह हवेली में रहने वाली अब जंगल में रहेगी….. ”

“तो क्या हुवा…. मुझे तो ये जंगल बहुत अच्छा लग रहा है” – दमयंती ने कहा

“ये सब तो ठीक है दमयंती.. पर ये जंगल पलक झपकते ही अपना रूप बदल सकता है… इसलिए ऐसी बाते मत सोचो. हम मेरे चाचा जी के गावँ चल रहे हैं. वैसे जब तक हम यहा से नही निकलते तब तक हम यही हैं.. इसलिए अपना दिल खुश कर लो”

“ठीक है बाबा… ले चलो मुझे जहा ले चलना है.. मैने क्या कभी मना किया है” --- दमयंती ने कहा

“अरे वो देखो !!” ---- केशव ने एक पेड़ की तरफ इशारा करते हुवे कहा

“कहा देखूं ?”

“उस सामने के पेड़ पर बंदर..बंदरिया क्या कर रहे हैं”

“फिर मुझे ऐसी चीज़ दीखा रहे हो”

“अरे देख लो और सीख लो… प्यार का ये तरीका हम इंसान भी अपनाते हैं”
“हटो तुम…. मुझे नही सीखना ये सब” --- दमयंती ने शरमाते हुवे कहा

“अरे इसके बिना तो आदमी-औरत अधूरे हैं, ये नही होगा तो धरती पर जीवन कैसे चलेगा”

“पर ये तो बेकार तरीका है… देखो ना कैसे झुका रखा है.. बेचारी को बंदर ने”

“प्यार के बहुत सारे तरीके हैं दमयंती…. ये बस उनमे से एक है”

“बस-बस मुझे काम-क्रीड़ा का पाठ मत पधाओ और चुपचाप बेल खाओ” – दमयंती ने झुंजलाते हुवे कहा

“ये सब हमारे काम की बाते हैं दमयंती इनको समझ लो तो अच्छा होगा”

“मुझे कुछ नही समझना… तुम बेल खाओ और मुझे भी खाने दो…. हा.. काम की बाते”

“ऐसे गुस्सा करती हो तो और भी प्यारी लगती हो, मन कर रहा है तुम्हारी पप्पी ले लूँ”

“ले कर दीखाओ, तुम्हे नीचे धक्का दे दूँगी”

“ऐसा है क्या ?”

“हां बिलकुल”

केशव दमयंती की तरफ बढ़ता है

“रूको मानते हो कि नही मैं सच में तुम्हे गिरा दूँगी”

“तो गिरा दो.. तुम्हे रोक कौन रहा है.... अब तो इन होंटो का रस मैं पी कर रहूँगा”

दौनो में हाथा-पाई होती है और ....

“नहियिइ...” --- दमयंती चिल्लाई

“अरे तुमने तो सच में.......... गिरा दिया”

केशव ज़मीन पर पड़ा था.

“जल्दी उपर आओ”

“मुझे नही आना... पहले गिराती हो, फिर उपर बुलाती हो”

“देखो कितनी मीठी बेल है.. आओ ना... वरना मैं पूरी खा जाऊंगी”

“तो खा जाओ... मुझे भूख नही है”

“उउफ्फ .... ठीक है मैं भी नही खाती फिर... मैं नीचे कूद रही हूँ”

“अरे पागल हो क्या.... चोट लग जाएगी... मेरी कमर दुख रही है... रूको मैं आ रहा हूँ”

बहुत प्यारी है इन प्यार में डूबे दो दिलो की ये खूबसूरत नोक-झोंक.

[इधर गाँव में:------]

“सविता मैं खेत में जा रहा हूँ, पता चला है कि ठाकुर के आदमियों ने वहां खेत में कुछ अजीब देखा है” --- ब्रजभूषण ने सविता से कहा

“मैने भी देखा है ब्रजभूषण. कल सुबह मैने खुद किसी अजीब से साए को फसलों में घुसते देखा था. एक बार नही बल्कि दो बार. मैने और पिता जी ने पूरा खेत छान मारा पर हमें कुछ नही मिला. कल शाम को तुमने भी तो वो चिंख सुनी थी”

“हां सुनी तो थी… पर इन सब बातो से किसी नतीज़े पर नही पहुँच सकते.. अभी दिन है, एक बार मैं अच्छे से खेत को देख लूँ तभी कुछ कह सकूँगा” --- ब्रजभूषण ने कहा

“मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी ब्रजभूषण” --- सविता ने कहा

“कब तक साथ चलॉगी सविता, मैने जीवन से सन्यास ले लिया है. आज यहा हूँ तो बस देश-ब्रजभूषण की खातिर वरना कहीं समाधि में बैठा होता ?”

“ये क्या कह रहे हो ब्रजभूषण ? क्या ये दुख देने के लिए ही वापिस आए हो तुम. मैने सोचा मेरा प्यार तुम्हे यहा खींच लाया है.. पर नही तुम तो देश से प्यार करते हो.. मेरी इस देश के आगे क्या औकात है.. हैं ना”

ये कह कर सविता रोने लगती है

ब्रजभूषण उसकी और देखता रहता है. उसके पास सविता के सवाल का कोई जवाब नही है

“सविता तुम ये सब क्या कह रही हो ?”

“और क्या कहूँ ब्रजभूषण, तुम इतने दीनो बाद वापिस आए और अब ऐसी बाते कर रहे हो”

“देखो वहां खेत में तुम्हारा जाना ठीक नही होगा. वहां कुछ अजीब हो रहा है. तुम साथ रहोगी तो मुझे तुम्हारी ही चिंता रहेगी. कल तुम साथ ना होती तो मैं कल ही पता कर लेता कि क्या चक्कर है वहां”

“जब तुम मुझे कुछ समझते नही हो तो फिर मेरी चिंता क्यो रहेगी तुम्हे”

“किसने कहा मैं तुम्हे कुछ नही समझता, मेरे दिल में आज भी तुम्हारे लिए वही आदर और सम्मान है जो पहले था”

“पर… प्यार नही है… है ना ?”

“क्या मैने तुम्हे कभी कहा कि मैं तुम्हे प्यार करता हूँ” --- ब्रजभूषण ने पूछा

“नही पर….” ---- सविता ये कह कर चुप हो गयी. उसने अपने मूह पर आते हुवे सबदो को अपने अंदर ही रोक लिया.

“हम अच्छे दोस्त थे सविता. क्यों इस दोस्ती को प्यार के बंधन में बाँध रही हो. वैसे भी मेरे जीवन का मकसद इस देश के लिए कुछ करने का है. तुम्हे तो खुशी होनी चाहिए ये सब देख कर”

“मैं खुश हूँ ब्रजभूषण पर… मैं इस दिल का क्या करूँ जो बस तुम्हारे लिए धड़कता है”

“इस दिल को तुम्हे किसी और के लिए धड़कना सीखाना होगा… मैं चाह कर भी प्यार के बंधन में नही बाँध पाऊंगा. इस दोस्ती को दोस्ती ही रहने दो तो अच्छा होगा”

“तुम बहुत आगे निकल गये ब्रजभूषण… मैं तो बहुत पीछे रह गयी…. अब दोस्ती भी कहा निभा पाऊंगी”

“तुम वो सविता नही हो जिसे मैं जानता था…. क्या हो गया है तुम्हे ?”

“शायद प्यार ऐसा ही होता है… खैर जाने दो.. तुम जाओ मैं ठीक हूँ”

सविता और ब्रजभूषण अपनी बातो में खोए थे. अचानक उन्हे आवाज़ सुनती है

“मेरे साथ अन्याय हुवा है और तुम मुझे ही दोषी ठहरा रहे हो”

सविता मूड कर घर में घुसती है.

ब्रजभूषण देखता है कि एक आदमी अंदर से निकलता है और गुस्से में बड़बड़ाता हुवा उसके पास से निकल जाता है. थोड़ी देर बाद सविता बाहर आती है.

“क्या हुवा… कौन था वो ?” --- ब्रजभूषण ने पूछा

“वो जीजा जी थे… कविता दीदी के साथ जो कुछ भी हुवा, उसके लिए वो उसे ही ज़िम्मेदार ठहरा रहे हैं. बोल गये हैं कि उनका दीदी से अब कोई लेना देना नही है”

“ये क्या पागलपन है… कैसे लेना देना नही है” --- ब्रजभूषण ने कहा

“इस पुरुष प्रधान दुनिया में कुछ भी हो सकता है… कोई भी, कभी भी, कहीं भी, दामन छोड़ सकता है”

“मैने तुम्हारा दामन कब छोड़ा सविता ऐसा मत कहो” --- ब्रजभूषण ने पूछा

“मैं तुम्हे नही कह रही ब्रजभूषण, तुम जाओ मैं दीदी को संभालती हूँ वो रो रही हैं… वैसे मुझे खुद को भी संभालना है….” ---- सविता भारी आवाज़ में कहती है. कहते हुवे उसकी आँखे छलक उठती हैं

“ठीक है मैं चलता हूँ. तुम किसी बात की चिंता मत करना… मेरा मित्र गोविंद यही है और नीरज भी यही है. मैं गोपालदास को साथ ले जा रहा हूँ” --- ब्रजभूषण ने सविता की तरफ पीठ करके कहा

“ठीक है जाओ ब्रजभूषण, …….. अपना ख्याल रखना” --- सविता ने गहरी साँस ले कर कहा

ब्रजभूषण ने गोपालदास को आवाज़ लगाई और उसके साथ खेत की तरफ चल दिया

“स्वामी जी आप कुछ परेशान लग रहे हैं” – गोपालदास ने पूछा

“जींदगी में कई बार हमें अपनो के दिल को कुचल कर चलना पड़ता है” – ब्रजभूषण ने कहा

“क्या ऐसा करना पाप ना होगा स्वामी जी ?” --- गोपालदास ने पूछा

“तुम्हारे सवाल मुझे हमेशा परेशान करते हैं. अब पता नही ये पाप होगा या पुन्य. हा ँपर इतना ज़रूर जानता हू ँकि ऐसा करना ज़रूरी है. कभी तुम्हारे जीवन में ऐसा अवसर आया तो तुम खुद समझ जाओगे” – ब्रजभूषण ने जवाब दिया.

“कैसा अवसर स्वामी जी ?”

“कुछ नही…. अब ज़रा थोड़ा शांति से चलो”

“जी स्वामी जी”

[हवेली में:------]

“ये क्या हो गया है भैरव को भैया, अभी तो गाँव जाने की तैयारी कर रहा था और अब कहता है, एक दो दिन में तूफ़ान नही आ जाएगा” --- जीवन प्रताप सिंग ने कहा

“पता नही क्या बात है… ये बहू भी तो उसका दीमाग खराब करके रखती है” --- भवानी ने कहा

“वो सब तो ठीक है भैया पर गाँव पर पकड़ ढीली नही पड़नी चाहिए” --- जीवन ने कहा

“तुम चिंता मत करो जीवन, भैरव नही जाएगा तो हम खुद जाएँगें इन गाँव वालो की अकल ठीकाने लगाने”

इधर भैरव अपने कमरे में पड़ा-पड़ा गहरे ख़यालो में खोया है.

वो सोच रहा है, “वो दमयंती हरगिज़ नही हो सकती. वो मेरे सामने कभी ऐसा नही कर सकती. फिर वो कौन थी. और वो लड़का कौन था ?. वो केशव तो नही था. कुछ समझ नही आ रहा. वो कमरे से गायब कैसे हो गये ? क्या वो दोनो भूत थे….”

ऐसे बहुत सारे सवाल भैरव के मान में गूँज रहे थे. पर उसके पास इन सवालो का कोई जवाब नही था.

तभी भैरव देखता है कि शकुंतला उसकी ओर आ रही है

“मुझे माफ़ कर दीजिए मैं आपको बहुत दुख देती हूँ”

“ठीक है… ठीक है..ये नाटक बंद करो और यहा से दफ़ा हो जाओ…. मनहूस कहीं की”

“मनहूस तो ये घर है, मैं नही. देखा नही क्या कर रही थी दमयंती ?”

“चुप कर वरना ज़ुबान खींच लूँगा, वो दमयंती नही थी समझी” --- भैरव ने गुस्से में कहा

“अरे उसकी रगो में भी तो इसी घर का खून है.. मुझे पूरा यकीन है कि वो दमयंती ही थी”

“साली चुप नही होती… दफ़ा हो जा यहा से”

“सच बोलने में मुझे कोई डर नही है.. मैने जो देखा वो बोल रही हूँ”

“अभी बताता हूँ तुझे”

“आअहह… छोड़िए मेरे बाल”

“तेरी ज़ुबान दिन-ब-दिन और ज़्यादा चलने लगी है. आज तेरा वो हाल करूँगा कि तू याद रखेगी”

“देखिए ये सब ठीक नही है… छोड़ दीजिए मुझे… मैं सच ही तो बोल रही थी”

“छोड़ दूं तुझे हां..ताकि तू ज़ुबान लड़ा सके. बहुत दर्द होता है ना तुझे लेते हुवे.आज तेरी अकल ठीकने ना लगा दी तो मेरा नाम भैरव नही”

“मैं आपकी पत्नी हूँ कोई जानवर नही”

“तो पत्नी की तरह रहती क्यों नही.. चल झुक आगे”

“देखिए दरवाजा खुला पड़ा है.. कोई आ गया तो क्या सोचेगा”

भैरव दरवाजा बंद करता है और कहता है, “अब तेरी चिंख इस बंद कमरे में ही रहेगी… चल झुक आगे”

“आहह…. नहियीईईईई”

“क्या हुवा… अभी तो जरासा भी नही घुस्सा और चील्ला रही है. देख मैं आज तेरा क्या हाल करता हूँ”

“आप में इतना दम नही है कि मेरा कोई हाल कर सकें”

“क्या कहा कुतिया… ये ले फिर”

“आआहह……”

“आप इंसान नही जानवर हैं… आअहह”

“तू क्या है… बिगड़ैल बाप की बिगड़ैल बेटी”

“आआअहह… अब दर्द नही हो रहा.. आदत हो गयी है इस ज़ुल्म की.. कुछ और कीजिए मुझे रुलाने के लिए”

“आदत हो गयी है… अभी बताता हूँ…”

भैरव पूरे जोश से बहुत तेज-तेज मिलन करने लगता है

“आआहह… और तेज हो जाए तो अच्छा होगा… और ज़ोर से कीजिए ना”

“तुझे और तेज चाहिए…. ले फिर” --- भैरव ने हांपते हुवे कहा

थोड़ी देर बाद भैरव हट गया और गुस्से में बोला, “चल हट यहा से”

“क्या हुवा ? आपका हो गया क्या… मुझे अभी और चाहिए.. मेरी अभी संतुष्टि नही हुई”

“तो जा और जा के पानी में डूब जा”

“ठीक है मैं जा रही हूँ….आप किसी काम के नही हैं”

“साली, कुतिया तेरा कुछ नही हो सकता. मैने सोचा भी नही था कि तू ऐसी निकलेगी” --- भैरव ने गुस्से में कहा

तभी दरवाजे पर ठक-ठक की आवाज़ आती है

“मैं चारपाई के नीचे छुप रही हूँ” शकुंतला कहती है

“क्यों.. ये सब क्या नाटक लगा रखा है” ---- भैरव हैरानी में पूछता है.

“आप दरवाजा खोलो ना, कोई मुझे पूछे तो कह देना कि मैं यहा नही हूँ” यह कहते हुए शकुंतला चारपाई के नीचे छुप जाती है

“तू पागल हो गयी है” भैरव ये कह कर दरवाजा खोलता है

जैसे ही वो दरवाजा खोलता है… उसके पैरो के नीचे से ज़मीन निकल जाती है

उसके सामने शकुंतला खड़ी थी हाथ में खाने की थाली लिए.

उसे देखकर भैरव की कप-कपि छूट जाती है… वो फॉरन झुककर चारपाई के नीचे देखता है. वहां कोई नहीं होता.

" आप नीचे क्या देख रहे है" शकुंतला ने पूछा

भैरव खड़ा हो जाता है.उसे कुछ समझ नहीं आता.अभी अभी तो उसने शकुंतला से मिलन किया था और अब शकुंतला कमरे के बाहर खड़ी है.यह क्या हो रहा है.भैरव के आंखो के सामने अंधेरा छाने लगता है.उसे चक्कर आता है और वो नीचे गिर जाता है.

जब उसको होश आता है तो वो चारपाई पर लेटा हुआ है. उसके बाजुमे शकुंतला ,जीवन और भवानी खड़े है.

"क्या हुआ बेटा ? अचानक गिर कैसे गए" भवानी पूछता है

"पता नहीं पिताजी ! जरा चक्कर आ गई थी" भैरव कहता है

"तुम अब खाना खाओ और आराम करो ! बाकी का काम हमपर छोड़ दो" जीवन कहता है

"जी चाचाजी "

भवानी , जीवन और शकुंतला जाने लगते है. भैरव शकुंतला को रुकने के लिए कहता है.शकुंतला रुक जाती है.जीवन और भवानी बाहर चले जाते है.

"तुम तो चारपाई के नीचे छुप गई थी,फिर बाहर कैसे आ गई" भैरव उत्सुकता और घबराहट से शकुंतला को पूछता है

"यह आप क्या कह रहे हैं ? में भला चारपाई के नीचे क्यों छुपुंगी" शकुंतला आश्चर्य से पूछती है

" मेरा दिमाग खराब मत करो , सच बताओ यह सब क्या नाटक है?" भैरव गुस्से में बोलता है

"लगता है दमयंती को उस हाल में देखकर आपका दिमाग खराब हो गया है" शकुंतला भी जरा गुस्सा दिखाती है

शकुंतला की बात सुनकर भैरव चुप हो जाता है. मानो किसी खयालो में खो गया है.उसकी यह हालत शकुंतला से देखी नहीं जाती

" एक काम कीजिए आप मुझे सब सच सच बता दीजिए.हो सकता है में आपकी कुछ मदत कर सकू" शकुंतला कहती है

शकुंतला के आग्रह पर भैरव उसे सब बताता है,कि कैसे उसने शकुंतला के जैसी दिखनी वाली औरत से संबंध बनाए,और कैसे वो औरत चारपाई के नीचे छुप गई.फिर वहासे गायब हो गई.भैरव की बात सुनकर शकुंतला को मानो सदमा लगता है.

"मैंने कहा था ना यहापर कुछ गडबड हो रही है.यहां जरूर किसी का साया है.आप मेरी बात पर विश्वास क्यों नहीं करते" शकुंतला घबराते हुए कहती है

शकुंतला की बाते सुनकर भैरव के माथे पर पसीने के साथ-साथ अजीब सी सिकन उभर आती है.शकुंतला भैरव को यू डरा हुवा सा देख कर हैरान हो जाती है.

भाग - 8

[खेत में:------]

“स्वामी जी यहा खेत में तो कुछ नही है. लोग यू ही अफवाह उड़ा रहे है शायद” ---- गोपालदास ने कहा

“ऐसा नही है… मुझे ना जाने क्यों यहा कुछ बहुत अजीब लग रहा है”

“क्या लग रहा है स्वामी जी आपको ?”

“ठीक से तो नही कह सकता पर एक बात अजीब है”

“क्या अजीब बात है स्वामी जी”

“कोई है…जो नही चाहता कि हम यहा रहे”

“समझा नही स्वामी जी… क्या आप का इशारा ठाकुर की तरफ है” --- गोपालदास ने पूछा

“नही ठाकुर की तरफ बिलकुल नही… ये ताक़त कुछ और ही है”

“आप ये कैसे कह सकते हैं… मुझे तो कुछ समझ नही आ रहा”

“सब तुम्हारे सामने है पर तुम देख नही पा रहे गोपालदास”

“क्या मतलब स्वामी जी ?”

“नही…… रुक जाओ.. इस बेज़ुबान पक्षी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है” --- ब्रजभूषण ने चील्ला कर कहा

तब गोपालदास की नज़र छटपटाती हुई उस चिड़िया पर गयी जो हवा में झूल रही थी. ऐसा लगता था जैसे उसे किसी ने हाथ में पकड़ रखा था.. पर नज़र कोई नही आ रहा था.

ब्रजभूषण चिड़िया की तरफ बढ़ा.. लेकिन इस से पहले की वो कुछ कर पाता.. चिड़िया की गर्दन ब्रजभूषण की आँखो के ठीक सामने मरोड़ दी गयी.

"नही……. स्वामी जी कुछ कीजिए" – गोपालदास ने चील्ला कर कहा. (वो ये सब देख कर विचलित हो गया था)

ब्रजभूषण चाह कर भी कुछ नही कर पाया.

उन्होने चिड़िया के शरीर से खून टपकते देखा. वो चिड़िया हवा में अभी भी हिल रही थी. या यू कहो की उसे हिलाया जा रहा था.

जब उसका हिलना बंद हुवा तो ब्रजभूषण ने देखा कि ज़मीन पर खून की टपकती बूदँो ने कुछ संदेश छोड़ा था.

लीखा था, "चले जाओ"

"ये क्या मज़ाक है स्वामी जी"

"ये मज़ाक नही है… ये चेतावनी है गोपालदास. यही मैं तुम्हे कह रहा था. कोई है यहा जो नही चाहता कि हम यहा रहें"

"ये जो कोई भी है… दीखा दीजिए इसको कि हमसे पंगा ठीक नही"

"गोपालदास थोड़ा संयम रखो……. अपने दुश्मन को कभी कमजोर मत समझो और उसकी ताक़त का सम्मान करो. तभी तुम उसे हरा पाओगे… वरना झुटा घमंड तुम्हे निकम्मा बना देगा और तुम्हे पराजय का मूह देखना पड़ेगा"

"वो तो ठीक है स्वामी जी.. पर हमारी आँखो के सामने एक पक्षी की हत्या की गयी है.. क्या हम मूह ताकते रहेंगे"

"पहले पता तो चले कि समस्या क्या है.. तभी तो उसका समाधान ढूंढेंगे" --- ब्रजभूषण ने कहा

“स्वामी जी वो देखिए वो मरी हुई चिड़िया जंगल की तरफ बढ़ रही है. जो कोई भी उसे पकड़े हुवे है, वो जंगल की तरफ जा रहा है. चलिए उसका पीछा करते हैं”

“रूको गोपालदास जल्दबाज़ी मत करो… मुझे सोचने दो”

“स्वामी जी क्या सोच रहे हो आप” --- गोपालदास ने पूछा

“कुछ नही…… चलो चलते हैं यहा से” --- ब्रजभूषण ने कहा

“पर स्वामी जी क्या हम उस चिड़ी मार को यू ही छोड़ देंगे”

“शायद मैं उसे जानता हूँ कि वो कौन है… आओ हमें वापिस गावँ चलना है” --- ब्रजभूषण ने कहा

“क्या !! आप उसे जानते हैं…. कौन है वो?”

“मैने कहा शायद मैं जानता हूँ… अभी ठीक से कुछ नही कह सकता. गावँ में ज़रूर इसके बारे में कुछ पता चलेगा”

“चलिए फिर गावँ चलते हैं”

“हां चलो” – ब्रजभूषण ने कहा

[इधर जंगल में: ------]

“उमा रूको…” भुवन धीमी आवाज में उमा से कहता है

“क्या हुवा अब ? हमें घर जाना है कि नही ?” उमा ने निराशा भरे शब्दो में पूछा

“स्शह चुप रहो” “क्या बात है ?” – उमा धीरे से पूछती है

“आओ मेरे साथ” – भुवन ने कहा और उसका हाथ पकड़ कर उसे झाड़ियों के एक झुंड के पीछे ले आया

“कुछ बताओ तो सही क्या बात है ?”

“मुझे कुछ आवाज़ सुनाई दी थी… जैसे कि कोई बोल रहा हो”

“क्या किसी इंसान की आवाज़ थी ?”

“हां…. धीरे बोलो”

“कहीं केशव और दमयंती की आवाज़ तो नही थी”

“अब क्या पता. पर इतना समझ लो कि इस जंगल में जानवरो के साथ-साथ जंगली कबीले भी रहते हैं”

“तो उनसे हमें क्या ख़तरा?”

“अब ख़तरा क्या बता कर आता है, यहा चुप कर देखते हैं कि कौन है”

आवाज़े नज़दीक आती जाती है. कीशोर को कुछ दीखता है और वो कहता है,

“अरे ये तो अंग्रेज हैं…ज़रूर यहा शिकार के लिए आए होंगे”

“तो निकले बाहर हम… क्या पता ये लोग यहा से निकलने में हमारी मदद ही कर दे”

“पागल हो गयी हो क्या.. ये क्या मदद करेंगे… इन्हे निकल जाने दो…. फिर हम चलेंगे”

“ हे टॉम व्हेरे ईज़ और स्पॉट फॉर पिक्निक” --- रॉबर्ट आस्क्ड

“ वी आर सर्चिंग दट वन ओन्ली मॅन, काम डाउन” --- टॉम सेड

“ वॉट काम डाउन? आम डेस्परेट टू हॅव फन विथ माइ बेब”

“ कम ऑन रॉबर्ट, डॉन’ट पुट मी इंटो दिस” कॅरोल साइड इन आंग्री टोन

“ हे कॅरोल वाइ आर यू बिहेविंग लाइक ठाट, वी केम हियर फॉर फन राइट”

“ दट’ स राइट रॉबर्ट, बट डॉन’ ट पुश थिंग्स अराउंड हियर… वी आर फ्रेंड्स….. ओके”

“ हे टॉम! लुक, देर इस **समथिंग** बिहाइंड दोज़ बुशस” **----** रॉबर्ट सेड

“ मस्ट बी सम अनिमल” **----** टॉम सेड

“ लेट मी शूट दिस टाइम, लेट’ स सी वॉट वी गेट” **---** रॉबर्ट सेड टू टॉम

भुवन समझ जाता है कि उनकी तरफ गोलिया चलने वाली हैं. वो हड़बड़ाहट में खड़ा होता है और बोलता है,

“रूको हम जानवर नही हैं जो गोली मार रहे हो”

“ श शिट… ब्लडी इंडियन… आइ थॉट आइ गॉट सम वाइल्ड अनिमल ऑन टारगेट”

“ काम डाउन रॉबर्ट देर आर प्लेंटी ऑफ वाइल्ड अनिमल आउट हियर” **---** टॉम सेड

“ बट वी गॉट नन सो फर… डिड वी **?.** लेट मे शूट दिस इंडियन अट लीस्ट?”

“ डू अस यू फील लाइक, आइ हॅव नो इश्यू” – टॉम सेड

“ आर यू पीपल मॅड ओर **समथिंग,** हाउ कॅन यू शूट दट पुवर गाइ” **---** **हैरी** सेड **विद** सर्प्राइज़

“ कम ऑन **हैरी** लेट मी किल **समथिंग** विथ माइ गन… अदरवाइज़ वॉट ईज़ दा पॉइंट इन कमिंग हियर” **---** रॉबर्ट सेड

“ डॉन’ ट बी सेंटिमेंटल **हैरी,** दीज़ इंडियन्स अरे नोट वोर्थ लिविंग एनीवे. दे अरे और स्लेव आंड वी कॅन डू एनितिंग विथ देम” **---** टॉम सेड

“ टॉम आइ केम हियर अलॉंग विथ यू पीपल टू सी दिस फोरेस्ट फ्रॉम इनसाइड. आइ आम नोट हियर टू सी सम काइंड ऑफ ह्यूमन हंटिंग” **---** **हैरी** सेड

“ आइ हॅड वॉर्न्ड यू टॉम, नोट टू ब्रिंग दिस स्टुपिड **हैरी** विथ उस. ही विल डेस्ट्राय और फन हियर” **---** रॉबर्ट सेड इन आंगर

“ प्लीज़ डॉन’ ट फाइट ऑन दिस ट्रिवियल इश्यू. लेट्स मूव फॉर्वर्ड” **---** टॉम सेड

रॉबर्ट अपने घोड़े को आगे बढ़ाता है पर जाते-जाते भुवन पर फाइयर करता है. गोली भुवन के बिलकुल कान के पास से निकल जाती है. उमा जो अब तक चुपचाप झाड़ियों के पीछे दुबक कर बैठी थी, गोली की आवाज़ सुन कर खड़ी हो जाती है

“ हे लुक व्हाट वी गॉट हियर. वॉट ए नाइस पीस ऑफ इंडियन पुसी.हे **हैरी** यू लाइक इंडियन पीपल डॉन' ट यू. वुड यू फक दट वन”? **---** रॉबर्ट सेड टू **हैरी विद** टीज़िंग टोन

“ शी ईज़ गुड मॅन. **हैरी** व्हाट डू यू से? यू आर अलोन हियर. वी गॉट और मेट्स बडी. गेट दट वन फॉर यू **….** हहहे**” ---** टॉम सेड

“ आइ डॉन' ट हवॅ दट मच इंटेरेस्ट इन इंडियन फ्रेंड्स, आइ आम हियर टू एक्सप्लोर दिस फोरेस्ट आंड **नथिंग** एल्स”

“ कॅरोल वुड यू माइंड इफ़ आइ टेक हेर अलाँग विथ मी फॉर फन. इन केस यू डॉन' ट अग्री… हहहे”

“ स्टॉप दिस नॉनसेन्स रॉबर्ट” – कॅरोल सेड

“ सो इट्स क्लियर दट यू विल स्पायिल माइ फन इन दिस फोरेस्ट. **आ** ई शुड नोट टेक चान्सस विथ यू. आइ आम गोयिंग टू टेक **दी** स इंडियन अलाँग विथ मी. टॉम आंड **हैरी,** डू यू हवॅ एनी ऑब्जेक्षन”

“ गो अहेड मॅन डू इट, वी मे ऑल्सो जाय्न यू” **---** टॉम सेड

“ टॉम यू टू जायंड हिम इन दिस मडॅनेस” जूलीया सेड विथ सर्प्राइज़

“ कम ऑन जूलीया वी आर हियर फॉर फन. इफ़ दिस इंडियन ब्यूटी कॅन गिव उस एक्सट्रा फन दॅन वाइ टू मिस इट”

“ वी शुड नोट हवॅ कम हियर विथ यू पीपल” – कॅरोल सेड

“ टॉम दिस ईज़ नोट राइट” **---** जूलीया सेड

हैरी चुपचाप अपने घोड़े पर बैठा सब सुन-ता रहता है. रॉबर्ट घोड़े से उतर कर **उमा** और **भुवन** की तरफ बढ़ता है. उन्हे अभी तक पता ही नही कि उनके सर पर कोई ख़तरा मंडरा रहा है.

“ हे कम हियर” – रॉबर्ट सेड टू **भुवन**

“ क्या बात है साहिब” – **भुवन** ने पूछा

“ कम विथ उस” **---** रॉबर्ट सेड विथ जेस्चर ऑफ हिज़ हडँ

“**भुवन** शायद ये हमें साथ चलने को कह रहा है. चलो इनके साथ हम भी यहा से बाहर निकल जाएगेँ”

“ मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है **उमा”**

“ हे व्हाट आर यू टॉकिंग, मूव फास्ट” **---** रॉबर्ट सेड ये कह कर रॉबर्ट ने **भुवन** और **उमा** पर बंदूक तान दी.

उमा और **भुवन** समझ गये कि उन्हे हर हाल में उनके साथ चलना है.

“ ये चाहते क्या हैं **भुवन?”**

“ पता नही… पर मुझे कुछ अजीब लग रहा है”

“ वाइ यू ब्रॉट दिस गाइ रॉबर्ट, वी हवॅ नो यूज़ ऑफ हिम” **---** टॉम आस्क्ड

“ ही विल वर्क फॉर उस टॉम, वी वुड नीड लॉट ऑफ हेल्प अट और पिक्निक स्पॉट. ही विल डू और वर्क ओर एल्स ही विल बी डेड”

“ यू हवॅ आन ईविल माइंड रॉबर्ट” – टॉम सेड

“ आंड व्हाट डू यू हवॅ? यू ब्रॉट जूलीया हियर आफ्टर कन्विन्सिंग हेर ऑफ युवर लव हहहे” **---** रॉबर्ट सेड

“ टॉम वॉट आम हियरिंग?” **---** जूलीया सेड

“ ही ईज़ जोकिंग जूलीया. डॉन’ट लिसन हिम”

बट बाइ दट टाइम जूलीया न्यू दट शी हज़ॅ डन मिस्टेक बाइ कमिंग अलॉंग विथ टॉम

[गाँव में: ----]

“स्वामी जी हम कहा जा रहे हैं ?” --- गोपालदास ने पूछा

“मंदिर जा रहे हैं” --- ब्रजभूषण ने कहा

“मंदिर ! मुझे लगा हम उस चिड़ी मार के बारे में जान-ने जा रहे हैं”

“गोपालदास, तुम थोड़ा संयम रख लोगे तो तुम्हारा क्या बिगड़ जाएगा ?”

“माफ़ कीजिए स्वामी जी मैं तो उत्सुकता में सवाल कर रहा था”

“उत्सुकता तो ठीक है पर ये हर वक्त तो नही होनी चाहिए ना”

“मैं क्या करूँ स्वामी जी आप मुझे कुछ बताते ही नही हैं, इस तरह मेरा ग्यान कैसे बढ़ेगा”

“ठीक है-ठीक है अब चुप रहना और मुझे बात करने देना” --- ब्रजभूषण ने मंदिर के पास एक घर के बाहर रुक कर कहा

“जी स्वामी जी” “ब्रजभूषण घर का दरवाजा खड़काता है अंदर से एक बुजुर्ग निकलता है

“नमस्कार काका” --- ब्रजभूषण ने हाथ जोड़ कर कहा उस बुजुर्ग ने भी हैरानी से ब्रजभूषण की और हाथ जोड़ दिए

“काका क्या आपने मुझे पहचाना नही, मैं ब्रजभूषण हूँ मंदिर के पुजारी का बेटा”

“हां पहचान लिया बेटा, बोलो क्या बात है. बहुत दिन हो गये मेरे घर कोई आया नही इसलिए हैरानी से देख रहा था”

“काका हरिया कहा है ?”

वो बुजुर्ग ब्रजभूषण की और बड़ी हैरानी से देखता है और देखते-देखते उसकी आँखे छलक उठती हैं

“काका आप रो क्यों रहे हो, कहा है हरिया ?” --- ब्रजभूषण ने पूछा

“यही सवाल तो रोज मैं खुद से भी करता हूँ बेटा. मेरी बूढ़ी आँखे थक गयी हैं उसकी राह देखते-देखते. पता नही कहा चला गया मेरा बेटा. क्या तुम्हे नही पता कि वो दो साल से गायब है ?

” “मुझे कुछ नही पता काका, मैं खुद गाँव में नही था”

“अरे हां तुम तो खुद गायब थे गाँव से. आज तुम्हे देख कर तस्सली हो रही है की एक दिन मेरा हरिया भी लॉट आएगा”

“स्वामी जी चलिए यहा से मुझ से तो ये दुख देखा नही जा रहा” –

गोपालदास ने ब्रजभूषण के कान में कहा “काका आपको कुछ नही पता कि वो कहा गया”

“पता होता तो जाकर ले ना आता बेटा, उसके जाने के बाद मेरी तो दुनिया ही उजड़ गयी”

“मैं समझ सकता हूँ काका… आप चिंता मत करो सब ठीक हो जाएगा… मैं अब चलता हूँ” --- ब्रजभूषण ने हाथ जोड़ कर कहा

“बेटा हरिया की कोई खबर लगे तो फॉरन आ कर बताना, उसकी मा खाट पकड़े पड़ी है. किसी भी वक्त प्राण त्याग सकती है. हरिया के गम में ही उसकी ये हालत हुई है. जाते-जाते उसे हरिया का कुछ पता चल जाए तो उसकी आत्मा को सुकून मिलेगा”

“आप फिकर मत करो काका, हरिया का कुछ ना कुछ पता चल ही जाएगा. मैं खुद उसकी तलाश करूँगा” – ब्रजभूषण ने उस बुजुर्ग के हाथ पकड़ कर कहा

“ठीक है बेटा….. इस पूरे गावँ में तुम्हारी खूब प्रशंसा होती है. मुझे तुम पर पूरा भरोसा है कि तुम मेरे बेटे को ढूंड लाओगे”

“ठीक है काका….. मैं चलता हूँ… आप चिंता मत करना” ये कह कर ब्रजभूषण वहां से चल देता है

“स्वामी जी मेरी तो आँखे भर आई थी, आप कैसे इतने मजबूत बने रहते हैं”

“सब कुछ जींदगी ने सीखाया है मुझे, तुम भी सीख जाओगे”

“पर स्वामी जी मुझे कुछ समझ नही आया, उस चिड़ी मार के लिए हम यहा क्यों आए थे”

ब्रजभूषण किन्ही गहरे ख़यालों में होता है, वो गोपालदास की बात का कोई जवाब नही देता

“स्वामी जी……. क्या हुवा?”

“कुछ नही… बात काफ़ी उलझी हुई है. बहुत भारी गड़बड़ हुई लगता है मेरे पीछे इस गावँ में”

“क्या मतलब स्वामी जी मुझे भी तो कुछ बता दिया करो. मैं हर वक्त सोच-सोच कर परेशान रहता हूँ”

“तुम्हे क्या बताऊं अभी जब मुझे ही ठीक से कुछ समझ नही आ रहा. बात वही बताई जाती है जिसका आपको पता हो. मैं खुद अभी अंधेरे में हूँ तो क्या बताऊं तुम्हे”

“ह्म्म्म…. कोई बात नही स्वामी जी. अब आगे हमें क्या करना है ?”

“हवेली चलते हैं”

“क्या !!”

“क्या हुवा” – ब्रजभूषण ने पूछा

“क्या वहां ऐसे अकेले जाना ठीक होगा स्वामी जी”

“मैं हूँ ना तुम्हारे साथ डर क्यों रहे हो. उस चिड़ी मार के पीछे तो बड़ी जल्दी भाग रहे थे” --- ब्रजभूषण ने मुस्कुराते हुवे कहा

“मरे हुवे, ज़िंदा लोगो से कम ख़तरनाक होते हैं, आप ही ने कहा था ना एक दिन” --- गोपालदास ने कहा

“हां कहा था, इसका मतलब ये नही कि ज़िंदा लोगो से डर महसूस करो”

“पर स्वामी जी मैने सुना है कि बहुत ख़तरनाक है वो ठाकुर, पूरे गाँव में उसी की चलती है”

“चलती थी….. अब नही चलेगी… चलो हमें और भी बहुत काम करने हैं”

“स्वामी जी गोविंद को बुला लेते हैं, वो मार-धाड़ में माहिर है”

“तुम चलते हो कि नही या मैं अकेला जाऊ”

“बुरा क्यों मानते हैं स्वामी जी मैं तो आपकी चिंता कर रहा था”

“मेरी चिंता मत करो, और चुपचाप मेरे साथ चलो” ---- ब्रजभूषण ने कहा

“ठीक है स्वामी जी जैसी आपकी मर्ज़ी” ब्रजभूषण और गोपालदास ठाकुर की हवेली की तरफ चल पड़ते हैं.

हवेली में सभी दमयंती को लेकर परेशान हैं उपर से हवेली के पीछे खेत की चिंखे भी सबकी नींद उड़ाए हुवे है. भैरव और शकुंतला गहरे सदमे में हैं. शकुंतला से ज़्यादा भैरव की हालत खराब है. वो समझ नही पा रहा है कि आख़िर हो क्या रहा है.

जब ब्रजभूषण हवेली पहुँचता है तो भवानी प्रताप गुस्से से तिलमिला उठता है.

“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहा आने की” – भवानी प्रताप ने गुस्से में पूछा

“ठाकुर मेरे मन में कुछ सवाल हैं जो मुझे यहा खींच लाए हैं” – ब्रजभूषण ने कहा

“कैसे सवाल और तुम्हारे सवालो से मेरा क्या लेना देना” – भवानी ने पूछा

“लेना है ठाकुर, तभी तो मैं यहा आया हूँ” – ब्रजभूषण ने गंभीरता से कहा

“भैया ये क्या बकवास कर रहा है, मुझे लगता है हमें इसकी खाल खींच कर गावँ के किसी पेड़ पर टाँगँ देनी चाहिए ताकि लोगो को सबक मिले कि हमारे खिलाफ बोलने का अंजाम क्या होता है” – जीवन जो अब तक चुपचाप खड़ा था अचानक बोला.

“अबबे ओये स्वामी जी तुम सबकी खाल खिंचवा देंगे, ज़्यादा बकवास मत करो” – गोपालदास ने कहा

“गोपालदास तुम शांत रहो और मुझे बात करने दो” ब्रजभूषण ने कहा

“ठीक है स्वामी जी.” “हवेली में आकर इस तरह बकवास करने की किसी की हिम्मत नही हुई, कौन है ये लौंडा.” भवानी ने ब्रजभूषण से पूछा.

“ये सब छोड़ो ठाकुर और मेरे कुछ सवालो का जवाब दो.” ब्रजभूषण ने कहा

“तुम्हारे किसी भी सवाल का जवाब देना हम ज़रूरी नही समझते, इस से पहले की हम तुम्हारी खाल खीँचवा दें दफ़ा हो जाओ यहा से.” ठाकुर के आदमी हरकत में आ जाते हैं. बलवंत बोलता है,

“मालिक आप बस हुकुम कीजिए, इसका मैं वो हाल करूँगा की दुनिया देखेगी.”

लेकिन अगले ही पल ब्रजभूषण फुर्ती से आगे बढ़ कर भवानी प्रताप को दबोच लेता है. उसका बायां हाथ उसकी गर्दन को जकड़ लेता है और दायें हाथ से वो एक नुकीली सुई जैसी चीज़ को उसकी गर्दन से सटा देता है.

“किसी ने भी कोई बेहूदा हरकत की तो ठाकुर की खैर नही. ये छोटी सी सुई इसे पल में मौत की नींद सुला देगी.” ब्रजभूषण ने सभी को चेतावनी दी.

“हां ये मामूली सुई नही है…जंगल के कुछ कबीले इसे शिकार के लिए इस्तेमाल करते हैं.” गोपालदास ने कहा

“तुम चाहते क्या हो?” जीवन ने पूछा.

“दमयंती और केशव कहा है?” ब्रजभूषण ने सवाल किया.

“हमे पता होता तो अब तक केशव की लाश तुम्हारे सामने होती.” भवानी ने हांफते हुवे कहा.

वो ब्रजभूषण की जकड़ में छटपटा रहा था.भवानी भी बहुत शक्ति शालि था. उसको ब्रजभूषण की जकड़ में इस हालत में देख कर सब हैरान-परेशान थे.

“हरिया कहा हैं, ठाकुर?” ब्रजभूषण ने फिर पूछा

“कौन हरिया, हम किसी हरिया को नही जानते.” भवानी ने छटपटाते हुवे कहा.

“अजीब बात है, खेतो में काम करता था वो तुम्हारे.”

“अच्छा वो हरिया, वो तो कब से गायब है, किसी को नही पता वो कहा गया, शायद वो ये गाँव छोड़ कर कहीं चला गया.” जीवन ने जवाब दिया.

“तुम लोग झूठ बोल रहे हो.” ब्रजभूषण ने गुस्से में कहा. और भवानी की गर्दन पर ब्रजभूषण का शीकांजा कसता चला गया. भवानी की आँखे बाहर निकलने को हो गयी.

“छोड़ दीजिए स्वामी जी ये बेचारा मर जाएगा.” गोपालदास ने भवानी की हालत देखते हुवे कहा.

“मर जाने दो, वैसे भी अंग्रेज़ो के पालतू कुत्तो को जिंदा रहने का अधिकार नही है.”

गोपालदास ने पहली बार ब्रजभूषण को इतने क्रोध में देखा था. वो समझ नही पा रहा था कि क्या कहे क्या ना कहे.

“पिता जी…पिता जी.” शकुंतला दौड़ते हुवे वहां आती है.

वो अब तक वहां के द्रिश्य से अंजान थी. सभी उसकी और देखने लगते हैं. ब्रजभूषण की जकड़, भवानी के गले पर ढीली पड़ जाती है.

“क्या हुवा चिल्ला क्यों रही हो?” जीवन ने पूछा. शकुंतला भवानी को ब्रजभूषण के शिकंजे में देख कर हैरान रह जाती है. वो ब्रजभूषण को देख कर उसके पैरो में गिर जाती है,

“स्वामी जी मेरे पति को बचा लीजिए.” “तुम इसे कैसे जानती हो” जीवन ने पूछा.

“पिछले साल जब में मायके गयी थी तो ये हमारे गाँव में पधारे थे” शकुंतला ने एक साँस में जवाब दिया.

“क्या हुवा तुम्हारे पति को.”

“वो कमरे में बंद हैं और दरवाजा नही खोल रहे. अंदर से अजीब अजीब आवाज़े आ रही हैं. हमारे घर पर किसी भूत का साया है स्वामी जी.. हमें बचा लीजिए..शायद दमयंती को भी ये भूत ही कहीं ले गये हैं…मुझे बहुत डर लग रहा है.”

ब्रजभूषण एक झटके से भवानी को एक तरफ धकेल देता है. भवानी दूर ज़मीन पर जा कर गिरता है.

[इधर जंगल में :-----]

अंग्रेज़ भुवन और उमा को अपने साथ ले जा रहे है. तभी पेड़ पर छुपे दमयंती और केशव की नजर उनपर पड़ जाती है.भुवन समझ चुक्का था कि इन गोरो की नियत ठीक नही है. पर वो समझ नही पा रहा था कि वो क्या करे. दूर एक पेड़ के पीछे से केशव और दमयंती भी ये सब देख रहे थे.

"केशव इन गोरो ने क्या उमा और भुवन को बंधक बना लिया है?" – दमयंती ने पूछा

"लगता तो ऐसा ही है, मुझे कुछ करना होगा" – केशव ने कहा

"पर उनके पास बंदूक है" – दमयंती ने चिंता में कहा

"चिंता मत करो, मुझ पर भरोसा रखो, तुम ऐसा करो यहीं रूको, यहा से हिलना मत" – केशव ने धीरे से कहा

"पर तुम क्या करना चाहते हो मुझे बताओ तो सही" – दमयंती ने पूछा

"समझाने का वक्त नही है, जैसा कहा है, वैसा करो वरना उन दोनो की जींदगी मुश्किल में पड़ जाएगी" – केशव ने कहा

केशव चुपचाप आगे बढ़ा और एक मोटा पत्थर उठाया और रॉबर्ट के सर को निशाना बना कर फेंक दिया. पत्थर निशाने पर लगा. रॉबर्ट के सर से खून बह निकला और वो लड़खड़ा कर नीचे गिर गया. उसके गिरने की आवाज़ सभी ने सुनी और उसके सभी साथ घबरा गये कि क्या हुवा.

"वॉट हॅपंड रॉबर्ट?" – टॉम आस्क्ड

लेकिन रॉबर्ट अपने होश खो बैठा था. हैरी, टॉम, जूलीया और कॅरोल, चारों ने रॉबर्ट को घेर लिया. मोके का फायदा उठा कर भुवन और उमा जंगल की घनी झाड़ियो में घुस्स गये और उनकी आँखो से औझल हो गये.

भुवन और उमा उसी और भागे थे जिस तरफ केशव और दमयंती छुपे थे. केशव और दमयंती को देख कर उमा और भुवन खुश हुवे.

"मैने तुम्हे देख लिया था जब तुमने पत्थर से उस गोरे के सर का निशाना लगा रहे थे, धन्यवाद दोस्त वरना आज ना जाने हमारा क्या होता. " – भुवन ने कहा

"ये वक्त बाते करने का नही है, उन्हे अब तक शक हो गया होगा, चलो चुपचाप आगे बढ़ते हैं" – केशव ने कहा केशव के पत्थर का वार इतना भयानक था की रॉबर्ट मर चुक्का था.

“ओह गॉड, ही इस डेड, वी मस्ट लीव दिस फोरेस्ट इमीडीयेट्ली, दिस ईज़ नोट फन एनी मोर” – कॅरोल सेड.

"यू आर राइट कॅरोल, आइ आम विथ यू. दोज़ टू इंडियन्स आर ऑल्सो मिस्सिंग."

“ओह…माइ गॉड! वॉट ईज़ दट?” कॅरोल शाउटेड.

“व्हाट?” सभी ने एक साथ कहा कॅरोल के चेहरे पर डर के भाव थे उसने काँपते हाथो से इशारा किया. सभी ने पीछे मूड़ कर देखा. सभी के होश उड़ गये.

“लेट्स गेट दा हेल आउट ऑफ हियर,” टॉम सेड

लेकिन अगले ही पल उन सभी की चिंख वहां गूँज रही थी. पेड़ के पीछे से चुप कर दमयंती,केशव,भुवन और उमा ये सब देख रहे थे.

“ये क्या है केशव?” दमयंती ने पूछा.

“जो भी है बहुत भयानक है. इस से पहले की इसकी नज़र हम पर पड़े हमें यहा से निकल जाना चाहिए.” केशव ने कहा.

“मुझे एक गुफा का पता है…चलो जल्दी वहां चलते हैं. वो सुरक्षित रहेगी.”

“कितनी दूर है वो.”

“बस थोड़ी ही दूर है…जल्दी चलो अगर उसकी नज़र हम पर पड़ गयी तो वो हमें भी नोच-नोच कर खा जाएगा.” भुवन ने कहा.

वो चारो चुपचाप वहां से निकल पड़े और थोड़ी ही देर में गुफा के पास पहुँच गये.

“चलो जल्दी अंदर” भुवन ने कहा सभी के अंदर आ जाने पर भुवन ने अंदर से एक बड़ा सा पत्थर गुफा के दरवाजे पर लगा दिया.

“वो क्या था भुवन…उसने उन अंग्रेज़ो को नोच-नोच कर खा लिया.” उमा ने कहा

“ हुवा ये गोरे इसी लायक हैं.” भुवन ने कहा.

“हां पर भगवान ऐसी मौत किसी को ना दे.” केशव ने कहा

“ऐसा जानवर मैने पहले कभी नही देखा. पता नही क्या था वो…” भुवन ने कहा

“कहीं रात को खेतो में भी यही तो नही था?” उमा ने सवाल किया

“हो सकता है…क्योंकि वो साया भी इतना ही भयानक था. अगर ये वही है तो हमें तुरंत गाँव लौट कर गाँव वालो को चोक्कना करना होगा.” भुवन ने कहा.

“पर हम गाँव वापिस नही जा सकते. वो ठाकुर हमें जींदा नही छोड़ेगा.” केशव ने कहा.

“और अगर हम यहा जंगल में रहे तो वैसे भी कब तक बच पाएगेँ. देखा नही कैसे एक मिनिट में सब अंग्रेज़ो को चीर दिया था उस जानवर ने.”

“मैं दमयंती को लेकर दूसरे गाँव जा रहा हू.ँ” केशव ने कहा.

“पागल मत बनो केशव…तुम्हे क्या लगता है तुम दूसरे गाँव जा कर ठाकुर से बच जाओगे. अरे हमारे गाँव में तुम दोनो का साथ देने के लिए बहुत लोग आगे आ जाएगेँ. वहां तुम्हे कौन पूछेगा.” भुवन ने कहा.

“पर हम रास्ता भी तो भटक गये हैं…हम वापिस गाँव पहुचेँगे कैसे.” दमयंती जो कि अब तक चुपचाप बैठी थी अचानक बोली.

“क्या तुम गाँव वापिस जाना चाहती हो?” केशव ने पूछा.

“केशव कोई और चारा भी तो नही है...” दमयंती ने कहा.

“बस इतना ही साथ निभाना था तुमने…” केशव ने कहा.

“केशव देखो दमयंती ठीक कह रही है. हम घने जंगल में फँसे हैं. और मुझे पूरा यकीन है कि हम अपने गाँव के ज़्यादा नज़दीक हैं. हम बस दिशा भूल गये हैं.” उमा ने कहा.

भाग - 9

[इधर हवेली में:]

“मुझे उस कमरे तक ले चलो.” ब्रजभूषण ने शकुंतला से कहा.

शकुंतला ब्रजभूषण को उस कमरे तक ले आई जिसमे भैरव बंद था. ब्रजभूषण ने ज़ोर से दरवाजा खड़काया पर किसी ने दरवाजा नही खोला. भवानी और जीवन भी वहां आ गये थे.

“ठाकुर अपने आदमियों से कहो ये दरवाजा तौड दे.” ब्रजभूषण ने कहा. “

तौड दे…तुम कौन होते हो ये कहने वाले.” जीवन ने कहा. “अगर भैरव को जिंदा देखना चाहते हो तो जैसा कहता हूँ वैसा करो.”

“बलवंत तौड दो दरवाजा” भवानी ने कहा जैसे ही दरवाजा खुलता है ब्रजभूषण कमरे में दाखिल होता है.

“मैने तुम्हे यहा से चले जाने को कहा था.” एक आवाज़ आई.

“हाँ पर मैं तुम्हारी बात क्यों मानु...हरिया” ब्रजभूषण ने कहा.

“तुम भूले नही मुझे हां”

“कैसे भूल सकता हूँ…मुझे बताओ तुम ये सब क्यों कर रहे हो.”

“मैं कुछ नही कर रहा जो कुछ किया है इस कमीने भैरव ने किया है.”

“क्या मतलब हरिया मुझे साफ-साफ बताओ और भैरव कहा है.”

“इस खाट के नीचे छुपा है वो…पर ज़्यादा देर तक बच नही पाएगा तडपा-तडपा कर मारूँगा इसे में.”

“तुम ऐसा क्यों कर रहे हो” ब्रजभूषण ने पूछा.

“वो चिंखे सुनी तुमने खेतो में”

“हां सुनी…किसकी चिंखे हैं वो.” “मेरी जान से प्यारी बिंदिया की.”

“बिंदिया कौन बिंदिया?” “तुम उसे नही जानते “इस कमिने भैरव की वजह से वो तड़प-तड़प कर मरी…मैं इसे भी तडपा-तडपा कर मारूँगा.” हरिया ने कहा.

“देखो मैं तुम्हारा दर्द समझ सकता हू॑…लेकिन इस तरह खून ख़राबे से कुछ हाँसिल नही होगा.”

“तो क्या मैं इस कमिने को यू ही छोड़ दू….तुमने देखा होता ना कि क्या हुवा मेरी बिंदिया का तो ऐसी बात ना करते.”

“मैने उसे नही मारा ये झूठ बोल रहा है…मुझे बचा लो” भैरव खाट के नीचे से बोला.

“तुमने नही मारा तो और किसने मारा…तुम्हारी वजह से ही हम जंगल में भागे थे और उस दरिंदे ने नोच-नोच कर खा लिया मेरी बिंदिया को…मेरी आँखो के सामने हुवा ये सब..कितना दर्द हुवा होगा मुझे ये बस मैं ही जानता हू” हरिया ने कहा.

“ह्म्म…किस दरिंदे की बात कर रहे हो तुम” ब्रजभूषण ने पूछा.

“मुझे बस इतना पता है कि वो बहुत भयानक है….बिंदिया खेतो में बार-बार चिंख रही है क्योंकि उसे लग रहा है कि वो दरिन्दा कही आस पास ही है.अगर इस गाँव को बचाना चाहते हो तो जाओ

सब गाँव वालो को इकट्ठा करके उन्हे चेतावनी दो वरना कोई नही बचेगा. इस भैरव को तो मैं नही छोड़ूँगा.” हरिया ने कहा.

“ये कौन बोल रहा है दीखाई तो कोई नही दे रहा” जीवन ने कहा.

“दीखाई देगा कैसे भूत जो है….और अगर दीख गया ना तो यही मूत दोगे तुम” गोपालदास ने कहा.

“खामोश हमारी हवेली में आकर हमारा मज़ाक उड़ाते हो” जीवन चिल्ला कर बोला.

“स्वामी जी ये ठाकुर संभाल लेंगे भूत जी को चलिए हम चलते हैं.” गोपालदास ने कहा.

“नही स्वामी जी मेरे पति को बचा लीजिए…मैं मानती हू ँकि इन्होने ग़लत किया होगा…पर एक बार उन्हे मोका दीजिए वो आगे से ऐसा नही करेंगे.” शकुंतला ने कहा.

“बेचारी कविता को नंगा घसीट कर लाया था ये इस हवेली में…चलिए स्वामी जी इसके पापो की यही सज़ा है कि इसे भूत निगल जाए.” गोपालदास ने कहा.

“गोपालदास तुम थोड़ा संयम रखो….मैं हू ँना यहा.” ब्रजभूषण ने कहा.

“जी स्वामी जी आप तो हैं ही मैं तो बस यू ही” गोपालदास ने कहा.

“हरिया हमारे रहते तुम यहा कोई अनहोनी नही कर सकते” ब्रजभूषण ने कहा.

“तो तुम चले जाओ मैने तुम्हे यहा नही बुलाया….भैरव की मौत तो निश्चित है..जब तक ये जींदा रहेगा मेरी और बिंदिया की आत्मा भटकती रहेगी.” हरिया ने कहा.

“मेरे रहते तुम ये काम नही कर सकते” ब्रजभूषण ने कहा.

“ब्रजभूषण…..मेरी मदद करो…..नही आहह” एक आवाज़ आती है. ब्रजभूषण घूम कर देखता है पर कोई नज़र नही आता.

“ये तो सविता की आवाज़ है” ब्रजभूषण ने सोचा.

“स्वामी जी ये आवाज़ कहीं पीछे से आ रही है” “पीछे तो खेत हैं” शकुंतला ने कहा.

“सोच क्या रहे हो ब्रजभूषण जाओ और बचा लो अपनी सविता को….इस पापी भैरव के लिए यहा क्यों खड़े हो” हरिया ने कहा.

“ये ठीक कह रहा है स्वामी जी आओ चलें” गोपालदास ने कहा.

“नही मेरे पति को बचा लीजिए..” शकुंतला गिड़गिडाई. पर अगले ही पर हरिया भैरव को पीछे दरवाजे से घसीट कर खेतो की ओर ले गया.

“छोड़ो मुझे…मैने तुम्हारी बिंदिया को नही मारा था..फिर मेरे पीछे क्यों पड़े हो.” भैरव गिड़गिदाया

“चल ठीक है फिर तुझे जंगल में पटक देता हूँ…वो दरिन्दा तुझे भी चीर कर खाएगा तो पता चलेगा.” हरिया ने कहा.

“स्वामी जी कुछ कीजिए ना” शकुंतला बोली.

“कुछ समझ नही आ रहा कि हो क्या रहा है” ब्रजभूषण ने कहा.

“चलो स्वामी जी खेतो में चलतें हैं…सविता की आवाज़ भी तो उधर से ही आई थी.” गोपालदास ने कहा.

“ठीक है चलो” जब तक ब्रजभूषण और गोपालदास खेतो में पहुचँते हैं हरिया भैरव को लेकर जंगल में घुस्स चुका होता है.

“यहा तो कोई नही है…कहा ले गया वो भैरव को…और सविता भी कही नज़र नही आ रही” गोपालदास ने कहा.

“शायद वो भैरव को जंगल में ले गया है…चलो” ब्रजभूषण ने कहा.

“पर स्वामी जी सविता का क्या?”

“यहा कोई सविता नही थी…ये सब इन भूतो की चाल थी हमारा ध्यान बटाने के लिए”

“ह्म्म….चलो फिर इस भूत को मज़ा चखाते हैं स्वामी जी” ब्रजभूषण और गोपालदास के पीछे-पीछे भवानी, शकुंतला और जीवन भी आ गये.

“कहा ले गया वो मेरे पति को” शकुंतला ने कहा.

“शायद जंगल में ले गया है…फिर भी पहले हम यहा खेतो में देख लेते हैं…ठाकुर अपने आदमियों से कहो खेत के हर कोने में तलास करें.” ……………………….

[इधर जंगल में......]

"देखो हमें देर नही करनी चाहिए और जल्द से जल्द यहा से निकलना चाहिए" भुवन ने कहा.

"ठीक है...जैसी तुम सब की मर्ज़ी लेकिन किस रास्ते से जाएगें और अगर वो भयानक चीज़ कही रास्ते में मिल गयी तो" केशव ने कहा.

"देखो कुछ तो ख़तरा हमें उठाना ही होगा…चलो मेरे पीछे-पीछे मुझे लगता है कि मैं गावँ का रास्ता जानता हू." भुवन ने कहा.

"ठीक है चलो फिर, हमें ज़्यादा देर नही करनी चाहिए." केशव ने कहा.

सभी गुफा से निकल कर भुवन के पीछे-पीछे चल पड़ते हैं.

"मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं यहा आ चुका हूँ" भुवन ने कहा.

"देखो कोई ग़लती मत करना वरना सब मारे जाएगें" केशव ने कहा.

"हां याद आ गया वो पेड़ मैने पहले देखा है….आओ मेरे पीछे-पीछे हम गावँ से ज़्यादा दूर नही हैं." भुवन ने कहा.

आख़िर कार भटकते-भटकते वो सब गावँ के नज़दीक पहुचँ ही जाते हैं.

"वो देखो…वो रहा अपना गावँ…पहुचँ गये ना हम" भुवन ने कहा.

"तुम अपने घर जाओगी?" केशव ने दमयंती से पूछा.

"घर क्यों जाऊंगी…मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर जाऊंगी." दमयंती ने केशव का हाथ पकड़ कर कहा

"ठीक है आओ फिर." केशव ने दमयंती का हाथ भींच कर कहा.

"मेरी बात सुनो….अभी मेरे घर चलो…गावँ का माहॉल देख कर घर जाना ज़रूर ठाकुर ने तूफान मचा रखा होगा. मेरा घर अलग थलग है…कोई चिंता की बात नही रहेगी" दमयंती ने केशव की और देखा और इशारो इशारो में भुवन की बात मान-ने को कहा.

"तुम ठीक कह रहे हो…तुम्हारा घर सुरक्षित रहेगा…दमयंती तुम अपना मूह ढक लो ताकि कोई तुम्हे पहचान ना सके." केशव ने कहा.

"उमा तुम घर जाओ और किसी को भी केशव और दमयंती के बारे में कुछ मत बताना..अपने भाई बलवंत को तुम कोई कहानी बता देना..मेरा नाम मत लेना वरना वो यहा

पहुँच जाएगा.'' भुवन ने कहा.

''तुम चिंता मत करो…मैं संभाल लूँगी'' उमा ने कहा. उमा ने दमयंती को गले लगाया और बोली, ''भगवान तुम्हारा प्यार सलामत रखे…अपना ख़याल रखना.''

''तुम भी अपना ख्याल रखना'' दमयंती ने कहा.

''केशव तुम यही रूको अभी पहले मैं दमयंती को छोड़ आउ…तुम सबकी नज़रो से बचते बचाते थोड़ी देर में आ जाना.'' भुवन ने कहा.

''ठीक है मैं यही खड़ा हूँ तुम निकलो…और हां गावँ वालो को उस भयानक जानवर के बारे में भी तो सचेत करना है'' केशव ने कहा.

''वो काम तुम मुझपे छोड़ दो…मैं संभाल लूँगा…अभी तुम्हे बस ठाकुर से बच के रहना है'' दमयंती मूह पर दुपट्टा लपेट कर चुपचाप भुवन के साथ चल पड़ती है. भुवन दमयंती को अपने घर ले आता है.

''तुम आराम करो…बहुत थक गयी होगी…मैं केशव को भी यहा तक सुरक्षित लाने का इंतेज़ाम करता हूँ.''

''तुम इतना कुछ क्यों कर रहे हो.'' दमयंती ने पूछा.

''तुम दोनो के प्यार की खातिर.'' भुवन ने कहा.

केशव भी किसी तरह से भुवन के घर तक पहुँच जाता है. केशव के आते ही दमयंती उस से लिपट जाती है.

''कल तो मुझसे दूर भाग रही थी आज क्या हुवा?''

''मुझे तुम्हारी चिंता हो रही थी.'' दमयंती ने कहा.

''मैं कुछ खाने का इंतेज़ाम करता हूँ तुम दोनो आराम करो'' भुवन ने पीछे से आवाज़ दी.

भुवन की आवाज़ सुनते ही दमयंती केशव से अलग हो गयी. केशव भुवन के पास गया और बोला, ''तुम हमारी बहुत मदद कर रहे हो…कैसे चुकाउंगा इस अहसान का बदला मैं.'' केशव ने कहा.

''ये अहसान नही है, ये मेरा दो प्यार करने वालो के प्रति फ़र्ज़ है…और वैसे भी तुमने भी तो मेरी और उमा की जान बचाई थी उन गौरो से… तुम आराम करो मैं कुछ खाने को लाता हूँ'' भुवन ने कहा ……………………..

इधर ठाकुर के आदमियों ने पूरा खेत छान मारा पर भैरव का कोई पता नही चला. शाम घिर आई थी सभी हताश और निराश थे.

"अब तो बात साफ है…वो भैरव को जंगल में ही ले गया है." ब्रजभूषण ने कहा.

"अब तक तो उसने भैरव की चटनी बना दी होगी….स्वामी जी रहने दीजिए..उसे उसके पापो की सज़ा मिल गयी हमें क्या लेना देना."

"तुम समझ नही रहे मेरा इरादा उसे बीच गावँ में सज़ा देने का था ताकि गावँ वालो के दिल से ठाकुर का ख़ौफ़ कम हो….वो ऐसी चुपचाप मरेगा तो क्या फ़ायदा….और उसके मरने से कुछ हासिँल नही होगा…बात तो तब थी जब वो पूरे गावँ के आगे जलील होता और माफी मागँता वो सज़ा उसके लिए ज़्यादा अच्छी होती" ब्रजभूषण ने कहा.

"पर भूतो का अपना क़ानून है…वो उसे जंगल में मारेगा तो हम क्या करे." गोपालदास ने कहा.

"स्वामी जी अब क्या होगा…कुछ तो बोलिए?" शकुंतला गिड़गिडाई.

"देखो स्वामी जी जो कर सकते थे उन्होने किया…..अब वो भैरव को जंगल में ले गया तो हम क्या करें. इतने बड़े जंगल में उसे कहा ढूंढेंगे." गोपालदास ने कहा.

"गोपालदास तुम चुप रहो….इनकी परेशानी भी तो समझो." ब्रजभूषण ने कहा.

"देखिए अब भैरव के बचने की संभावना बहुत कम है….अब तक शायद…" ब्रजभूषण ने कहा. दो आसूँ शकुंतला की आखँो से टपक गये.

"मुझे पता था कि एक ना एक दिन भगवान उनके साथ न्याय ज़रूर करेंगे पर इस तरह से करेंगे सोचा नही था." शकुंतला ने कहा और अपने आसूँ पोंछ कर वापिस हवेली की तरफ चल दी. भवानी और जीवन वही खड़े रहे.

"चलो स्वामी जी हम चलते हैं….इनको अपने किए की सज़ा मिल गयी." गोपालदास ने कहा.

भवानी और जीवन ने गोपालदास की बात पर कोई प्रतिसाद नही किया. ब्रजभूषण और गोपालदास भी वहां से चल दिए, सविता के घर की तरफ.

……………………………………

भाग - 10

दमयंती और केशव खाना खा कर भुवन के घर की खिड़की पर खड़े हैं. केशव ने दमयंती को पीछे से बाहों में भरा और बोला,

"क्या सोच रही हो."

"कुछ नही....घर में सब परेशान होंगे."

"हा ँमेरे घर पे भी सब परेशान होंगे...सविता तो रो रो कर पागल हो गयी होगी." केशव ने कहा.

"बहुत प्यार करते हो तुम अपनी बहन से."

"हां बिलकुल ये भी क्या पूछने की बात है."

"मुझे शरम आ रही है." दमयंती ने कहा. "शरम....वो क्यों."

"समझा करो हटो पीछे."

"नही हटूँगा...बड़ी मुश्किल से तो ये पल नसीब हुवे हैं...मैं नही हटूँगा."

दमयंती को अपने नितंबो पर केशव का लिंग महसूस हो रहा था इसलिए वो शर्मा रही थी.

"हटो ना कुछ चुभ रहा है."

"क्या चुभ रहा है...बताओ ना."

"मुझे नही पता लेकिन कुछ है."

"इस कुछ का कोई नाम तो होगा."

"मुझे नाम नही पता...तुम हट जाओ."

"अच्छा...ये लो अब और ज़्यादा चुभावगँा." केशव ने दमयंती के नितंबो पर धक्का मारा.

"बदमाश क्या कर रहे हो."

"वही जिसके लिए ये प्यार हुवा है."

"प्यार क्या ये सब करने की लिए किया था तुमने."

"नही...पर इसके बिना प्यार अधूरा रहेगा." केशव ने कहा

केशव ने दमयंती की गर्दन को बड़े प्यार से चूम लिया.

“आहह…हट जाओ…तन्हाई का फायदा मत उठाओ.” केशव ने दमयंती के स्तनों को अपने दोनो हाथो में जकड़ लिया और उन्हे ज़ोर से मसलने लगा.

“आहह….नही केशव…अभी नही…शादी के बाद…”

“शादी तक हम जींदा ना रहे तो.” केशव ने कहा.

“नही…नही ऐसा नही होगा.” दमयंती ने कहा और दो बूंदे उसकी आँखो से टपक गयी.

“जो वक्त है हमारे पास उस में एक दूसरे में डूब जाते हैं…बाकी जींदगी का कोई भरोसा नही.”

“ऐसा मत कहो…मुझे डर लग रहा है.” केशव ने दमयंती को अपनी तरफ घुमाया और उसके होंटो पर अपने होठ टिका दिए.

दो प्यार से भरे होठ प्यार के सागर में डूब गये. एक बार उनके होठ क्या मिले…मिले ही रह गये. पूरे आधा घंटा वो एक दूसरे को चूमते रहे. “बस बहुत हो गया प्यार ! क्या सारी रात चूस्ते रहोगे मेरे होठ.”

“नही अभी कुछ और भी करना है?”

“क्या?”

केशव ने अपना लिंग कपड़ो की क़ैद से बाहर खींच लिया और बोला,

“इसे भी प्यार चाहिए.” दमयंती ने अपनी नज़रे झुकाई और केशव के लिंग को देखा. कमरे में दिया जल रहा था उसकी रोशनी इतनी तो थी ही कि केशव और दमयंती नज़दीक से एक दूसरे को देख सकें.

“यही है वो बदमाश जो मेरे पीछे चुभ रहा था.”

“हां…लो पकड़ लो…तुम्हारा ही है ये.” केशव ने दमयंती को कहा.

“ना बाबा ना मुझे शरम आती है…अंदर डालो इसे.”

“अंदर भी डालेंगे पहले थोड़ा कुछ और तो कर लें.”

“क्या मतलब ? मैने कहा इसे वापिस अंदर पतलून में डालो…जहा से निकाला है…मेरा अभी कोई इरादा नही है.”

“ऐसा मत कहो ना….ये वक्त ये रात दुबारा नही आएगी.”

“ऐसी रात रोज आएगी चिंता मत करो.”

“समझा करो…पकड़ो ना.” केशव ने कहा और दमयंती का हाथ खींच कर अपने लिंग पर रख दिया.

दमयंती को जैसे करंट लग गया उसने फॉरन अपना हाथ वापिस खींच लिया.

“क्या हुवा…क्या मेरे लिंग को प्यार नही करोगी.”

“क्या कहा तुमने?” “लिंग…यही नाम है इस बेचारे का.” केशव ने हंसते हुवे कहा.

“लिंग….ये कैसा नाम है.” दमयंती हैरान हो कर बोली. शायद उसे किसी ने ये नाम नही बताया था.

“यही नाम है लो पकड़ो अब.”

“पकड़ तो लूँगी पर लिंग…हे..हे..हा..हा.”

“इसमें हसने की क्या बात है…ज़्यादा मत हसँो वरना अभी योनि में डाल दूँगा.”

“हाई राम ऐसी बाते मत करो.”

“अच्छा योनि का तुम्हे पता है और लिंग का तुम्हे कुछ नही पता…सिर्फ़ अपना अपना ख्याल रखती हो हा…” केशव ने कहा. तभी अचानक दरवाजा खड़का.

“अफ अब कौन आ गया.” केशव ने कहा.

“बड़े अच्छे वक्त आया है कोई…हे..हे” दमयंती मुस्कुराइ.

“देखता हू ँकब तक बचाओगि अपनी योनि मुझसे….आज की रात उसकी खैर नही.” केशव ने दमयंती के स्तनों को दबा कर कहा."

"पहले दरवाजा खोलो…देखो तो सही कौन है.” केशव ने दरवाजा खोला.

"केशव गावँ में माहॉल बहुत खराब है...मैं बाहर से ताला मार देता हू.ँ..तुम अंदर शांति से रहना."

"हम तो शांति से ही हैं...अच्छा ये बताओ मेरे घर का का कुछ हाल चाल पता चला"

भुवन गहरी सासँ ली, "अभी तुम्हारे घर नही जा पाया...चिंता मत करो सब ठीक ही होगा."

भुवन को केशव की बहन कविता और मा के बारे में सब पता चल गया था लेकिन उसने जानबूझ कर केशव को कुछ नही बताया. शायद वो प्यार से भरे दो दिलो को परेशान नही करना चाहता था

"क्या ठाकुर को पता चल गया कि दमयंती मेरे साथ है" केशव ने पूछा.

"ठाकुर को ही नही पूरे गावँ को पता है...कुछ भी हो तुम यहा से बाहर मत निकलना.." भुवन ने कहा.

"सच-सच बताओ मेरे घर पे सब ठीक है ना." केशव ने पूछा.

"सब ठीक ही होगा...मुझे तुम्हारे घर के बारे में किसी ने कोई ऐसी वैसी बात नही बताई...तुम चिंता मत करो...आराम करो अब...और हां ध्यान रखना ज़्यादा आवाज़ मत करना अंदर. बाहर से ताला लगा रहा हूँ...ध्यान रखना"

"ठीक है, मैं ध्यान रखूँगा" केशव ने कहा. भुवन के जाने के बाद केशव गहरी चिंता में खो जाता है.

"क्या हुवा परेशान क्यों हो" दमयंती ने केशव के कंधे पर हाथ रख कर पूछा.

"पता नही क्यों ऐसा लग रहा है कि घर पर सब ठीक नही है"

"ऐसा क्यों सोच रहे हो?"

"पता नही पर भुवन मुझसे कुछ छुपा रहा है"

"ज़्यादा मत सोचो....सब ठीक ही होगा...देखो हम जंगल से यहा सुरक्षित आ गये. भगवान सब ठीक ही रखेंगे"

"ह्म्म तुम कहती हो तो मान लेता हूँ....पर अब तुम्हे बदले में छूट देनी पड़ेगी"

"ये क्या बात हुई भला तुम मेरी बात मानो या ना मानो मेरी वो बीच में कहा से आ गयी"

"आज तो तुम्हे देनी ही होगी देखो ना बंद कमरे में हम दोनो तन्हा हैं. बाहर से ताला लगा है. तुम्हारे पास योनि देने के सिवा कोई चारा नही"

"तुमने तो अचानक रंग बदल लिए...प्यार क्या यही सब है"

"प्यार तो बहुत कुछ है दमयंती पर प्यार में योनि में लिंग तो देना ही पड़ता है"

"हाई राम तुम तो बहुत बदमाश हो कैसी बाते करते हो"

"अच्छा लो अब पकड़ो मेरे लिंग को" केशव ने अपने लिंग को बाहर खींच कर कहा

"ना बाबा ना मैं नही पकडूँगी...मुझे तो नींद आ रही है...उस जंगल में रात भर जागती रही...अब मुझे परेशान मत करो."

केशव ने दमयंती को बाहों में भर लिया और उसके नितंबो पर हाथ रख कर उसे अपनी और खींचा. दमयंती को अपनी योनि पर केशव का लिंग महसूस हुवा तो वो सिहर उठी.

"छोड़ दो मुझे...अकेली लड़की का फायदा मत उठाओ"

केशव ने दमयंती के नितंबो को सहलाया और उन्हे मसलते हुवे बोला,

"तुम्हारी नितंब बहुत सुंदर है"

"कैसी बात करते हो तुम हटो छोड़ो मुझे."

"अक्सर तुम्हे मंदिर से जाते वक्त पीछे से देखता था मैं. बहुत नितंब मटका कर चलती थी तुम"

"मंदिर के बाहर क्या तुम ये सब देखते थे...शरम नही आई तुम्हे."

"प्यार में कैसी शरम. एक ब्रजभूषणी को ब्रजभूषणिका के हर अंग को देखने का हक़ है"

"मंदिर में भी हा" दमयंती ने कहा.

"मंदिर में नही देखता था, तुम्हे मंदिर के बाहर देखता था."

"मुझे ही देखते थे या किसी और को भी"

"पागल हो क्या...तुम्हारे सीवा किसी और को क्यों देखूँगा.."

"फिर ठीक है" "तुम्हारे चाचा पर बहुत गुस्सा आ रहा है...उसने बहुत हाथ फेरे हैं इस नितंब पर"

"मुझे दुबारा वो सब याद मत दिलाओ...मेरा मन खराब होता है."

"ओह ग़लती हो गयी...वैसे ही मूह से निकल गया...तुम्हारे चाचा की तो मैं किसी दिन ऐसी धुनाई करूँगा कि वो याद रखेगा"

"छोड़ो ये सब अपनी बाते करो" "ह्म्म तो कैसा लगा तुम्हे मेरा लिंग"

"लिंग हे..हे..हे....अच्छा लगा...लिंग"

"फिर से मज़ाक उड़ा रही हो मेरे लिंग का...तुम्हारी योनि फाड़ देगा वो ऐसे बोलॉगी तो"

"अरे बाबा कुछ और नाम नही मिला क्या...लिंग...हे..हे"

"खोलो नाडा अभी मज़ा चखाता हूँ" केशव ने कहा.

केशव दमयंती का नाडा पकड़ कर खोलने लगा.

"रूको...मैं तो मज़ाक कर रही थी.."

"इस नाडे को क्या हो गया...कैसे खुलेगा ये...खोलो इसे"

"मैं नही खोलने वाली ...आप में दम है तो खोल के दीखाओ"

"अपनी योनि सामने लाओ अभी घुस्साता हूँ उसमे तब पता चलेगा कि लिंग क्या होता है"

"पहले नाडा तो खोल लो फिर घुस्साने की बात करना...ये खुलने वाला नही है" दमयंती ने हंसते हुवे कहा.

"लिंग तो मैं घुस्सा के रहूँगा चाहे कुछ हो जाए"

"ऐसे कैसे घुस्सा दोगे...मेरी मर्ज़ी के बिना कुछ नही होगा"

"अच्छा ये लो तुम्हारा नाडा खुल गया...अब तुम्हारी योनि की खैर नही." केशव ने कहा.

"उऊयई मा तुमने तो सच में खोल दिया....देखो ये सब अभी नही...फिर कभी"

"आज क्या व्रत है तुम्हारी योनि का जो फिर कभी पर टाल रही हो"

"सब कुछ अचानक हो रहा है...मैं तैयार नही हूँ" केशव ने दमयंती की योनि पर हाथ रखा और बोला,

"झूठ बोल रही हो....तुम्हारी योनि तो लार टपका रही है और तुम कह रही हो की मैं तैयार नही हूँ"

"मुझे वो सब नही पता....क्या पता मेरी वो क्यों लार टपका रही है"

"लिंग लेने के लिए तैयार है तुम्हारी चिकनी योनि...इतना भी नही समझती." केशव दमयंती के स्तनों को मसलना शुरू कर दिया.

"ऊऔच्च... इतनी ज़ोर से क्यों दबा रहे हो...तुम तो पागल हो गये हो आज"

"तुम्हारे प्यार में पागल हुवा हूँ दमयंती गुस्सा मत करो"

"धीरे से नही दबा सकते फिर"

केशव ने बाते करते-करते अचानक अपना लिंग दमयंती की योनि पर रख दिया. दमयंती बिन पानी मछली की तरह तड़पने लगी.

"आअहह तुम्हारा लिंग महसूस हो रहा है मुझे"

"अभी ये लिंग बाहर है अभी थोड़ी देर में तुम्हारे अंदर घुस्सेगा...आअहह"

"लगता है तुम नही मानोगे"

"अगर तुम सच में मुझे रोकना चाहती हो तो मुझे अपने उपर से धकैल दो मैं दुबारा नही आऊंगा"

"ये क्या बात हुई...मैं ऐसा कभी नही करूँगी"

"डाल दू फिर क्या तुम्हारी योनि में"

"मुझे नही पता था कि तुम ऐसी कामुक बाते करोगे."

"मैं तो रोज तुम्हारी नितंब देख-देख कर जीता था."

"क्या मतलब...ऐसा क्या है उसमे"

"तुम्हारी नितंब मटकती देखता था तो लिंग मचल उठता था."

"ह्म्म...मुझे नही पता था कि तुम मुझे ऐसी नज़रो से देखते हो वरना ख्याल रखती."

केशव अपने लिंग को हाथ में पकड़ कर दमयंती की योनि पर रगड़ने लगा.

"आअहह ये क्या कर रहे हो" दमयंती कराह उठी

"लिंग को रास्ता दीखा रहा हूँ...एक बार रास्ता मिल गया तो घुस्स जाएगा..."

"तुम तो इसे कही और ही रगड़ रहे हो ऐसे कैसे रास्ता मिलेगा." दमयंती बोली.

"तो तुम मदद कर दो वैसे भी तुम्हारी योनि है तुम अच्छे से जानती हो इसके रास्ते ."

"मैं अजनबी को रास्ता नही दीखाती...खुद ढूंड लो." अगले ही पल दमयंती चिंख उठी...

"आआय्य्यीईइ.....नही" वो इतनी ज़ोर से चिंखि की केशव घबरा गया.

"ज़्यादा ज़ोर से मत चील्लाओ...किसी ने सुन लिया तो मुसीबत हो जाएगी"

"घुस्साने से पहले मुझे बता तो देते...जान निकाल दी मेरी...निकालो बाहर वरना मैं फिर चील्लाउन्गि"

"कैसी बात करती हो...तुम तो ऐसे फसवा दोगि"

"मुझे दर्द हो रहा है..तुम समझते क्यों नही...हटो" केशव ने

अपना लिंग बाहर खींच लिया और दमयंती के उपर से हट कर करवट ले कर लेट गया. दमयंती थोड़ी देर चुपचाप पड़ी रही. थोड़ी देर बाद उसे अहसास हुवा कि केशव नाराज़ है.

"केशव क्या हुवा...क्या तुम नाराज़ हो गये पर मैं क्या करती बहुत दर्द हो रहा था."

"रहने दो, क्या कोई ऐसे अंदर डलवा कर बाहर निकलवाता है?" केशव ने कहा.

"मैने नही डलवाया था...तुमने अचानक डाल दिया मैं तैयार नही थी"

"योनि तो तुम्हारी गीली पड़ी है और फिर वही मज़ाक कर रही हो."

"केशव तुम्हारा लिंग भी तो इतना मोटा है....क्या पता उसके लिए मेरी वो छोटी हो"

"ऐसा कुछ नही है सब बहाने हैं तुम्हारे." केशव ने कहा.

"कितना डाला था तुमने?" दमयंती ने पूछा. "अभी आधे से भी बहुत कम घुस्साया था और तुम नाटक करने लगी"

"ये नाटक नही था केशव...सच में बहुत दर्द हो रहा था...अच्छा आओ तुम दुबारा डालो मैं मूह से छू भी नही करूँगी"

"पक्का" केशव ने कहा.

"हां बिलकुल पक्का." केशव फिर से दमयंती के उपर चढ़ गया. इस बार उसने अपने लिंग पर ढेर सारा थूक लगा लिया.

"ये क्या कर रहे हो?" दमयंती ने पूछा.

"लिंग को चिकना कर रहा हूँ ताकि आराम से अंदर जाए."

"ह्म्म पहले क्यों नही किया था ये काम..बेकार में मेरी जान निकाल दी"

"तुम्हारी योनि बहुत गीली थी मुझे लगा थूक की कोई ज़रूरत नही है"

"अब जब डालो तो बता देना."

"मैं डालने ही जा रहा हूँ...तैयार हो जाओ" केशव ने कहा.

केशव ने दमयंती की योनि पर लिंग रख कर ज़ोर से खुद को आगे की ओर धकेला.

"म्म्म्मम" दमयंती ने अपनी मुथि दातों में भींच ली.

"क्या पूरा गया...आहह" "नही अभी आधा ही गया है"

"क्या पूरा डालना ज़रूरी होता है...आधे से काम नही चलेगा क्या?"

"नही....मेरा पूरा डालने का मन है आअहह लो सम्भालो"

"आहह.....म्म्म्मम" दमयंती बहुत धीरे से कराह रही थी.

"घुस्स गया पूरा....बस अब सब ठीक है"

"क्या ठीक है...मेरी हालत खराब हो रही है"

"तो क्या निकाल लू बाहर" "नही-नही इतनी मुश्किल से तो एक बार अंदर लिया है"

"ह्म्म....दमयंती मैं तुम्हे बहुत प्यार करता हूँ"

"तभी इतना दर्द दे रहे हो."

"ये दर्द तो एक पल का है प्यार की खुशबू जो इसके बाद बीखरेगी उसका तुम्हे अंदाज़ा नही"

"अच्छा तुम्हे कैसे पता ये सब"

"बस पता है....लड़को को सब पता होता है"

"ह्म्म...अब इसके बाद क्या होगा?" दमयंती ने बड़ी मासूमियत से पूछा.

"कुछ नही अब मैं बस तुम्हारी योनि मारूँगा" केशव ने दमयंती के स्तनों को मसलते हुवे कहा.

"तुम तो बहुत बदमाश निकले" दमयंती ने कहा.

"ब्रजभूषणिका के साथ बदमाशी करनी पड़ती है वरना कुछ नही मिलता"

"शुरू भी करो अब काम..तुम तो बातो में लग गये"

"लगता है मेरी दमयंती का दर्द गायब हो गया."

"हां अब आराम है"

"इसका मतलब मैं अब अपनी दमयंती की योनि मार सकता हूँ"

"बिलकुल" दमयंती ने अपने चेहर को अपने हाथो मे ढक कर कहा.

केशव ने बिलकुल सुनते ही दमयंती के उपर हलचल शुरू कर दी.

"आअहह केशव....थोड़ा धीरे आअहह"

"ठीक है" केशव ने रफ़्तार कम कर दी. वो अपने लिंग को बहुत धीरे धीरे दमयंती की योनि में अंदर बाहर करने लगा.

"इतनी धीरे भी नही....आहह थोड़ा तेज"

"ह्म्म मेरी दमयंती को अब तेज चाहिए ये लो फिर."

"उउम्म्मम........ आअहह केशव अच्छा लग रहा है ऐसे ही करते रहो....आअहह"

"थोड़ा धीरे बोलो किसी ने सुन लिया तो ये काम बीच में ही रोकना पड़ जाएगा" केशव ने कहा.

दमयंती ने फिर से अपने दांतो में मुति दबा ली कोई आधा घंटे बाद केशव बहुत तेज तेज धक्के लगा कर दमयंती पर गिर गया.

"आअहह अच्छा हुवा तुम रुक गये वरना मैं तुम्हे अब धक्का देने वाली थी?"

"काम ख़तम हुवा तो रुकना ही था. बहुत मज़ा आया...कसम से."

"बिन फेरे मैं तुम्हारी पत्नी बन गयी"

"बिलकुल दमयंती....ये जो हमने किया वो फेरो से भी ज़्यादा मजबूती देगा हमारे रिश्ते को.....आराम कर लो एक बार फिर करेंगे."

"क्या....नही अब मुझे सच में नींद आ रही है...कल भी नही सोई...आज भी नही सोने दोगे तो बीमार पड़ जाऊंगी" दमयंती ने कहा.

"ह्म्म ठीक है चलो अब सोते हैं" "पहले अपना लिंग तो बाहर निकाल लो"

"ओह...भूल ही गया....ये लो"

"अच्छा नाम है लिंग....हे..हे काम भी अच्छा करता है...." दमयंती ने कहा.

"ये काम हर रोज कर देगा ये तुम बस अपनी योनि को गीली रखना"

"मुझे नही पता वो कैसे गीली होती है....ये काम भी तुम ही करना."

"हा...हा...हे..हे...बहुत अच्छा मज़ाक कर लेती हो."

"श... चुप बाहर कुछ हलचल हो रही है" दमयंती ने कहा.

"आधी रात को कौन घूम रहा है बाहर मैं खिड़की से देखता हूँ."

"रहने दो ना..मुझे डर लग रहा है मेरे पास ही रहो." तभी कमरे का दरवाजा हल्का सा हिला, जैसे की बाहर किसी ने हल्का सा धक्का मारा हो.

"मैं देखता हूँ खिड़की से" केशव ने कहा और उठ कर खिड़की के पास आ गया.

"हे भगवान ये तो वही दरिन्दा है जो हमने जंगल में देखा था." केशव ने मन ही मन कहा. केशव फॉरन दमयंती के पास आ गया और बोला,

"बिलकुल आवाज़ मत करना...वो दरिन्दा घूम रहा है बाहर."

"हे भगवान अब क्या होगा?" दमयंती ने कहा.

"बिलकुल चुप रहो..." केशव ने कहा. दोनो बिलकुल शांत पड़े रहे...बाहर हलचल होती रही.

"ये सब हमारे साथ ही क्यों हो रहा है केशव" दमयंती ने पूछा.

"मुझे तो हमारा गावँ ख़तरे में लग रहा है." केशव ने कहा.

"अब तो बाहर कोई आवाज़ नही है" दमयंती ने कहा

"बाहर हलचल तो कुछ नही हो रही लेकिन फिर भी हमें शांत रहना होगा"

रात बीत जाती है और सुबह की किरण खिड़की से अंदर आती है तो दमयंती की आँख खुल जाती है.

"उठो खिड़की बंद कर्लो...दिन निकल आया है कही कोई झाँक के देख ले" दमयंती ने कहा.

केशव उठ कर खिड़की बंद करने लगता है लेकिन बाहर की हलचल देख कर रुक जाता है.

"ये सब लोग कहा भागे जा रहे हैं इतनी सुबह" केशव ने कहा.

"तुम खिड़की बंद करो ना पहले बाद में सोचना" दमयंती ने कहा. केशव खिड़की बंद करके दमयंती के पास आ गया.

"ज़रूर कुछ गड़बड़ है....रात को उस दरिंदे ने कही यहा गावँ में भी किसी को मार तो नही दिया?" केशव ने कहा.

"मुझे तो अभी नींद आ रही है...बहुत हो लिया ये तमाशा रात भर वैसे ही नींद नही आई"

"लगता है रात का नशा अभी तक नही उतरा" केशव ने कहा

"नशा तो तभी उतर गया था जब रात बाहर हलचल हो रही थी...बड़ी मुश्किल से नींद आई थी सोने दो अब."

"ठीक है तुम सो जाओ.....ये भुवन कब आएगा?"

सविता के घर के बाहर ब्रजभूषण और सविता खड़े बाते कर रहे हैं.

"सविता मैने अपने साथ आए लोगो को भेज दिया है.....उन्हे दूसरे गाँव जाना है वहां कुछ काम है" ब्रजभूषण ने कहा.

"तुम क्यों नही गये ब्रजभूषण?" सविता ने पूछा.

"पिता जी की तबीयत खराब है और अभी गाँव में माहॉल खराब है सोचा थोड़े दिन यही रुक जाऊ."

"शूकर है कोई तो कारण है तुम्हारे पास यहा रुकने का."

"ऐसी बात नही है...मुझे तुम्हारी भी चिंता है"

"अगर ऐसा है तो क्या तुम हमेशा मेरे साथ रह सकते हो?"

"तुम हमेशा इस रिश्ते को बंधन में क्यों बाँधना चाहती हो, समझने की कोशिश क्यों नही करती...मैं अब सन्यासी हूँ"

"क्योंकि मैं तुम्हे प्यार करती हूँ इसलिए...और मुझे तुम्हारा ये सन्यास समझ नही आता...जो की किसी का दिल तोड़ देता है" सविता ने कहा.

सविता ने ब्रजभूषण का हाथ पकड़ा और अपने दिल पर रख दिया और बोली, "देखो हर वक्त इस दिल में बस तुम्हारा ही प्यार बस्ता है और तुम हो कि मेरी कोई परवाह नही करते अब. पहले तो तुम ऐसे नही थे...सब इस सन्यास के कारण हुवा है...कैसा सन्यास है ये जो प्यार को ख़तम कर देता है"

ब्रजभूषण का हाथ सविता के दिल के साथ-साथ उसके स्तनों के उपर भी था. सविता के स्तनों की गोलाई महसूस होते ही ब्रजभूषण ने अपना हाथ वापिस खींच लिया.उसका हाथ काँप रहा था.

"ये क्या कर रही हो....ये सब मेरे लिए पाप है" ब्रजभूषण थोडा गुस्से में बोला.

"मैं तो आपको अपना दिल दीखा रही थी स्वामी जी आपने कुछ और ही महसूस किया शायद...कैसा सन्यास है ये" सविता ने कहा.

"मैं तुमसे कोई बात नही करना चाहता...मैं जा रहा हूँ" ब्रजभूषण ने कहा. "

ब्रजभूषण मेरी बात सुनो मेरा वो मतलब नही था...रुक जाओ" सविता गिड़गिडाई. ब्रजभूषण सविता की बात अनसुनी करके आगे बढ़ गया लेकिन अभी वो चार कदम ही बढ़ा था कि, सामने से भिका भागता हुवा आया और बोला,

"स्वामी जी अनर्थ हो गया" "क्या हुवा भिका?" ब्रजभूषण ने पूछा.

"आपके साथ जो लोग थे.." भिका बोलते-बोलते चुप हो गया.

"हां-हां बोलो क्या हुवा?" "वो सब मारे गये स्वामी जी...

के नज़दीक जो सड़क गावँ से बाहर की ओर जाती है वहां सब की लाश बहुत बुरी हालत में पड़ी हैं. ऐसा लगता है जैसे किसी शेर ने उनको नोच-नोच कर खाया हो" भिका ने कहा एक पल को ब्रजभूषण स्तब्ध रह गया.

"ये क्या कह रहे हो...होश में तो हो"

"मैं खुद अपनी आखँो से देख के आ रहा हूँ स्वामी जी" "हे भगवान गोपालदास और नीरज के मा बाप को मैं क्या जवाब दूगँा." ब्रजभूषण ने कहा.

सविता भी भाग कर ब्रजभूषण के नज़दीक आ गयी और बोली,

"क्या हुवा ब्रजभूषण?" ब्रजभूषण ने कोई जवाब नही दिया.

"स्वामी जी के साथ जो लोग थे उनके साथ अनर्थ हो गया." भिका ने कहा.

"काश मैं उन्हे रोक लेता कल...कह रहे थे रात-रात में पहुचँ जाएगे अगले गावँ...मुझे उन्हे रोकना चाहिए था...मेरा दीमाग कहाँ है आजकल" ब्रजभूषण बड़बड़ाया

"ब्रजभूषण तुम्हारी ग़लती नही है...." सविता ने कहा.

"चुप रहो तुम सब तुम्हारे कारण हुवा है....मेरा दीमाग खराब कर दिया तुमने" ब्रजभूषण गुस्से में बोला.

ये सुनते ही सविता की आखँे भर आई और वो वापिस मूड कर अपने घर की तरफ चल दी. ब्रजभूषण को जल्दी ही अहसास हो गया कि उसने कुछ ग़लत बोल दिया लेकिन उसके पास सविता के पीछे जाने का वक्त नही था.

"चलो भिका मैं खुद देखना चाहता हूँ कि उनके साथ क्या हुवा."

"आओ स्वामी जी पूरा गावँ वही मौजूद है" भिका ने कहा.

ब्रजभूषण भिका के साथ वहां पहुचँ जाता है. सड़क पर हर तरफ चिथड़े पड़े थे. बहुत ही भयानक मंज़र था.

"आपको क्या लगता है स्वामी जी क्या ये किसी शेर का काम है?" भिका ने पूछा.

"हो भी सकता है और नही भी" ब्रजभूषण ने कहा.

बहुत ही दर्दनाक मंज़र था जिसने भी देखा उसकी रूह काँप उठी. भवानी और जीवन भी वही मौजूद थे. ब्रजभूषण को देख कर वो उसके पास आ गये.

"लगता है कोई बुरी बला तुम्हारे और तुम्हारे साथियो के पीछे पड़ी है...वक्त रहते चले जाओ यहा से कही तुम्हारा भी यही हाल हो जाए" भवानी ने कहा.

"बुरी बला तो तुम्हारे उपर भी है ठाकुर भूल गये कैसे घर से खींच कर ले गये थे भैरव को भूत कल. रही बात मेरा ऐसा हाल होने की तो मैं इन बातो से नही डरता. तुम बच कर रहो...तुम्हारी हवेली के बहुत नज़दीक है ये सड़क...कल कही ऐसा मंज़र तुम्हारी हवेली में ना हो जाए"

"तुम्हारी इतनी जुर्रत" भवानी गुस्से में बोला.

"मेरी जुर्रत तो तुम देख ही चुके हो कल...मेरा दीमाग वैसे ही घूम रहा है चले जाओ चुपचाप वरना अभी तुम्हे यही जींदा गाढ दूँगा" ब्रजभूषण ने कहा.

"चलो भैया सब गावँ वाले इसके साथ हैं कही कोई गड़बड़ हो जाए" जीवन ने कहा.

"तुम्हे तो मैं देख लूँगा....और भिका तू...मेरे टुकड़ो पर पलता था... आज इसके तलवे चाट रहा है" भवानी ने कहा. भिका ने कुछ नही कहा. भवानी और जीवन वहां से चले गये.

"भिका सभी गावँ वालो को कहो कि मंदिर के बाहर इकट्ठा हो जायें. मुझे सभी से बहुत ज़रूरी बात करनी है"

"जी स्वामी जी"

ब्रजभूषण मंदिर के बाहर खड़ा गावँ वालो का इंतेज़ार कर रहा था. पर उसे दूर-दूर तक कोई भी आता दीखाई नही दिया.

"कहा रह गये सब लोग...भिका ने सबको बोला है कि नही." तभी ब्रजभूषण को भिका आता दीखाई दिया.

"क्या बात है सब गावँ वाले कहा हैं?" ब्रजभूषण ने पूछा.

"कोई भी आने को तैयार नही हुवा स्वामी जी...गावँ वालो को लगता है कि कोई बुरी बला आपके साथ इस गावँ में घुस्स आई है और वो आपके यहा से जाने के बाद ही यहा से जाएगी...लगता है ठाकुर के आदमियों ने ये अफवाह फैलाई है" भिका ने कहा.

"अपना भी तो कोई दीमाग होता है...क्या हो गया इन लोगो को...मैं तो इनको इस मुसीबत से बचाने के बारे में ही बात करना चाहता था...खैर चलो छोड़ो मुझे अकेले ही कुछ करना होगा"

"मैं आपके साथ हू स्वामी जी." भिका ने कहा.

"देख लो हमें अभी नही पता कि हम किसका सामना करने वाले हैं. वो जो कुछ भी है बहुत ख़तरनाक चीज़ है. क्योंकि जो भूतो की भी चिंख निकाल दे वो मामूली चीज़ नही हो सकती."

"भूतो की चिंख!...कुछ समझ नही आया स्वामी जी"

"जो चिंख खेतो में गूँज रही थी वो किसी इंसान की नही भूत की थी" "ब...ब..भूत की"

"क्या हुवा अभी से डर गये?" ब्रजभूषण ने पूछा.

"नही स्वामी जी ऐसी बात नही है...आपके होते कैसा डर...हां मुझे भूतो की बाते सुन कर थोड़ा डर ज़रूर लगता है"

"हमारा सामना भूतो से नही बल्कि किसी और ही चीज़ से है" "क्या शेर भूतो से भी ज़्यादा ख़तरनाक हैं"

"ये शेर का काम नही है भिका...ये कुछ और ही बला है."

"ये जो भी हो स्वामी जी मैं आपके साथ हूँ"

"भैया हमारा पासा बिलकुल सही पड़ा है...सुना है की कोई भी गावँ वाला नही पहुँचा उस ब्रजभूषण के पास." जीवन ने कहा.

"वो तो ठीक है पर ये जो कुछ भी हुवा अच्छा नही हुवा...ज़रूर कोई ख़तरा इस गावँ पर मंडरा रहा है" भवानी ने कहा

"हमें क्या लेना देना भैया...हमारी हवेली तो सुरक्षित है...कोई यहा नही घुस्स सकता."

"हवेली से ही खींच कर ले गये भूत भैरव को...अभी तक कुछ नही पता कि वो कहा है कैसा है. दमयंती का भी कुछ आता-पता नही...कुछ मनहूसियत सी चाय है चारो तरफ"

"भैया अब जो हो गया सो हो गया...बाद में तो कोई भूत नही दीखा यहा."

"फिर भी कुछ अजीब सा लग रहा है यहा." तभी शकुंतला वहां आ जाती है.

"पिता जी मैं अपने घर जा रही हूँ...अब जब भैरव ही नही रहे तो मैं यहा क्या करूँगी."

"कुलच्छणी तूने भैरव को मरा मान लिया अभी से. बहुत सारे आदमी भेजे हुवे हैं मैने जंगल में भैरव को ढूँडने के लिए...और तू उसे अभी से मरा मान रही है"

"भैया इसकी अकल भी ठीकाने लगानी बाकी है...भिका के साथ मिल कर इसी ने भगाया था उस लौंडिया को यहा से"

"इसका जो करना है करो...मार कर गाड़ दो जिंदा ज़मीन में पर इसे मेरी आँखो से दूर करदो" भवानी ने कहा.

जीवन ने शकुंतला की बाह पकड़ी और बोला, "चल तुझे तमीज़ सीखाता हूँ"

"चाचा जी छोड़ दो मेरा हाथ...मैं अब यहा नही रुकूंगी"

"तुझे यहा रखेगा भी कौन अब...चल तेरी नितंब की गर्मी उतारता हूँ...बहुत बोलती है." जीवन ने कहा.

"जीवन इसे हवेली से दूर ले जाओ...यहा कुछ मत करना"

"पिता जी ये आप क्या कह रहे हैं...रोकिए चाचा जी को"

"बहुत हो लिया तेरा नाटक...जीवन ले जाओ इसे यहा से."

"आप चिंता मत करो भैया...इसे तो मैं वो सबक सिखाऊंगा की याद रखेगी"

जीवन शकुंतला को घसीट कर हवेली के पीछे के खेतो में ले आया. उसने उसे ज़मीन पर पटक दिया. शकुंतला का पेट ज़मीन से टकराया तो वो कराह उठी. जीवन शकुंतला के

उपर लेट गया.

"इतनी जल्दी नही मारूँगा मैं तुझे...पहले तेरी नितंब मारूँगा फिर तुझे मारूँगा....बोल अब कैसी रही."

"तुम्हे इसकी सज़ा मिलेगी"

"कौन देगा मुझे सज़ा...तुम दोगि...हे..हे..पहले अपनी नितंब तो बचा लो ह.." जीवन ने शकुंतला की साड़ी नीचे से उपर सरका दी और उसके निर्वस्त्र नितंबो को मसलने लगा.

"दमयंती की तो नही मिल पाई....तेरी नितंब भी दमयंती की नितंब से कम सुंदर नही"

"त..त..तुम अपनी भतीजी को ऐसी नज़रो से देखते थे...कमीने कही के."

"मैं तो तुझे भी ऐसी नज़रो से ही देखता था...पर भैरव के कारण चुप था वरना कब का ठोक देता तुझे."

"ये बाते पिता जी को पता चल गयी तो तुम्हे जींदा नही छोड़ेंगे वो."

"कौन बताएगा भैया को....तू तो ये नितंब मरवाने के बाद खुद भी मरने जा रही है." जीवन ने अपना लिंग निकाल कर शकुंतला के नितंब पर रख दिया. शकुंतला डर से काँप उठी.

"ऐसा अनर्थ मत करो...तुम्हे भगवान भी माफ़ नही करेगा"

"ऐसे अनर्थ तो मैं रोज कर लेता हूँ और रोज माफी भी मिल जाती है...हे...हे...तुम मेरी चिंता मत करो अपनी नितंब की चिंता करो" जीवन अपने लिंग को शकुंतला के अंदर डालने ही लगता है कि उसके सर पर वार होता है और वो खून से लठ..पथ एक तरफ गिर जाता है.

"कमीने तू फिर से मेरे रास्ते में टाँग अड़ा रहा है...मैं तुझे जींदा नही छोडूँगा" जीवन करहाते हुए कहता है

भिका ने शकुंतला की साड़ी नीचे की और उसे ज़मीन से उठाया.

"आज तो हद ही कर दी तुमने...मुझे खुशी है कि मैं अब तुम लोगो के लिए काम नही करता." भिका जीवन की और थूकते हुए कहता है

"भिका मार दो इसे...मेरी खातिर मार दो इसे." शकुंतला ने कहा.

"जैसा आपका हूकम." भिका ने कहा और जीवन की तरफ बढ़ने लगा.

"मुझसे दूर रहो तुम....वरना अच्छा नही होगा" जीवन गिड़गिदाया.

"छोड़ना मत इस कमिने को भिका मार दो इसे." शकुंतला ने चिल्लाकर कहा.

भिका ने एक बहुत भारी पत्थर उठाया और जीवन के सर पर दे मारा. तुरंत ही उसकी मौत हो गयी.

"तुम यहा कैसे आए..भिका" शकुंतला ने पूछा. बोलते बोलते उसकी आखेँ भर आई और उसे पता भी नही चला की वो कब भिका के सीने से लग गयी. भिका एक मूर्ति की तरह खड़ा रहा और शकुंतला सुबक्ती रही.

"मेमसाब सम्भालो खुद को" भिका ने कहा. शकुंतला फ़ौरन भिका से अलग हो गयी.

" मैं भावुक हो गयी थी....पर आज तुम ना आते तो अनर्थ हो जाता."

"सब स्वामी जी की कृपा है...उन्होने ही आपकी आवाज़ सुनी थी"

"कहा है स्वामी जी."

"उस पेड़ के पीछे खड़े हैं" शकुंतला भाग कर वहां पहुचँ गयी.

"स्वामी जी मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है?"

"सब भगवान की माया है...हम तो बस खिलोने हैं"

"स्वामी जी मुझे अपने मायके जाना है" शकुंतला ने कहा.

"कैसे जाओगी?" ब्रजभूषण ने पूछा. "चली जाऊंगी जैसे भी पर अब यहा नही रुकूंगी"

"देखो अभी गाँव में माहॉल खराब है अभी यात्रा करना ठीक नही...कुछ अजीब सी बाते हो रही हैं यहा. अभी अभी पता चला है कि कुछ दिन पहले अगले गाँव में भी किसी जानवर ने एक पति-पत्नी को चीर-चीर कर खा लिया. ऐसे माहॉल में कही भी जाना ठीक नही होगा."

"पर मैं वापिस हवेली नही जा सकती" शकुंतला ने कहा.

"आप मेरे घर चलिए...वहां आराम से रहिए...मैं तो वैसे भी ज़्यादा वक्त स्वामी जी के साथ ही रहूँगा."

"हा ँये ठीक रहेगा तुम भिका के घर में रुक जाओ...माहॉल ठीक होने पर चली जाना."

शकुंतला को अपने घर ले आता है. "मेमसाब आप यहा आराम से रहो."

"भिका मैं तुम्हारा शुक्रिया कैसे करू समझ नही आता...अच्छा कैसी है वो लड़की जिसे हमने हवेली से भगाया था."

"कविता ठीक है...चली गयी वो अपने ससुराल. उसका पति पहले बहुत बुरा भला बोल रहा था लेकिन स्वामीजी के समझाने पर वो उसे ले गया."

"तुम प्यार करते थे कविता से हा.."

"हां बहुत पुरानी बात हो गयी मेमसाब...आपको किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो बोल दो मैं ला दूँगा...बाकी यहा खाने पीने का सब समान है...आपकी हवेली जैसा तो नही है बस काम चलाने भर को है"

"ये सब उस मनहूस हवेली से अच्छा है...मैं यहा खुश हूँ तुम चिंता मत करो."

"ठीक है मेमसाब मैं निकलता हूँ मुझे वापिस स्वामी जी के पास जाना है." भिका ने कहा.

तभी शकुंतला की नजर भिका के हाथ पर जाती है, शकुंतला को भिका के हाथ में उसका पीतल का कड़ा दिखाई नहीं देता

" भिका तुम्हारा पीतल का कड़ा कहा गया, दिखाई नहीं दे रहा " धीमी आवाज में शकुंतला उससे पूछ लेती है

" कौनसा कड़ा मेमसाब ? में कुछ समझा नहीं " भिका उत्सुकता से पूछता है जैसे उसे पीतल के कड़े के बारे में कुछ पता ही नहीं

" तुम्हारे हाथ का कड़ा भिका !जो तुम अपने हाथ में पहनते थे " शकुंतला ने फिरसे पूछा

" अच्छा वो ! मेमसाब लगता है जीवन ठाकुर के साथ हाथापाई में गिर गया.या फिर शायद स्वामीजी के साथ घूमते हुए कई गिर गया होगा.इतनी भागादौड़ी में उसके ऊपर ध्यान ही नहीं गया मेमसाब" भिका अपने हाथ को देखकर कहता है

" कोई बात नहीं भिका, जब में मायके जाऊंगी तो तुम्हारे लिए चांदी का एक नया कड़ा बनवाकर भेजूंगी.तुमने मेरी जान और इज्जत दोनों बचाई ही.इसका एहसान तो में नहीं चुका सकती लेकिन फिर भी तुम्हारे लिए कड़ा बनाकर मुझे खुशी होगी.मेरे मन का बोझ थोड़ा कम हो जाएगा" शकुंतला ने मीठी आवाज में कहा

" जी शुक्रिया मेमसाब ! आपने इस गरीब के बारे में इतना सोचा" भिका शकुंतला के सामने हाथ जोड़ते हुए कहता है

"अब आप आराम कीजिए मेमसाब ! में भी स्वामी जी के पास जाता हूं. शायद उन्हें मेरी जरूरत पड़े"

"ठीक है भिका , तुम जाओ " शकुंतला कहती है

भिका हाथ में लकड़ी लिए वहां से चला जाता है! शकुंतला दूर जाते हुए भिका कि काया को देखती ही रह जाती है. मन ही मन में सोचती हुए की इतना गरीब और गवार मर्द भी कितना शालीन और सूसंस्कारित है.एक तरफ भिका और दूसरी तरफ उसका पति भैरव ! अमीर और पढ़ालिखा पिशाच.अच्छा हुआ उस पिशाच से मुक्ति मिल गई.यही सोचते हुए शकुंतला वहा पड़ी खटिया पर गिर जाती है और उसकी आंख लग जाती है .

भाग - 11

“कुछ तो हुवा है गाँव में सब लोग सहमे सहमे से घूम रहे हैं, ये भुवन कहा रह गया…वो आए तो कुछ पता चले” केशव ने कहा.

“आ जाएगा तुम परेशान क्यों हो रहे हो.” दमयंती ने कहा. तभी उन्हे दरवाजे का ताला खुलने की आहट सुनाई दी.

“लो आ गया भुवन.” दमयंती ने कहा.

दरवाजा खोल कर अंदर आ गया और दरवाजा पीछे से बंद कर दिया.

“क्या हो रहा है गाँव में सब लोग इतने परेशान से क्यों घूम रहे हैं.” केशव ने पूछा.

“बस पूछो मत…कल रात वैसा ही हादसा हुवा है जैसे हमने जंगल में देखा था.” भुवन ने कहा.

“मुझे लग ही रहा था…कल रात मैने उसी दरिंदे को देखा था.” केशव ने कहा.

“ब्रजभूषण लौट आया है केशव”

“क्या…ब्रजभूषण आ गया..कहा था वो इतने दिन?”

“वो तो पता नही पर स्वामी बन कर लौटा है वो…पर बहुत बुरा हुवा उसके साथ”

“क्या हुवा?” केशव ने पूछा.

“कल रात ब्रजभूषण के साथ जो लोग आए थे वही मारे गये…बहुत भयानक मौत मिली है उनको”

भुवन गाँव की सारी बाते केशव को बताता है. इस बार वो केशव के घर की सारी बाते उसे बता देता है. वो दमयंती के भाई भैरव के बारे में भी सब बता देता है. वो ये भी बता देता है कि दमयंती की भाभी हवेली छोड़ कर भिका के घर में आ गयी है. केशव अपने घर की खबर सुन कर काँप उठता है.

“इतना कुछ हो गया मेरे पीछे…अच्छा हो कि वो भैरव कुत्ते की मौत मारे.”

“दमयंती ने केशव के कंधे पर हाथ रखा और बोली, “ऐसा मत कहो मेरा भाई है वो"

“उसने मेरी बहन को गाँव में नंगा घुमाया और उसका बलात्कार किया…वो किसी का भाई नही हो सकता…मेरा बस चले तो मैं खुद उसे जान से मार दू.” केशव ने कहा. दमयंती कुछ और नही बोल पाई.

“मुझे घर जाना होगा भुवन…क्या कुछ हो सकता है.”

“रात को ही मुमकिन हो पाएगा ये. मैं दिन ढलने पर आऊंगा फिर चलते हैं तुम्हारे घर.” भुवन ने कहा.

रात ढाल चुकी है और गाँव में ऐसा सन्नाटा हो गया है जैसी की कब्रिस्तान में होता है. दूर-दूर तक कोई भी दीखाई नही देता. बस दो लोग ऐसे हैं जो इस वक्त गाँव में घूम रहे हैं.

“इतना सन्नाटा मैने गाँव में कभी नही देखा स्वामी जी.” भिका ने कहा.

“लोग बहुत डर गये हैं…डरना लाजमी भी है. ऐसा मंज़र मैने भी कभी नही देखा.” ब्रजभूषण ने कहा.

“आपको क्या लगता है…गाँव में दुबारा आएगी वो चीज़.” भिका ने कहा. “

मूह लग चुका है उसके…कुछ भी हो सकता है” ब्रजभूषण ने कहा.

भिका के हाथ में तलवार थी और ब्रजभूषण के पास विश्वास दोनो बाते करते हुवे गाँव में घूम रहे थे.अचानक उन्हे दूर कोई साया दीखाई दिया.

“स्वामी जी वो क्या है.” भिका ने हाथ में तलवार तान ली.

“हे कौन हो तुम?” ब्रजभूषण ने पीछे से आवाज़ दी. वो साया उनकी आवाज़ सुन कर भागने लगा.

“चलो पकड़ते हैं इसे” ब्रजभूषण ने कहा.

भिका और ब्रजभूषण उसके पीछे भागे. पर वो साया चकमा दे कर कही गुम हो गया.

“तुम इधर से जाओ मैं उधर देखता हूँ” ब्रजभूषण ने भिका से कहा.

“ठीक है स्वामी जी.” भिका ने कहा.

तभी एक बहुत भयानक चिंख पूरे गाँव में गूँज उठी.“ये तो वैसी ही चिंख है जैसी खेतो में गूँज रही थी...इसका मतलब वो भयानक चीज़ आस पास ही है” ब्रजभूषण ने भागते हुवे सोचा. भिका भी चिंख सुन कर रुक गया. उसके हाथ पाँव काँपने लगे.

“स्वामी जी कहा गये... मैं क्या करूँ अब” किस्मत से वो अपने घर के नज़दीक था. उसने फ़ौरन अपने घर की तरफ कदम बढ़ा दिए. उसने घर का दरवाजा खड़काया. अंदर शकुंतला ने भी वो चिंख सुनी थी और वो थर थर काँप रही थी.

“क..कौन है?” शकुंतला ने कहा.

“मेमसाब मैं हूँ भिका दरवाजा खोलिए.” भिका ने कहा.

शकुंतला ने फ़ौरन दरवाजा खोल दिया. भिका ने अंदर आ कर दरवाजे की कुण्डी लगा दी. शकुंतला इतनी डरी हुई थी कि वो भिका से चिपक गयी

“अच्छा हुवा जो तुम आ गये मुझे यहा अकेले बहुत डर लग रहा था. वो चिंख सुनि तुमने.” शकुंतला ने कहा.

“हां सुनि तभी तो यहा आया हूँ...मैं बाहर स्वामी जी को अकेला छोड़ आया क्या करूँ मैं मेरे हाथ पाँव काँप रहे हैं.” भिका ने कहा.

“चिंता मत करो स्वामी जी खुद को संभाल लेंगे.” शकुंतला ने कहा.

भिका को शकुंतला के उभार अपनी छाती पर महसूस हो रहे थे. शकुंतला की गरम सासेँ उसके सीने से टकरा रही थी. भिका खुद को असहज महसूस कर रहा था. पर वो शकुंतला को हटने को नही बोल सका क्योंकि उसे पता था कि वो डर के कारण उस से चिपकी है. पर काम की भावना किसी भी वक्त जागृत हो सकती है. भिका का लिंग ना चाहते हुवे भी तन गया. शकुंतला को अपनी योनि के ठीक उपर भिका का लिंग महसूस हुवा. पहले तो उसे लगा कि शायद वो कुछ और है. लेकिन जल्दी ही वो समझ गयी कि ये कुछ और नही भिका का लिंग ही है. ये महसूस होते ही शकुंतला फ़ौरन भिका से अलग हो गयी.

“माफ़ कीजिएगा मेमसाब...मुझे ग़लत मत समझना...वो बस यू ही.” भिका गिड़गिदाया.

“कोई बात नही...ग़लती मेरी ही थी.” शकुंतला ने कहा.

ब्रजभूषण उस साए को अपनी ओर आते देख चुप गया. वो साया छुपाते छुपाते चल रहा था. जैसे ही वो साया ब्रजभूषण के आगे से गुजरा ब्रजभूषण ने उसे दबोच लिया. उस साए ने काला कंम्बल ओढ़ रखा था जिसे ब्रजभूषण ने एक झटके में खींच लिया.

"ब्रजभूषण तुम…तो क्या तुम मेरे पीछे भाग रहे थे."

"केशव तुम? ये सब क्या है भाई" केशव ब्रजभूषण को सारी कहानी सुनाता है.

"ह्म्म तो दमयंती भुवन के घर पर है." ब्रजभूषण ने कहा

"हां…मैं बस घर जा रहा था और तुम लोग पीछे पड़ गये…उपर से वो चिंख…मेरी तो हालत खराब हो गयी. मैं तो वापिस जाने वाला था लेकिन फिर सविता का चेहरा आँखो में घूमने लगा. मुझे लगा मुझे हर हाल में घर जाना चाहिए." केशव ने कहा.

"ठीक है मैं तुम्हे घर छोड़ देता हूँ आओ." ब्रजभूषण ने कहा.

"ठीक है चलो."

"तो तुम लोगो ने उस दरिंदे को देखा है…उसके बारे में विस्तार से बताओ" ब्रजभूषण ने कहा.

"मुझे तो वो कोई पिशाच लगता है" केशव ने कहा.

"पिशाच…नही नही ऐसा नही हो सकता.?" ब्रजभूषण ने कहा.

"क्यों ऐसा क्यों बोल रहे हो?" केशव ने पूछा.

"बरसो से कही किसी ने किसी पिशाच को नही देखा…अचानक यहा गाँव में वो कहा से आ गया." ब्रजभूषण ने कहा.

"पर मुझे तो वो पिशाच ही लगता है…इंसान को तो पिशाच ही खाते हैं ना." केशव ने कहा.

"वो जो भी है आज फिर गाँव में ही है…वो चिंख उसके यहा होने की चेतावनी है." केशव का घर आ गया. सविता केशव को देखते ही उस से लिपट गयी.

"कहा चले गये थे भैया तुम?" सविता ने आँखो में आँसू भर के पूछा.

"सब बताऊंगा पहले पिता जी से तो मिल लूँ" केशव ने कहा.

केशव ने अपने पिता के पाँव छुवे. उन्होने भी उसे गले लगा लिया. केशव ने सारी बात विस्तार से बताई.

“क्या तुम्हे पता है हम पर क्या बीती” सविता ने कहा. “हां भुवन ने सब बताया…उस भैरव को कुत्ते की मौत मिलेगी.” केशव ने कहा.

“मैं चलता हूँ” ब्रजभूषण ने कहा.

“तुम इतनी रात को कहा जा रहे हो यही रुक जाओ ना” सविता ने कहा.

“मेरा जाना ज़रूरी है” ब्रजभूषण ने कहा और वहां से निकल गया.

“ब्रजभूषण बहुत बदल गया है भैया.” सविता ने कहा.

“हां पता चला मुझे स्वामी बन गया है वो” केशव ने कहा.

“ये भिका कहा गया…उसके घर जा कर देखता हूँ क्या पता वहां हो.” ब्रजभूषण ने सोचा ब्रजभूषण भिका के घर पहुँच गया और उसका दरवाजा खड़काया.

“स्वामी जी आप माफ़ कीजिए आप को बाहर छोड़ कर मैं यहा आ गया…मैं वो चिंख सुन कर डर गया था स्वामी जी” भिका ने कहा.

“अगर ऐसा है तो तुम यही रूको…मैं अभी मंदिर जा रहा हूँ अपने पिता जी के पास. उनसे पिशाच के बारे में कुछ पूछना है.”

“प..प…पिशाच वो तो सच में भूतो से ख़तरनाक होते हैं” भिका ने कहा.

“अभी बस ये अंदाज़ा भर है…तुम अभी यही रूको बाद में मिलते हैं…मैं पहले अपने पिता जी से बात कर लू..उन्हे पिशाच के बारे में बहुत जानकारी है.”

“नही स्वामी जी मैं आपके साथ चलता हू.ँ” ब्रजभूषण ने शकुंतला की तरफ देखा. शकुंतला के चेहरे पर डर के भाव साफ दीखाई दे रहे थे.

“नही तुम यही रूको…इनको अकेले डर लगेगा.”

“पर आप अकेले…” भिका ने कहा.

“मैं अकेला नही हू.ँ…भगवान मेरे साथ हैं…तुम यही रूको.” ब्रजभूषण ने कहा.

ब्रजभूषण को भिका की आँखो का डर भी साफ दीखाई दे रहा था. वो नही चाहता था कि भिका को इस वक्त साथ ले जाया जाए. ब्रजभूषण वहां से चल दिया.“पिता जी की तबीयत खराब है पता नही कुछ बता पाएगेँ या नही.” ब्रजभूषण रात के सन्नाटे में मंदिर की ओर बढ़ रहा था. हर तरफ ख़ौफ़ का मंज़र महसूस हो रहा था. ब्रजभूषण अपने पिता गिरधारी पंडित के चरनो में जा कर बैठ जाता है.

“पिता जी आज मुझे आपकी मदद की सख़्त ज़रूरत है” ब्रजभूषण ने कहा.

“क्या हुवा…मुझे तो लगता था अब मेरा बेटा स्वामी बन कर मुझे भूल ही जाएगा. स्वामी को किस बारे में मदद चाहिए.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“पिता जी गावँ में फैले ख़ौफ़ का कारण क्या है?”

“मुझे कुछ अंदाज़ा नही बेटे. तबीयत खराब रहती है मेरी मैं इस मंदिर से बाहर आता जाता ही नही.”

“लेकिन फिर भी आपका खबर तो है ही कि गावँ में क्या हो रहा है.”

“हां लोग मुझे आकर बाते सुनाते हैं उसी से पता चलता है.”

“पिता जी क्या गाँव में फैले ख़ौफ़ का कारण कोई पिशाच हो सकता है.”

“क्या पता हो भी सकता है और नही भी.”

“मुझे पिशाच के बारे में कुछ जानकारी दे दो पिता जी…आख़िर होता क्या है ये पिशाच.”

“बेटे पिशाच देव योनि से होते हैं और माँस खाना पसंद करते हैं.कहा जाता है कि वो दक्ष के पोते हैं. काला शरीर होता है और आँखे लाल होती हैं.”

“ह्म्म इसका मतलब उन्हे उनके शरीर से पहचाना जा सकता है?” ब्रजभूषण ने कहा.

“पिशाच कोई भी रूप ले सकते हैं और तुम्हारी आँखो के सामने गायब भी हो सकते हैं. वो अपने वास्तविक रूप में कम ही मिलेंगे तुम्हे.”

“ये तो नामुमकिन सी बात लगती है पिता जी.”

“पता नही…पर पिशाच के बारे में जो मान्यता है मैने तुम्हे बता दी.”

“इसका मतलब पिशाच भूतो से भी ज़्यादा ख़तरनाक हैं.” ब्रजभूषण ने पूछा.

“भूतो की अलग सत्ता है और पिशाच की अलग” गिरधारी पंडित ने कहा.

“ह्म्म…मैं चलता हूँ पिता जी लगता है आज फिर वो गाँव में ही घूम रहा है.” ब्रजभूषण ने कहा.

“रूको बेटा…तुम उसका कुछ नही बिगाड़ सकते.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“कोई बात नही पिता जी पर मैं कोशिश तो करूँगा ही” ब्रजभूषण ने चलते हुवे पीछे मूड कर कहा.

“तुम समझ नही रहे हो अगर ये पिशाच ही है तो तुम्हारी कोई कोशिश काम नही करेगी” गिरधारी पंडित ने ज़ोर से कहा. पर ब्रजभूषण जा चुका था.

“एक बार दीख जाए ये… फिर ही पता चलेगा कि ये पिशाच है या कुछ और” ब्रजभूषण ने खुद से कहा. ब्रजभूषण गाँव की अंधेरी गलियों में अकेला इधर उधर भटकने लगा…पर उसे कुछ नज़र नही आया.

“मेमासाब आप सो जाओ डरो मत मैं यही हूँ.” भिका ने कहा

“अजीब सा सन्नाटा छाया है बाहर…जैसे की तूफान से पहले का सन्नाटा हो” शकुंतला ने कहा.

“क्या आप पिशाच के बारे में कुछ जानती हैं.”

“नही मुझसे ऐसी बात मत करो मुझे वैसे ही डर लग रहा है.”

“माफ़ करना मेमसाब वैसे ही पूछ रहा था.” भिका ने कहा.

“आप मुझसे उस बात के लिए नफ़रत तो नही करेंगी” भिका ने पूछा.

“कौन सी बात” शकुंतला का ध्यान कही और था इसलिए वो समझ नही पाई.

“कोई भी औरत मेरे इतने नज़दीक नही आई आज तक मैं भावनाओ में बह गया था मेमसाब.” भिका ने कहा.

“कोई बात नही भिका मैं समझ रही हूँ तुम बहुत अच्छे इंसान हो मैं जानती हूँ.” शकुंतला ने कहा.

“मेमसाब आपका इस ग़रीब की कुटिया में मन नही लग रहा होगा”

“नही ये बहुत अच्छी जगह है…मनहूस हवेली से ज़्यादा सकुन है यहा.” अचानक बाहर कुछ हलचल होती है और भिका खिड़की पर खड़े हो कर देखता है.

“क्या है?”

“दीखाई तो कुछ नही दे रहा लेकिन ऐसा लगा था कि कोई बहुत तेज़ी से भागा है यहा से.” शकुंतला भी उठ कर खिड़की पर आ गयी.

“शायद कुत्ता या बिल्ली होगी” शकुंतला ने कहा.

लेकिन तभी खौफनाक चिंख गूँज उठी. शकुंतला इतनी घबरा गयी कि फिर से भिका से चिपक गयी.

“आधे से ज़्यादा लोग तो ये चिंख सुन कर ही मर जाएगेँ…कैसी चेतावनी है ये भूतो की.” भिका ने कहा.

“मुझे बहुत डर लग रहा है भिका मैं मरना नही चाहती.” शकुंतला ने कहा.

“डर तो मुझे भी बहुत लग रहा है क्या करें कुछ समझ नही आता. अब तो इस समस्या का समाधान स्वामी जी ही करेंगे.”

ना चाहते हुवे भी भिका का लिंग फिर से तन ही गया और शकुंतला को इस बार बहुत अच्छे से महसूस हुवा. पर शकुंतला इतनी डरी और सहमी थी कि भिका से चीपकि रही. भिका अपनी जींदगी में अभी तक कुँवारा था और पहली बार किसी औरत को इतने नज़दीक पाकर भावुक हो रहा था. उसके डर पर अंजाने में ही हवस की आग हावी हो रही थी. कब भिका के हाथ शकुंतला के नितंबो पर टिक गये उसे पता भी नही चला. उसने शकुंतला के नितंबो को दोनो हाथो से अपनी और खींचा. नितंबो पर पड़े दबाव के कारण उसका लिंग शकुंतला की योनि पर बुरी तरह से सटॅ गया.

''भिका नही....'' शकुंतला ने कहा और भिका से अलग हो गयी.

''मेमसाब मैं जा रहा हू ँमुझे यहा नही रुकना चाहिए.''

''नही रूको बाहर मत जाओ...मैं ही पागल हू ँजो बार बार तुमसे चिपक जाती हू.ँ कही तुम मुझे ग़लत तो नही समझ रहे.''

''नही मेमसाब आप ग़लत नही हो सकती मैं ही पापी हू.ँ'' शकुंतला भिका के पास आई और बोली,

''क्या मैं तुम्हे अच्छी लगती हू.ँ''

''नही मेमसाब....मेरा मतलब हां मेमसाब आप बहुत अच्छी हैं...पर ना जाने आज मुझे क्या हो रहा है.'' भिका ने कहा.

ब्रजभूषण पूरे गाँव में हर तरफ घूमता रहा पर उसे कुछ दीखाई नही दिया. पर रह रह कर गाँव में चिंख ज़रूर गूँज रही थी.

"ये चिंख तो गूँज रही है पर दीखाई कोई नही दे रहा अगर वो यहा है तो दीखाई क्यों नही देता. क्या सच में ये पिशाच ही है ? या कुछ और"

ब्रजभूषण ये सब सोचते हुवे आगे बढ़ा जा रहा था कि उसे किसी के रोने की आवाज़ सुनाई दी. ब्रजभूषण ने चारो तरफ देखा पर कोई नही दीखा.

"ये मारा जाएगा कोई इसे बचा लो...नही बचा लो इसे." "ये आवाज़ कहा से आ रही है" ब्रजभूषण हैरत में पड़ गया.

ब्रजभूषण आवाज़ की दिशा का अंदाज़ा लगा कर एक तरफ चल पड़ा. पीपल के एक पेड़ के नीचे एक आदमी बैठा रो रहा था.

"इसे मरने से बचा लो" "हे कौन हो तुम और रो क्यों रहे हो...गाँव के सब लोग तो घरो में हैं तुम इतनी रात को यहा क्या कर रहे हो" ब्रजभूषण ने कई सवाल किए.

"मुझे बहुत दुख है...कोई बचा लो इसे." वो आदमी रोते हुवे बोला.

"कोई मुसीबत में है क्या बताओ मुझे मैं उसकी मदद करूँगा." वो आदमी ज़ोर ज़ोर से रोने लगा और बोला,

"कोई तो बचा लो इसे."

"किसको बचाने को बोल रहे हो...मुझे बताओ मैं तुम्हारी मदद करूँगा" ब्रजभूषण ने कहा.

"तुम्हारी जींदगी ख़तरे में है...तुम्हारी मदद के लिए किसी को बुला रहा हूँ" उस आदमी ने कहा.

"क्या बकवास कर रहे हो" ब्रजभूषण ने कहा.

"कुछ ऐसा ही तुम्हारे साथियो ने कहा था कल...मैने उन्हे कहा था कि तुम लोगो की जींदगी ख़तरे में है किसी को बुला लो पर वो लोग मेरी बात पर हसणे लगे और कुछ ही देर में मारे गये" कह कर वो आदमी फिर से रोने लगा.

"क्या? तुम उस वक्त वहां थे."

"हां मैने बहुत आवाज़ लगाई मदद को पर कोई नही आया."

"मेरे लिए तुम्हे रोने की ज़रूरत नही है...तुम अपनी चिंता करो"

"हा..हा..हा..बहुत खूब तुम्हे खाने में बहुत मज़ा आएगा मुझे बहादुर लोगो का माँस खाने अच्छा लगता है मुझे."

"तो क्या तुम पिशाच हो?"

"हा..हा..हा...पिशाच से उसके बारे में नही पूछते बेवकूफ़ अपनी चिंता करो...तुम्हे मारने में बहुत मज़ा आएगा."

"हा..हा..हा..मुझे भी तुम्हे मारने में मज़ा आएगा. पिशाच को मारना अच्छा लगेगा मुझे." ब्रजभूषण भी हसणे लगा.

ब्रजभूषण की बात सुनते ही वो आदमी खड़ा हो गया और ब्रजभूषण के उपर छल्लांग लगा दी. पर ब्रजभूषण वहां से हट गया और अपनी मुथि बंद करके कुछ मन्त्र बोले और मुथि खोल कर कोई भबूत जैसी चीज़ उसकी आँख में डाल दी. पिशाच आँख मसलने लगा और इधर उधर हाथ मार कर वहां से गायब हो गया.

"कहा गये पिशाच मिया...आओ थोड़ा और खेलते हैं...मुझे भी अब रोना आ रहा है कोई तो तुम्हे बचा ले."

पिशाच आँख मलता हुवा जंगल में अपने ठिकाने पर पहुचँ गया. "कौन है ये लौंडा जिसने मेरी ऐसी हालत कर दी...इस लोंडे को तो मैं तडपा तडपा कर मारूँगा...इसके पूर खानदान को निगल जाऊंगा हे...हे..हे..हा..हा..हा" पिशाच ज़ोर ज़ोर से हसणे लगा.

उसकी आवाज़ सुन कर जानवर भी इधर उधर भागने लगे. पिशाच एक हिरण पर झपड़ पड़ा और उसे चीर कर खा गया.

"आदमी के माँस में जो बात है वो इन जानवरो में नही." पिशाच ने कहा. इधर ब्रजभूषण हर तरफ पिशाच को धुंडता रहा पर वो उसे कही नही दीखा.

भाग - 12

भिका शकुंतला के पैरो में गिर गया और बोला, "मेमसाब मुझे माफ़ कीजिए आप जानती हैं कि मैं ग़लत नही हूँ."

"उठ जाओ भिका मैं जानती हूँ तुम कैसे इंसान हो...उठो...तुम्हे देखा है मैने हवेली में...तुम ग़लत नही हो सकते...शायद शरीर की प्यास ही ऐसी होती है"

"मेमसाब मुझे नही पता क्या हुवा शायद...शायद..." भिका बोलते बोलते रुक गया.

"हां-हां बोलो बात क्या है?"

"शायद आपको खेत में नग्न अवस्था में देख कर ऐसा हुवा है...वरना ऐसा मुमकिन नही था."

"क्या तुम मेरी मदद करने की बजाए मेरा शरीर देख रहे थे?"

"नही मेमसाब...पर नज़र तो चली ही गयी थी...वो मेरे बस में नही थी...मैं झूठ नही बोलना चाहता आपसे"

"ह्म्म तुम दिल के सच्चे हो भिका...सब सच बोल रहे हो...मुझे ये बात अच्छी लगी."

"मेमसाब मैने कुछ ग़लत तो नही बोल दिया"

"तुमने सच बोला है. अब वो ग़लत है या सही इस से क्या फरक पड़ता है."

"मेमसाब अब आप सो जाओ"

"तुम्हारे होते हुवे सोना ठीक नही अब यहा."

"मैं चला जाता हूँ मेमसाब आप चिंता मत करो...वैसे भी मुझे लगता है कि मुझे स्वामी जी के पास जाना चाहिए अब"

"अरे मज़ाक कर रही हूँ भोन्दु...चल अपना बिस्तर लगा ले"

"मेमसाब आप सच में बहुत अच्छी हो."

"ठीक है ठीक है...मैं सो रही हूँ अब...बाहर काफ़ी शांति है अब. बहुत देर से चिंख भी नही आई...शायद वो दरिन्दा अब यहा नही है"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है." भिका ने कहा. दोनो अपने अपने बिस्तर पर लेट गये.

"अच्छा भिका तुमने अब तक शादी क्यों नही की."

"मेमसाब कविता के सीवा किसी से शादी करने का मन ही नही हुवा."

"कविता जैसी ही लड़की चाहिए तुम्हे हा."

"आपके जैसी भी मुझे अच्छी लगेगी."

"तो मैं तुम्हे अच्छी लगती हूँ."

"आप किस को अच्छी नही लगेंगी मेमसाब...आप जैसा कोई मिल जाए तो किश्मत बन जाए." भिका थोड़ा थोडा शकुंतला से खुलने लगा था.

"भिका तुम भी बहुत अच्छे हो...तुमने अपनी जान पर खेल कर कविता को बचाया और मुझे भी बचाया."

"अगर आप उस दिन हिम्मत ना देती तो शायद मैं कभी कविता की मदद नही कर पाता. रही बात आपको बचाने की तो वो भी आपके कारण ही मुमकिन हुवा. उस दिन की हिम्मत दुबारा काम आई."

"क्या मैं सो जाऊ अब?" शकुंतला ने कहा.

"जैसी आपकी इच्छा मेमसाब मुझे तो नींद नही आएगी"

"मुझे बहुत नींद आ रही है कई दिनो से उन भूतो के कारण हवेली में ठीक से नींद नही आई"

"आप बेफिकर हो कर सो जाओ मेमसाब मैं हू ना."

"तुम्हारे होने का मुझे बहुत सुकून है भिका...बहुत सुकून है"

"काश मेमसाब जैसी ही कोई लड़की मेरी जींदगी में आ जाए" भिका ने अपने मन में सोचा. रात बीत जाती है.

केशव सुबह सवेरे ही दमयंती के पास वापिस आ जाता है. इधर ठाकुर भवानी प्रताप सिंग की हालत बिगड़ रही है. पहले भैरव फिर जीवन...उसे बहुत गहरा सदमा लगा है. वैद का कहना है कि शायद वो कुछ पल के ही महमान हैं.

भिका सुबह होते ही घर से निकलने की तैयारी कर लेता है. "मुझे स्वामी जी की खोज खबर लेनी चाहिए. " वो शकुंतला को आवाज़ देता है ताकि वो उठ कर कुण्डी बंद कर ले. पर शकुंतला गहरी नींद में होती है. भिका शकुंतला के कंधे पर हाथ रख कर उसे हल्का सा हिलाता है.

"क..क..कौन है?"

"मैं हूँ मेमसाब भिका"

"क्या बात है?"

"आप उठ कर कुण्डी लगा लीजिए मैं बाहर जा रहा हूँ. आपको नहाना धोना हो तो बाहर इंतेज़ाम है." भिका ने घर के बाहर एक छोटा सा कमरा बना रखा था. जिस पर एक परदा टाँग रखा था.

"पता है मुझे"

"ठीक है फिर आप कुण्डी लगा लीजिए." भिका चल देता है.

"कहा मिलेंगे स्वामी जी" भिका सोच रहा है. वो मंदिर की तरफ चल देता है. ब्रजभूषण भिका को रास्ते में ही मिल जाता है.

"कहा जा रहे हो भिका सुबह सुबह" "आपके पास ही आ रहा था स्वामी जी...क्या कुछ पता चला आपको पंडित जी से."

"हां पता चला...और मेरी कल रात भिड़ंत भी हो गयी पिशाच से."

"तो क्या...तो क्या वो पिशाच ही है."

"हां."

"हे भगवान." भिका की तो पिशाच का नाम सुन कर रूह काँप उठती है.

"डरो मत उसका कुछ ना कुछ किया जाएगा."

"क्या करेंगे आप."

"देखते हैं क्या हो सकता है...तुम घर पर ही रहो मेरी चिंता करने की ज़रूरत नही है"

"नही स्वामी जी...मुझे डर ज़रूर लग रहा है पर मैं आपका साथ नही छोड़ूँगा."

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी...मैं अभी घर जा रहा हूँ...नींद आ रही है बहुत. शायद वो पिशाच रात को ही आएगा. मैं थोड़ा सो लेता हूँ...कोई भी बात हो तो मुझे खबर करना."

"जी स्वामी जी...आप चिंता ना करें" भिका ने कहा.

ब्रजभूषण अपने घर की तरफ चल दिया. जब वो घर पहुँचा तो अपने घर के बाहर सविता को खड़े पाया.

"क्या कर रही हो तुम यहा?" ब्रजभूषण ने पूछा.

"तुम मुझसे नाराज़ हो ना." सविता ने प्यार से कहा.

"मैं किसी से नाराज़ नही हूँ...अभी जाओ मुझे सोना है...काफ़ी थक गया हूँ."

"क्या मुझसे बिलकुल भी बात नही करोगे...प्यार करने वाले को इतना नही सताते"

"तुम्हारा प्यार मेरे लिए ज़हर बन गया है...कृपा करके मुझे अकेला छोड़ दो"

"मैं तुमसे आखरी बार ही मिलने आई हूँ...आज के बाद तुम्हे परेशान नही करूँगी." सविता की आँखे भर आई.

"देखो तुम समझने की कोशिश ही नही कर रही...मैं अब वो ब्रजभूषण नही हूँ."

"नही मैं अब समझ चुकी हूँ...अपना ख्याल रखना." सविता ने अपनी आँखो के आसूँ पोंछते हुवे कहा.

"तुम अभी भी नही समझी चली जाओ यहा से...मेरे उपर इन आसुँओ का कोई ज़ोर नही है."

"हां तुम स्वामी जो बन गये हो...बहुत उपर उठ गये हो तुम...मैं तो वही की वही रह गयी...चलो छोड़ो मैं चलती हूँ."

"तुमसे बात करना बेकार है सविता...मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि मुझे तुमसे नफ़रत होने लगी है."

"स्वामी हो कर नफ़रत...लगता है तुम इतने भी उपर नही उठे हो...भटक चुके हो तुम."

"सविता" ब्रजभूषण बहुत तेज चिल्लाता है.

उसकी आवाज़ सुन कर काँप उठती है और एक कदम पीछे हट जाती है. "अब तुम अपनी हद पार कर रही हो...इतनी कड़वाहट मत भरो हमारे रिश्ते में कि हम फिर कभी एक दूसरे को याद भी ना करें."

"मुझसे जो भी ग़लतिया हुई है उसके लिए मुझे माफ़ करना" सविता कह कर चल दी.

ब्रजभूषण ने अपने घर का दरवाजा खोला. पर वो अंदर जाने की बजाय उछल कर पीछे आन गिरा. वो इतनी ज़ोर से गिरा कि सविता को भी उसके गिरने की आहट सुनाई दी.

"ब्रजभूषण!" सविता चिल्लाई.

ब्रजभूषण इतनी ज़ोर से ज़मीन पर गिरा था कि उसकी आँखो के आगे अंधेरा छाने लगा था. सविता की चिंख सुन कर आस पड़ोस के लोग भी बाहर आ गये. ब्रजभूषण के घर से पिशाच बाहर आया और ब्रजभूषण के सर के पास झुक कर बोला,

"खेलना चाहते थे तुम हा...आओ जंगल में जाकर खेलते हैं."

"हे कौन हो तुम." सविता चिल्लाई.

"पिशाच से उसके बारे में नही पूछते अपनी चिंता करते हैं......आज इस बहादुर लड़के का माँस खाऊंगा."

पिशाच की बाते सुनते ही सभी लोग वापिस अपने घरो में घुस्स गये.

"बुजदिल कही के सब भाग गये...मुझे ही कुछ करना होगा." सविता ने कहा. सविता ने एक पत्थर उठाया और निशाना लगा कर पिशाच के सर पर दे मारा.

"पत्थर मारती है रुक ज़रा पहले तुझे ही खाता हूँ." पिशाच ने कहा. ब्रजभूषण को छोड़ कर पिशाच सविता की तरफ बढ़ता है.

"नही...नही...मैने प्रण लिया था कि रात होने से पहले इस लोंडे को खाऊंगा...तुझे छोड़ता हूँ अभी पर अगली बार तुझे ही खाऊंगा. आज बस इसका माँस खाना है मुझे" पिशाच ने ब्रजभूषण को कंधे पर उठाया और वहां से गायब हो गया. वो ब्रजभूषण को लेकर जंगल में अपने ठीकाने पर पहुँच गया.

"ये तो ब्रजभूषण को लेकर गायब हो गया हे भगवान अब क्या होगा?" सविता सहम उठती है. सविता मंदिर की तरफ भागती है. "मुझे ये बात पंडित जी को बतानी होगी" सविता भागते हुवे सोचती है.

भिका इस सब से अंजान वापिस घर की तरफ चल देता है. वो घर पहुच कर सीधा कमरे की तरफ बढ़ता है. जैसे ही वो कमरा का परदा हटाता है वो अचंभित हो जाता है. सामने शकुंतला नहा रही थी. शकुंतला भी भिका को देख कर सकपका जाती है. भिका की नज़रे कुछ ही पलो में शकुंतला के शरीर का भरपूर नज़ारा ले लेती हैं. शकुंतला के गोल-गोल स्तनों से टपकता पानी भिका को मदहोश कर देता है. उसे ऐसा लगता है जैसे की स्तनों से अमृत टपक रहा है, जिसे आगे बढ़ कर पीना चाहिए. शकुंतला की योनि पर पानी की कुछ बूंदे ऐसी लगती हैं जैसे सुबह सुबह घास पर ओंस की बूंदे. भिका का लिंग तन कर कठोर हो जाता है और वो उसकी धोती में उभार बना देता है. शकुंतला भिका को देखते ही नज़रे झुका लेती है... लेकिन नज़रे झुकाते ही उसकी नज़र भिका की धोती में लिंग के बनाए हुवे उभार पर पड़ती है. ये सब एक क्षण से भी कम वक्त में होता है. शकुंतला तुरंत घूम जाती है.

"भिका परदा छोड़ो."

भिका को होश आता है और वो परदा छोड़ देता है. लेकिन परदा गिरने तक उसकी नज़रे शकुंतला के खूबसूरत नितंबो को निहार ही लेती हैं.

"ये मैने क्या किया...मुझे सोचना चाहिए था कि मेमसाब अंदर हो सकती है. अब मैं घर में अकेला नही हूँ कि जब चाहे कही भी घुस जाऊ." भिका अपने बर्ताव पर पछताता है. भिका विचलित हो उठता है और वहां से चला जाता है.

"क्यों हो रहा है मेरे साथ ऐसा...मेमसाब क्या सोचेंगी मेरे बारे में" भिका सोचता हुवा घर से काफ़ी दूर निकल आता है.

"स्वामी जी के पास ही चलता हूँ...उनके घर के बाहर बैठा रहूँगा."

जब भिका ब्रजभूषण के घर पहुँचता है तो पाता है कि वहां आस पास सभी लोग दरवाजा बंद करके घरो में बैठे हैं और ब्रजभूषण के घर का दरवाजा खुला पड़ा है. भिका घर में झाँक कर देखता है. "स्वामी जी क्या आप सो गये." भिका कहते हुवे अंदर आ जाता है. भिका घर में हर तरफ ब्रजभूषण को धुंडता है पर ब्रजभूषण उसे कही नही मिलता. "कहा गये स्वामी जी...कही मंदिर तो नही गये." भिका मंदिर की ओर चल देता है.गिरधारी पंडित सविता को मंदिर की सीढ़ियों पर ही मिल जाता है.

"पंडित जी अनर्थ हो गया...वो...वो...पिशाच ब्रजभूषण को उठा कर ले गया?"

"क्या!" गिरधारी पंडित सदमे के कारण सीढ़ियों पर लूड़क जाता है.

"पंडित जी!" सविता चिल्लाती है.

गिरधारी पंडित सीढ़ियों से लूड़कता हुवा नीचे ज़मीन पर आ गिरा. तब तक भिका भी वहां पहुँच जाता है.

"क्या हुवा इन्हे" भिका ने पूछा.

"ब्रजभूषण के बारे में सुन कर लड़खड़ा कर गिर गये." सविता ने कहा.भिका गिरधारी पंडित को उठाता है. लेकिन गिरधारी पंडित सर पकड़ कर वही बैठ जाता है.

"क्या हुवा स्वामी जी को." भिका ने सविता से पूछा

"पिशाच उन्हे उठा कर ले गया...पता नही कहा." सविता ने कहा.

"नही नही ऐसा नही हो सकता...स्वामी जी के साथ ऐसा हरगीज़ नही हो सकता." भिका को विश्वास नही हुवा.

"सब कुछ मेरी आँखो के सामने हुवा है भिका. मैने खुद सब कुछ अपनी आँखो से देखा है."

"हे भगवान ये तो बहुत बुरा हुवा. अब क्या होगा?" भिका ने कहा.

"आस पड़ोस के लोग तो सभी घरो में घुस्स गये...अब हमें ही कुछ करना होगा."

"कुछ भी करने का फायदा नही है...पिशाच उसे नही छोड़ेगा." गिरधारी पंडित ने कहा. वो ज़मीन पर सर पकड़ कर बैठा था."बहुत समझाया था मैने ब्रजभूषण को कल पर वो नही माना. पिशाच का कोई कुछ नही बिगाड़ सकता."

"आप ब्रजभूषण के पिता हो कर ऐसा बोल रहे हैं. कुछ तो उम्मीद रखनी चाहिए आपको." सविता ने कहा.

"जो सच है...उसे स्वीकार कर रहा हूँ...तुम दोनो भी स्वीकार कर लो...शायद भगवान की यही ईच्छा है."

"ऐसा कैसे हो सकता है...कोई तो रास्ता होगा ब्रजभूषण को बचाने का" सविता ने कहा.

"एक रास्ता है लेकिन वो बहुत मुश्किल है." गिरधारी पंडित ने कहा.

"क्या रास्ता है?" सविता ने पूछा.

"मंदिर में भोले नाथ की मूर्ति के हाथ में जो छोटा सा त्रिशूल है...उसे उस पिशाच की नाभि में मारना होगा. पर वो पिशाच ऐसा हारगीज़ नही होने देगा. और जब तक पिशाच जींदा है...ब्रजभूषण का बचना मुश्किल है. क्या पता अब तक उसने उसे मार भी दिया हो." गिरधारी पंडित ने कहा.

"वो ब्रजभूषण को मारने की जल्दी में नही था. वो उसे उठा कर ले गया है. मुझे उम्मीद है कि ब्रजभूषण अभी जींदा होगा." सविता ने कहा.

"पर हमें ये भी तो नही पता कि वो पिशाच स्वामी जी को कहा ले गया है." भिका ने कहा.

"पिशाच जंगल में रहना पसंद करते हैं. वो ज़रूर ब्रजभूषण को जंगल में ले गया होगा." गिरधारी पंडित ने कहा.

"हमें देर नही करनी चाहिए...पंडित जी मुझे वो त्रिशूल दे दीजिए...मैं करूँगी ख़ात्मा उस पिशाच का" सविता ने कहा.

"त्रिशूल तो ले जाओ...पर मुझे नही लगता कि कुछ कर पाओगे तुम." गिरधारी पंडित ने निराशा भरे शब्दो में कहा. गिरधारी पंडित धीरे से उठा और मंदिर में आकर भोले नाथ की मूर्ति से त्रिशूल निकाल कर सविता को दे दिया.

"भिका क्या तुम मेरे साथ चलोगे जंगल में" सविता ने पूछा.

"हां हां बिलकुल ये भी क्या पूछने की बात है" भिका ने कहा.

"चलो फिर हमें वक्त बर्बाद नही करना चाहिए." सविता ने कहा. "चलो मैं तुम्हारे साथ हूँ." भिका उत्साह से बोला.

"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ." गिरधारी पंडित ने कहा.

"नही पंडित जी आप रहने दीजिए आप ठीक से चल भी नही सकते...आप यही रुकिये हम चलते हैं. हमारा जंगल में जल्द से जल्द पहुँचना ज़रूरी है...और फिर हमें पिशाच को ढूंडना भी है." सविता ने कहा.

"नही मैं चलूँगा...भिका तुम मुझे सहारा दो" गिरधारी पंडित ने कहा.

सविता समझ जाती है कि गिरधारी पंडित के साथ होने से वो जंगल में पहुँचने में लेट हो जाएगी.

"भिका तुम पंडित जी को लाओ मैं आगे बढ़ती हूँ." सविता त्रिशूल ले कर जंगल की तरफ भागती है.

"अरे रूको तुम अकेली क्या करोगी" गिरधारी पंडित पीछे से चील्लाता है.

"ये सब सोचने का वक्त नही है पंडित जी आप समझ नही रहे हैं" सविता भागते हुवे कहती है. भिका गिरधारी पंडित को सहारा देता है और उन्हे लेकर जंगल की तरफ बढ़ता है.

"पंडित जी वो ठीक कह रही थी आपको यही रुकना चाहिए था" भिका ने कहा.

"मेरे बेटे की जींदगी ख़तरे में है...मैं यहा रुक कर क्या करूँगा." सविता उन दोनो से काफ़ी आगे निकल आती है और जंगल के बिलकुल करीब पहुँच जाती है.

"कहा ले गया होगा वो ब्रजभूषण को...किस तरफ जाऊ" सविता जंगल के बाहर खड़ी सोचती है.

सविता कुछ निर्णय नही ले पाती लेकिन फिर भी वो जंगल में घुस्स जाती है. वो पीछे मूड कर देखती है,

"शायद काफ़ी पीछे रह गये वो...इंतेज़ार करू या आगे बढ़ुँ...नही नही मुझे आगे बढ़ना चाहिए...ब्रजभूषण को इस वक्त मदद की शख्त ज़रूरत है." सविता घने जंगल में उतर जाती है...अपने ब्रजभूषण के लिए. लेकिन जंगल का सन्नाटा उसके रोंगटे खड़े कर देता है. वो पहली बार इस जंगल में आई है...डरना लाज़मी है. लेकिन वो अपने ब्रजभूषण के लिए हाथ में त्रिशूल लिए लगातार आगे बढ़ी जा रही है. "ये तो बहुत बड़ा जंगल लगता है...कहा ले गया होगा वो पिशाच ब्रजभूषण को...क्या करू मैं...हे भगवान मेरी मदद करो."

भिका के घर में शकुंतला नहा कर कमरे में चुपचाप बैठी है. उसका मन बहुत विचलित हो रहा है. शरम और ग्लानि ने उसके मन को घेर रखा है. "शायद सब मेरी ग़लती है...भिका ऐसा नही है. मैं ही कल रात बार बार भिका से चिपक रही थी. किसी भी आदमी का बहक जाना स्वाभाविक है." शकुंतला अपना सर पकड़ लेती है. "पर...पर वो बड़ी बेशर्मी से मेरे अंगो को घुरे जा रहा था. परदा छोड़ने को कहा...तब परदा छोड़ा उसने वरना तो देखता रहता मुझे. आने दो इसे इसकी खबर लेती हूँ...क्या समझता है खुद को. मेरी मदद क्या कर दी...क्या उसे कुछ भी करने की इज़ाज़त मिल गयी...आने दो इसे...पता नही कहा चला गया." शकुंतला ने खड़े हो कर खिड़की से झाँक कर देखा.

"शायद वो भी शर्मिंदा होगा...तभी चला गया. मुझसे बात तो करके जाता. क्या माफी माँगना फ़र्ज़ नही था उसका...या फिर इतनी शरम आ रही है उसे अब की मेरे सामने नही आना चाहता. जो भी हो आने दो उसे...मैं इस बार अच्छे से खबर लूँगी उसकी." सविता को कुछ भी समझ नही आ रहा था कि वो क्या करे और क्या ना करे.

हर तरफ घाना जंगल था. बड़े बड़े पेड़ थे. दिन में भी जंगल में घने पेड़ो के कारण अंधेरे जैसी हालत हो रही थी. ऐसा सन्नाटा था कि किसी की भी रूह काँप जाए.

“ब्रजभूषण!” सविता बहुत ज़ोर से चिल्लाई.

“ब्रजभूषण!...तुम कहा हो!” घने जंगल में सविता की आवाज़ बहुत ज़ोर से गूँजी…लेकिन सविता को उसका कोई जवाब नही मिला.

“हे भगवान कहा ले गया वो पिशाच मेरे ब्रजभूषण को…कुछ तो मदद करो मेरी.” सविता भावुक हो उठी.

“ये तो सविता की आवाज़ थी…लगता है स्वामी जी उसे नही मिले अब तक.” भिका ने कहा

“पागल हो गयी है वो… अकेले भागी जा रही है…पिशाच को ढूँढना क्या आसान काम है” पंडित ने कहा

“कुछ तो करना ही होगा पंडित जी… जैसे हम चल रहे हैं वैसे तो हम सात जनम तक नही ढूंड पाएगेँ स्वामी जी को.”

“अगर तुम्हे भी भागना है मुझे छोड़ के तो जाओ…मैं खुद चल सकता हूँ.”

“ऐसी बात नही है पंडित जी…मुझे तो बस स्वामी जी की चिंता हो रही है.”

“मेरा बेटा है वो मुझे तुमसे ज़्यादा चिंता है उसकी…तुम मुझे सहारा नही दोगे तब भी मैं जाऊंगा ही”

“पंडित जी मैं आपका साथ छोड़ कर कही नही जा रहा.”

दुर्भाग्य से सविता जंगल के दूसरी तरफ जा रही थी और भिका और गिरधारी पंडित दूसरी तरफ. तीनो के दीमाग में चिंता और भय इस कदर हावी था कि सही निर्णय लेना मुश्किल हो रहा था. भिका, गिरधारी पंडित को सहारा देकर जंगल में आगे बढ़ता रहता है.

“पंडित जी कुछ समझ नही आ रहा. ना तो स्वामी जी का कुछ पता चल रहा है और ना ही सविता का…कीधर जायें हम…ये तो बहुत बड़ा जंगल है.”

“सब उस पागल लड़की की ग़लती है…त्रिशूल भी साथ ले गयी…मुझे तो अब हर तरफ बस अंधेरा ही दीख रहा है.” चलते चलते भिका और गिरधारी पंडित थक जाते हैं. कोई तीन घंटे वो लगातार चलते रहे लेकिन ना उन्हे सविता मिली, ना ब्रजभूषण और ना ही पिशाच.

“लगता है हम भटक गये पंडित जी.” भिका ने कहा.

“सही कह रहे हो…वो पागल लड़की ना जाने कहा होगी”

“अब क्या करें हम पंडित जी…शाम होने को है अब तो…जल्दी ही अंधेरा हो जाएगा. हमें किस तरफ जाना चाहिए…मुझे तो कुछ समझ नही आ रहा.”

“बात ये है कि अब पिशाच को ढूढँ या उस पागल लड़की को…एक ही हथियार था हमारे पास वो भी वो लेकर भाग गयी…अब पिशाच मिल भी गया तो हम क्या बिगाड़ लेंगे उसका.” गिरधारी पंडित और भिका दोनो के चेहरे पर निराशा उभर आती है लेकिन फिर भी वो दोनो आगे बढ़ते रहते हैं.

सविता चलते चलते जंगल के बिलकुल बीचो-बीच पहुचँ गयी थी. “हे भगवान लगता है अंधेरा होने वाला है और ब्रजभूषण का अभी तक कुछ आता पता नही…अगर ब्रजभूषण को कुछ हो गया तो मैं भी इसी जंगल में अपनी जान दे दूगँी.” सविता ये सब बोल ही रही थी कि उसे किसी के हसणे की आवाज़ सुनाई दी.

“हा…हा…हा…हे…हे…क्यों कैसा लग रहा है अब. तुम तो बड़ी जल्दी बेहोश हो गये थे. कब से इंतेज़ार कर रहा हू ँकि तुम कब होश में आओ और मैं तुम्हे खाना शुरू करूँ… बताओ कहा से शुरू करूँ…इन हाथो से शुरू करूँ क्या जिनसे तुमने मेरी आँख में धूल भर दी थी. अभी तक आँखो में चरमराहट है…क्या डाला था तुमने मेरी आँख में बताओ.”

ब्रजभूषण ज़मीन पर पड़ा था और उसके दाई तरफ पिशाच बैठा था. ब्रजभूषण ने चारो तरफ देखा. हर तरफ बड़े-बड़े पेड़ थे. इतना घना जंगल ब्रजभूषण ने पहले कभी नही देखा था. ब्रजभूषण ने उठने की कोशिश की लेकिन वो उठ नही पाया. ना वो अपने हाथ हिला पाया और ना ही टांगे.

“क्या हुवा उठना चाहते हो उठो उठो…हा...हा…हे…हे...अच्छा खेल है ना. बताओ कैसा लग रहा है.” पिशाच ने कहा.

“तुम बचोगे नही…मैं तुम्हे जींदा नही छोड़ूगाँ” ब्रजभूषण गुस्से में बोला.

“कौन मारेगा मुझे तुम..हा.” पिशाच बोखला गया और ब्रजभूषण के सर पर उसने अपना एक हाथ दे मारा. हाथ का वार ऐसा था जैसे की कोई हथोदा पड़ा हो. ब्रजभूषण के सर से खून बहने लगा…और वो फिर से बेहोश हो गया.

“अफ…ये तो फिर से लूड़क गया…मुझे भूक लगी है…पर इसे तभी खाऊंगा जब ये होश में आएगा. इसे अपने शरीर में मेरे दाँत गढ़ते हुवे महसूस होने चाहिए…तभी मज़ा आएगा मुझे…मेरी आँख में धूल झोन्का है…

“उसे छोड़ दो वरना….” पिशाच को अपने पीछे से आवाज़ सुनाई दी. पिशाच तुरंत पीछे मूड कर देखता है.उसे सविता दिखाई दी.

“वरना क्या पागल लड़की…तुम क्या करेगी…हा…हा…हा”

“मैं तुम्हे जान से मार दूगँी…छोड़ दो उसे.” सविता चिल्लाई

“मान-ना पड़ेगा…मेरे सामने आज तक किसी ने आकर ऐसी बात नही बोली…एक ये लौंडा है और एक तू है..दोनो एक से बढ़ कर एक हो…पर मुझे अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि इसके साथ-साथ तुम भी मेरे पेट में जाओगी…लेकिन पहले मैं इसे ही खाऊंगा…तू इसके बाजू में लेट जा तेरी बारी बाद में आएगी.” सविता त्रिशूल एक हाथ में पीछे छुपा कर रखती है ताकि पिशाच को उसके इरादो की भनक ना लगे.

“मुझे किसी तरह इस पिशाच के पास जाना होगा…क्या करूँ” सविता खड़े खड़े सोच रही है.

“पिशाच जी बहुत सुना है आपके बारे में कि आप बहुत भयानक हो पर आप ऐसे दिखते तो नही.” सविता ने कहा.

पिशाच ब्रजभूषण के पास से खड़ा हुवा और सविता की ओर मूह करके बोला, “तुम्हे मैं भयानक नही लगता…मेरी आवाज़ सुन कर जंगल का शेर भी भाग जाता है, इंसान तो चीज़ क्या है…और मैं तेरे सामने इतनी भयानक बाते कर रहा हूँ…इस से ज़्यादा भयानक और क्या होता है.”

“फिर भी आपको कुछ और भी करना चाहिए.” सविता ने कहा. “जैसे कि… क्या करूँ मैं अब वो भी बता दो.”

“चेहरे पर थोड़ा और रोब होना चाहिए…आप हंसते रहते हैं बात बात, ये अच्छा नही लगता. इस से आपकी छवि खराब होती है.”

“मज़ाक कर रही है तू…बहुत बढ़िया” पिशाच सविता के करीब आता है और उसके बाल पकड़ लेता है.

“पिशाच से कभी भी मज़ाक नही करते लड़की…हमेशा अपनी चिंता करते हैं.”

सविता बिना मोका गवाए त्रिशूल पिशाच के पेट में गाढ देती है और बोलती है, “वो तो ठीक है लेकिन कुछ पिशाचो को अपनी भी चिंता करनी चाहिए.”

“ये क्या किया तूने करम जली…ये क्या मार दिया पेट में…आअहह” पिशाच दर्द से कराह उठा और तड़पने लगा.

“भोले नाथ का त्रिशूल है…भगवान का नाम लो और दफ़ा हो जाओ यहा से.” सविता ने पिशाच को दोनो हाथो से दूर धकैल दिया.

“आअहह तुम्हे क्या लगता है तुम इसे बचा लोगि…आअहह… मेरा जहर है इसके शरीर में…मैं इसे नही भी खाता तो भी ये सुबह तक मर ही जाता.”

सविता ने तड़प्ते हुवे पिशाच के मूह पर लात मारी और बोली, "दूसरो की मौत का जशन नही मनाते…अपनी चिंता करते हैं."

"तुम इस जंगल से बाहर नही जाओगी…ये त्रिशूल मेरे पेट से निकाल दो…मैं तुम दोनो को गावँ छोड़ आऊंगा."

सविता ने त्रिशूल पकड़ा और ज़ोर लगा कर त्रिशूल थोड़ा और पिशाच के पेट में उतार दिया. पिशाच बहुत ज़ोर से चील्लाया. पिशाच की चिंख पूरे जंगल में गूँज गयी. उसकी चिंख भिका और गिरधारी पंडित ने भी सुनी. वो तेज़ी से चिंख की दिशा का अंदाज़ा लगा कर उसकी ओर भागे.

"ब्रजभूषण…ब्रजभूषण उठो क्या हो गया है तुम्हे…ब्रजभूषण…हे भगवान बचा लो मेरे ब्रजभूषण को" सविता की आखेँ भर आई और वो फूट कर रोने लगी.

"हा..हा..हा…मर जाएगा वो जल्दी ही..हे…हे."

सविता खड़ी हुई और त्रिशूल पर फिर से दबाव बनाया. त्रिशूल थोड़ा और पिशाच के पेट में सरक गया. वो फिर से ज़ोर से चील्लाया. कुछ ही पलो में उसने दम तोड़ दिया. लेकिन उसकी लाश वहां से गायब हो गयी. शायद यमदूत उसे उठा कर नर्क में ले गये. सविता किसी तरह ब्रजभूषण को उठाती है और उसे अपनी पीठ पर लाद कर चल देती है.

"मेरे होते हुवे तुम्हे कुछ नही होगा ब्रजभूषण…कुछ नही होगा तुम्हे…मैं तुम्हे कुछ नही होने दूँगी, चाहे कुछ हो जाए." पर अब एक और मुसीबत का सामना करना था सविता को. वो मुसीबत थी ये घना जंगल और जंगली जानवर. उसके लिए गावँ की वापसी का रास्ता भी ढूंडना आसान नही था. लेकिन फिर भी दिल में उम्मीद की किरण लिए वो आगे बढ़ती रही.

"हां..यही तो रास्ता है..ये पेड़ मैने इस तरफ आते हुवे देखा था..इसका मतलब मैं ठीक जा रही हूँ. ब्रजभूषण तुम बिलकुल चिंता मत करो…मैं तुम्हे हर हाल में गावँ ले जाऊंगी." सविता दिल में हिम्मत और प्यार लिए आगे बढ़ती रहती है. भिका और गिरधारी पंडित पूरा जंगल छान मारते हैं लेकिन उन्हे फिर भी कुछ नही मिलता. वो उस जगह से गुज़रते तो हैं जहा से सविता ब्रजभूषण को ले गयी है लेकिन उन्हे अहसास भी नही होता कि वहां कुछ हुवा है. ज़मीन पर ब्रजभूषण के खून की बूंदे थी लेकिन शाम होने के कारण वो उन्हे दीखाई नही दी.

"पंडित जी क्या किया जाए अब...कुछ समझ नही आ रहा कि स्वामी जी को वो पिशाच कहा ले गया…सविता का भी कुछ पता नही चल रहा. वो चिंख भी ना जाने किसकी थी."

“सब उस मूर्ख लड़की के कारण हुवा है.” गिरधारी पंडित बोला.

“उसकी क्या ग़लती है पंडित जी, हमें भी तो कुछ नही मिला.” भिका ने कहा.

“मान लो अगर पिशाच हमें मिल भी जाता…तो भी हम क्या बिगाड़ लेते उसका.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“मिलता तब ना पंडित जी…मुझे नही लगता कि वो पिशाच स्वामी जी को यहा लाया है. पूरा जंगल छान मारा हमने. अगर पिशाच यहा होता तो मिल ही जाता.”

“पिशाच तो नही मिला पर..पर…भेड़िया ज़रूर मिल गया.” गिरधारी पंडित डरते हुवे बोला.

भिका गिरधारी पंडित की बात सुन कर नज़र घुमा कर देखता है. उनके दाई तरफ की झाड़ियों में एक भेड़िया खड़ा था.

“पंडित जी हिलना मत…हम डरेंगे तो ये हमला ज़रूर करेगा.” भिका ने कहा. भिका को एक पत्थर दीखाई दीया. उसने पत्थर उठाया और भेड़िए को निशाना बनाया. पत्थर निशाने पर लगा और भेड़िया चील्लाता हुवा भाग गया.

“हमें अब इस खौफनाक जंगल से निकलना चाहिए.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“सही कहा पंडित जी…यहा रुकना ख़तरे से खाली नही है…और वैसे भी हमने पूरा जंगल तो लगभग देख ही लिया है.”

भिका और गिरधारी पंडित गाँव की तरफ चल पड़ते हैं. लेकिन सविता की तरह उन्हे भी रास्ता ढूँढते में मुश्किल आती है. किसी तरह से आख़िर कार सविता गाँव तक पहुँच ही जाती है. लेकिन गाँव तक पहुँचते-पहुँचते रात घिर आती है. वो ब्रजभूषण को उसी तरह अपनी पीठ पर ही गाँव के वैद्य के पास ले जाती है. वैद्य सविता की पीठ पर ब्रजभूषण को देख कर हैरान रह जाता है. वैद्य ब्रजभूषण को सविता की मदद से चारपाई पर लेटा देता है.

“क्या हुवा स्वामी जी को सविता?” वैद्य ने पूछा. सविता जल्दी जल्दी में वैद्य को सारी बात बताती है.

“बेटी मैने कभी अपनी जींदगी में ऐसे मरीज का इलाज़ नही किया…पिशाच के काटे का मेरे पास कोई इलाज़ नही है.”

“आप कोशिश तो कीजिए वैध जी... ब्रजभूषण को बचा लीजिए…मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूँ.” सविता की आँखे भर आती हैं.

“अच्छा-अच्छा मुझसे जो बन पड़ेगा मैं करूँगा…तुम चुप हो जाओ” वैद्य ने कहा.

वैद्य फ़ौरन ब्रजभूषण के इलाज़ में लग गया. सविता बेचैनी की हालत में वैद्य के घर के बाहर कभी इधर, कभी उधर घूम रही थी. गाँव में पूरी तरह सन्नाटा था. हो भी क्यों ना… गाँव में पिशाच का ख़ौफ़ जो फैला था. अभी ये बात सिर्फ़ सविता जानती थी की पिशाच का ख़ात्मा हो गया है. भिका और गिरधारी पंडित भी किसी तरह से जंगल से बाहर आ जाते हैं.

"पंडित जी आपको पहले वैद्य जी के पास ले चलता हूँ…सीढ़ियों से गिरने के कारण बहुत चोट लगी है आपको. थोड़ा मरहम पट्टी करवा लीजिए."

"क्या मरहम पट्टी कर्वाउ मैं अब…मेरा इक-लौता बेटा पता नही कहा है…जींदा भी है कि नही."

"मुझे भी स्वामी जी की बहुत चिंता है…समझ में नही आता कि क्या करें अब. सविता भी कही खो गयी. हम जो कर सकते थे हमने किया. चलिए आपको वैद्य जी की शख्त ज़रूरत है"

भिका गिरधारी पंडित को वैद्य के घर की तरफ ले चलता है. वैद्य के घर के बाहर सविता को देख कर दोनो हैरत में पड़ जाते हैं.

"तुम यहा क्या कर रही हो…जंगल में ढूंड-ढूंड कर थक गये हम तुम्हे" गिरधारी पंडित ने कहा.

"मैं ब्रजभूषण को ले आई हूँ पंडित जी लेकिन वो बेहोश है अभी…वैद्य जी इलाज़ कर रहे हैं उसका." गिरधारी पंडित और भिका दोनो सविता की बात सुन कर हैरान हो जाते हैं लेकिन उनकी आँखो में ब्रजभूषण की खबर सुन कर खुशी भी उभर आती है.

"सविता कैसे किया तुमने ये सब…हम तो जंगल में तुम्हे ढूंड ढूंड कर थक गये." भिका ने कहा.

सविता पूरी कहानी सुनाती है. भिका और गिरधारी पंडित को विश्वास ही नही होता कि सविता ने पिशाच का ख़ात्मा कर दिया.

"तुमने पिशाच को मार दिया…विश्वास नही होता." गिरधारी पंडित ने कहा.

"दिल में हिम्मत हो तो कुछ भी हो सकता है पंडित जी." सविता ने कहा.

"तुमने बहुत हिम्मत दीखाई सविता…ये सब तो मैं भी नही कर पाता. मुझे तो भूत-पिशाच से वैसे ही बहुत डर लगता है." भिका ने कहा. तभी वैद्य बाहर आता है.

"अरे पंडित जी आप" वैद्य ने कहा.

“कैसा है मेरा बेटा.” गिरधारी पंडित ने पूछा.

“अभी कुछ नही कह सकता…मेरे जो बस में था मैने कर दिया है. सर से काफ़ी खून बहा है ब्रजभूषण का. सर पे पट्टी बाधँ दी है. देखते है अब.” वैद्य ने कहा.

“ब्रजभूषण को कुछ नही होगा मुझे पूरा विश्वास है.” सविता ने कहा.

भिका, वैद्य और गिरधारी पंडित तीनो ने एक साथ सविता की ओर देखा. सविता के चेहरे पर अजीब सा तेज था. भिका तो सविता के पैरो में पड़ गया.

“तुम ज़रूर कोई देवी हो…पिशाच को कोई मामूली इंसान नही मार सकता.” भिका ने कहा.

“उठो भिका ऐसा कुछ नही है...मैने बस हिम्मत और दीमाग से काम लिया…और शायद भगवान ने मेरी मदद की.” सविता ने कहा. भिका उठ गया और बोला,

“जो भी हो तुमने केवल स्वामी जी की नही बल्कि पूरे गावँ के लोगो की जान बचाई है…और तुम हमारे लिए किसी देवी से कम नही हो...क्यों पंडित जी.” गिरधारी पंडित ने कुछ नही कहा. उसे वैसे भी सविता और ब्रजभूषण की दोस्ती पसंद नही थी और सविता उसे एक आखँ नही भाती थी.

“पंडित जी आप ब्रजभूषण को घर ले जाए…यहा भीड़ भाड़ लगी रहती है…आप समझ ही सकते हैं” वैद्य ने कहा.

“हां हां बिलकुल…भिका क्या तुम किसी की बैलगाड़ी ला सकते हो ब्रजभूषण को घर तक ले जाने में आसानी होगी.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“जी पंडित जी अभी लाता हूँ.” भिका किसी गावँ वेल की बैलगाड़ी ले आया और ब्रजभूषण को उस पर लेटा कर घर तक ले आए. ब्रजभूषण अभी भी बेहोश ही था. ब्रजभूषण को बैलगाड़ी से उतार कर बिस्तर पर लेटा दिया.

“सविता तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद…अब तुम जाओ.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“नही पंडित जी…ब्रजभूषण को होश आने तक मैं….”

“नही तुम जाओ यहा से कहा ना…मैं अपने बेटे को संभाल लूगाँ.” गिरधारी पंडित ने सविता की बात बीच में ही काट दी. पंडित की बात भिका को भी बुरी लगी.

“चलो सविता मैं भी चलता हूँ…अब इनका मतलब निकल ही गया है…हमारी ज़रूरत ही क्या है…पोंगा पंडित कही का.” भिका से रुका नही गया और उसने ये सब बोल दिया.

‘‘हां-हां जाओ तुम भी जाओ…रोका किसने है.’’ गिरधारी पंडित चील्लाया.

सविता और भिका वहां से चल दिए. सविता बड़े भारी कदमो से वहां से जा रही थी. उसकी जान तो बस ब्रजभूषण में अटकी थी. पर उसके पास कोई चारा नही था. सविता घर आई तो उसके पिता ने डाटँ कर पूछा,

‘‘कहा थी तू सारा दिन…ढूंड ढूंड कर परेशान हो गया मैं…कहा चली गयी थी.’’ सविता ब्रजभूषण के साथ हुई घटना सुनाती है और ये भी सुनाती है कि कैसे वो जंगल से ब्रजभूषण को बचा कर लाई.

‘‘क्या! तूने पिशाच को मार दिया.’’

‘‘हां…अपने इन हाथो से. अब गावँ में कोई चिंख नही गूंजेगी और ना ही किसी की हत्या होगी.’’ सविता ने कहा.

सविता के पिता ने तो मूह पर हाथ रख लिया. उसे यकीन नही हो रहा था. सविता अपने बिस्तर पर आ कर लेट गयी. बहुत भूक लगी थी उसे. पूरा दिन कुछ नही खाया था उसने लेकिन फिर भी बिना कुछ खाए लेट गयी. उसे बस अपने ब्रजभूषण की चिंता था.

भाग - 13

भिका बहुत धीमी चाल से अपने घर की तरफ बढ़ रहा था. घर जाने से उसे डर जो लग रहा था. "क्या करूँ घर जाऊ की नही…मेमसाब मुझे कच्चा चबा जाएँगी आज. हवेली में एक दो बार बहुत गुस्से में देखा है उन्हे. वो ज़रूर गुस्से में आग बाबूला हो कर बैठी होंगी. पर उनसे चल कर माफी तो माँगनी ही चाहिए मुझे." भिका चलते-चलते सोच रहा था.

भिका कछुवे की चाल चलता हुवा घर पहुँच ही जाता है. शकुंतला भी भिका का बेसब्री से इंतेज़ार कर रही है. डाटँ जो पीलानी है उसे.भिका घर पहुँच तो गया लेकिन दरवाजे पर खड़ा-खड़ा सोचता रहा कि दरवाजा खड़काए या नही…या वापिस चला जाए. शकुंतला को दरवाजे पर भिका के कदमो की आहट सुन जाती है लेकिन फिर भी वो चुपचाप बिस्तर पर लेटी रहती है. वो इंतेज़ार कर रही है कि कब भिका दरवाजा खड़काए और कब वो दरवाजा खोल कर भिका पर बरस पड़े. लेकिन बहुत देर हो जाती है. भिका दरवाजे पर कोई दस्तक नही करता.

"मुझे यहा से चलना चाहिए…कल माफी माँग लूँगा मेमसाब से. आज तो वो बहुत गुस्से में होंगी." भिका सोचता है और वापिस मूड कर चल देता है. शकुंतला के सबर का बाँध टूट जाता है और वो उठ कर दरवाजा खोलती है. लेकिन वो पाती है कि भिका जा रहा है.

"भिका क्या मज़ाक है ये…कहा जा रहे हो!" शकुंतला चिल्लाती है.

भिका तो शकुंतला की आवाज़ सुनते ही थर-थर काँपने लगता है.वो भाग कर शकुंतला के पैर पकड़ लेता है.

"मेमसाब मुझे माफ़ कर दीजिए…मुझसे बहुत बड़ी ग़लती हो गयी." भिका गिड़गिदाया.

"सुबह से अब होश आया है तुम्हे माफी माँगने का…तब क्यों भाग गये थे तुम और पैर छोड़ो मेरे कही इनसे भी कामुक रस लेने लगो." भिका ने तुरंत शकुंतला के पैर छोड़ दिए. लेकिन वो उसके पैरो के पास ही झुका रहा.

"उठो और नज़र मिला कर बात करो मुझसे." शकुंतला ने डाटँ-ते हुवे कहा.

"नही मेमसाब मैं आपसे नज़रे नही मिला सकता अब…इतना बड़ा गुनाह जो हो गया मुझसे." भिका फिर से गिड़गिडया.

"कहा ना उठो वरना मारेंगे थप्पड़ तुम्हे एक." शकुंतला ने कहा. भिका उठ गया और नज़रे झुका कर शकुंतला के सामने खड़ा हो गया.

“अंदर आओ…तुम्हे सबक देना हैं.” शकुंतला ने कहा. भिका अंदर आ गया और शकुंतला ने कुण्डी बंद कर ली.

“लगता है मेमसाब मुझे कमरे में बंद करके पीटने वाली हैं…अब क्या होगा.”

शकुंतला ने एक डंडा उठाया और भिका के पीठ पर दे मारा. “मेमसाब नही…आअहह.”

“परदा कहे बिना नही छोड़ा तुमने. क्यों देख रहे थे मुझे घूर-घूर के.” शकुंतला ने एक और डंडा मारा.

“आआहह.. मेमसाब मुझसे ग़लती हो गयी…मैं बहक गया था…मुझे माफ़ कर दीजिए.”

“बात-बात पर बहक जाते हो क्या चक्कर है ये.” शकुंतला ज़ोर से एक और डंडा मारती है. इस बार भिका भागता है और कोने में सट के बैठ जाता है.

“मेमसाब माफ़ कर दीजिए मैने जान बुझ कर कुछ नही किया.”

“नही मैं कल से देख रही हूँ…बार बार वही हरकत. देख तो रहे ही थे देख-देख कर उत्तेजित भी हो रहे थे. शरम नही आई तुम्हे.”

“मैं कब उत्तेजित हुवा मेमसाब…ऐसा कुछ नही है.” भिका गिड़गिडया.

“अच्छा तुम्हारी धोती में देखा था मैने तुम्हारी उत्तेजना को. बोलो अब… क्या ये झूठ है?”

“हां मेमसाब…मेरा मतलब नही मेमसाब हो गया होगा ऐसा…वो मेरे बस में नही है.” शकुंतला ने झुक कर डंडा घुमाया. डंडा भिका के हाथ पर लगा.

“आओच…मेमसाब…नही..आआहह.”

“कुछ भी बस में नही है तुम्हारे ना वो, ना हाथ और ना आँखे क्यों…तुम्हारी आँखे ही फोड़ दूँगी मैं अब सीधे खड़े हो जाओ.” भिका चुपचाप खड़ा हो जाता है.

“जो सज़ा देनी है दे दो मेमसाब लेकिन सच कहता हूँ…मुझसे जो कुछ भी हुवा अंजाने में हुवा. मेरा आपके प्रति कोई बुरा इरादा नही था.” भिका ने कहा.

“बिलकुल… तभी बार-बार उत्तेजित हो जाते हो तुम हा.” शकुंतला डंडा हवा में उपर करती है, भिका के सर में मारने के लिए. लेकिन डंडा छत से लटकी मटकी से टकराता है और मटकी रस्सी से निकल जाती है. भिका शकुंतला को पकड़ता है और मटकी के नीचे से हटा लेता है. मटकी ज़ोर से ज़मीन पर गिरती है और फूट जाती है. मटकी का माखन ज़मीन पर बिखर जाता है.

“छोड़ो मुझे…तुम्हारी आज खैर नही” भिका फ़ौरन शकुंतला का हाथ छोड़ देता है. शकुंतला हाथ में डंडा लिए भिका की ओर बढ़ती है, लेकिन शकुंतला का पावँ माखन पर पड़ जाता है और वो फिसल जाती है. भिका आनन फानन में आगे बढ़ कर शकुंतला का हाथ थामता है लेकिन वो भी फिसल जाता है.शकुंतला तो गिरती ही है…दिक्कत वाली बात ये हो जाती है कि भिका भी उसके साथ उसके उपर गिर जाता है. बड़ी ही नाज़ुक स्थिति बन जाती है. शकुंतला आँखो में शोले लिए ज़मीन पर पड़ी है और भिका उसके उपर. शकुंतला भिका की आँखो में देखती है. उसे आसूँ दीखाई देते हैं.

“मेमसाब मैने कुछ जान बुझ कर नही किया…मेरा यकीन कीजिए मैं सच कह रहा हू” भिका ने कहा.

“पर तुमने किया तो ना…तुम्हे सोचना चाहिए था…परदा उठाए खड़े रहे तुम और मुझे घूरते रहे.”

“आप मुझे जान से मार दीजिए…मेमसाब” भिका भावुक हो कर कहता है.भिका रोने लगता है और अपना सर शकुंतला के स्तनों पर रख देता है, जैसे की छोटा बच्चा हो. शकुंतला भिका को रोते देख उसका सर थाम लेती है. इतना भावुक सा माहॉल बन जाता है कि दोनो में से कोई भी वहां से हिलने की कोशिश नही करता.

“अब भी तो ये ठीक है अब तो ये उत्तेजित नही हो रहा. सब डंडे का असर है. बिलकुल बच्चा है ये.” शकुंतला सोचती है. भिका चुपचाप शकुंतला के स्तनों पर सर रखे सुबक्ता रहता है. “मेमसाब आप बहुत अच्छी हो…कोई और होता तो मुझे मार डालता.”

“अच्छा डंडे कम पड़े लगते हैं.”

“नही…नही वो तो बहुत पड़े हैं.”

“नही कुछ कमी रही हो तो और मार देती हूँ.”

“मार लीजिए मेमसाब अब चू भी नही करूँगा.”

“अगर दुबारा ऐसा किया तो और ज़्यादा डंडे लगेंगे.”

अब जबकि भिका शकुंतला के उपर पड़ा था तो उत्तेजना का जागना तो स्वाभाविक था. धीरे धीरे भिका के लिंग में हरकत होने लगती है और वो शकुंतला की योनि पर चुभने लगता है.

“भिका!” शकुंतला लिंग की चुभन महसूस होते ही ज़ोर से बोलती है. “जी मेमसाब.”

“जी के बच्चे क्या हो रहा है ये फिर से और पीटाई करनी पड़ेगी क्या तुम्हारी.”

भिका सर उठाता है और शकुंतला की आँखो में झाँक कर बोलता है “मैं सच कहता हूँ आपके करीब आकर ऐसा अपने आप हो जाता है. मेरे बस में होता तो रोक लेता. क्या औरत के करीब आकर आदमी को ऐसा ही होता है.”

“मुझे नही पता शायद होता होगा.”

“फिर ठीक है…मुझे लगा मेरे साथ ही ऐसा हो रहा है.”

“तुम बिलकुल भोन्दु हो.”

“मेमसाब एक बात कहूँ…बुरा तो नही मानेंगी आप.”

“हां बोलो.”

“मुझे कुछ देर यू ही अपने उपर रहने दीजिए. बहुत सुकून मिल रहा है मुझे.”

पता नही क्यों शकुंतला भिका को अपने उपर से हटा नही पाती. वो भिका की बात का कोई जवाब भी नही देती. बस अपनी आँखे बंद कर लेती है.

“सुकून तो मुझे भी मिल रहा है…मैने तुम्हारे अंदर आदमी का अलग ही रूप देखा है भिका. अब तक बस अपने पति को ही देखा था इतने नज़दीक से. वो तो किसी भेड़िए से कम नही थे. वो जब मेरे उपर होते थे तो मेरी रूह काँप उठती थी. एक तुम हो आज…हां भिका मुझे भी सुकून मिल रहा है ये जान कर कि आदमी तुम्हारे जैसा भी हो सकता है… मासूम और प्यारा… बिलकुल किसी बच्चे की तरह. हमेशा ये बाते अपने अंदर बनाए रखना भिका…तुम अच्छे इंसान हो. दिल के सच्चे हो.” शकुंतला आँखे बंद किए चुपचाप सोच रही है.

“मेमसाब मेरा वो दिक्कत तो नही दे रहा आपको.” भिका ने पूछा.

"हट जाओ अब तुम, दिक्कत की तो बात ही है" शकुंतला भिका को अपने उपर से धकैलते हुवे कहती है.

भिका शकुंतला के उपर से हट जाता है और ज़मीन पर बैठ जाता है.

"बहुत सूकून मिल रहा था…मेमसाब?"

"ऐसे ही पड़े रहेंगे क्या हम तुम्हारे साथ भोन्दु कही के." शकुंतला ने कहा.

"ओह हां मैं तो सब कुछ भूल गया था…ऐसे थोड़ा हम पड़े रहेंगे."

"चलो छोड़ो, ये बताओ कुछ खाया तुमने सारा दिन."

"नही मेमसाब पूरा दिन अन्न का एक दाना भी नसीब नही हुवा. मैं तो कही पानी भी नही पी पाया."

"क्यों ऐसा क्या हो गया था...बहुत परेशान थे क्या तुम आज की अपनी करतूत के कारण."

"पूछो मत मेमसाब...आपको अब मैं जबरदस्त वाक़या सुनाता हूँ." भिका उत्सुकता में बोला.

"कैसा वाक़या?"

भिका, शकुंतला को सारी कहानी सुनाता है.

"यकीन नही होता कि एक साधारण सी लड़की इतना बड़ा काम कर सकती है."

"सब कुछ सच है मेमसाब...मैं खुद गवाह हूँ." भिका ने कहा.

"अच्छा कुछ खाओगे अब तुम?"

"बहुत भूक लगी है मेमसाब...मैं अभी कुछ बनाता हूँ."

"नही मैं बना देती हूँ."

"मेमसाब आप मेरे लिए खाना बनाएँगी, नही नही...मैं बना लूँगा."

"पिटोगे तुम अगर ज़्यादा बोलोगे तो...जाओ हाथ मूह धो कर आओ मैं खाना तैयार करती हूँ."

“पहले मैं ये ज़मीन पर बिखरे माखन को साफ कर देता हूँ.”

“हां…ये कर दो पहले फिर हाथ मूह धो लेना.” भिका ज़मीन से माखन को साफ कर देता है और हाथ मूह धोने बाहर निकल आता है.

"मेमसाब तो गजब हैं. मारती भी हैं और प्यार भी करती हैं. मेमसाब जब चली जाएँगी तो मेरा बिलकुल मन नही लगेगा."

शकुंतला भी बाहर आती है और चूल्हा तैयार करती है. शकुंतला जब खाना बना रही थी तो भिका उसके साथ ही बैठ गया चूल्हे के पास.

“मेमसाब आप मेरे लिए खाना बना रही हैं. मुझे तो यकीन ही नही हो रहा.”

“इसमे ऐसा क्या है. हवेली में भी मैं खाना बनाती ही थी. और कई बार तुमने वहां मेरे हाथ का खाया भी है.”

“वहां कुछ और बात थी यहा कुछ और बात है.” भिका ने कहा.

“लो खाना तैयार है तुम अंदर चटाई लगाओ. मैं लाती हू.ँ” शकुंतला ने कहा.

दोनो ने एक साथ चटाई पर बैठ कर खाना खाया.

“बहुत स्वादिष्ट खाना बनाया आपने मेमसाब. सारी भूक शांत हो गयी.” भिका ने कहा. खाना खाने के बाद भिका ज़मीन पर चटाई बिछा कर लेट गया और और शकुंतला चारपाई पर लेट गयी.

“मेमसाब एक बात पूच्छू बुरा ना माने तो.”

“हां पूछो.” “जब मैं आपके उपर था तो आपको कैसा लग रहा था.”

“क्यों जान-ना चाहते हो?”

“बस यू ही. मुझे तो बहुत अच्छा लग रहा था.”

“अच्छा तुम्हे तो अच्छा लगेगा ही. उत्तेजित जो हो रहे थे तुम.”

“हां बाद में थोड़ा थोड़ा होने लगा था.”

“थोडा नही तुम पूरे उत्तेजित हो गये थे. बहुत तेज चुभ रहा था मुझे वो.”

“हां बाद में ऐसा हो गया था.”

“तुम मुझसे अश्लील बाते करते रहोगे क्या, सोना नही है आज क्या.रात बहुत हो गयी है.अब जबकि पिशाच का ख़तरा टल गया है मुझे यहा से चलना चाहिए. सो जाओ मुझे कल जल्दी उठ कर सफ़र पर निकलना है.” भिका के तो पैरो के नीचे से जैसे ज़मीन निकल गयी. वो तुरंत अपनी चटाई से उठा और शकुंतला के बिस्तर के पास आ गया.

“मेमसाब आप कल चली जाओगी.”

“हां और नही तो क्या. मैं हमेशा यही थोड़ा रुकूंगी.”

“हां ठीक कह रही हैं आप. ये ठहरी ग़रीब की कुटिया. आप तो हवेली में रहेंगी जाकर.”

“पागल हो क्या. मेरा ये मतलब नही है. कुछ भी बोले जा रहे हो. मुझे अपने घर तो जाना ही होगा ना अब.”

“मेमसाब आप मत जाओ. मेरा मन नही लगेगा.” भिका गिड़गिदाया.

“पागल हो क्या मुझे जाना ही होगा.”

“कुछ दिन तो आप रुक ही सकती हैं.”

“हां ताकि तुम मुझे रोज परदा उठा कर देखो…. क्यों.”

"नही नही मेमसाब मेरा वो मतलब नही है."

"अच्छा छोड़ो ये सब. मुझे ये बताओ मुझे क्यों रोकना चाहते हो. क्या लगती हूँ मैं तुम्हारी."

"आप…आप मेरी मेमसाब हैं."

"मेमसाब हूँ तो क्या अपने घर में रखोगे मुझे." शकुंतला ने कहा.

"मुझे नही पता क्यों…शायद."

"शायद क्या?"

"कुछ नही रहने दीजिए. सो जाईए आप." भिका वापिस अपनी चटाई पर आ गया.

"चले गये तुम तो. भिका बोलो ना शायद से तुम्हारा क्या मतलब है."

"रहने दीजिए मेमसाब आपको बुरा लगेगा."

"हो सकता है ना लगे तुम बोलो तो…इधर आओ वापिस और जल्दी बताओ शायद क्या?" भिका फिर से शकुंतला के बिस्तर के पास आता है और बोलता है.

"शायद मैं आपको चाहने लगा हूँ. मुझे पता है ये ग़लत है. लेकिन जो मेरे मन में था कह दिया."

"भोन्दु हो तुम एक नंबर के. किसी को चाहना ग़लत नही होता."

"लेकिन आप तो चली जाएँगी ना. क्या फायदा ऐसी चाहत का."

"एक शर्त पर रुकूंगी यहा."

"बोलिए क्या शर्त है."

"मुझे अपनी बीवी बना लो."

"क्या! आप ये क्या कह रही हैं. ऐसा कैसे होगा."

"सब कुछ मुमकिन है. क्या तुम मुझे प्यार नही करते?"

"वो तो करता हूँ शायद पर…आप और मेरी बीवी…ऐसा कैसे होगा."

"क्या तुम्हारा इरादा मुझे यहा रखैल बना कर रखने का है."

"ऐसा मत कहो मेमसाब. अपने बारे में ऐसा मत कहो."

"भिका तुमने मुझे ही नही छुवा बल्कि मेरी आत्मा को छुवा है. मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे साथ खुश रहूंगी. मैं यहा से कही नही जाना चाहती. मैं तो बस यू ही तुम्हारे मन की बात

जान-ने के लिए बोल रही थी. जैसा की मुझे शक था, वही हुवा. तुम भी मुझे चाहते हो और मैं भी तुम्हे चाहती हू. फिर हम हमेशा एक साथ क्यों नही रह सकते. मैं एक हवेली से निकल कर दूसरी हवेली नही जाना चाहती. जो सुकून की साँस मुझे तुम्हारी इस कुटिया में मिल रही है वो मुझे आज तक हवेली में नही मिली. बताओ बनाओगे मुझे अपनी दुल्हन. शादी शुदा हू मैं पहले से लेकिन फिर भी तुमसे ये पूछ रही हू. शायद मैं ग़लत हू. लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मुझे सिर्फ़ तुम्हारे साथ रहना चाहिए."

"मेमसाब आप ग़लत नही हो सकती. पर मैं आपके लायक नही हू."

"फिर क्यों रोकना चाहते थे मुझे. मुझे दुबारा फिर से नंगा देखना चाहते थे या फिर ये सब अपनी हवस के लिए बोल रहे थे."

"नही नही भगवान कसम मेमसाब ऐसा कुछ नही है. बताया तो आपको कि मैं आपको चाहने लगा हू."

"बस मुझे चाहोगे. अपनी बीवी नही बनाओगे. कैसी चाहत है तुम्हारी."

"क्या आप मेरे साथ इस कुटिया में रह लेंगी."

"रह नही रही हू क्या, और क्या चाहिए तुम्हे."

"वो तो है मेमसाब…पर गावँ वाले क्या कहेंगे. और ठाकुर भवानी प्रताप सिंग तो मुझे जान से मार देंगे."

"बस डर गये."

"नही मेमसाब ऐसा नही है लेकिन इन बातो का ख़तरा तो है ही."

"वो सब देखा जाएगा. तुम बस ये बताओ कि तुम मुझे अपनी बीवी बनाओगे की नही."

"मैं तैयार हू मेमसाब. मेरा तो ये सौभाग्य होगा की आप जैसी बीवी मुझे मिलेगी."

"वो तो ठीक है पहले ये मेमसाब कहना बंद करो. मुझे अबसे शकुंतला कहोगे तुम…क्या कहोगे?"

"अभी नही मेमसाब धीरे सीख लूँगा.अभी आप मेरी मेमसाब ही रहो."

"भोन्दु हो तुम एक नंबर के."

"मेमसाब आपको हवेली जैसा सुख तो नही दे पाऊंगा पर प्यार बहुत करूँगा आपको."

"मुझे पता है भिका…तभी तुम्हारी बीवी बन-ना चाहती हू."

भिका ने शकुंतला का हाथ पकड़ा और उस पर अपने होठ टीका दिए. शकुंतला के पूरे शरीर में जैसे बीजली दौड़ गयी.

"ये सब अभी नही भिका बाद में."

"बस आपको अपना प्यार दिखाना चाहता था."

"वो तुम बहुत दीखा चुके हो…चलो अब सो जाओ. कल हम शादी कर लेंगे."

"कल ही कर लेंगे." भिका हैरान रह गया.

"जब तुम कहो तब कर लेंगे इसमे हैरान होने की क्या बात है."

"नही नही कल ही ठीक रहेगा. आपसे ज़्यादा दिन दूर नही रह पाऊंगा मैं अब."

"ठीक है. ठीक है सो जाओ अब तुम."

भिका का तो जैसे कोई बहुत बड़ा सपना सच हो गया. वो बहुत खुश था. खुश होने वाली बात ही थी. शकुंतला जैसी बीवी उसे कही नही मिल सकती थी.

भाग - 14

सविता तो सारी रात तड़पति रही. कभी इस करवट कभी उस करवट. उसकी जान तो बस ब्रजभूषण में अटकी थी. बार बार बस उसकी सलामती की दुआ कर रही थी. वो बेसब्री से सुबह होने का इंतेज़ार कर रही थी. जैसे ही मुर्ग ने बांग दी वो बिस्तर से उठ गयी. सुबह के कोई छह बज रहे थे. बाहर अभी भी हल्का हल्का अंधेरा था.सविता चुपचाप घर से निकली और ब्रजभूषण के घर की तरफ चल पड़ी. ब्रजभूषण को कुछ देर पहले ही होश आया था. आँखे खुलते ही वो खुद को अपने घर में पाकर हैरान रह गया.

"ओह तुम्हे होश आ गया. भगवान का लाख-लाख शूकर है." गिरधारी पंडित ने कहा.

"मैं यहा कैसे आया पिता जी मुझे तो वो पिशाच उठा कर ले गया था." ब्रजभूषण ने पूछा.

"जो हो गया सो हो गया छोड़ो ये सब. पिशाच का ख़ात्मा हो चुका है. अब वो यहा नही आएगा."

"ये सब कैसे हुवा?"

"सब भगवान की कृपा है. इस बारे में ज़्यादा मत सोचो. पिशाच के बारे में बाते करना ठीक नही होता."

"पर मैं जान-ना चाहता हूँ कि…ये सब कैसे हुवा?"

"पिशाच के पेट में त्रिशूल मारा हमने और वो ख़तम हो गया. फिर हम तुम्हे यहा ले आए." गिरधारी पंडित बड़ी चालाकी से बोल रहा था. वो झूठ भी बोल रहा था और सच भी. हम कह कर वो अपने मन से झूठ का बोझ हटा रहा था, हम वो भिका सविता और अपने संदर्भ में कह रहा था.. वो नही चाहता था कि सविता के बारे में ब्रजभूषण को कुछ भी पता चले. ब्रजभूषण अपने पिता का विश्वास कैसे ना करता. वो उनकी बहुत इज़्ज़त करता था.

"बेटा तुम आराम करो. मैं मंदिर जा रहा हूँ. और हां गाँव के किसी आदमी से बात करने की ज़रूरत नही है. सब घरो में घुस गये थे जब वो पिशाच तुम्हे ले जा रहा था."

"गाँव वाले डरे हुवे थे पिता जी और वैसे भी क्या कर सकते थे वो पिशाच का."

"जो भी हो तुम गाँव वालो से दूर ही रहना."

"मुझे तो वैसे भी यहा से जाना ही है पिता जी. मुझे वापिस अपने गुरु के आश्रम लोटना होगा." ब्रजभूषण ने कहा.

"तुम फिर से चले जाओगे?"

"हां पिता जी जाना ही होगा."

"ठीक है जैसी तुम्हारी मर्ज़ी. मैं मंदिर के लिए निकलता हूँ. उठ सको तो कुण्डी बंद कर लेना."

"आप जाओ मैं देख लूँगा." गिरधारी पंडित चला गया.

सविता बहुत अच्छे समय पर ब्रजभूषण से मिलने आ रही थी नही तो गिरधारी पंडित उसे घर में ना घुसने देता. सविता पहुँच तो गयी ब्रजभूषण के घर लेकिन दरवाजे पर पहुँच कर थिटक गयी. वो गिरधारी पंडित की वजह से घबरा रही थी. फिर भी उसने हिम्मत करके दरवाजा खाट खटाया.

"कौन है? आ जाओ दरवाजा खुला ही है." ब्रजभूषण ने अंदर से आवाज़ दी.

ब्रजभूषण की आवाज़ सुनते ही सविता की खुशी का ठिकाना नही रहा. उसने तुरंत दरवाजा धकैला और अंदर आ गयी.

"ब्रजभूषण तुम ठीक हो भगवान का लाख लाख शूकर है."

"मुझे क्या होना था. मैं बिलकुल ठीक हूँ. तुम इतनी सुबह सुबह यहा क्या कर रही हो." ब्रजभूषण ने कठोर शब्दो में कहा.

"मुझे तुम्हारी चिंता हो रही थी. बस तुम्हे देखने आई हूँ." "देख लिया ठीक से. हो गया तुम्हारा. अब जाओ यहा से और मुझे अकेला छोड़ दो." ब्रजभूषण की आवाज़ में कठोरता बरकरार थी.

"मैं बस तुम्हे देखने आई थी. क्या करूँ दिल से मजबूर हूँ." सविता की आँखे छलक उठी.

"देखो इस रोने धोने का मुझ पे कोई असर नही होगा. बेहतर यही होगा कि तुम यहा से चली जाओ." ब्रजभूषण ने कहा.

"जा रही हूँ ब्रजभूषण...जा रही हूँ...अपना ख्याल रखना." सविता आँखो में आसूँ लिए भारी कदमो से बाहर आ गयी.

इस बात से बिलकुल अंजान था कि सविता ही उसे अपनी जान पर खेल कर जंगल से बचा कर लाई है. वो तो बस हर हाल में सविता से पीछा छुड़ाना चाहता था. वो अपने सन्यास से कदापी भटकना नही चाहता था. सविता के दिल पर बहुत गहरी चोट लगी. इतनी गहरी की शायद उसके घाव कभी नही भर पाएगेँ. वो किसी तरह से घर पहुँच गयी और वापिस आकर बिस्तर पर गिर गयी. उसकी आँखे थमने का नाम ही नही ले रही थी. शायद एक यही रास्ता था उसके पास अपने गम को दूर करने का.

सुबह हो चुकी थी लेकिन भिका बहुत गहरी नींद में सोया था. हसीन सपने देख रहा था. नींद में ही उसे घंटी की आवाज़ सुनाई दी. वो अचानक उठ कर बैठ गया. “ये घंटी की आवाज़ कहा से आ रही है.”

“ऐसे ही सोते हो क्या देर तक तुम. तभी कहु क्यों हवेली अक्सर लेट पहुँचते थे तुम. उठ जाओ अब.”

भिका ने तुरंत घूम कर देखा. भिका के घर में उसने एक छोटा सा मंदिर बना रखा था जिसमे कि भोले नाथ की एक छोटी सी मूर्ति रखी थी. शकुंतला उस छोटे से मंदिर के आगे बैठी थी और धूपबत्ती लगा कर आरती कर रही थी.

“मेमसाब, तो आप बजा रही थी घंटी.”

“हां तुम्हे क्या लगा?”

“मुझे लगा मैं सपना देख रहा हूँ.”

“अच्छा है कि तुमने यही छोटा सा मंदिर बना रखा है. मुझे सुबह सेवेरे भगवान की आरती करना पसंद है.”

“बना तो रखा है पर मुश्किल से कभी ही इसमें धूप लगाता हूँ. आज बड़े दिनो बाद इसमें धूपबत्ती लगाई है आपने.”

“अबसे रोज लगेगी धूपबत्ती इसमें. चलो उठो और नहा धो लो.” शकुंतला ने मंदिर के आगे से उठते हुवे कहा.

“आप नहा ली क्या?”

“क्यों..क्या फिर से परदा उठा कर देखना था तुम्हे?”

“नही नही मैं वैसे ही पूछ रहा हूँ.” भीका ने शर्म से अपनी गर्दन नीचे झुका ली

“हां नहा ली हूँ मैं. नहा कर ही धूपबत्ती की जाती है. पता नही क्या ये तुम्हे.”

“ओह हां ये तो पता है…खि….खि” भिका हंसते हुवे अपनी चटाई से उठता है और बाहर आ जाता है.

शकुंतला चूल्हे पर रात की ही तरह नाश्ता तैयार करती है. एक बहुत ही सुंदर सा रिश्ता बनता जा रहा है भिका और शकुंतला के बीच. नाश्ता करने के बाद भिका कहता है,

“मेमसाब मुझे जाना होगा अभी.”

“कहा जाना होगा?” शकुंतला ने पूछा.

“मुझे स्वामी जी की चिंता हो रही है. पता नही उन्हे होश आया है या नही. जा कर देख आता हूॅ.”

“हां तुम देख आओ…मैं भी उनके बारे में जान-ना चाहती हूॅ.”

“ओह हां…आप कह रही थी कि आज शादी करेंगे”

“तुम हो आओ पहले…फिर देखते हैं…शादी तो हम कर ही लेंगे.”

“वही मैं भी कह रहा था. आज ही आज सब मुमकिन नही होगा.”

“तुम हो आओ पहले फिर देखते हैं.” शकुंतला ने कहा.

भिका ब्रजभूषण की हालत जान-ने के लिए उसके घर के लिए निकल पड़ता है. रास्ते में उसे कुछ लोग दीखाई दिए. वो कुछ बाते करते जा रहे थे जो कि भिका ने सुन ली. “बड़ा बुरा हुवा ठाकुर के साथ. एक-एक करके सब चले गये हवेली से. बड़ी मनहूस हवेली है.”

“हां भाई अब तो उस तरफ जाते हुवे भी डर लगेगा.”

भिका ने उन्हे रोका और पूछा,”क्या हुवा हवेली में भाई”

“ठाकुर भवानी प्रताप सिंग चल बसे. अब हवेली बिलकुल सुन्सान हो गयी है.” लोग बाते करते करते आगे निकल गये. भिका वही खड़ा खड़ा गहरी चिंता में खो गया.

“अब कुछ दिन हम शादी नही कर पाएगेँ. ऐसे में शादी करना ठीक नही रहेगा. चल कर स्वामी जी को देखता हूँ पहले. फिर घर जा कर ये बात बताऊंगा मेमसाब को.”

भिका ब्रजभूषण के घर पहुँचता है. घर के बाहर ही उसे गिरधारी पंडित मिल जाता है.“क्या करने आए हो यहा. मुझे पोंगा पंडित बोल के गये थे कल…हा.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“छोड़िए ये सब पंडित जी. मैं आपसे किसी बहस में नही पड़ना चाहता. आप ठहरे ज्ञानी पंडित और मैं ठहरा मूर्ख अज्ञानी. मैं तो यहा स्वामी जी का हाल चाल जान-ने के लिए आया हूँ.”

“ठीक है वो अब. होश आ गया था उसे सुबह. अभी दवाई ले कर लेटा है.”

“क्या मैं मिल सकता हूँ स्वामी जी से.”

“मेरे घर में तो तुम्हे घुसने नही दूँगा मैं. चुपचाप यहा से चले जाओ तो अच्छा है.”

“मैं तुम्हे देखते ही समझ गया था कि यही होना है. तुम सच में पोंगे पंडित हो. तुम्हारे जैसा धूर्त पंडित मैने आज तक नही देखा.”

“दफ़ा हो जाओ यहा से.” गिरधारी पंडित चील्लाया.

“जाता हूँ जाता हूँ. स्वामी जी के कारण चुप हूँ वरना अभी पटक देता तुम्हे हा.” भिका वहां से चल देता है. भिका वापिस अपने घर आ जाता है.

“कैसे हैं स्वामी जी?” शकुंतला ने पूछा.

“वो तो ठीक हैं लेकिन ठाकुर साहिब चल बसे.”

“क्या! कब हुवा ये सब.” शकुंतला का मूह खुला का खुला रह गया.

“वो तो नही पता…लेकिन अब हम थोड़े दिन शादी नही कर पाएगेँ मेमसाब.”

“कोई बात नही. भगवान उनकी आत्मा को शांति दे. शादी तो हमारी हो ही जाएगी देर सबेर.” एक तरह से ठाकुर का सम्राज्य गावँ से ख़तम हो चुका था. ये बात शकुंतला और भिका के लिए भी अच्छी थी और केशव और दमयंती के लिए भी. वरना बहुत दिक्कत आ सकती थी उन्हे.

इधर सविता अभी तक बिस्तर पर पड़ी थी. उठना बहुत मुश्किल हो रहा था उसके लिए. सारी रात नींद तो आई नही थी. बहुत ज़्यादा थकी हुई थी.

“क्या बात है सविता? आज कुछ खाने को नही दोगि क्या?” बंसीलाल ने पूछा.

सविता धीरे से बिस्तर से उठती है और कहती है, “अभी तैयार करती हूँ पिता जी.”

“बात क्या है. बहुत थकी थकी सी लग रही है तू.”

“कुछ नही पिता जी बस यू ही.”

“बहुत भूक लगी है मुझे.”

“बस अभी लाती हूँ पिता जी आप बैठिए.” सविता अपने

पिता के लिए तो खाना बना देती है लेकिन वो अब भी खुद कुछ नही खाती. कुछ भी खाने का मन ही नही है उसका. प्यार का घाव कुछ ऐसा ही होता है. जखम भरने में कुछ वक्त तो लगता ही है. वक्त के साथ साथ सविता संभालने लगती है. धीरे धीरे एक हफ़्ता बीत जाता है.

भाग - 15

अब गाँव में ठाकुर की सत्ता ख़तम हो चुकी थी तो केशव दमयंती को लेकर अपने घर ही आ गया.

"ह्म्म तो तुम हो सविता. बहुत तारीफ़ करते हैं तुम्हारे भैया तुम्हारी. नज़र ना लग जाए मेरी तुम्हे बहुत सुंदर हो तुम तो." सविता दमयंती की बात सुन कर हल्का सा मुस्कुरा दी.

"मैं भी आपको पहली बार देख रही हूँ भैया रहते तो थे खोए खोए पर ये नही पता था कि आपके प्यार में खोए है. भगवान आपके प्यार को सलामत रखे."

"मैने सुना की तुमने उस दरिंदे पिशाच को मार दिया. कैसे किया तुमने ये सब." दमयंती ने कहा.

"मुझे खुद नही पता. बस हो गया." सविता ने कहा.

ये तो सविता के प्यार की ताक़त थी जिसने ब्रजभूषण को बचा लिया. इसको किसी को समझाया नही जा सकता था. केशव ने सविता को बाहों में भर लिया और बोला,

"बड़ी अनोखी है मेरी बहना. ये कुछ भी कर सकती है." दमयंती बहन भाई का प्यार देख कर मुस्कुरा पड़ती है.

"कब शादी कर रहे हो आप दोनो?" सविता ने पूछा.

"जब तुम कहोगी सविता…बताओ कब करें, सारी तैयारी तो तुम्हे ही करनी है." केशव ने कहा.

"मैं आप दोनो के साथ हूँ भैया. बहुत खुश हूँ मैं आप दोनो के लिए. जो भी मुझसे बन पड़ेगा मैं करूँगी."

"अभी शादी नही कर सकते हम कुछ दिन, ठाकुर साहिब का निधन हुवा है अभी अभी. दमयंती भी थोड़ा गम में है. थोड़ा रुक कर करेंगे. लेकिन तब तक दमयंती यही रहेगी तुम्हारे साथ."

"बिलकुल रहे यही. मुझे बहुत अच्छा लगेगा. वैसे भी बहुत अकेली महसूस करती हूँ मैं यहा. मैं चाय लाती हूँ." सविता ने कहा. सविता चाय लेने चली गयी. सविता के जाते ही केशव ने दमयंती को बाहों में भर लिया.

"आज रात अपने घर में मज़े करेंगे." केशव ने कहा.

“शादी होने तक तुम्हे पास भी नही भटकने दूँगी मैं अब. वहां भुवन के घर तुम्हारा मन नही भरा. रोज रात को मुझे परेशान करते थे.”

“क्या करू मेरा दिल ही नही भरता तुमसे. जितनी बार तुम-मे समाता हू ँऔर इच्छा होती है करने की. शायद मिलन ऐसा ही जादू करता है.”

“अब तुम्हे कुछ नही मिलने वाला जनाब. वैसे भी मैं यहा सविता के साथ लेटुंगी. तुम्हारे साथ नही.”

“क्यों?”

“पागल हो क्या. शादी से पहले सब के सामने अच्छा लगेगा क्या?”

“सब सो जाएगेँ तभी ना करेंगे हम. तुम भी कैसी बात करती हो. वैसे भी कुछ दिनो से तो तुम गम में डूबी हो. कहा नज़दीक आने दिया तुमने मुझे.”

सविता कमरे में आती है तो केशव और दमयंती को देख कर खाँसती है, “उः..उः..चाय तैयार है.”

केशव फ़ौरन दमयंती को अपनी बाहों से आज़ाद कर देता है. दमयंती केशव को चुटकी काट-ती है.

“करा दी ना मेरी बेज़्जती तुमने? क्या सोचेगी सविता.” दमयंती ने धीरे से कहा.

सविता ने ये सुन लिया. “मैं कुछ नही सोचूँगी भाबी. ग़लती मेरी ही थी. मैं बिना दरवाजा खड़काए अंदर आ गयी मैं कुछ खाने को बनाती हू.ँ आप दोनो तब तक बाते करो.”

“हां सविता बहुत अच्छा सा खाना बना दे आज. पहली बार आई है दमयंती घर. इसको पता चलना चाहिए कि मेरी बहना बहुत अच्छा खाना बनाती है.” सविता मुस्कुराते हुवे बाहर आ जाती है और चूल्हा तैयार करती है.

ब्रजभूषण अब बिलकुल ठीक हो चुका है और अब वो गाँव से जाने की तैयारी में है. गिरधारी पंडित उसे रोकने की कोशिश तो करता है पर वो नही मानता. "मुझे मेरे गुरु के पास जाना होगा पिता जी. आपको पता ही है कि मैने सन्यास ले लिया है. यहा मेरे अध्यातम का विकास नही हो पाएगा. तरह तरह के भटकाव हैं यहा. जब से यहा आया हू ँ क्रोध, घृणा पता नही क्या क्या आ गया है मेरे अंदर. यहा थोड़े दिन और रुका तो मेरा अध्यात्मिक विकास रुक जाएगा. मुझे यहा से जाना ही होगा."

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी बेटा. रोकुंगा नही तुम्हे. लेकिन कभी कभी अपने बूढ़े बाप को देखने आते रहना. अकेला हू ँयहा, तेरे सीवा मेरा कौन है."

"आता रहूँगा पिता जी. ज़रूर आता रहूँगा. ये भी क्या कोई कहने की बात है." ब्रजभूषण घर से बाहर निकलता है और चारो तरफ देखता है. "भगवान इस गाँव में सुख शांति बनाए रखे. पिता जी ठीक है मैं चलता हू.ँ सफ़र थोड़ा लंबा है, मुझे अभी निकलना होगा."

"ठीक है बेटा अपना ख्याल रखना." ब्रजभूषण चलने लगता है. लेकिन तभी उसे पीछे से आवाज़ आती है.

"स्वामी जी!"

ब्रजभूषण मूड कर देखता है. "भिका कहा थे तुम. मिलने भी नही आए एक बार भी."

भिका दौड़ कर ब्रजभूषण के पास आता है और कहता है, "आया था स्वामी जी लेकिन मुझे आपसे मिलने नही दिया गया."

"जाओ बेटा. तुम्हे देर हो रही है. इन गाँव वालो से इतना मूह मत लगो." गिरधारी पंडित ने कहा.

"कैसी बात करते है आप पिता जी. ये सब अच्छा नही लगता मुझे....हां भिका बताओ कैसे हो तुम. अब तो गाँव में शांति है ना." ब्रजभूषण ने कहा.

"कह नही सकता स्वामी जी, बहुत खुशी हुई आपको बिलकुल ठीक ठाक देख कर. रही गाँव की बात, जिसमे देवी समान सविता रहती हो वहां अशांति ज़्यादा दिनो तक टिक नही सकती."

"ये क्या बोल रहे हो सविता ने क्या कर दिया ऐसा?" ब्रजभूषण ने हैरानी में पूछा.

"क्या आपको पंडित जी ने कुछ बताया नही. ये तो धूर्त पने की हद पार कर दी पंडित जी ने."

"बेटा तुम जाओ यहा से ये पागलो जैसी बाते कर रहा है." गिरधारी पंडित ने कहा.

“रुकिये पिता जी…भिका ये सब क्या है. कहना क्या चाहते हो तुम.”

“स्वामी जी पिशाच आपको जंगल में उठा ले गया था. गाँव के सारे लोग घरो में घुस्स गये थे. किसी ने कोई मदद नही की. आपके पिता श्री भी कुछ करने का विचार नही रखते थे. इन्होने तो आपको मरा मान लिया था.”

“ऐसा कुछ नही है ब्रजभूषण ये झूठ बोल रहा है.” गिरधारी पंडित बीच में बोल पड़ा.

“रुकिये पिता जी कहने दीजिए इसे.” ब्रजभूषण बहुत उत्सुक था सब कुछ जान-ने के लिए.

“मैं झूठ नही बोल रहा स्वामी जी. झूठ बोल कर मुझे क्या कोई इनाम मिलेगा?. स्वामी जी ये तो सविता थी जिसने हिम्मत नही हारी थी. उसी ने पंडित जी से प्रार्थना करके कुछ उपाय पूछा. इन्होने बताया की भोले नाथ के त्रिशूल से ख़ात्मा हो सकता है पिशाच का. बस फिर क्या था. सविता त्रिशूल ले कर अकेले ही निकल पड़ी जंगल की ओर.”

“मैं नही गया था क्या.” गिरधारी पंडित गुस्से में बोला.

“आपने तो और मुसीबत ही बढ़ाई थी. रास्ते पर ढोता रहा मैं आपको. सविता अकेली रह गयी थी. आपके साथ होने की बजाए मुझे सविता के साथ होना चाहिए था.”

“हां आगे बताओ फिर क्या हुवा.” ब्रजभूषण ने कहा.

“स्वामी जी पता नही सविता ने कैसे किया ये सब लेकिन वो जंगल में पिशाच के ठीकाने तक पहुँच ही गयी. ना केवल उसने पिशाच को मारा बल्कि अपनी पीठ पर ढो कर आपको गाँव तक लाई. सीधा वैद्य के पास ले गयी थी वो आपको. मुझे तो सविता किसी देवी से कम नही लगी. ऐसा काम कोई आम इंसान नही कर सकता.”

पूरी कहानी सुन कर ब्रजभूषण की आँखे भर आई और उसकी आँखे टपकने लगी. ब्रजभूषण की आँखो में आसूँ देख कर भिका ने पूछा, “क्या हुवा स्वामी जी आपकी आँखो में आसूँ. मैने कुछ ग़लत कह दिया क्या?”

“नही भिका तुमने बहुत अच्छा किया जो ये मुझे बता दिया. मैं तो खुद पे रो रहा हू.ँ सविता सही कहती थी ‘इतना भी उपर नही उठा मैं’. बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है मुझसे.”

भिका को कुछ समझ नही आ रहा था. समझता भी कैसे उसे बिलकुल नही पता था कि ब्रजभूषण और सविता के बीच क्या चल रहा है.

“बेटा तुझे जो समझना है तू समझ. बस इतना ध्यान रखना कि मैं तेरा पिता हूँ और ये गाँव वाले तेरे कुछ नही लगते.”

“पिता जी बस कुछ और ना कहें मेरा दिल बहुत व्यथित है. जो पाप मुझसे हुवा है मैं उसके लिए खुद को कभी माफ़ नही कर पाऊंगा.”

“ऐसा क्यों बोल रहे हो बेटा. ऐसा क्या हो गया?” गिरधारी पंडित ने पूछा.

“हाँ स्वामी जी ऐसा क्यों कह रहे हैं.” भिका ने भी पूछा.

“आप लोग नही समझेंगे. मुझे अभी सविता से मिलना होगा…वरना भगवान मुझे कभी माफ़ नही करेंगे.” ब्रजभूषण ने कहा और सविता के घर की तरफ चल पड़ा.

“पागल मत बनो वो कोई देवी-वेवी नही है. तुम्हे देर हो जाएगी…कहा जा रहे हो?”

“जाने दो उन्हे पोंगे पंडित…क्यों हमेशा बेकार की बाते करते हो.” भिका ने कहा.

“तू दफ़ा हो जा यहा से. मैं तेरी शकल भी नही देखना चाहता मक्कार कही का.”

“हा..हा..हा मक्कारी खुद करते हो और मक्कार मुझे बोलते हो…पोंगे पंडित.” भिका कह कर चल दिया.

गिरधारी दाँत भींच कर रह गया. ब्रजभूषण जब सविता के घर पहुँचा तो वो अपने घर के बाहर चूल्हे के सामने बैठी खाना बना रही थी. उसकी पीठ ब्रजभूषण की ओर थी इसलिए उसे पता ही नही चला की ब्रजभूषण उसके पीछे खड़ा है. कुछ देर तक ब्रजभूषण सविता को चुपचाप खड़े हुवे देखता रहा. उसे समझ नही आ रहा था कि सविता को क्या कहे. स्वामी लोग भी कभी कभी अजीब दुविधा में पड़ जाते हैं. सविता तो अपने काम में खोई थी. चूल्हे में आग ठीक से जल नही रही थी इसलिए वो फूँक मार रही थी चूल्हे में. धुंवा ही धुंवा हो रखा था. हाथो में उसके राख लगी थी. धुवे के कारण बार बार आँखो में आसूँ आते थे और वो हाथ से आसूँ पोंछने की कोशिश करती थी. चेहरे पर भी राख लग गयी थी उसके.

“बहुत व्यस्त हो काम में. मेरी तरफ मूड कर नही देखोगी क्या.” अचानक अपने पीछे आवाज़ सुन कर सविता घबरा गयी और फ़ौरन खड़ी हो गयी. वो एक शब्द भी नही बोली. शायद बोल ही नही पाई. उसने बस अपने दिल पर हाथ रख लिया. बहुत जोरो से धड़क रहा था दिल उसका. उसे विश्वास ही नही हो रहा था की ब्रजभूषण वहां खड़ा है.

“दिन में भी सपने देखने लगी हूँ मैं अब” सविता ने कहा और मूड कर वापिस चूल्हे के सामने बैठ गयी.

"मैं सपना नही हूँ सविता, मैं तुमसे मिलने आया हूँ." ब्रजभूषण ने कहा.

अब तो सविता को विश्वास करना ही पड़ा. वो खड़ी हुई और बोली, "ब्रजभूषण तुम्हे बिलकुल ठीक देख कर मुझे जो खुशी मिल रही है मैं शब्दो में नही कह सकती. बिलकुल ठीक हो ना तुम अब. कही कोई तकलीफ़ तो नही है."

"बस अब रुलाओगि क्या तुम मुझे. क्यों करती हो इतना प्यार मुझे तुम. मैं तुम्हारे प्यार के लायक नही हूँ सविता. नही हूँ मैं लायक तुम्हारे प्यार के." ब्रजभूषण भावुक हो उठा.

"मेरे हाथ में नही है ब्रजभूषण... नही है मेरे हाथ में. और तुम्हे प्यार करना तो सौभाग्य है मेरा."

"मैने तुम्हे डाटँ कर भगा दिया था उस दिन. आज मुझे भिका ने बताया कि कैसे तुम मुझे जंगल से लेकर आई. क्या करूँ मैं अब ? मैं जा रहा था अपने गुरु के पास. लेकिन अब ये जींदगी तो तुम्हारी हो गयी. कैसे जाऊंगा मैं अब. "

"तुम जाओ ब्रजभूषण. खुशी खुशी जाओ मेरा प्यार तुम्हारे पावँ की बेड़िया नही है. मैं शायद स्वार्थी हो गयी थी जो हर वक्त बस अपना ही सोचती थी. पर अब नही. प्यार सिर्फ़ मिलन का नाम नही है. बिछड़ना भी प्यार ही है. तुम हमेशा मेरे दिल में रहोगे. तुम्हे निकाल नही पाऊंगी दिल से. तुम खुशी खुशी जा सकते हो ब्रजभूषण. अब मैं समझ गयी हूँ की मुझे तुम्हारे मकसद में रोड़े नही अटकाने चाहिए. मुझसे जो भी भूल हुई उसके लिए मैं तुमसे माफी चाहती हूँ."

"क्या तुम सच कह रही हो?"

"क्या कभी झूठ बोला है मैने तुमसे. तुम्हारे सर की कसम. जाओ तुम अपनी मंज़िल को हासिँल करो. तुम्हारे लिए मेरा प्यार हमेशा बना रहेगा. मुझे तुमसे कोई गिला शिकवा नही है."

"मैं जा ही रहा था. अच्छा हुवा जो भिका ने मुझे सब कुछ बताया और मैं तुमसे मिलने आ गया. अब मैं दिल पर बिना कोई बोझ लिए जा सकता हूँ. मुझे देर हो रही है क्या मैं निकलु."

"अगर ऐसा है तो तुरंत निकलो ब्रजभूषण वरना मुझे तुम्हारी चिंता रहेगी. बस जहा भी रहना अपना ख्याल रखना. भगवान तुम्हे वो सब दे जो तुम पाना चाहते हो."

"मैं किस मूह से तुम्हारा शुक्रिया करूँ."

"उसकी कोई ज़रूरत नही है ब्रजभूषण. मेरी जगह तुम होते तो तुम भी यही करते. जाओ अब देर मत करो."

“हां मैं चलता हूँ सविता. तुम भी अपना ख्याल रखना.” ब्रजभूषण मूड कर चल देता है.

सविता उसे जाते हुवे देखती रहती है. ब्रजभूषण पीछे मूड कर देखता है तो दोनो प्यार भरी मुश्कान से देखते हैं एक दूसरे को. धीरे धीरे ब्रजभूषण सविता की आँखो से ओझल हो जाता है. ना चाहते हुवे भी सविता की आँखे भर आती है. “खुश रहना ब्रजभूषण. जहा भी रहो खुश रहना” सविता आसुँओ को पोंछते हुवे कहती है.

भाग - 16

जैसे जैसे दिन गुजरते है मौसम भी करवट बदलने लगता है. आसमान में घने बादल छा जाते हैं. भिका अपने खेतो में कुछ बो रहा था.

“पहले तो अकेला था मैं. अब मेमसाब भी हैं. खूब मेहनत करनी होगी मुझे खेतो में.” भिका आसमान की तरफ देखता है. “अफ लगता है बड़े जोरो की बारिश आने वाली है. जल्दी से घर चलता हूँ वरना मेमसाब के लिए जो तोहफा लिया है वो भीग जाएगा.”

भिका घर की तरफ भागता है. लेकिन रास्ते में ही जोरो की बारिश शुरू हो जाती है. लेकिन फिर भी वो खुद तो भीग जाता है लेकिन किसी तरह से तोहफे को भीगने से बचा लेता है.

“आ गये तुम कहा रह गये थे?” भिका ने तोहफा अपने पीछे छुपा रखा था.

“पहले आँखे बंद कीजिए.”

“क्या बात है?” “कीजिए तो मेमसाब.” शकुंतला आँखे बंद कर लेती है.

“अब हाथ आगे कीजिए.” शकुंतला हैरत में हाथ भी आगे कर लेती है. भिका शकुंतला के हाथ में एक सुंदर सी साड़ी रख देता है.

“इतनी प्यारी साड़ी…कहा से लाए.”

“खरीद कर लाया हूँ मेमसाब.” शकुंतला खुशी से भिका के गले लग जाती है.

“मेरे कपड़े गीले हैं मेमसाब और मौसम भी खराब है. ऐसे में गले लगेंगी आप तो कही मैं उत्तेजित ना हो जाऊ.”

“घबराओ मत डंडा तैयार है.”

“फिर ठीक है.” दोनो ठहाका लगा कर हसँने लगते हैं.

“बहुत प्यार करने लगी हूँ मैं तुम्हे पता नही क्यों” शकुंतला ने कहा.

“मेरी भी कुछ ऐसी ही हालत थी. खेतो में हर पल आपका ही ख्याल आ रहा था. मेमसाब मीटा दो ना ये दूरिया. कब तक हम शादी का इंतेज़ार करेंगे.” भिका के लिंग में उत्तेजना होने लगी थी और वो अब शकुंतला को चुभ रहा था.

“नही भिका अभी नही. मैं तब तक तुम्हे खुद को समर्पित नही कर सकती जब तक हम पति पत्नी ना बन जाए. बुरा मत मान-ना लेकिन मेरे विचार में अभी ये सब ठीक नही है.”

“क्या मैं आपको चूम सकता हूँ…होंटो पर.”

“रोकूंगी नही तुम्हे पर बात तो वो भी वही रहेगी. क्या तुम थोड़ा और इंतेज़ार नही कर सकते. मैं बिना किसी ग्लानि के खुद को तुम्हे समर्पित करना चाहती हूँ और ये तभी होगा जब तुम मेरी माँग में सिंदूर भर दोगे.”

“माफ़ कीजिए मेमसाब…मैं उत्तेजित हो कर ये सब बोल बैठा. ये उत्तेजना बहका देती है मुझे. पर हम जैसे अब हैं वैसे तो रह सकते हैं. बड़ा सुकून मिलता है आपके करीब मेमसाब.”

“हां इतना तो ठीक है. लेकिन दिक्कत यही है कि तुम्हारा वो बार बार तन जाता है मेरी तरफ और मुझे डर लगता है की कही हम बहक ना जायें. अगर उसे थाम लो तो हम एक दूसरे के करीब रह सकते हैं.”

“वो तो मेरे बस में है ही नही आप जान ही गयी होगी अब तक. आप बस डंडा रखो हाथ में शायद कुछ बात बन जाए.”

“नही अब मैं अपने होने वाले पति पर डंडा नही बरसाउंगी.”

“ऐसा है क्या मेमसाब. मुझे तो ऐसा लगता था कि मुझे पीटाई के लिए तैयार रहना होगा हर वक्त.”

“ये मेमसाब कहना कब छोड़ोगे तुम. अब तुम्हारी मेमसाब नही हूँ मैं बीवी बन-ने वाली हूँ तुम्हारी.”

“छूट जाएगी धीरे धीरे मेमसाब आओ थोडा यू ही बिस्तर पर लेट-ते हैं.” भिका शकुंतला को बाहों में लिए हुवे बिस्तर की तरफ बढ़ता है.

शकुंतला तुरंत भिका की बाहों से आज़ाद हो जाती है और कहती है “ना बाबा बिस्तर पर नही जाऊंगी तुम्हारे साथ. मौसम बेईमान है और तुम्हारा वो तना हुवा है. तुम्हारे बस में कुछ है नही. कुछ ऐसा वैसा हो गया तो……ऐसे में तुमसे दूर ही रहना ठीक है.”

“देखता हूँ कब तक बचेंगी आप. कभी तो आपको आना ही होगा मेरे बहुत…बहुत…बहुत करीब.”

“ये शादी के बाद ही हो पाएगा.”

“अफ कब होगी ये शादी” भिका सर खुजाता हुवा बिस्तर पर गिर गया.

“अरे गीला मत करो मेरा बिस्तर…उठो कपड़े बदलो पहले.”

“आप वो साड़ी पहन के दीखाओ ना.”

“उसके लिए तुम्हे बाहर जाना होगा और बाहर बारिश हो रही है.”

“मैं आखेँ बंद कर लेता हूँ आप पहन लो.”

“नही नही तुम्हारी आखेँ खुल गयी तो…बाद में पहनूँगी…चलो तुम कपड़े बदल लो.”

“मैं कैसे बदलू आप हो ना यहा.”

“ओह हां ये तो दिक्कत हो गयी.”

“दिक्कत की कोई बात नही है. आप दूसरी तरफ घूम जाओ मैं अभी बदल लेता हूँ कपड़े.”

“ठीक है लो मैं घूम गयी…हे..हे..हे.” भिका कपड़े बदलने लगा.

“क्यों ना मैं भी तुम्हे देख लू जैसे तुमने मुझे देखा था.”

“नही मेमसाब ऐसा मत करना…बस थोड़ी देर रूको….हां बस हो गया. घूम जाओ आप अब.”

“बड़ी जल्दी पहन लिए कपड़े.” “

डरा जो दिया था.” और दोनों हसने लगते है

इस जैसी छोटी छोटी सुंदर सी घटनाए शकुंतला और भिका के बीच का रिश्ता और प्यार दोनो और ज़्यादा निखरते जा रहे थे. एक अद्भुत प्यार पनप रहा था उनके बीच जो की बहुत ही सुंदर और अनमोल था.

बारिश के कारण गाँव के बाहर एक बड़े से वृक्ष के नीचे बैठा था. रह रह कर उसे सविता का ख़याल आ रहा था. "सविता मुझसे बहुत उपर उठ गयी प्यार में. मैने उसे क्या कुछ नही कहा और वो बस अपने प्यार का दामन थामे रही. आज तो हद ही कर दी उसने. मुझे यकीन नही था की वो इस तरह मुझे अपने प्यार के बंधन से आज़ाद कर देगी. जा तो रहा हूँ मैं सविता को छोड़ कर अपने अध्यातम की ओर. पर क्या सच में अध्यातम सविता के प्यार से ज़्यादा अनमोल है. मैं क्या करूँ कुछ समझ नही आ रहा. ये किस दुविधा में डाल दिया भगवान ने मुझे. सविता ने मुझे आज़ाद तो कर दिया लेकिन अब लग रहा है कि मैं और ज़्यादा जकड़ गया हूँ उसके प्यार में. प्यार बहुत अनमोल है उसका. वैसा प्यार शायद ही कोई कर पाएगा किसी को. मैं ऐसा प्यार छोड़ के जा रहा हूँ अध्यातम की और. पता नही कितना सही हूँ मैं. मगर ना जाने क्यों ऐसा लग रहा है कि कुछ बहुत ही अनमोल चीज़ पीछे गाँव में ही रह गयी. हे प्रभु मुझे माफ़ करना अगर मैं कुछ ग़लत सोच रहा हूँ. मुझे रास्ता दीखायें प्रभु मुझे कुछ समझ नही आ रहा कि मैं क्या करूँ."

सविता भी परेशान थी. उसकी परेशानी का कारण ये था कि बारिश बहुत तेज हो रही थी और उसका ब्रजभूषण सफ़र पे निकला हुवा था.

"क्या करूँ मैं भीग जाएगा ब्रजभूषण इस बारिश में. ये बारिश भी आज ही होनी थी. कुछ दिन रुक नही सकती थी." बहुत ही गहरा प्यार था सविता का.

ब्रजभूषण के दिमाग़ में अजीब कसम्कश चल रही थी. एक स्वामी उलझा हुवा लग रहा था. ऐसा अन्तर द्वन्ध उसने अपनी जींदगी में पहले कभी नही देखा था. ये सब स्वाभाविक भी था. ब्रजभूषण समझ चुका था कि सविता का प्यार बहुत अनमोल है जिसका कोई मुल्य नही है. लेकिन ब्रजभूषण अपने अध्यातम से भटकने के लिए भी कदापि तैयार नही था. पर एक बात ज़रूर थी. पहले सविता का प्यार उसके अध्यातम के आगे कुछ नही था. लेकिन अब वो प्यार अध्यातम के आगे सीना ताने खड़ा था. यही ब्रजभूषण की उलझन का कारण था.

सविता तो यही दुवा कर रही थी कि बारिश थम जाए और ब्रजभूषण सुख शांति से अपना सफ़र पूरा करे. वो भाग कर ब्रजभूषण के सर पर अपना आँचल रख देना चाहती थी ताकि वो बारिश से बचा रहे. पर वो ये सोच ही सकती थी. इसलिए बारिश के थमने की दुवा कर रही थी बार-बार.

बारिश थम गयी और ब्रजभूषण अपने जिगर को कड़ा करके अपने सफ़र पर निकल पड़ा. "यही माया है ब्रजभूषण जो इंसान को जीवन मारन के चक्कर में फंसाती है. प्यार के प्रलोभन को त्याग कर मुझे आगे बढ़ना होगा." ब्रजभूषण चलते हुवे सोच रहा था.

ब्रजभूषण बढ़ता गया आगे और दो दिन में अपने गुरु के आश्रम पहुँच गया.

ब्रजभूषण के गुरु बहुत ज्ञानी थे. ब्रजभूषण ने अध्यातम का सारा ज्ञान उन्ही से सीखा था. उन्ही के साथ वो तीन साल पहले गावँ छोड़ कर आया था. वो गिरधारी पंडित को बिना बताए चल पड़ा था अपने गुरु के साथ क्योंकि वो जानता था कि उसके पिता उसे कभी नही जाने देंगे.

आश्रम पहुच कर ब्रजभूषण गावँ की सारी बाते भूल कर ध्यान और समाधी में लीन हो गया. ज़्यादा तर वक्त उसका ध्यान धारणा में ही गुज़रता था.

गावँ में सविता भी अपने जीवन में कुछ अद्भुत कर रही थी. ब्रजभूषण के अध्यातम से प्रेरित हो कर उसका भी झुकाव अध्यातम की ओर होने लगा था. ऐसा इस लिए हुवा क्योंकि वो उत्सुक थी ये जान-ने के लिए कि ऐसा क्या है अध्यातम में जो कि उसका ब्रजभूषण उसके प्यार को त्याग कर चला गया. वो घर के सभी काम करके रात को जल्दी अपने कमरे में आ जाती थी ताकि समाधी में लीन हो सके. अपनी चारपाई के पास ही सविता एक चटाई बिछा कर उस पर आँखे बंद करके बैठ जाती थी. सीखा नही था उसने किसी से कुछ भी. बस खुद ही लगी रहती थी. लेकिन उसे ऐसा कुछ ख़ास अहसास नही हुवा, जिसके लिए वो ध्यान और समाधी को जारी रखे. लेकिन उसकी उत्सुकता ने उसे रुकने नही दिया और वो रोज हर हाल में आँखे बंद करके बैठने लगी.

कहते हैं कि प्यार करने वाले को आँखे बंद करके अपने ब्रजभूषणी का चेहरा दीखाई देता है. ऐसा ही रोज होता था सविता के साथ. वो रोज आँखे बंद करती और रोज उसे ब्रजभूषण ही दीखाई देता. उसे पता ही नही चला और उसने ब्रजभूषण पर ही ध्यान लगाना शुरू कर दिया. एक दिन वो ब्रजभूषण में इतनी लीन हो गयी कि समाधी में बहुत गहरे उतर गयी. ये पहली बार हुवा था. जब उसने आँखे खोली तो उसे अहसास हुवा कि वो जन्नत की सैर करके आई है. बहुत सुकून और शांति का अहसास हुवा था उसे.

फिर क्या था उसे तो रोज ही ब्रजभूषण पर ध्यान लगाने का चस्का लग गया. और इस तरह प्रेमसाधना की शुरूवात हुई. ये ऐसी प्रेमसाधना थी जिसने सविता को अध्यातम में ब्रजभूषण से भी कही आगे निकाल दिया था. पर सविता को इन बातो का कोई अहसास नही था. वो तो बहुत खुश थी प्रेमसाधना के कारण. अपने ब्रजभूषण के करीब जो महसूस करती थी वो खुद को प्रेमसाधना करके.

ब्रजभूषण तो सविता की प्रेमसाधना से बिलकुल अंजान था. लेकिन वो रोज अपने अंदर कुछ अजीब सी हलचल महसूस करता था. जब वो समाधी में लीन होता था तो उसे ऐसा लगता था कि कोई उसे खींच रहा है…पता नही कहा. आँखे खुलने पर भी उसे इस खींचाव का अहसास रहता था. लेकिन वो इसका कारण नही जान पा रहा था. ब्रजभूषण ने अपने गुरु से भी बात की इस बारे में लेकिन वो भी कुछ समाधान नही बता पाए.

“हर किसी को समाधी में अलग अहसास होते हैं. तुम अपने ध्यान में लगे रहो ये खींचाव चला जाएगा खुद ही. मन में कोई शंका मत आने तो. शंका ही इंसान को डुबाती है.” ब्रजभूषण के गुरु ने कहा.

भाग - 17

मंदिर में शादी हो रही थी. केशव और दमयंती अग्नि के फेरे ले रहे थे. बड़ी मुश्किल से माना था गिरधारी पंडित शादी करवाने के लिए. गाँव में उसकी विधि विधान चलती थी. इसलिए ज़्यादा अकड़ थी उसकी. मोटी रकम झाड़ी उसने केशव से तब कही शादी करवाने के लिए तैयार हुवा.

सविता, केशव और दमयंती को फेरे लेते देख बहुत खुश थी. मधाम मधाम मुस्कुरा रही थी हर पल वो उन्हे देख कर.

भिका और शकुंतला भी खड़े थे वही पास ही. शकुंतला भी दमयंती के लिए खुश थी. दमयंती का कन्यादान भिका ने किया.

जब फेरे पूरे हुवे तो शकुंतला ने दमयंती को गले लगा लिया.

"भाबी आप यहा आई बहुत अच्छा लगा मुझे." दमयंती ने कहा.

"क्यों नही आती मैं. मुझे खुशी है कि तू अपने मन पसंद लड़के से शादी कर रही है." शकुंतला ने कहा.

"केशव ने मुझे बताया कि आप भी शादी कर रही हैं भिका से." दमयंती ने कहा.

"हां कर रही हूँ. तुम्हे बुरा तो नही लगेगा ना." शकुंतला ने कहा.

"बुरा क्यों लगेगा भाभी भिका बहुत अच्छा है. आप लोग भी अभी निपटा दो ने ये काम यही पर. देर क्यों कर रहे हैं. सब लोग भी हैं यहा." दमयंती ने कहा.

शकुंतला ने भिका की तरफ देखा.

"ये तो बहुत अच्छा रहेगा. एक साथ दो विवाह इस से अच्छी बात क्या हो सकती है." भिका ने कहा.

“मैं पंडित जी से बात करता हू॰...तुम दोनो की शादी के बाद ही हम घर जाएगें.” केशव ने कहा.

गिरधारी पंडित केशव और दमयंती के फेरे कराने के बाद भोले नाथ की मूर्ति के सामने आरती कर रहा था.

“पंडित जी आपसे कुछ बात करनी है ज़रा आएगें.” केशव ने कहा.

गिरधारी पंडित बाहर आया और केशव के साथ वही आ गया जहा शकुंतला, भिका, सविता और दमयंती खड़े थे.

“बताओ क्या बात है?” गिरधारी पंडित ने पूछा.

“आप भिका और शकुंतला जी के भी फेरे करवा दीजिए. साथ साथ इनका भी काम निपट जाएगा.” केशव ने कहा.

"शादी और इन दोनो की. मैं इस पाप का भागीदार नही बनूंगा. ठाकुर के घर की बहू होकर ये शादी करने चली है वो भी इस जैसे निर्लज्ज और अधर्मी के साथ. ये पाप मैं नही होने दूँगा." गिरधारी पंडित ने कहा.

शकुंतला और भिका तो ये सुनते ही स्तब्ध रह गये. उनके चेहरे उतर गये ऐसे कठोर शब्द सुनकर. वो दोनो ही कुछ बोल नही पाए. उनके प्यार को पाप का नाम दिया गया था. दोनो बहुत व्यथित थे.

सविता उनकी हालत समझ गयी और बोली, “ये क्या बोल रहे हैं आप पंडित जी. ये प्रेम करते हैं आपस में. और प्रेम करना कोई पाप नही है. और शकुंतला जी अब ठाकुर के घर की बहू नही हैं. अब ये आज़ाद हैं उस हवेली से. इनकी शादी कराना पुन्य का काम है.”

“अब तू मुझे बताएगी कि क्या पाप है और क्या पुन्य है. दो कौड़ी की लड़की मुझे पाठ पढ़ा रही है.” गिरधारी पंडित चिल्लाया.

"प्यार करते हैं हम एक दूसरे से कोई पाप नही. ऐसी बाते मत करो पंडित जी. प्रार्थना है आपसे कि ये शादी करवा दे. आप जो दक्षिणा कहेंगे दे दूँगा." भिका ने कहा.

"अच्छा ऐसा है क्या जाओ हज़ार किलो सोना ले आओ. करवा दूँगा शादी तुम्हारी. " गिरधारी पंडित बोला.

"हज़ार किलो सोना, क्यों मज़ाक कर रहे हैं पंडित जी. इतनी बड़ी झोली ना फैलाए कि हम भर ना पाए." भिका ने कहा.

"तुम मेरी बात समझे नही. मेरा कहने का मतलब ये है कि तुम दो पापियों की शादी मैं नही करवाऊंगा. दफ़ा हो जाओ यहा से." गिरधारी पंडित ने गुस्से में कहा.

"चलो भिका इनसे कुछ भी कहने का फायदा नही है." शकुंतला ने भिका का हाथ पकड़ कर कहा.

“हां हां निकल जाओ यहा से.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“दमयंती तुम जाओ अपने पिया के घर. हमारी चिंता मत करो. शादी हुई है तुम्हारी आज. सब कुछ भुला कर अपनी गृहस्ती में परवेश करो. भगवान ने चाहा तो हमारी शादी जल्द होगी.”

“कभी नही होगी तुम्हारी शादी. मैं देखता हूँ कौन कराता है शादी तुम्हारी. दूसरे गाँव के पंडित भी नही करेंगे ये पाप. तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि किसी कुवें में जा कर डूब मरो.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“आप अपनी हद पार कर रहें हैं पंडित जी. ये आपको शोभा नही देता.” सविता ने कहा.

“दफ़ा हो जाओ तुम सब लोग यहा से. दमयंती और केशव की शादी करा कर भी ग़लती कर ली मैने. निकल जाओ यहा से.” गिरधारी पंडित ने कहा.

भिका को बहुत गुस्सा आया और वो दाँत भींच कर गिरधारी पंडित की तरफ बढ़ा.

“आज तुझे पटकनी लगानी ही पड़ेगी पोंगे पंडित.” भिका ने गिरधारी पंडित की तरफ बढ़ते हुवे कहा.

पर शकुंतला ने भिका का हाथ पकड़ लिया, “रहने दो…चलो चलते हैं यहा से.”

"भगवान सब देख रहा है पोंगे पंडित...तुझे छोड़ेंगे नही वो." भिका ने कहा और वापिस मूड कर चलने लगा मंदिर से बाहर की ओर.

"दफ़ा हो जाओ...निकल जाओ अभी इस मंदिर से." गिरधारी पंडित चिल्लाया.

"रूको मैं करूँगा क्रिया पाठ तुम्हारी शादी का....और मैं धन्य समझूंगा खुद को." भिका और शकुंतला को अपने पीछे से आवाज़ आई. गिरधारी पंडित तो बोलने वाले को देखता ही रह गया.

"स्वामी जी आप" भिका की आँखे छलक गयी ब्रजभूषण को देख कर.

"हां मैं. तुम दोनो तैयार हो कर आओ अभी. मैं अभी और इसी वक्त करवाऊंगा ये शादी. बहुत देर से देख रहा था छुप कर अपने पिता के इस तमासे को. यकीन नही हो रहा था मुझे." ब्रजभूषण ने कहा.

"बहुत खूब बेटा. अपने पिता को ना दुवा ना सलाम और इन पापियों के लिए इतना कुछ." गिरधारी पंडित ने कहा.

"ये प्रेमी हैं पिता जी पापी नही हैं. प्यार का अपमान ना करें इस मंदिर में खड़े हो कर. प्यार और भगवान दोनो एक ही हैं. प्यार का अपमान भगवान का अपमान होगा." ब्रजभूषण ने कहा.

"मेरे होते हुवे इस मंदिर में ये अनर्थ नही होने दूँगा मैं." गिरधारी पंडित ने कहा.

"फिर मुझे अफ़सोस है कि आपको यहा से जाना पड़ेगा. ये शादी तो मैं करवा कर रहूँगा." ब्रजभूषण ने दृढ़ता से कहा.

शकुंतला और भिका के लिए इस से अच्छा क्या हो सकता था कि ब्रजभूषण खुद उनकी शादी करवाए. उनकी तो आँखे ही छलक उठी.

"स्वामी जी आपको देख कर बहुत खुशी हुई है. मेरे पास शब्द नही हैं कुछ कहने को."

"बस भिका देर मत करो तुम दोनो तैयार हो कर आओ. जितनी जल्दी ये शुभ कार्य संपन्न हो जाए अच्छा है."

"जैसा आप कहें स्वामी जी हम थोड़ी देर में आते हैं." भिका ने कहा.

‘‘हम सब यही तुम्हारा इंतेज़ार कर रहें हैं, जल्दी आना तुम दोनो.’’ सविता ने मुस्कुराते हुवे कहा.

‘‘सविता कैसी हो तुम?’’

‘‘मैं ठीक हूँ ब्रजभूषण तुम कैसे हो. मुझे तो लगा था कि फिर कभी मुलाकात नही होगी तुमसे. आज तुम्हे देख कर बहुत अच्छा लगा.’’ सविता ने मुस्कुराते हुवे कहा

‘‘ब्रजभूषण हमसे भी मिलोगे या नही. हमारी शादी हुई है आज.’’ केशव ने कहा.

‘‘मैं खुश हू तुम दोनो के लिए. काश वक्त पर आ जाता तो तुम्हे फेरे लेते हुवे देख लेता.’’

‘‘कोई बात नही आप भिका और शकुंतला की शादी करवा दो बस हमें बहुत खुशी होगी.’’ दमयंती ने कहा.

‘‘शादी हो ही गयी समझो. जैसे ही वो आते हैं मैं फेरे दिलवा दूँगा. सविता तुमसे कुछ बात करनी थी…ज़रा एक तरफ आओगी.’’ ब्रजभूषण ने कहा.

सविता हैरत में पड़ गयी कि पता नही क्या हो गया.वो दोनों मंदिर के एक कोने में आ गये. गिरधारी पंडित तो पाँव पटक कर मंदिर से निकल गया था.

शकुंतला और भिका आँखो में चमक और दिल में खुशी लिए वहां से चल देते हैं. दोनो बार बार एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्कुरा देते हैं.

"ऐसे क्या देख रहे हो भिका सामने देख कर चलो." शकुंतला ने कहा.

"बहुत खुश लग रही हैं आप, विश्वास दिलाता हूँ कि आपको हमेशा खुश रखूँगा."

"मुझे पता है भिका, पता है..."

बातो-बातो में घर आ जाता है.

"पहले आप तैयार हो जाओ मेमसाब...मैं बाहर इंतेज़ार करता हूँ. मुझे ज़्यादा वक्त नही लगेगा...आपके बाद मैं तैयार हो जाऊंगा. "

"आज तो मेमसाब मत कहो..."

"ज़ुबान पर यही चढ़ा हुवा है. रहने दीजिए ना क्या दिक्कत है."

"मुझे दिक्कत है. बीवी बन-ने जा रही हूँ तुम्हारी अगर तुम मेमसाब-मेमसाब करोगे तो अच्छा नही लगेगा मुझे."

"ठीक है आप जल्दी तैयार हो जाओ स्वामी जी हमारा इंतेज़ार कर रहे हैं."

"ठीक है...कही से झाँकना मत."

"नही झाकुंगा. झाँकने की जगह ही नही है वैसे भी. आप निश्चिंत रहें."

शकुंतला ने कोई आधा घंटा लगाया तैयार होने में. लाल सारी कुछ ऐसी जच रही थी कि कुछ कहा नही जा सकता. जब शकुंतला ने दरवाजा खोला और भिका अंदर आया तो भिका की तो आँखे फटी की फटी रह गयी.

"मेरी नज़र ना लग जाए आपको...कितनी सुंदर लग रही हैं आप इस सारी में."

शकुंतला तो देख ही नही पाई भिका को. उसने नज़रे झुका ली. शरमाने लगी थी अब वो भिका से. वो शरम देखते ही बनती थी.

“अब मैं तैयार हो जाऊ. आपको बाहर रुकना होगा थोड़ी देर.” भिका ने कहा.

“हां बिलकुल…जल्दी तैयार हो जाओ.”

भिका भी जल्दी से तैयार हुवा और दोनो मंदिर की तरफ चल दिए. मंदिर की तरफ चलते वक्त पावँ ज़मीन पर नही टिक रहे थे दोनो के. बात ही कुछ ऐसी थी.

“क्या बात है ब्रजभूषण. तुम कुछ व्यथित से लग रहे हो.” सविता ने पूछा.

“क्या तुम ऐसा कुछ कर रही हो जिस से मैं व्यथित हो सकता हूँ.” ब्रजभूषण ने पूछा.

“नही ब्रजभूषण. तुम्हे व्यथित कैसे कर सकती हूँ मैं.”

“दो दिन पहले तुम मेरे पास आई थी आश्रम में. मेरे पावँ पर सर रख कर बैठी थी. जब मैं उठा नींद से तो तुम्हे देखा. लेकिन अगले ही पल तुम गायब हो गयी.”

ये सुनते ही सविता के चेहरे का रंग उड़ गया. वो ब्रजभूषण के पैरो में बैठ गयी. “क्या सच में ऐसा हुवा था. मुझे लगा वो कोई भ्रम है मेरा. मुझे माफ़ करदो ब्रजभूषण. मेरा कोई इरादा नही था तुम्हे व्यथित करने का. मैं बस समाधी में लीन थी. कब तुम्हारे पास पहुचँ गयी पता ही नही चला.” सविता की आखेँ टपक रही थी बोलते हुवे.

सविता को यू ब्रजभूषण के पैरो में पड़े देख केशव और दमयंती हैरान रह गये. “क्या बात है केशव. सविता स्वामी जी के पैरो में बैठ कर रो क्यों रही है…आओ देखते हैं.”

“नही वहां मत जाओ. इन दोनो कि लीला यही जाने. बहुत प्यार करती है सविता ब्रजभूषण से बचपन से. शायद कोई गंभीर बात है. लेकिन उनके बीच में नही पड़ सकते हम.” केशव ने कहा.

“उठो सविता रो क्यों रही हो.”

“मेरा इरादा तुम्हे दुख देने का नही था. आज तुम वापिस व्यथित हो कर आए हो. इस से बड़ा पाप नही कर सकती मैं.” सविता ने कहा.

“तुमने कोई पाप नही किया पगली. समाधि में तुमने वो उचाँई पाई है जिस से अभी तक मेरे गुरु भी वंचित हैं. मैने सुना था कि लोग समाधी में एक जगह से दूसरी जगह पहुचँ जाते हैं. आज देख भी लिया. क्या बताओगि मुझे कि कैसे किया ये चमत्कार तुमने. उठो और बताओ मुझे.”

सविता उठती है और अपने आसूँ पोंछ कर बोलती है, ‘‘ब्रजभूषण मैं तो तुम में खो जाती थी आँखे बंद करके. बाकी मुझे कुछ पता नही. बहुत शांत हो जाती थी मैं. इस क्रिया को प्रेमसाधना नाम दिया है मैने. ये है भी प्रेमसाधना,क्योंकि प्यार शामिल है इसमें. और कुछ नही कह सकती क्योंकि मुझ अज्ञानी को और कुछ नही पता. दो दिन पहले मैने खुद को तुम्हारे कदमो में बैठे पाया. बहुत खुशी हुई थी मुझे. मुझे लगा समाधी में ये भाव आ गया है कि मैं तुम्हारे चरनो में बैठी हूँ. लेकिन आज तुमने बताया तो पता चला कि मैं सच में तुम्हारे पास पहुँच गयी थी. ये कैसे हुवा मुझे नही पता.’’

‘‘अब मैं समझा कि क्यों मुझे समाधी के दौरान खींचाव महसूस होता है. तुम यहा गाँव में बैठी प्रेमसाधना जो करती थी.’’

‘‘तुम्हे जो दुख और परेशानी हुई उसके लिए मुझे माफ़ कर दो ब्रजभूषण. आगे से ऐसा नही होगा. छोड़ दूँगी मैं वो चीज़ जो तुम्हे परेशानी दे.’’

‘‘एक मैं हूँ जिसने अध्यातम के लिए तुम्हे छोड़ दिया. एक तुम हो जो मेरे लिए, मेरे सुख के लिए अध्यातम छोड़ देना चाहती हो. क्या कहूँ अब मैं. तुम बहुत आगे निकल गयी अध्यातम में सविता. इतनी आगे कि शायद मैं वहां तक कभी नही पहुँच पाऊंगा…मुझे अपना शिष्य बना लो सविता अपने गुरु को छोड़ आया हूँ मैं. मुझे भी ये प्रेमसाधना करनी है. मैं आ गया हूँ तुम्हारे पास अपना लो मुझे. मैने बहुत बड़ी भूल की थी जो प्यार को अध्यात्म के आगे कम आँकता था. तुमने दीखा दिया आज की प्यार का रास्ता भी भगवान तक ही ले जाता है. मुझे अपना लो सविता…आ गया हूँ मैं सब कुछ छोड़ कर तुम्हारे पास और अब तुम्हारा गुलाम हूँ. मुझे स्वीकार कर लो अपनी जींदगी में.’’

सविता तो रो ही पड़ी ये सब सुन कर. उसे समझ ही नही आ रहा था कि ब्रजभूषण क्या बोल रहा है. वो समझती भी कैसे. अध्यातम की भासा नही जानती थी वो. वो तो अपने ब्रजभूषण की प्रेमसाधना करती थी बस. बाकी उसे कुछ नही पता था.

‘‘क्या हुवा तुम कुछ बोल नही रही. क्या मुझे नही अपना ओगी.’’

‘‘नही ब्रजभूषण ऐसा मत कहो. मैं तो तुम्हारे चरनो में रहना चाहती हूँ सारी उमर. तुम ही मेरे भगवान हो.’’

“शादी करोगी अपने भगवान से.” ब्रजभूषण ने पूछा.

सविता कहती भी तो क्या कहती. बस आँखो में आँसू लिए चिपक गयी ब्रजभूषण से. उसे ज़रा भी ध्यान नही आया कि उसकी प्रेमसाधना के कारण ही उसका प्यार परवान चढ़ रहा है. वो इन बातो से अंजान थी. उसे ब्रजभूषण मिल गया बस इसी में खुश थी.

ब्रजभूषण सविता का हाथ पकड़ कर सविता को केशव और दमयंती के पास ले आया.

“तुम लोगो को थोड़ी देर और रुकना होगा.” ब्रजभूषण ने कहा.

“क्या हुवा ब्रजभूषण, क्या बात है. और सविता रो क्यों रही है.” केशव ने कहा.

“कुछ नही ये प्यार के आँसू है इसके. हम दोनो भी शादी करेंगे आज. तुम्हे रुकना होगा थोड़ी देर और.”

“अचानक ये सब कैसे.” केशव और दमयंती तो हैरान ही रह गये.

“वो हमारे बीच की बात है. तुम बस रूको यहा.” ब्रजभूषण ने कहा.

“ पर तुम दोनो की शादी कौन करवाएगा. पंडित जी तो कभी तैयार नही होंगे.” केशव ने कहा.

“उन्हे मैं मना कर लाता हूँ. तुम सविता को तैयार करके लाओ. ये थोडा भावुक हो रही है.”

दमयंती ने सविता का हाथ पकड़ा और कहा, “आओ मैं तैयार करूँगी अपनी ननद को. चलो घर चलते हैं. केशव तुम यही रूको मैं सविता को लेकर अभी आती हूँ.”

दमयंती सविता को लेकर चली गयी और ब्रजभूषण अपने पिता से मिलने अपने घर की तरफ निकल लिया.

“आ गये तुम. करवा दी उन दोनो की शादी? मैं तुम्हे कभी माफ़ नही करूँगा.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“शादी करवाई नही है. आपके आशीर्वाद के बिना अधूरी रहेगी शादी पिता जी. चलिए मेरे साथ आपको मेरी शादी भी करवानी है.”

“ये क्या बोल रहे हो?” गिरधारी पंडित हैरानी में पूछता है.

“मेरी जींदगी सविता से जुड़ी हुई है पिता जी. मैं चाह कर भी उसे खुद से अलग नही कर पाया. आज मैं उसके साथ शादी के बंधन में बधँ जाना चाहता हू.ँ और ये शुभ काम आपको ही करना होगा.”

“बेटा मैं नही करवाऊंगा ये शादी. मुझे वो लड़की पसंद नही है. और शादी करनी ही है तो किसी पंडित से करो.”

“मैं शादी सविता से करना चाहता हू.ँ मेरी शादी करने में रूचि नही है. बस सविता के साथ बंधना चाहता हू ँप्रेमसाधना के बंधन में. आप आशीर्वाद देंगे तो खुशी होगी मुझे. आपके आशीर्वाद के बिना कुछ नही होगा.”

“मैं ऐसा कोई आशीर्वाद नही दूँगा. चले जाओ यहा से.” गिरधारी पंडित ने कहा.

“मैं मंदिर में सविता के साथ आपका इंतेज़ार कर रहा हू ँपिता जी.” ब्रजभूषण कह कर घर से निकल जाता है.

भिका और शकुंतला मंदिर पहुँच गये.

"बहुत प्यारी जोड़ीं लग रही है तुम्हारी, स्वामी जी अभी आते होंगे. पंडित जी को मनाने गये हैं." केशव ने कहा

"उन्हे मनाने की क्या ज़रूरत है" भिका ने कहा.

"ब्रजभूषण तुम्हारी शादी करवा देगा. लेकिन उसकी और सविता की शादी कौन करवाएगा?" केशव ने कहा.

"क्या? स्वामी जी और सविता शादी कर रहे हैं. ये चमत्कार कैसे हुवा." भिका ने कहा.

"ये तो भगवान ही जाने. उन दोनो की बाते ही निराली है. हमारी समझ से बाहर है…लो ब्रजभूषण आ गया." केशव ने कहा.

"चलो…चलो बैठो तुम. ज़्यादा देर मत करो. शुभ काम में देरी नही करनी चाहिए…वैसे बहुत अच्छे लग रहे हो दोनो. मैं धन्य हूँ कि तुम दोनो की शादी करवा रहा हूँ." ब्रजभूषण ने कहा.

ब्रजभूषण ने शकुंतला और भिका की शादी सुख शांति से संपन्न की. केशव ने कन्यदान किया. जब वो दोनो आखरी फेरा ले रहे थे तब सविता और दमयंती भी आ गये.

"अरे वाह बड़ी प्यारी लग रही है मेरी बहना लाल जोड़े में." केशव ने कहा.

"भैया छेड़ो मत. मुझे पता है मैं कैसी लग रही हूँ. जल्दी जल्दी में ठीक से तैयार नही हो पाई."

"बहुत प्यारी लग रही हो सविता." ब्रजभूषण ने कहा.

सविता शरम से लाल हो गयी. पहली बार ब्रजभूषण ने उसे ऐसी बात बोली थी. वो भी सबके सामने. भिका फेरे लेते वक्त सोच रहा था, "स्वामी जी तो बिलकुल बदल गये. शायद प्यार ऐसा ही होता है."

जब विवाह संपन्न हुवा तो भिका और शकुंतला ने ब्रजभूषण का धन्यवाद किया. "स्वामी जी अब आपकी और सविता की शादी का इंतेज़ार है. क्या पंडित जी आएगें." भिका ने पूछा.

"आएगें ज़रूर आएगें. बहुत प्यार करते हैं वो मुझे. नही रह पाएगें. आते ही होंगे अभी." ब्रजभूषण ने कहा.

"लो पंडित जी का नाम लिया और वो आ गये." केशव ने कहा.

"पिता जी…मुझे पता था कि आप अपने ब्रजभूषण को आशीर्वाद देने ज़रूर आएगें." ब्रजभूषण ने कहा.

"बस…बस चलो बैठो अग्नि के सामने. ज़्यादा वक्त नही है मेरे पास."

ब्रजभूषण सविता के पास जाता है और उसका हाथ पकड़ कर अग्नि के सामने लाता है. फिर वो दोनो बैठ जाते हैं. गिरधारी पंडित मंत्रो-चारण शुरू कर देता है.

सविता बहुत भावुक स्तिति में रहती है हर पल. उसे यकीन ही नही हो रहा था कि उसकी शादी हो रही है ब्रजभूषण के साथ. रह-रह कर उसकी आँखे छलक जाती थी.

सविता का कन्यदान तो केशव को ही करना था. शादी संपन्न होने के बाद ब्रजभूषण और सविता ने गिरधारी पंडित का आशीर्वाद लिया. "सदा खुश रहो" बस ये कह कर गिरधारी पंडित वहां से चला गया.

प्यार में डूबे तीन जोड़े मंदिर में एक साथ खड़े थे. फ़िज़ा में बस प्यार का रंग भरा था.

"ब्रजभूषण मेरी बहना को खुश रखना हमेशा. ये थोड़ी पागल है. बुरा मत मान-ना इसकी किसी बात का."

"मुझ से बहतर सविता को कोई नही जानता. तुम चिंता मत करो. ये हमेशा खुश रहेगी मेरे साथ."

“वैसे ये हुवा कैसे स्वामी जी. आपने सन्यास त्याग कर शादी कर ली. कुछ उलझन है मन में थोड़ी सी.” भिका ने कहा.

“इसका जवाब तो सविता ही दे सकती है. प्रेमसाधना की थी इसने और मैं आश्रम से खींचा चला आया इसके पास.” ब्रजभूषण ने कहा.

सविता ने ब्रजभूषण के कंधे पर सर रखा और बोली, “मुझे कुछ नही पता. मैने बस अपने ब्रजभूषण की आराधना की थी. मुझे नही पता था कि मेरा ब्रजभूषण सब कुछ छोड़ कर मेरे पास आ जाएगा.”

“भाई अब चला जाए…हम तो कब से खड़े हैं यहा.” केशव ने दमयंती का हाथ पकड़ कर कहा.

“हां बिलकुल. मेरी शुभकामनाए तुम सभी के साथ हैं.” ब्रजभूषण ने कहा.

केशव ने सविता को गले लगाया और कहा, “खुश रहना अब. मिल ही गया तुझे तेरा ब्रजभूषण.”

“तुम भी खुश रहना भैया. दमयंती को खुश रखना. पिता जी का ध्यान रखना. काश वो भी आ पाते आज. उनकी तबीयत भी आज ही खराब होनी थी.”

“कौन सा तू दूर जा रही है. यही गाँव में ही तो रहेगी.” केशव ने कहा.

“हां पर फिर भी वहां तो नही रहूंगी ना. ध्यान रखना पिता जी का.” सविता ने कहा.

तीनो जोड़े अपने अपने घरो की तरफ चल पड़े…………..

भाग - 18

भिका और शकुंतला घर की तरफ बढ़ रहे थे पर उनके पावँ ज़मीन पर नही टिक रहे थे. ज़ज्बात ही कुछ ऐसे थे दिलो में.

"कितना प्यारा दिन लग रहा है ये. एक साथ तीन प्रेम-विवाह हुवे मंदिर में." भिका ने कहा.

"हां बहुत प्यारा दिन है भिका...बहुत प्यारा दिन है...लेकिन अब ढल रहा है. अंधेरा होने वाला है जल्दी चलो." शकुंतला ने कहा.

"अब डर की क्या बात है, पिशाच तो मर चुका है."

"हां पर मुझे रात में बाहर डर लगता है." शकुंतला ने कहा.

"बस आ गया घर अपना...वो देखो सामने. आज खूब हंगामा होगा उस घर में." भिका ने कहा.

"कैसा हंगामा?" शकुंतला ने धीरे से कहा.

"सुहागरात है हमारी मेमसाब, हंगामा तो होगा ही." भिका ने कहा.

"ऐसा कुछ नही होगा अभी." शकुंतला ने हंसते हुवे कहा.

"क्यों अब किस बात का इंतेज़ार करना है." भिका ने कहा.

"ताला खोलो पहले. मुझे जोरो की भूक लगी है भिका. बताओ क्या खाओगे."

"आज हमारी शादी हुई है...कुछ ख़ास हो जाए." भिका ने कहा.

"चावल की मीठी खीर बनाऊ क्या?"

"हां ठीक रहेगी."

शकुंतला ने खाना बनाया और दोनो ने साथ बैठ कर आराम से प्यार से खाया.

“मैं ये बर्तन साफ कर दू भिका. तुम आराम करो.”

भिका ने शकुंतला का हाथ पकड़ा और कहा, “छोड़िए ना ये सब. आपसे दूरी बर्दास्त नही हो रही मुझे.”

“मुझे थोड़ा वक्त देना अभी…मैं किसी उलझन में हूँ.”

“कैसी उलझन.” भिका ने पूछा

“पंडित जी हमारे प्यार को पाप बोल रहे थे. दिल बहुत व्यथित है इस कारण. खुद को समर्पित करना चाहती हूँ तुम्हे मैं पर मन में विचारो का जंजाल है. मैं थोड़ा ये काम कर आउ…शायद मन ठीक हो जाए.”

“पागल है वो पंडित. वो कौन होता है हमारे प्यार को पाप का नाम देने वाला. पापी तो वो खुद है. झूठा है एक नंबर का.”

“छोड़ो उसकी बाते भिका, मैं खुद ही परेशान हूँ. वो बाते दिल में चुभ गयी कही.”

“क्या आप पछता रही हैं मुझसे शादी करके?” भिका ने पूछा.

“ऐसा नही है भिका…मेरा हृदय व्यथित है. मैं ठीक हो जाऊंगी. मुझे थोड़ा वक्त दो.”

“आप नहा लो ठंडे पानी से. मन को शांति मिलेगी.”

“वही सोच रही हूँ. तुम आराम करो. मैं ये थोड़ा सा काम करके आती हूँ. नहा भी लूँगी साथ ही.” शकुंतला ने कहा.

ब्रजभूषण अपनी दुल्हन को साथ लेकर जब घर पहुँचा तो गिरधारी पंडित अपना सामान बाँध रहा था.

“पिता जी आप कहा जा रहे हैं?”

“मैं अब मंदिर में ही रहूँगा. वैसे भी मैं यहा रात को ही आता था. अब रात भी मंदिर में ही गुज़ार लूँगा…खुश रहो तुम दोनो यहा.”

सविता गिरधारी पंडित के पावँ में पड़ गयी, “नही पिता जी. आज हम घर आए हैं और आप जा रहे हैं. ऐसा अनर्थ ना करें आप. हमारे वैवाहिक जीवन की शुरूवात हम आपके आशीर्वाद से करना चाहते हैं. आपकी छत्र- छाया हम पर बनाए रखे.

“उठो बेटा… ऐसा नही है कि मैं नाराज़ हो कर जा रहा हू.ँ तुम्हारे कारण मेरा ब्रजभूषण घर लौट आया. मैं तो आभारी हूँ तुम्हारा. खुश रहो तुम दोनो यहा. तुम दोनो के बीच मेरा क्या काम. मैं मंदिर में ही ठीक हू.ँ और मैं आता जाता रहूँगा.”

ब्रजभूषण भी गिरधारी पंडित के कदमो में गिर जाता है और कहता है, “धन्यवाद पिता जी…आपने हमारे ब्रजभूषण को स्वीकार किया यही हमारे लिए बहुत है.”

“उठो तुम दोनो. सुख शांति से रहो यहा. मेरा आशीर्वाद साथ है तुम्हारे.” गिरधारी पंडित ने कहा.

गिरधारी पंडित चला जाता है और ब्रजभूषण दरवाजा बंद करके कुण्डी बंद कर लेता है. जैसे ही ब्रजभूषण मुड़ता है वो सविता को अपने चरनो में पाता है.

“अरे उठो क्या कर रही हो.” ब्रजभूषण ने कहा.

“मुझे इन चरनो में ही रहने दो ब्रजभूषण. बहुत सुकून मिलता है मुझे यहा.”

“चरनो में तो मुझे रहना होगा तुम्हारे और सीखना होगा प्रेमसाधना को. सिखाओगी मुझे?”

“तुम्हे मैं कुछ नही सीखा सकती. बल्कि मैने तो खुद तुमसे ही सीखा है सब. तुम्हारी आराधना की है मैने. बस इतना ही बता सकती हू ँप्रेमसाधना के बारे में. बाकी मुझे कुछ नही पता.”

“उठो तो सही. आज गले लगने का दिन है ना कि पैरो में पड़ने का…उठो.” ब्रजभूषण सविता को कंधो से पकड़ कर उठाता है और गले लगा लेता है. “तुम्हारे प्यार की गहराई शायद भगवान भी नही समझ सकते.”

ब्रजभूषण और सविता यू ही खड़े रहे एक दूसरे के गले मिल कर. खो गये थे उन लम्हो में और उन लम्हो की खूबसूरती में.

शकुंतला नहा कर लौटी तो बहुत प्यारी लग रही थी. भिका उसी बिस्तर पर पड़ा था जिसपे रोज शकुंतला लेट-ती थी. आज उसका शकुंतला से अलग सोने का इरादा नही था. भिका तो देखता ही रह गया उसे. चेहरे पर गीले बाल उसकी खूबसूरती को और भी बढ़ा रहे थे. भिका भाग कर शकुंतला को बाहों में भर लेना चाहता था पर शकुंतला के व्यथित मन को देख कर रुक गया.

"आप बहुत सुंदर लग रही हो मेमसाब."

"खबरदार मुझे मेमसाब कहा तो, तुम्हारा मेमसाब कहना भी मुझे दुखी कर रहा है." शकुंतला गुस्से में चिल्लाई.

"माफ़ कर दीजिए. अब आगे से नही कहूँगा." भिका का चेहरा उतर गया.

शकुंतला को जल्दी ही अहसास हो गया कि उसका चिल्लाना ग़लत था. वो भिका के पास आई और उसके चरनो में बैठ गयी, "मुझे माफ़ कर दो भिका. मुझे चिल्लाना नही चाहिए था. मैं बुरी पत्नी हूँना."

"नही आप बुरी नही हैं. मेरी ज़ुबान पर बार बार मेमसाब ही आ जाता है. अब से आपको शकुंतला ही कहूँगा." भिका ने कहा.

"तुम डाटँ पड़ने पर ही सही काम करते हो ऐसा क्यों?"

"हवेली से आदत पड़ी हुई है आपकी डाटँ की. याद है आपको एक बार मैं लेट हो गया था शक्कर लाने में तो बहुत डांटा था आपने मुझे. तब से डरता हूँआपसे. इसलिए मेमसाब भी नही जाता ज़ुबान से."

"तुम्हारी बीवी बन गयी हूँअब. तुम मुझे डाटँ कर रखो वरना सर चढ़ जाऊंगी तुम्हारे." शकुंतला ने भिका के पावँ पर सर रख कर कहा.

"फिलहाल तो आप बिस्तर पर चढ़ जाओ, देखना चाहता हूँकि मेरी बीवी है कैसी."

"क्या देखना चाहते हो…अश्लील बाते मत करो मेरे साथ?"

भिका के लिंग में उत्तेजना हो रही थी. वो बिलकुल पत्थर की तरह कठोर हो गया था उसके कपड़ो में. इस कारण भिका थोड़ा असहज महसूस कर रहा था.

“अश्लील बाते??? मैं तो आपको यहा आने को बोल रहा हूँ. आप ही का तो बिस्तर है. यहा नही लेटेंगी क्या आज आप. मैं भी यही लेटुंगा आज तो.” अंजाने में ही भिका का हाथ अपने पत्थर की तरह तने हुवे लिंग पर चला गया. वो उसे अपने पायजामे में थोड़ा सहज करना चाहता था.

शकुंतला ने भिका के पायजामे में तने लिंग को देख लिया. “ये क्या तुम तो तैयार बैठे हो. मैं यहा नही लेटुंगी आज. ना…बाबा ना. मैं नही आऊंगी तुम्हारे पास.”

“कब से इंतेज़ार कर रहा हूँ आपका. इंतेज़ार करते करते ये हाल हो गया.” भिका ने कहा.

शकुंतला ने भिका के पावँ पर सर रखा और बोली, “मेरे स्वामी आज मुझे माफ़ कर दीजिए. सच में मन व्यथित है. आज मैं उस तरह से समर्पित नही कर पाऊंगी मैं जैसे मैं चाहती हूँ. मुझे थोड़ा वक्त दो. अब हम पति पत्नी हैं. किसी बात की जल्दी नही है.”

“ठीक है. हम मिलन में लीन नही होंगे. लेकिन मैं आज आपके साथ ही सोउन्गा. अलग नही लेटुंगा अब.”

“अगर ये यू ही तना रहा तो मैं नही आऊंगी. पहले इसका कुछ करो.”

“आप मुझे यू ही तडपा रही हो है ना. मैं जाता हूँ अपने बिस्तर पर. मुझे नही लेटना यहा.” भिका ने कहा और उठने लगा.

पर शकुंतला ने उसे रोक लिया. “रूको मैं आती हूँ. पर मैं तडपा नही रही तुम्हे. मुझे क्या मिलेगा तुम्हे तडपा के.” शकुंतला ने कहा और खड़ी हो गयी.

“हटो पीछे मुझे लेटने दो.” शकुंतला ने कहा.

भिका पीछे सरक गया और शकुंतला भिका के बाजू में लेट गयी.

“भिका मैं चाहती हू ँकि हमारा पहला मिलन यादगार हो. व्यथित मन से मैं तुम्हे सहयोग नही दे पाऊंगी. इन परिस्थितियों में हमारा पहला मिलन कही सर दर्द ना बन जाए. इसलिए तुम्हे इंतेज़ार करने को कह रही हू.ँ”

“कर लूँगा इंतेज़ार जितना आप चाहें. पर आप अब मुझसे दूर नही रहेंगी. बहुत प्यार करता हू ँमैं आपको. मैं इंतेज़ार करूँगा आपका. जब आपका मन होगा तभी हम मिलन में लीन होंगे. रही बात मेरी उत्तेजना की. वो तो आपको पता ही है कि वो मेरे बस में नही है. आपके ख्याल से ही उत्तेजित हो रहा है आज तो ये. पर आप चिंता ना करें. ये आपको नुकसान नही पहुँचाएगा. ”

शकुंतला घूम कर भिका से लिपट गयी. “ओह भिका…मैं बुरी बीवी साबित हो रही हू ँ तुम्हारे लिए. तुम तड़प रहे हो और मैं बेकार की बातो में पड़ी हू.ँ”

“शादी सिर्फ़ मिलन ही तो नही है. प्यार तो मिल ही रहा है आपका बेसुमार. और क्या चाहिए मुझे. मेरे नज़दीक रहें आप यू ही. आपसे दूर नही रह सकता अब. मिलन हो या ना हो. आप बस यू ही मेरे पास रहें हमेशा.”

भाग - 19

सुबह शकुंतला जल्दी उठ जाती है. रातभर उसे नींद नहीं आती हे.भिका अभी भी सो रहा है.शायद वो अपने खूबसूरत भविष्य के सपने देख रहा है. शकुंतला एक नजर भिका पर डालती है और अगले ही पल विचारों में खो जाती है.जबसे उसकी शादी भीका से हुई है तबसे उसे कुछ अजीब ला लग रहा है. कुछ अधूरा सा एहसास हो रहा है.न जाने क्यों उसे हवेली कि याद आने लगती है.शकुंलता भीका को बिना जगाए घर से बाहर निकल आती है.अभी भी बाहर थोड़ा अंधेरा है. सूरज पूरब की ओर से धीरे धीरे केसरिया रंग उधेड़ रहा है.शकुंतला के पैर अपने आप हवेली कि तरफ बढ़ने लगते है.जबसे वो हवेली के बाहर निकली है उसने कभी भी हवेली कि तरफ मुड़कर नहीं देखा है.उसके लिए तो वह हवेली मनहूस साबित हुई है.

अपनी ही विचारों में खोई शकुंतला हवेली के दरवाजे तक पोहच जाती है. आधा खुला हवेली का दरवाजा देखते ही उसके विचारों का समा टूट जाता है.सुबह के अंधुक प्रकाश में वह हवेली और भयानक दिख रही है.शकुंतला के पाव वहीं रुक जाते है.एक पल के लिए उसे लगता हे की वो क्यों अाई है इस मनहूस हवेली में फिरसे, उसे इस मनहूस हवेली से दूर भाग जाना चाहिए.जितना हो सके उतना दूर.लेकिन अगले ही पल उसका दिल कहता है कि कुछ तो अधूरी बाते है जो उसे अबतक पता नहीं है.कुछ सवाल है जो उसे जिंदगीभर सताने वाले है.अगर वो आज यहां से भाग जाती है तो वे सवाल उसे ताउम्र सताएंगे, परेशान करेंगे.इससे अच्छा वो सिर्फ एकबार इस हवेली में जाए और एक आखरी बार अपनी आंखो से उन सवालों के जवाब खोजे जो उसे सताने वाले है. कुछ सवालों के जवाब उसे इस हवेली से ही मिलेंगे.अपने विचारों में गुम शकुंतला काफी देर तक हवेली के बाहर खड़ी रहती है.

धीरे धीरे सूरज निकल आता है.अंधूक प्रकाश की जगह अब सूरज के किरणों ने ली है. भिका भी सुबह के मीठी नींद से जाग गया है.आंखे खोल कर वो अपने आजूबाजू देखने लगता है. उठते ही अपनी मेमसाब को अपने बाहों में भरना चाहता है.लेकिन बाहों में भरने के लिए उसकी मेमसाब उसके पास नहीं है.भिका बैचेनी ने बिस्तर से नीचे उतरता है.उसे लगता है मेमसाब शायद नहा रही होगी.एक पल के लिए उसके मन में शरारत करने का खयाल आता है.वो चुपके से जाके परदा उठा लेता है.उसे लगता है कि मेमसाब झूटमुठ चिढ़कर उसे फटकार लगाएंगी और वो अपनी मेमसाब को अपने बाहों में भर लेगा.जैसे ही भिका परदा उठा था है तो उसे वहां कोई नहीं दिखाई देता.भिका हैरत में पड़ जाता है.अगर मेमसाब घर में नहीं है, नहा नहीं रही है तो फिर कहा है. बैचेन भिका वापस आकर अपने

बिस्तर पर बैठ जाता है.उसे लगता है शायद मेमसाब कई नजदीक गई होंगी या फिर मंदिर गई होंगी,जल्द ही वापस आ जाएंगी.

मेमसाब की राह देखते हुए भिका काफी देरतक बिस्तर पर बैठा है."बेहद देर होगई है मेमसाब अभितक वापस नहीं आयी, उन्हें इतना वक्त कहा लग रहा है.कई उनपर कोई खतरा तो नहीं मंडरा रहा.मुझे बाहर जाकर देखना होगा".अपनी सोच में खोया भिका बिस्तर से उठ जाता है और घर के बाहर निकल आता है.शकुंतला को धुंडने के लिए भिका मंदिर की ओर चल देता है.तभी रास्ते में उसे गिरधारी पंडित मिल जाता है.

" कैसी रही सुहागरात ? मजा तो आया ना ? भाई मजा क्यों नहीं आएगा,तेरे तो भाग खुल गए है" गिरधारी पंडित भिका को चिढ़ाने के लिए मजाक करता है

"ए पोंगे पंडित ! टांग खींच रहे हो मेरी ! ज्यादा मत बोलो वरना यही पटकनी दे देंगे" भिका झुटमुट का गुस्सा दिखाता है

"लो ! हम भला क्यों टांग खींचने लगे तुम्हारी, लगता है रात भर सोने नहीं दिया तुमने अपनी नई बीवी को. इसलिए रूठकर अपने पहले वाले घर चली गई है बेचारी" गिरधारी पंडित हंसते हुए बोला

भिका को पंडित का यह मजाक पसंद नहीं आया"यह क्या बकवास कर रहे हो पंडित ? मेमसाब हवेली की तरफ क्यों जाएंगी भला.अब उनका उस हवेली से कोई नाता नहीं है.अब वो मेरी पत्नी है.अभी जाकर उस हवेली को आंग लगा देता हूं.ना रहेगी वो हवेली और नहीं रहेगी उस हवेली की मन्हुसियत"भिका गुस्से में कहता है

" हा भाई भाई ! इतना गुस्सा क्यों हो रहे हो .मैंने जो देखा वहीं तुमको बताया.वरना मुझे क्या लेना देना तुमसे ,तुम्हारी नई बीवी से और उसकी हवेली से" गिरधारी पंडित ने अपनी राह पकड़ ली

" पंडित क्या सचमे मेमसाब हवेली की तरफ गई है ?" अब भिका के स्वर नरम पड़ गए थे

" सबेरे मंदिर में पूजा की तैयारी कर रहा था , तभी ठकुराइन जैसी ही किसी को हवेली कि तरफ जाते देखा था. अंधेरे में ठीक से चेहरा दिखा नहीं.अब बूढ़ा भी तो हो गया हूं" गिरधारी पंडित ने चलते चलते ही जवाब दिया

पंडित की बात सुनकर तो जैसे भिका के पाव के नीचे की जमीन खिसक गई.वो वहीं पर बैठ गया.अबतक अपने सुनहरे भविष्य के बारे में सपने बुनता भिका अब अपने भूतकाल कि यादे खंगाल रहा था.उसे पता चल गया कि अब उसका राज खुलने वाला है.इसी डर के मारे अब भीका के मन में अजीब अजीब खयाल आने लगे थे.उसे अपना राज खुल जाने

की चिंता सताई जा रही थीं.वो सोचने लगा की वो अभी के अभी दौड़ता हुआ हवेली कि और जाए और शकुंतला को रोख ले.लेकिन अब तो बहोत देर हो चुकी है. अबतक तो शकुंतलाने हवेली का कौना कौना छान मारा होगा.और उसे भिका के राज के बारे में पता चल गया होगा.

"अगर मेमसाब को मेरे बारे में पता चल गया होगा तो वो क्या करेंगी? क्या वो मेरे बारे में सबको बता देंगी ? अगर मेरे बारे में गांव वालो को पता चल गया तो ? और अगर स्वामी जी को मेरी सच्चाई पता चल गई तो ? कई मेमसाब स्वामी जी के पास तो नहीं चली गई. कई उन्होंने मेरी हकीकत दमयंती को तो नहीं बता दी.कई मेमसाब ने गाव वालो को सब कुछ बता तो नहीं दिया? नहीं नहीं !ऐसा नहीं हो सकता.में ऐसा नहीं होने दूंगा.उस हवेली और उसके साथ साथ में सबको ख़तम कर दूंगा.मेमसाब के सिवा मुझे किसी की परवाह नहीं, चाहे जो हो जाए में मेमसाब को खौना नहीं चाहता.वो बस मेरी होगी" अपने आपको वचन देकर भिका वहासे हवेली की तरफ बढ़ जाता है.

[कुछ समय पहले]

अपने मन में चल रही उथलपुथल के बावजूद शकुंतला हवेली में जाने का साहस जुटा लेती है.हवेली का आधा बंद दरवाजा वो खोल देती है.दरवाजा खुलने की आवाज सुबह की खामोशी को चीरते हुए धुंदली हो जाती है.हवेली के अंदर पांव रखते ही शकुंतला को एक तेज दुर्गंध आती है ,मानो सैकड़ों चूहे एकसाथ मर चुके हो. उससे यह दुर्गंध सही नहीं जाती और वो अपने नाक पर साड़ी का पल्लू लगा लेती है.जैसे तैसे शकुंतला हवेली भीतर पोहच जाती है.उसकी नजर उस कमरे पर जाती है जिसमें कविता को रखा गया था. भूतकाल की घटनाए उसके नजरो के पटल से गुजरने लगती है.

"बिचारी कविता,क्या गुनाह था उसका जो उसको पूरे गाव के सामने जलील किया गया था. रास्ते में ही उसको भोगा गया था.और भोगने वाला भी कौन था ? मेरा वहिशी पति ! छी कैसा पति , वो तो एक राक्षस था.अच्छा हुआ नियति ने उसका बदला ले लिया.नियति ने तो सबका बदला ले लिया. इसी कमरे में भवानी और जीवन ने भी तो कविता को भोगा था.उनको भी तो सजा मिली है.जीवन को तो भिकाने सजा दी थी.उसने कविता और मेरा दोनों का बदला ले लिया.और रही बात भवानी की तो,वह अपने आखरी समय में तड़प तड़प कर मरा होगा. पता नहीं उसे अग्नि भी नसीब हुई कि नहीं. कई यह बदबू भवानी के लाश की तो नहीं" यह विचार मन में आते ही शकुंताला सहर जाती है

न चाहते हुए भी शकुंतला भवानी के कमरे की ओर बढती है.वो अपनी आंखो से भवानी का हाल देखना चाहती ही. रास्ते में उसकी नजर दमयंती के कमरे की और जाती है. कमरे का टूटा हुआ दरवाजा उसकी यादें ताजा कर देता है.

"यही वह कमरा है जिसमें दमयंती अपने आशिक के साथ रंगरलियां मना रही थी. बेशरम कहीं की ! मुझे भी संभोग में शामिल होने का निमंत्रण दे रही थी.और वो लड़का !उसने ने तो मुझे अपना लिंग दिखाया था. छी ... छी...! मुझे तो याद करते हुए ही घिन आ रही है.भैरव ने भी तो दमयंती को उस हालत में देखा था. बिचारे को तो अपनी आंखो पर विश्वास नहीं हो रहा था.इसमें उसका भी क्या दोष ? बहन को इस हाल में देख कोई भी बावला हो सकता है.और उस लड़के ने तो भैरव की मर्दानगी को ललकारा था. भैरव के साथ इस तरह से बात करने वाला वो लड़का था कौन ? और दोनों अचानक से गायब कहा हो गए " अपनी विचारों में खोई शकुंतला कब भवानी सिंह के कमरे के सामने पोहची उस पता ही नहीं चला.

भवानी के कमरे का दरवाजा बाहर से बंद था.शकुंतला ने एक हाथ से दरवाजा खोल दिया.दरवाजे के खुलते ही सड़न की बदबू और उग्र हो गई.शकुंतला को तो मानो उल्टी ही हों गई.जैसे तैसे उसने खुद को संभाला.कमरे के बाहर से ही शकुंतला अपनी नजरें फैरा

रही थी. कमरे में मानो मकड़ियों ने अपना आशियाना सजा रखा था.हर तरफ जाल ही जाल थे.पूरे कमरे में मक्खियां भिनभिना रही थी. बीच बीच में चूहों की चक.... चक .... सुनाई दे रही थी.कमरे के बिलकुल बीच में एक बड़ा सा बिस्तर था.उसपर भवानी की लाश सड़ीगली पड़ी हुई थी.लाश की हालत इतनी बुरी थे कि कोई भी अंग पूर्ण नहीं था. शरीर के हर हिस्से को चूहों ने कांट खाया था. आंखो की जगह अब केवल दो गड्ढे बचे थे.नाक की हड्डी भी दिखने लगी थी.बाल तो मानो जालो से ढक चुके थे.उस लाश को देखकर कोई भी नहीं कह सकता था कि यह ठाकुर भवानी प्रताप सिंह की लाश है. शकुंतला से अब और देखा नहीं गया.वो जल्द से जल्द उस मनहूस हवेली से बाहर निकलना चाहती थी. तभी हवा के एक झोंके ने पूरा कमरा भर लिया.तेज हवा की वजह से कमरे से आवाज घूमने लगी.मानो किसी साए ने उस कमरे में प्रवेश किया हो.

उस आवाज से शकुंतला डर गई, शकुंतला को उस भूत की याद आई जिसने भैरव को मारा था. उसे मन ही मन डर लगने लगा.शकुन्तला भागते भागते हवेली की पीछे वाले बगीचे में आ गई.हवेली से बाहर आकर उसे सुकून महसूस हुआ.हवेली की तरफ देखते देखते ही वो पीछे पीछे जाने लगी.तभी उसका पैर किसी चीज से टकरा गया और वो गिर गई. उसने अपने आपको संभाला और अंधेरे में उस चीज को देखने लगी.उस चीज पर किसीने कम्बल ढक रखा था.शकुंतला ने एक हाथ से कंबल को हटा दिया. सामने का नजारा देखकर तो उसकी आंखे फटी की फटी रह गई.उसके सामने और एक लाश पड़ी थी.लाश कैसी वो तो सिर्फ हड्डियों का एक ढेर था.उसमे ना ही कोई मांस था और नहीं कोई दुर्गंध.

लाश को देखकर शकुंतला दो कदम पीछे हो गई.तभी उसकी नज़र हड्डियों के ढेर में फंसे एक वस्तु पर गढ़ गई. सुबह के अंधूक प्रकाश में वह वस्तु धिमें धीमे चमक रही थी.शकुंतला अपने पास पड़ी एक लकड़ी से हड्डियों के उस ढेर को खनगाला और उस वस्तु को हड्डियों से अलग कर लिया.उस वस्तु को देखकर शकुंतला के होश उड़ गए.वो वस्तु थी भिकाने हाथमें पहना हुआ पीतल का कड़ा.उस पीतल के कड़े को देखकर शकुंतला मानो पागल सी हो गई.

"भीका का यह कड़ा यहां कैसे आया ? यह इन हड्डियों में क्या कर रहा है ? किसकी है यह लाश ? "उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था.तभी उसकी नजर उस कंबल पर गिरी जिसमें लाश ढकी हुई थी.

"अरे यह कंबल भी भिका के कंबल की तरह ही है.तो क्या यह मेरे भिका कि लाश है.नहीं .... नहीं...यह मेरे भिका कि लाश कैसे हो सकती है? वो तो घर पर सो रहा है....जिंदा है.तो फिर यह लाश किसकी है और भिका का कड़ा और कंबल यहां क्या कर रही है ?

"शकुंतला को कुछ समझ नहीं आ रहा था.उसने वहीं अपना सिर पकड़ लिया और नीचे बैठ गई. वक्त बीतता गया.

काफी देर के बाद शकुंतला ने उस पीतल के कड़े को उठा लिया और अपने पल्लू में बांध लिया.वो हवेली से बाहर आ गई.हवेली के बाहर एक पत्थर पर बैठ गई.अब मानो उसके सामने कोई भविष्य नहीं था. धीरे धीरे उसे यकीन हो गया था कि वो लाश भिका की ही थी.अब सवाल यह था कि जो उसके साथ रह रहा है वह कौन है ?जिसके साथ उसने शादी की थी वो कौन है ? जिसके साथ उसने रात गुजारी थी वह कौन है ? शकुंतला के मन में जितने सवाल थे शायद उसका जवाब भी वह जानती थी. लेकिन उसका मन यह स्वीकार नहीं कर रहा था.वो कैसे खुदके मना लेती की उसके साथ एक पिशाच रह रहा है.वो कैसे मान लेती की उसकी शादी एक पिशाच से हुई है.वो कैसे मानती की उसने एक पिशाच के साथ रात गुजारी है.

अब शकुंतला के नजरो के सामने से हवेली में हुई सब अजीब घटनाओं के दृश्य एक एक कर गुजरने लगे.वो खुद ही अपने मन में अपने सवालों का जवाब ढूंढ़ने लगी. उसे वह प्रसंग याद आया जिसमें दमयंती और कोई लड़का संभोग कर रहे थे.तब दमयंती घर पर थी ही नहीं.मतलब वो दोनो पिशाच ही थे.भैरव के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था.भैरव ने शकुंतला समझ कर किसी पिशाच के साथ संभोग किया था और वह पिशाच चारपाई के नीचे छुप गया था.फिर दरवाजे के बाहर असली शकुंतला को देखकर पिशाच गायब हो गया था.इस घटना के बाद तो मानो भैरव पागल सा हो गया था.शायद उसे पिशाच की सच्चाई पता चल गई थी. इसीलिए रघु का भूत बनकर पिशाच ही भैरव को ले गया था.और खेतो में चीखने वाली महिला की आवाज ? वो भी शायद पिशाच ही चिंक रहे थे.

गाववालो को लग रहा है कि सविता ने पिशाच को मार दिया है.अब गाव में कोई पिशाच नहीं है.लेकिन उनको क्या पता की सिर्फ एक ही पिशाच मरा है, दूसरा पिशाच तो अभी जिंदा है ,भिका का रूप लेकर. शकुंतला को कुछ समझ नहीं आ रहा था.क्या उसे पिशाच की सच्चाई सबको बता देनी चाहिए.क्या स्वामी जी को चुपचाप इन सब बातो की खबर देनी चाहिए ,या फिर सविता को कहकर पिशाच का अंत करना चाहिए?

लेकीन इन सब विचारो के बावजुद शकुंतला का मन नही मान रहा था.अखिर एक ही तो वजह थी उसके जीवन में जिसके लिए उसे जीना था.क्या वह खुद इस वजह को ख़तम करने की हिम्मत कर पाती.आखिर बिगाड़ा ही क्या है उस पिशाच ने शकुंतला का? उसने जितना सम्मान शकुंतला को दिया हे उतना आजतक किसी ने नहीं दिया था.कल रात सुहागरात होने के बावजूद उसके कहने पर पिशाच ने उसे हाथ भी नहीं लगाया है.उसकी जगह अगर भैरव होता तो? तो वह कबका उसे भोग चुका होता.भैरव तो उसका पति था

फिर भी उसे शकुंतला की कोई परवाह नहीं थी.उसके मर्जी के खिलाफ कई बार भैरव ने उसे भोगा था.किसी भोग वस्तु की तरह उसका इस्तेमाल किया गया. पिता की उम्र के जीवन प्रताप सिंह ने भी उसकी नितम्बों पर हाथ फेरा था,उसका बलात्कार करना चाहता था. छी छी...कैसे लोग थे वो ...! नहीं.... नहीं .... वे तो दानव थे दानव !एक पिशाच से भी बद्तर ! उनसे अच्छा तो वह पिशाच है जिसने हमेशा शकुंतला की परवाह की, उसकी इच्छा के खिलाफ कभी उसे छुआ तक नहीं. वहीं तो एक था जिसने शकुंतला को इंसान समजा ....कोई भोग वस्तु नहीं.क्या ऐसे प्यार को नष्ट कर सकती थी.शायद नहीं ....!

अबतक शकुंतला भैरव के लिए जी रही थी. ठाकुर परिवार के लिए जी रही थी.इस हवेली के लिए जी रही थी.लेकिन इनमें से किसी ने उसे कोई सुख नहीं दिया.हमेशा उसका इस्तेमाल किया , हमेशा उसे भोगा. इन सब बातो को सोचकर शकुंतला के मन में क्रोध जागृत हो जाता है.वो अपने साथ हुई बदसलूकी का बदला लेना चाहती है.लेकिन बदला ले किससे ? सब तो मर चुके है.ठाकुर भवानी तो हवेली में सड रहा है.यही उसके लिए सजा थी. जो अपने घर की बहू बेटियों की इज्ज़त नहीं कर सकता उसे इससे बद्तर सजा क्या मिल सकती है.उसे भोगने वाले भैरव और जीवन को तो पिशाच ने मार दिया है. शायद शकुंतला का बदला ही पिशाच ने लिया हो.शायद यही उस पिशाच का शकुंतला के प्रति प्यार हो.

अब बचा कौन था बदला लेने के लिए ? तभी शकुंतला की नजर हवेली की ऊपर जाती है.उसे हवेली का गुस्सा आता है.वो हमेशा से इस हवेली को मनहूस मानती थी.जबसे वो शादी कर इस हवेली में आई है तबसे उसका जीवन नरक से बद्तर हो गया है.यह हवेली भी उसके हाल के लिए जिम्मेदार थी.शकुंतला काफी देर से पत्थर पर बैठी है.अब सूरज भी पूरी तरफ उग चुका है.सूरज की रोशनी में हवेली का विशाल स्वरूप देखकर शकुंतला का गुस्सा और बढ़ जाता है.मानो वह हवेली अपनी भव्यता से शकुंतला को चिढ़ा रही हो.उसका अपमान कर रही हो.उसे एहसास करा रही हो कि इसी हवेली के अंदर उसको भोगा गया है.शकुंतला से हवेली कि यह भव्यता और बर्दाश्त नहीं होती.मन में कुछ निर्धार कर वह हवेली के अंदर चली जाती है.रसोई के एक कोने में पडा घासलेट का डब्बा और माचिस उठाकर बाहर निकल आती है.

शकुंतला पर मानो प्रतिशोध हावी हो जाता है. वह थोड़ा थोड़ा घासलेट हवेली के चारों तरफ छिड़क देती है.हवेली की भव्यता पर एक आखरी नजर फेरकर माचिस की तीली डाल देती है. मखमली परदो से लिपटी ,आलीशान वस्तुओं से सजी भव्य हवेली धू....धू...कर जलने लगती है. देखते ही देखते आग की विशाल लपटे हवेली को अपनी गिरफ्त में ले लेती है. मानो आग की लपट हवेली को एहसास करा रही हो कि उससे भी भव्य कोई ताकद है जो उसे निगल सकती है.उसके घमंड का विनाश कर सकती है.हवेली

को धू धू कर जलता देख ना जाने क्यों शकुंतला को एक अजीब सा सुखद एह सास होता है.उसे लगता है मानो वह किसी के कैद से आज़ाद हो गई हो.किसी बंदिश से मुक्त हो गई हो. उसके चेहरे पर समाधान की मुस्कान खिल जाती है.आग की तपिश के कारण शकुंतला का बदन पसीना पसीना हो गया है.उसके माथे से पसीने के धारा बह रही हे.लेकिन शकुंतला को अब इसकी परवाह कहा.मानो इसी पसीने से नहाकर वो अपने इतिहास को पोंछ देना चाहती है.

यहां हवेली धू.... धू....कर जल रही है और वहां भिका का रूप धारण किए पिशाच हवेली की और बढ़ रहा है. अपने ही ख़यालो में डूबा.अपने ही भविष्य की चिंता लिए एक एक कदम बढ़ा रहा है हवेली कि तरफ.उसका हर एक कदम उसे अपने भविष्य की ओर ले जाने वाला है.भला एक पिशाच को क्या परवाह है उसके भविष्य से ? एक पिशाच को क्या परवाह है उसकी सच्चाई की? अगर गाववाले उसकी सच्चाई जान भी लेंगे तो उसका क्या बिगाड़ने वाले है.फिर ऐसी कौनसी चिंता है जो एक पिशाच को परेशान कर रही है. शायद यह चिंता है प्यार की.जो उसने पहली बार महसूस किया था. शायद उसे चिंता है उस एहसास की जो उसे शकुंतला के साथ वक़्त बिताने पर होता है.शायद उसे चिंता है शकुंतला के विश्वास की , जिसे उसने तोड़ा है.

एक पिशाच होकर भी उसे अब एक आम इंसानी जिंदगी अच्छी लगने लगी है.उसे अब इंसानों के जस्बात अच्छे लगने लगे है.उसे अब शकुंतला अच्छी लगने लगी है.वह उसे खोना नहीं चाहता.लेकिन अगर शकुंतला को उसकी सच्चाई पता चल गई होगी तो.....तो क्या शकुंतला फिर भी उसका स्वीकार करेगी.क्या शकुंतला फिर से उसके साथ जीवन व्यतीत करना चाहेगी.क्या पता ....कर भी ले. आखिर पिशाच होते हुए भी उसने शकुंतला से प्यार किया है.उसकी रक्षा की है.उसका सम्मान किया है.और अगर शकुंतला ने उसके साथ रहने से इंकार कर दिया तो? फिर क्या होगा ? क्या पिशाच को फिरसे अपने पुरानी जिंदगी में लौटना होगा.जंगलों में दर दर भटकना होगा... इंसानों का मांस नौचना होगा.... बेवजह खेतो में चीखना होगा....!!

नहीं .....नहीं ....ऐसा नहीं हो सकता ! अपने ही विचार में धुन पिशाच हवेली के नजदीक पोहच जाता है. उसे धू....धू...जलती हवेली दिखाई पड़ती है.वहीं जलती हवेली को देख रही शकुंतला को देखकर थोड़ी देर रुक जाता है.उसे शकुंतला के पास जाना है पर उसकी हिम्मत नहीं हो रही.शकुंतला के पास जाकर वो आखिर करता भी तो क्या ? किस मुहसे शकुंतला से बात करता.कौनसे रूप में जाता ? भिका के रूप में.....? जिसके हड्डियों का ढेर उस आग की तपिश में कब का पिघल गया होगा....या फिर उस पिशाच के रूप में जिसका सच शायद शकुंतला के सामने आ गया होगा.इसी कशमकश में पिशाच वहीं खड़ा रह जाता है.शकुंतला की पसीने से भीगी काया को निहारते हुए.

काफी देर तक हवेली को जलता देख शकुंतला वापिस मूड जाती है.पसीने में भीगी उसके बदन पर उसके कपड़े कस चुके है.माथे से अब भी पसीने की धार बहना जारी है.एक दो कदम चलने के बाद उसकी नजर पिशाच पर जाती है जो उसे निहार रहा है.शकुंतला चलते चलते पिशाच तक पोहच जाती है.शकुंतला को अपने और आता देख पिशाच की सांसे तेज हो जाती है.यही तो वह समय है जब दो ज़िंदगियों का भविष्य तय होने वाला है.यही तो वह क्षण है जब पिशाच और इंसानों का सफर तय होने वाला है.शकुंतला पिशाच के करीब आ खड़ी हो जाती है.पिशाच आंखो में शून्य भाव लिए बस शकुंतला को देखता रह जाता है..........

"अरे...... ! भिका, तुम यहां क्या कर रहे हो.मुझे लगा तुम सुबह उठते ही सबसे पहले स्वामी जिसे मिलने जाओगे " शकुंतला ने अपने ओंठो पर हसीन मुस्कान लाते हुए पूछा

शकुंतला के होठो पर मुस्कान और जुबान पर भिका का नाम सुनकर पिशाच को लगता है कि शकुंताल को अबतक उसका राज पता नहीं चला है.इस बात से उसे बेहद ज्यादा खुशी होती है.इस खुशी के चलते उसके आंखो से आंसू निकल आते है.पिशाच की आंखो में आंसुओ को देख शकुंतला भी समझ जाती है कि पिशाच उससे कितना प्यार करता है.

"क्या हुआ भिका ? तुम रो क्यों रहे हो ? " शकुंतला अपनी मीठी आवाज में पिशाच से पूछती है

"वो ...में...में..मेमसाब " आंसुओ के कारण पिशाच से बोला ही नहीं जाता

"बोलो भिका....! क्या बात है.तुम्हारी आंखो में पानी क्यों है"शकुंतला अपने दोनो हाथो से पिशाच का चेहरा पकड़ लेती है.

शकुंतला के इस व्यवहार से गदगद पिशाच लगभग रो पड़ता है. कुछ क्षण के लिए दोनो एक दूसरे के आंखो में खो जाते है.कुछ क्षण यूहीं खामोशी में बित जाते है.

"अब .. बताओगे भी क्या हुआ है ?" शकुंतला उस मीठी सी खामोशी को तोड़ते हुए पूछती है

"वो ...मेमसाब ... मु.. मु..झे... मुझे लगा आ..आ.. प.. ...आप.. मुझे छोड़कर चली गई है" इतना कहकर पिशाच फिरसे रोने लगता है

पिशाच के इस मासूम रूप को देखकर शकुंतला भी भावुक हो जाती है.आखिर पहली बार उसने किसी को देखा है जो उसके लिए आंसू बहा रहा था.पहली बार कोई उसके साथ रहने के लिए तरस रहा था.पहली बार कोई उसे खोने की डर से गिड़गिड़ा रहा था.इस पल को शकुंतला जी लेना चाहती है. वह भी अपने आंसुओ को बहने देती है.धू...धू.. जलती

उस हवेली कि तपिश में दो जीव अपने भविष्य के लिए रो रहे थे.शकुंतला के प्रति पिशाच का इतना प्यार देखकर हवेली ईर्षा में और धधकने लगती है.

"पागल...में तुम्हे छोड़कर कहा जाऊंगी.....? अब ....मेरा तुम्हारे सिवा है ही कौन.....?" शकुंतला रोते रोते पिशाच से कहती है

" मुझे माफ़ कर दीजिए मेमसाब ....में बड़ा स्वार्थी हो गया था.सबेरे आप को घर में नहीं देखा ...तो....तो..." पिशाच से आगे बोला नहीं जाता

"तो .... तुम्हे लगा कि में तुम्हे छोड़कर चली गई हूं "शकुंतला ने अपनी मधुर आवाज में पूछा

" हा मेमसाब...पता नहीं क्यों मुझे आपको खोने का डर सता रहा है" पिशाच ने कहा

"ऐसा कुछ नहीं होगा भिका ...हमें अलग करने वाला अब इस दुनिया में कोई नहीं है.देखो इस मनहूस हवेली को भी मैंने नष्ट कर दिया है" शकुंतला हवेली की तरफ देखते हुए कहती है

"जी ...जी....मेमसाब... लेकिन.....!" पिशाच अपनी बात को अधूरा छोड़ देता है

"लेकिन....लेकिन क्या भिका ?" शकुंतला पिशाच की तरफ पलट जाती है

"मेमसाब....में आप से एक वचन चाहता हूं......"पिशाच ने कहा

"कैसा वचन भिका....?" शकुंतला उस्तुकता से पूछती है

"आप मुझे वचन दीजिए की आप कभी भी मुझे छोड़कर नहीं जाएंगी ....कभी नहीं... चाहे कुछ हो जाए " पिशाच के आंखो से फिरसे आंसू बहने लगते है

पिशाच को भावुक होता देख शकुंतला उसका चेहरे अपने हथिलियो में समा लेती है.उसके जस्बातो का बांध टूट जाता है.शकुंतला अपने होठ पिशाच के होठों पर टिका देती है.शकुंतला के इस हरकत से पिशाच थोड़ी देर के लिए ठिठक जाता है.लेकिन अगले ही

पल वो भी शकुंतला के इस वचन का स्वीकार कर लेता है.दोनो के होठ एक दूसरे में समा जाते है.शकुंतला के माथे से बह रही पसीने को कुछ बूंदे उसके आंख और नाक का सफर कर होठो तक पोहच जाते है.दोनो का प्यार देख पसीने के बूंदे भी अपने स्वभाव के विरुद्ध उनके होठों के बीच मिठास भर देते है.इंसान और पिशाच का यह चुम्बन पीछे जल रही मनहूस हवेली देखती रह जाती है. मानो उसने अपनी हार स्वीकार कर ली हो और शकुंतला के नए जीवन के लिए आशीर्वाद दे रही हो.एक दिर्घ चुंबन के बाद शकुंतला पिशाच से अलग हो जाती है.अब दोनो के आंखो में आंसुओ के जगह आत्मविश्वास भरा है.ऐसा आत्मविशवास जिसे न कोई झुका सकता है और नहीं कोई तोड़ सकता.

"में तुम्हे वचन देती हूं भिका चाहे जो हो जाए ...में तुम्हे छोड़कर कभी नहीं जाऊंगी" शकुंतला आत्मविश्वास के साथ कहती है

"जी मेमसाब.... शुक्रिया" पिशाच शकुंतला की बातो में हा मिला देता है

"आपने हवेली क्यों जला दी मेमसाब " पिशाच को रहा नहीं जाता और वह पूछ लेता है

"यह हवेली मनहूस है भिका...इसके रहते हमारे नए जिंदगी की शुरुआत नहीं हो सकती थी.इसलिए मुझे इसे जलाना ही था" शकुंतला ने हवेली कि तरफ देखते हुए कहा

"और....हा !!!! हवेली में मुझे कुछ मिला है .... शायद तुम्हे पसंद आ जाएं" शकुंतला पिशाच की और देखते हुए कहती है

"क्या मेमसाब ...?"पिशाच आश्चर्य से पूछता है

शकुंतला अपने साड़ी का पल्लू पिशाच के सामने रख देती है."तुम खुद देख लो...मैंने इस पल्लू में बांध कर रखा है"

पिशाच बड़ी उत्सुकता से साड़ी के पल्लू में बंधी गांठ को खोलता है.उसके अंदर बंधे पीतल के कड़े को देखकर उसकी आंखे सफेद हो जाती है. चेहरा पसीने से तर र र र....हो जाता है.गला सुख जाता है.उसे समझ में आ जाता है कि शकुंतला को असली भिका की लाश मिल चुकी है.शकुंतला जान चुकी है कि असली भिका मर चुका है और वह एक पिशाच है जिसने भिका का रूप धारण किया है.अब पिशाच घबरा जाता है उसे समझ नहीं आता कि

अब क्या करे. घबराहट के मारे उसकी सांसे तेज हो जाती है.वो यूहीं उस कड़े को देखता रह जाता है.

"क्या हुआ.... तुम्हे कड़ा पसंद नहीं आया.अरे यह तुम्हारा ही है.मुझे हवेली के पास ही मिला. शायद यह तब गिरा होगा जब तुमने मेरी इज्जत बचाने के लिए जीवन प्रताप सिंह से हाथापाई की थी.लो इसे पहन लो ... तुम्हारे हाथ में अच्छा लगता है.

"जी मेमसाब...." इतना कहकर पिशाच ने उस कड़े को अपने हाथ में पहन लिया

पिशाच को कड़ा अपने हाथ में डालते हुए देखकर शकुंतला मंद मंद मुस्कुरा रही थी.उसे अच्छी तरह पता था कि वह क्या कर रही थी.

"देखो ...अब लग रहे हो असली भिका ..." शकुंतला ने हल्की सी चपेट पिशाच के गाल पर मारते हुए कहा

शकुंतला की बात सुनकर पिशाच को यकीन हो गया था कि शकुंतला उसके बारे में सबकुछ जानती है.वो हैरानी से शकुंतला की तरफ देखता ही रह गया.

"अरे....! ऐसे क्या देख रहें हो भिका .... सारा दिन यही खड़ा रहना है या अपने घर भी जाना है ?" शकुंतला ने हसते हुए पिशाच से पूछा

"जी मेम...साब...घ..र. र र... घर जाना है" निरुत्तर पिशाच ने जैसे तैसे जवाब दिया

"तो चलो फिर...अभी तो सिर्फ पल्लू की गांठ खोली है...घर जाकर साड़ी की गांठ भी तो खोलनी है" शकुंतला ने शरारती अंदाज में कहा और वो घर के तरफ निकल पड़ी

शकुंतला का यह अंदाज देख पिशाच हक्का बक्का रह गया.घर की तरफ बढ़ चली शकुंतला की काया को यूहीं देखता रह गया. मानो उसे यकीन नहीं हो रहा था कि कितनी आसानी से शकुंतला ने उसकी सच्चाई को कबूल कर लिया था.कितनी आसानी से शकुंतला ने अपने भविष्य को चुन लिया था.

शकुंतला की बाते सुनकर पिशाच अब आश्वस्त हो गया था कि उसका प्यार जीत गया है.उसे इस बात का अब कोई ग़म नहीं है कि उसने उस दरिंदे भिका का वध कर दिया है जिसका शरीर धारण कर उसने शकुंतला के प्यार को जीता है.उसी भिका का उसने वध

किया है जिसने जीवन प्रताप सिंह के साथ मिलकर शकुंतला की इज्जत लूटनी चाही.अगर पिशाच ठीक समय पर वहा नहीं पोहचता और भिका का वध नहीं करता तो शायद उसकी शकुंतला आज उसके सामने जीवित नहीं होती.पिशाच को अब इस बात का अफसोस नहीं है कि उसने भिका का रूप लेकर जीवन प्रताप का खून किया है.अगर वह भिका का रूप लेकर जीवन प्रताप का खून नहीं करता तो शकुंतला का दिल कभी जीत नहीं पाता. अगर वो जीवन प्रताप्र का खून नहीं करता तो वहशी जीवन प्रताप उसकी शकुंतला को नोच खाता.

" क्यों ...क्या हुआ साड़ी की गांठ नहीं खोलनी......?"दूर से शकुंतला की शरारत भरी आवाज पिशाच के कानों में अाई

"जी मेमसाब.... आया..." पिशाच ने भी हाथ उठाकर अभिवादन किया

शकुंतला आगे आगे और नया जीवन प्राप्त कर चुका भिका उसके पीछे पीछे.यह दृश्य देखकर धू धू कर जल रही ठाकुर की हवेली नीचे गिर गई और खुदके ढांचे में समा गई. मानो हवेली ने भी ठान लिया हो कि अब भूतकाल की कोई भी याद शकुंतला के सुनहरे भविष्य को नजर नहीं लगाएगी. शायद हवेली भी मन्हुसियत के ताने सुन सुनकर थक गई थी. अपने आप को खुद में समाकर हवेली ने भी चैन की सांस ली थी.अब उसे कोई मनहूस नहीं कहने वाला था.

समाप्त